

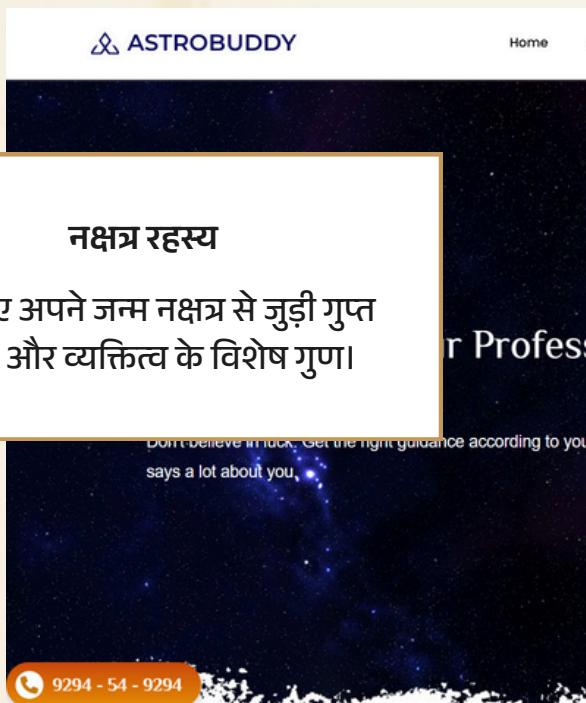


Premium Janam Kundali



The futuristic vision deeply studied & created by renowned Pandits.

एस्ट्रोबडी – जीवन की हर समस्या का ज्योतिषीय समाधान



The screenshot shows the AstroBuddy website homepage. The header features the logo and navigation links for Home and About. The main banner has a dark background with a starry sky and a central illustration of a sage reading a book, surrounded by zodiac symbols. The text "Don't believe in luck. Get the right guidance according to your sign. Your sign says a lot about you." is displayed. A call-to-action button at the bottom left says "9294 - 54 - 9294".

महादश मार्गदर्शन

वर्तमान महादशा आपके करियर, वित्त और रिश्तों को कैसे प्रभावित कर रही है – सही दिशा पाएँ।



नक्षत्र रहस्य

जानिए अपने जन्म नक्षत्र से जुड़ी गुप्त बातें और व्यक्तित्व के विशेष गुण।

Professional

रत्न सुझाव

आपके ग्रहों की स्थिति के अनुसार सही और प्रमाणित रत्न धारण करने की सलाह।

SHOP NOW →



 www.divinestones.in

यह प्रीमियम कुंडली सिर्फ शुरुआत है। सम्पूर्ण मार्गदर्शन के लिए एस्ट्रोबडी से जुड़ें।

आज ही हमारे प्रमाणित ज्योतिषाचार्यों से बात करें।

 www.astro-buddy.com

Aumarya

जन्म विवरण

| | | |
|------------|---|-----------------------|
| लिंग | : | पुरुष |
| जन्म दिन | : | 2 अक्टूबर 2014 |
| जन्म वार | : | गुरुवार |
| जन्म समय | : | 18:21:00 घंटे |
| इष्टकाल | : | 26:32:35 घटी |
| जन्म स्थान | : | Calgary |
| देश | : | Canada |

| | | |
|---------------------|---|----------------|
| अक्षांश | : | 51उ05'00 |
| रेखांश | : | 114प05'00 |
| समयक्षेत्र | : | 07:00:00 घंटे |
| समय संशोधन | : | 01:00:00 घंटे |
| जी.एम.टी. समय | : | 00:21:00 घंटे |
| स्थानीय समय संस्कार | : | -01:36:20 घंटे |
| स्थानीय समय | : | 16:44:40 घंटे |
| सांपातिक काल | : | -06:28:47 घंटे |
| सनसाइन (सायन सूर्य) | : | तुला |
| लग्न राशि | : | कुम 19:14:21 |

पारिवारिक विवरण

| | | |
|-------------|---|--|
| दादा का नाम | : | |
| पिता का नाम | : | |
| माता का नाम | : | |
| जाति | : | |
| गोत्र | : | |

अवकहडा चक्र

| | | |
|-----------------------|---|------------------------|
| 1. वर्ण | : | वैश्य |
| 2. वश्य | : | चतुष्पाद |
| 3. नक्षत्र - चरण | : | उत्तराषाढ़ा - 2 |
| 4. योनि | : | नकुल |
| 5. चन्द्र राशि स्वामी | : | शनि |
| 6. गण | : | मनुष्य |
| 7. चन्द्र राशि | : | मकर |
| 8. नाड़ी | : | अन्त्य |
| वर्ग | : | उदर |
| युज्ञा | : | अन्त्य |
| हंसक (तत्व) | : | भूमि |
| नामाक्षर | : | भो |
| राशि पाया | : | लौह |
| नक्षत्र पाया | : | ताँबा |

जन्मकालीन पंचांगादि

| | |
|--------------------------|---|
| चैत्रादि विधि | |
| विक्रम संवत् | : |
| मास | : |
| कार्तिकादि विधि | |
| विक्रम संवत् | : |
| मास | : |
| शक संवत् | : |
| सूर्य अयन/गोल | : |
| ऋतु | : |
| पक्ष | : |
| ज्योतिषिय वार | : |
| सूर्योदयी तिथि | : |
| तिथि समाप्तिकाल | : |
| जन्मकालीन तिथि | : |
| सूर्योदयी नक्षत्र | : |
| नक्षत्र समाप्तिकाल | : |
| जन्मकालीन नक्षत्र | : |
| सूर्योदयी योग | : |
| योग समाप्तिकाल | : |
| जन्मकालीन योग | : |
| सूर्योदयी करण | : |
| करण समाप्तिकाल | : |
| जन्मकालीन करण | : |
| सूर्योदय समय | : |
| अंश | : |
| सूर्यस्त समय | : |
| अंश | : |
| आगामी सूर्योदय | : |
| चन्द्र का नक्षत्र प्रवेश | : |
| चन्द्र का नक्षत्र निकास | : |
| भयात | : |
| भोग | : |
| जन्मकालीन दशा | : |
| दशा भोग्यकाल | : |
| अयनांश | : |



नक्षत्र का फल

आपका जन्म पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है अतः आपकी जन्म राशि मकर तथा राशि स्वामी शनि होगा। अवकहड़ा चक्र के अनुसार -

- वर्ण - वैश्य
- वश्य - चतुष्पद
- योनि - नकुल
- गण - मानव
- नाड़ी - अन्त्य

जन्म नाम का प्रारम्भ भी अक्षर से होना चाहिये।

शास्त्रों के अनुसार

उत्तराषाढ़ नक्षत्र में जन्म होने से निम्नवत् फल प्राप्त होंगे -

1. बृहज्ञातक के अनुसार -

तैश्वे विनीतधार्मिकबहुमित्रकृतज्ञसुभग्नश्च।

2. जातक पारिजात के अनुसार -

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वकर्षजः पण्डितः।

3. मानसागरी के अनुसार -

बहुमित्रो महाकायो जायते विजयी सुखी।

उत्तराषाढसम्भूतः शूरश्व विनयी भवेत्॥

4. जातकाभरण के अनुसार -

दाता दयावान्विजयी विनीतः सकर्मकर्ता विभुतासमेतः।

कांतासुतावाप्तसुखो नितांतं वैश्वे सुवेषः पुरुषोऽभिमानी॥

उत्तराषाढ़ नक्षत्र में जन्म होने से जातक मोटे और लम्बे शरीर वाला, अधिक मित्रवाला, सुखी, मान्य, सात्त्विक गुणयुक्त, धनवान, पण्डित, धर्मात्मा, कृतज्ञ, सर्वजनप्रिय, विजयी, वीर और विनययुक्त होता है। मतान्तर से ऐसा जातक दानी, दयावान, अच्छे कर्म करने वाला, ऐश्वर्यशाली, स्त्री-पुत्रों से सुखी और अभिमानी होता है।

आधुनिक मत से

उत्तराषाढ़ नक्षत्र में जन्म होने से जातक महत्वाकांक्षी जीवन का अभिलाषी, प्रसन्नचित्त, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, स्वच्छ वस्त्रों का शौकीन, श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त लोकोपकारी, घर का अथवा समाज का प्रमुख, किसी विशिष्ट अध्ययन क्षेत्र में प्रवीनिता प्राप्त करने वाला, अध्यनशील, कानून का आदर करने वाला, ईश्वरभक्त, धार्मिक कृत्यों में भाग लेने वाला, योगाभ्यासी, अधिकार सत्ता का प्रेमी, तर्क-शास्त्री, सरकार अथवा सरकारी क्षेत्रों से लाभ पाने वाला होगा।

पाद (पाया) फल

उत्तराषाढ़ नक्षत्र का जन्म ताँबे के पाये में माना गया है, जो श्रेष्ठ फलदायी होता है।

स्वास्थ्य

उत्तराषाढ़ नक्षत्र का अधिकार जांघों पर होता है। इस नक्षत्र के पापाक्रांत होने पर गठिया, संधिवात, स्कैटिका तथा चक्षुरोग होने की संभावना रहती है।

उपाय

उत्तराषाढ़ नक्षत्र के स्वामी 'विश्वेदेवा' हैं, इनके प्रीत्यर्थ निमनलिखित मन्त्र का रविवार के दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्र पड़ने पर दस हजार जप अनुष्ठान विद्यान से करें -

ॐ विश्वेदेवा: शृणुतेम गूं हवं में ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्टाय।



अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिष्मादयध्मम् ॥
ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥

इस मन्त्र जप का दशांश हवन करें, हवन सामग्री में यव, तिल तथा कर्पासमूल मिलायें तथा हवन आग्र-समिधा पर करें।

वैश्य वर्ण का फल

व्यापारकार्ये निरतः परकर्मोद्यतः सदा ।

निष्ठुरश्चतुरश्चैव वैश्यवर्णसमुद्ध्रवः ॥ (जातकोत्तम)

वैश्य वर्ण में जन्म होने से जातक व्यापार कार्य में लीन अर्थात् व्यवसायी सदा दूसरों के कार्यों में उद्यत, निर्मोही और चतुर होता है।

मानव गण फल

मानी धनी विशालाक्षो लक्ष्यवेधी धनुर्धरः ।

गौरः पौरजनग्राही जायते मानवे गणे ॥ (मानसागरी)

मनुष्य गण में जन्म हुआ है अतः जातक मानी, धनवान्, विशाल नेत्र वाला, धनुधारी, ठीक निशाना को वेध करने वाला, गौरवर्ण, नगरवासियों को वश में रखने वाला होगा।

नकुल योनि फल

परोपकरणे दक्षो धनाद्यश्च विचक्षणः ।

पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः ॥ (मानसागरी)

नकुलयोनि में जन्म हुआ है अतः जातक परोपकारी, कार्य में कुशल, धनवान्, पण्डित और माता-पिता का भक्त होगा।

विवाह, मैत्री एवं साझेदारी

उत्तराषाढ़ नक्षत्र के द्वितीय चरण के जातक के लिये अश्विनी, भरणी, पुनर्वसु का चतुर्थ चरण, पुष्य, अनुराधा, पूर्वभाद्रपद का चतुर्थ चरण, उत्तराभाद्रपद तथा रेवती नक्षत्र के व्यक्ति सर्वश्रेष्ठ हैं।

Aumarya

गुरुवार 2 अक्टूबर 2014 18:21:00
 शहर: Calgary
 राज्य: Alberta
 देश: Canada

समयक्षेत्र: 7
 समय संशोधन: 1
 रेखांश: 114प05'00
 अक्षांश: 51उ05'00

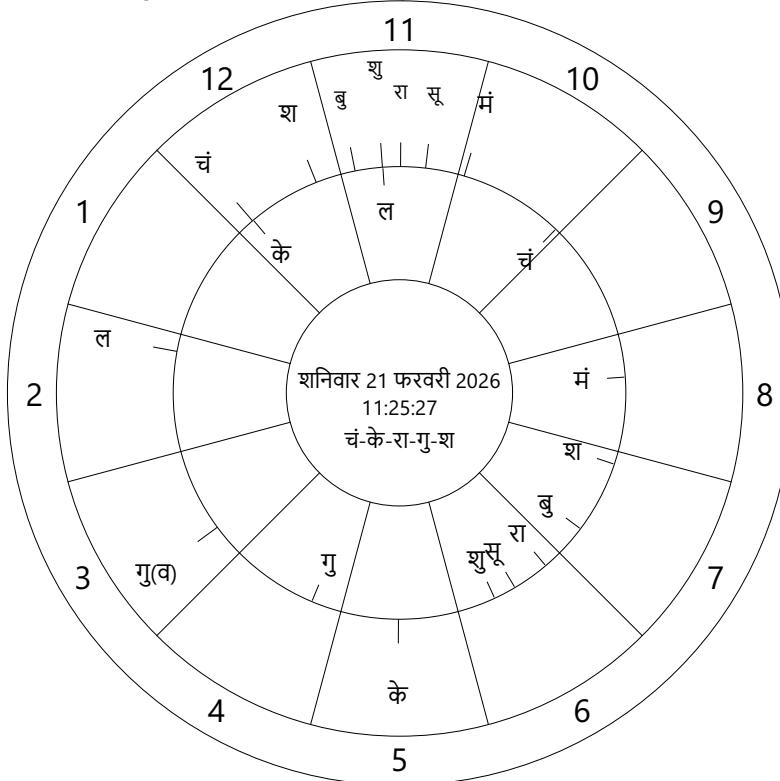
59. Dasha Effects Browser

इष्टकाल: 26:32:35
 सूर्योदय: 2 अक्टूबर 14 07:43:58
 सूर्यास्त: 2 अक्टूबर 14 19:06:19
 अयनांश : -24:03:53 लहरी

दशा ब्राउज़र टूल -विशेषताएँ

| | | | | |
|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|
| सू 19-08-2012 | चं 19-08-2018 | के 18-11-2025 | रा 15-02-2026 | गु 20-02-2026 |
| चं 19-08-2018 | मं 20-06-2019 | शु 01-12-2025 | गु 20-02-2026 | श 20-02-2026 |
| मं 19-08-2028 | रा 19-01-2020 | सू 05-01-2026 | श 24-02-2026 | बु 21-02-2026 |
| रा 19-08-2035 | गु 20-07-2021 | चं 16-01-2026 | बु 01-03-2026 | के 22-02-2026 |
| गु 19-08-2053 | श 19-11-2022 | मं 03-02-2026 | के 06-03-2026 | शु 22-02-2026 |
| श 19-08-2069 | बु 19-06-2024 | रा 15-02-2026 | शु 08-03-2026 | सू 23-02-2026 |
| बु 18-08-2088 | के 18-11-2025 | गु 19-03-2026 | सू 13-03-2026 | चं 23-02-2026 |
| के 19-08-2105 | शु 19-06-2026 | श 16-04-2026 | चं 14-03-2026 | मं 23-02-2026 |
| शु 19-08-2112 | सू 18-02-2028 | बु 20-05-2026 | मं 17-03-2026 | रा 23-02-2026 |

अंदर: जन्म कुण्डली - बाहर: गोचर कुण्डली



गोचर कुण्डली अष्टकवर्ग कक्षा

| कक्षा | अष्टक. | सर्वांगक |
|-------------|--------|----------|
| सू in कुंभ | 1 (मं) | 3 33 |
| चं in मीन | 1 (चं) | 5 28 |
| मं in मकर | 0 (ल) | 2 20 |
| बु in कुंभ | 1 (ल) | 6 33 |
| गु in मिथुन | 1 (छ) | 5 32 |
| शु in कुंभ | 1 (छ) | 5 33 |
| श in मीन | 0 (गु) | 5 28 |

गोचर कुण्डली

| अश | शुभत्व | षड् |
|-------------|----------|------|
| सू 08:23:01 | सम | 1.46 |
| च 25:31:26 | मित्र | 0.90 |
| मं 28:24:40 | उच्च | 1.24 |
| बु 26:17:48 | मित्र | 1.06 |
| गु 21:23:04 | अतिशत्रु | 1.24 |
| शु 19:18:46 | अतिमित्र | 1.39 |
| श 06:35:28 | मित्र | 1.37 |
| रा 14:44:22 | स्वराशि | |
| के 14:44:22 | सम | |



शनि की लघु कल्याणी दैया व कंटक शनि

जन्म राशि (चन्द्र राशि) से चतुर्थ एवं अष्टम् स्थान में शनि का भ्रमण लघु कल्याणी दैया कहलाता है -

कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्वर्तुर्धाष्टमे ।

आपकी जन्म राशि मकर है, जब शनि चतुर्थ अर्थात् मेष राशि में तथा अष्टम् अर्थात् सिंह राशि में भ्रमण करेगा तो शनि की लघु कल्याणी दैया कहलायेगी।

चन्द्र लग्न से गोचर में शनि चतुर्थ, सप्तम, दशम स्थान में हो तो कंटक शनि कहलाता है।

आपकी जन्म राशि मकर है अतः जब शनि मेष, कर्क और तुला में भ्रमण करेगा तो कंटक शनि कहा जायेगा।

आपके जीवन में लघु कल्याणी दैया व कंटक शनि कब-कब चलेगा इसकी जानकारी निम्न तालिका से करें -

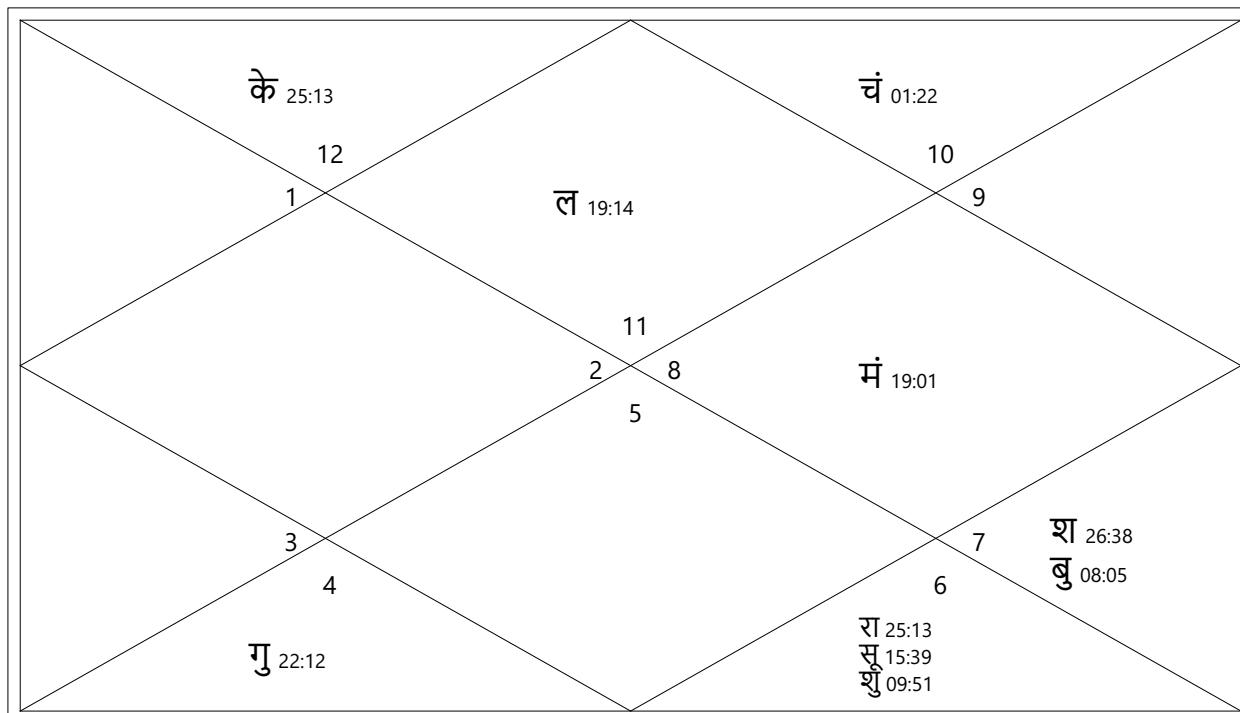
| शनि का गोचर | प्रारम्भ तिथि | समाप्ति तिथि | अंतराल वर्ष-मास-दिन | अष्टकवर्ग शनि सर्व |
|--|------------------|--------------------------|--------------------------|-----------------------|
| दैया की प्रथम आवृत्ति | | | | |
| चतुर्थ स्थानस्थ कंटक शनि व लघु कल्याणी दैया | मेष मेष (व) | | -- | 3 26 |
| सप्तम स्थानस्थ कंटक शनि | कर्क कर्क (व) | | -- | 4 36 |
| अष्टम् स्थानस्थ लघु कल्याणी दैया | सिंह सिंह (व) | | -- | 4 28 |
| दशम स्थानस्थ कंटक शनि | तुला तुला (व) | 02-11-2014 0-0-29 | -- | 2 21 |
| दैया की द्वितीय आवृत्ति | | | | |
| चतुर्थ स्थानस्थ कंटक शनि व लघु कल्याणी दैया | मेष मेष (व) | 02-06-2027 23-02-2028 | 20-10-2027 08-08-2029 | 0-4-18 1-5-15 |
| सप्तम स्थानस्थ कंटक शनि | कर्क कर्क (व) | 12-07-2034 | 27-08-2036 | 2-1-15 -- |
| अष्टम् स्थानस्थ लघु कल्याणी दैया | सिंह सिंह (व) | 27-08-2036 05-04-2039 | 22-10-2038 12-07-2039 | 2-1-25 0-3-7 |
| दशम स्थानस्थ कंटक शनि | तुला तुला (व) | 27-01-2041 26-09-2041 | 06-02-2041 11-12-2043 | 0-0-9 2-2-15 |
| दैया की तृतीय आवृत्ति | | | | |
| चतुर्थ स्थानस्थ कंटक शनि व लघु कल्याणी दैया | मेष मेष (व) | 07-04-2057 | 27-05-2059 | 2-1-20 -- |
| सप्तम स्थानस्थ कंटक शनि | कर्क कर्क (व) | 24-08-2063 09-05-2064 | 05-02-2064 12-10-2065 | 0-5-11 1-5-3 |
| अष्टम् स्थानस्थ लघु कल्याणी दैया | सिंह सिंह (व) | 12-10-2065 03-07-2066 | 03-02-2066 30-08-2068 | 0-3-21 2-1-27 |
| दशम स्थानस्थ कंटक शनि | तुला तुला (व) | 04-11-2070 31-03-2073 | 05-02-2073 23-10-2073 | 2-3-1 0-6-22 |

Aumarya

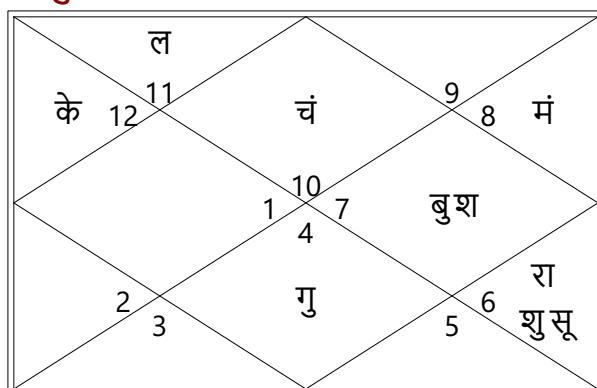


जन्म कुण्डली

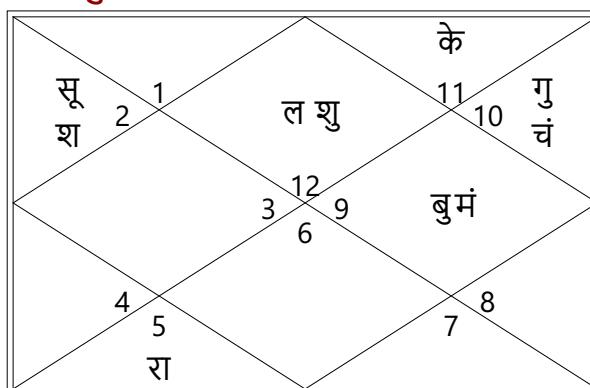
2 अक्टूबर 2014 * गुरुवार * 18:21:00 घंटे



चंद्र कुण्डली



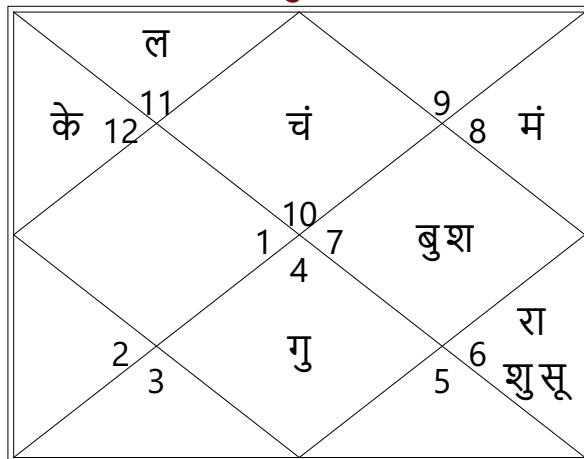
नवांश कुण्डली



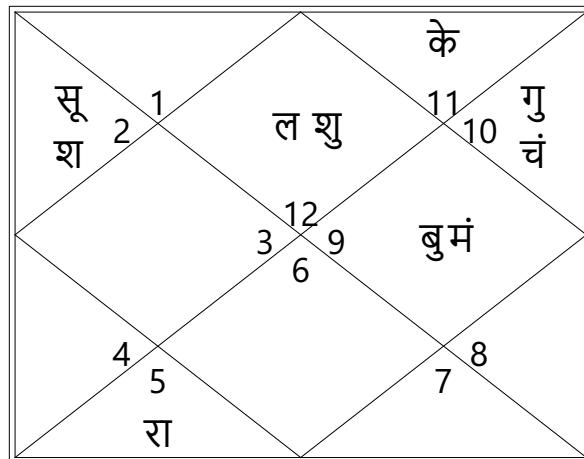
| ग्रह | व/अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | रा. स्वा. | न. स्वा. | उप स्वा. | उप स्वा. | शुभा- शुभ | षड्बल |
|--------|-----|---------|----------|-----------|--------------|----|--------------|-------------|-------------|-------------|--------------|-------|
| लग्न | | कुंभ | 19:14:21 | | शतभिषा | 4 | श | रा | मं | मं | | |
| सूर्य | | कन्या | 15:39:46 | 00:59:02 | हस्त | 2 | बु | चं | गु | रा | मित्र | 0.96 |
| चन्द्र | | मकर | 01:22:43 | 14:15:13 | उत्तराषाढ़ा | 2 | श | सू | गु | गु | मित्र | 1.10 |
| मंगल | | वृश्चिक | 19:01:54 | 00:42:12 | ज्येष्ठा | 1 | मं | बु | के | गु | स्वराशि | 1.41 |
| बुध | | तुला | 08:05:06 | 00:11:19 | स्वाति | 1 | शु | रा | रा | शु | अतिमित्र | 1.10 |
| गुरु | | कर्क | 22:12:26 | 00:10:12 | आश्लेषा | 2 | चं | बु | सू | शु | उच्च | 1.24 |
| शुक्र | (अ) | कन्या | 09:51:29 | 01:14:52 | उत्तराफालुनी | 4 | बु | सू | शु | बु | नीच | 1.34 |
| शनि | | तुला | 26:38:49 | 00:05:58 | विशाखा | 2 | शु | गु | शु | शु | उच्च | 1.61 |
| राहु | | कन्या | 25:13:47 | -00:00:33 | चित्रा | 1 | बु | मं | रा | बु | स्वराशि | |
| केतु | | मीन | 25:13:47 | -00:00:33 | रेवती | 3 | गु | बु | रा | बु | स्वराशि | |



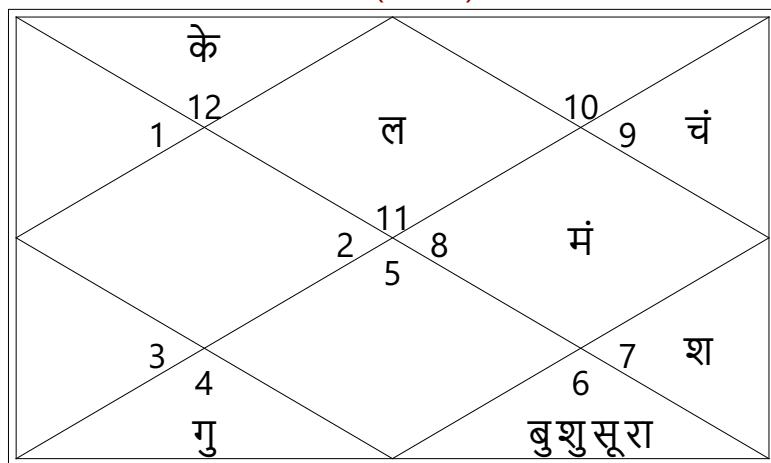
चन्द्र कुण्डली



नवांश



भाव (श्रीपति)



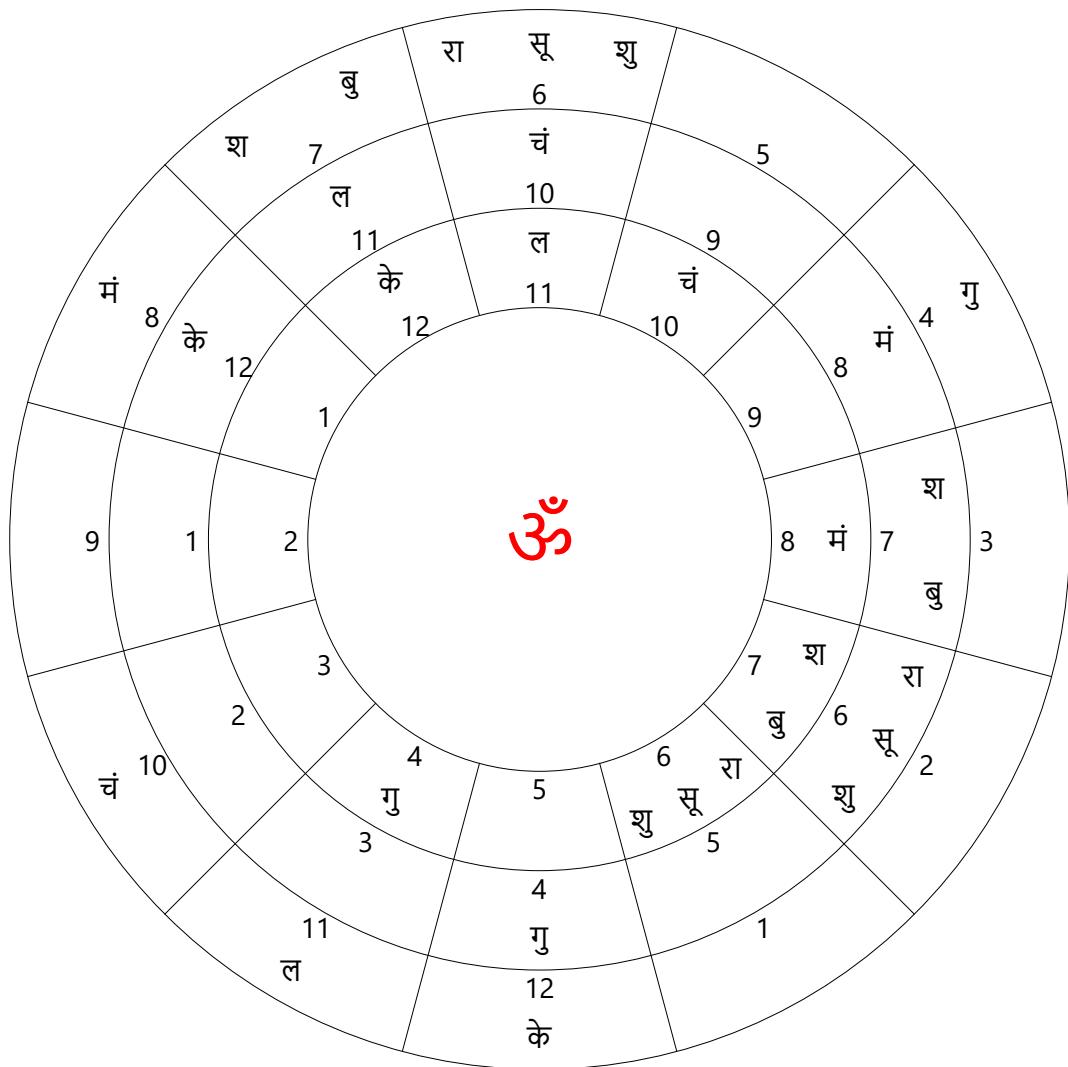
भाव स्पष्ट - श्रीपति विधि

| भाव | भाव आरम्भ | भाव मध्य | भाव अन्त |
|-------------|------------------|------------------|------------------|
| प्रथम भाव | कुंभ 05:55:14 | कुंभ 19:14:21 | मीन 05:55:14 |
| द्वितीय भाव | मीन 05:55:14 | मीन 22:36:07 | मेष 09:17:00 |
| तृतीय भाव | मेष 09:17:00 | मेष 25:57:53 | वृष 12:38:46 |
| चतुर्थ भाव | वृष 12:38:46 | वृष 29:19:39 | मिथुन 12:38:46 |
| पंचम भाव | मिथुन 12:38:46 | मिथुन 25:57:53 | कर्क 09:17:00 |
| षष्ठ भाव | कर्क 09:17:00 | कर्क 22:36:07 | सिंह 05:55:14 |
| सप्तम भाव | सिंह 05:55:14 | सिंह 19:14:21 | कन्या 05:55:14 |
| अष्टम भाव | कन्या 05:55:14 | कन्या 22:36:07 | तुला 09:17:00 |
| नवम भाव | तुला 09:17:00 | तुला 25:57:53 | वृश्चिक 12:38:46 |
| दशम भाव | वृश्चिक 12:38:46 | वृश्चिक 29:19:39 | धनु 12:38:46 |
| एकादश भाव | धनु 12:38:46 | धनु 25:57:53 | मकर 09:17:00 |
| द्वादश भाव | मकर 09:17:00 | मकर 22:36:07 | कुंभ 05:55:14 |



सुदर्शन चक्र

बाह्य वृत : सूर्य कुण्डली
 मध्य वृत : चन्द्र कुण्डली
 आन्तरिक वृत : जन्म कुण्डली



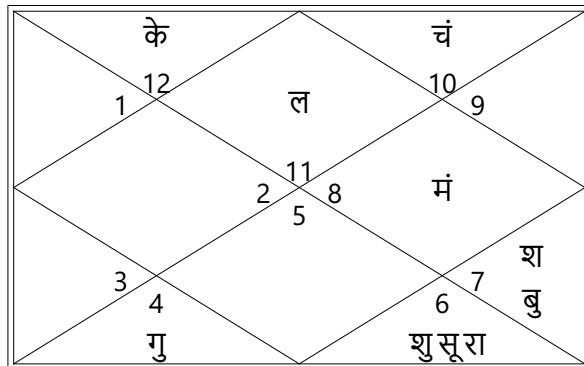
सुदर्शन चक्र के बाह्य वृत में सूर्य कुण्डली, मध्य वृत में चन्द्र कुण्डली व आन्तरिक वृत में जन्म कुण्डली बना कर तीनों कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों का एक साथ विश्लेषण किया जाता है।

Aumarya

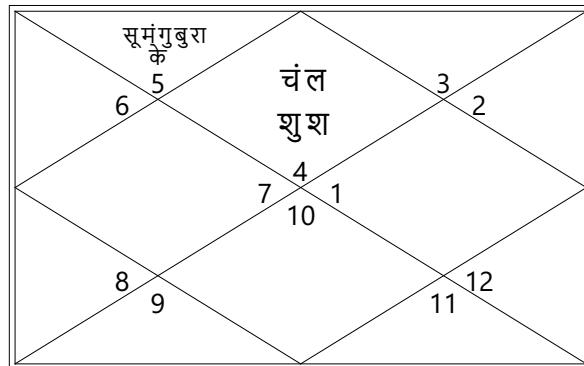


वर्ग कुण्डलियां-1

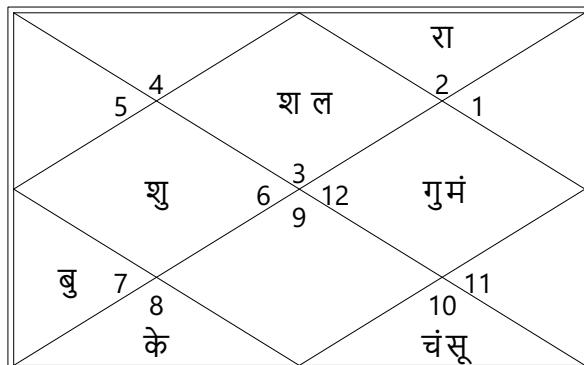
जन्म कुण्डली



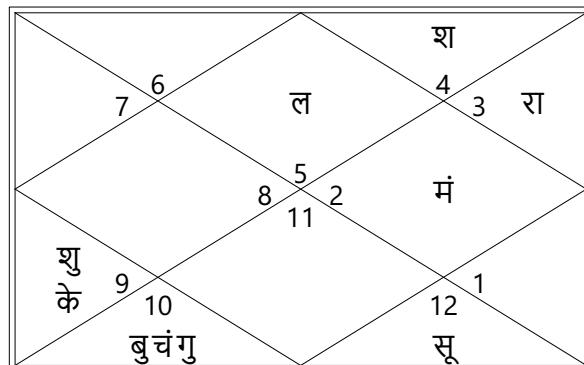
होरा (धन-सम्पत्ति)



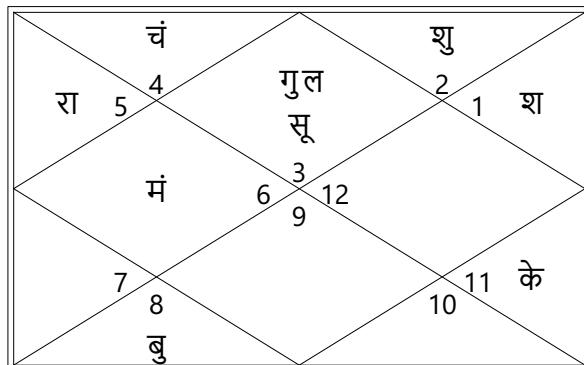
द्रेष्काण (भाई-बहन)



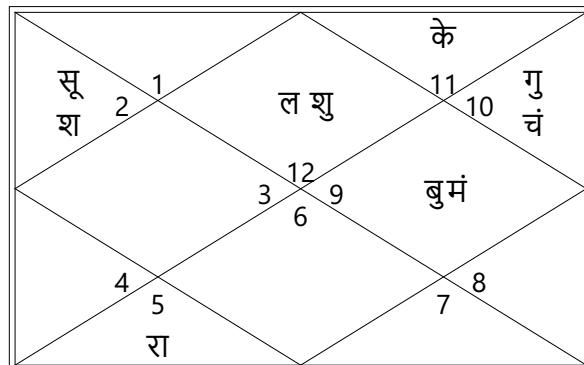
चतुर्थांश (भाग्य)



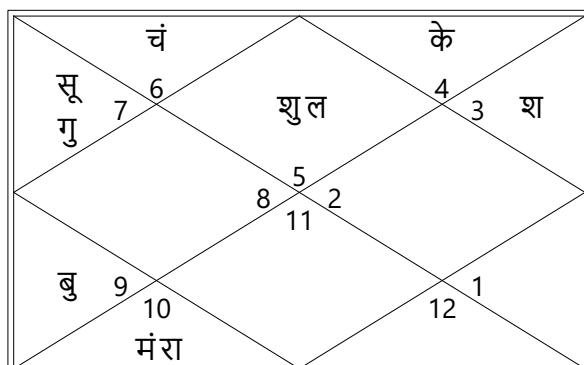
सप्तांश (संतान)



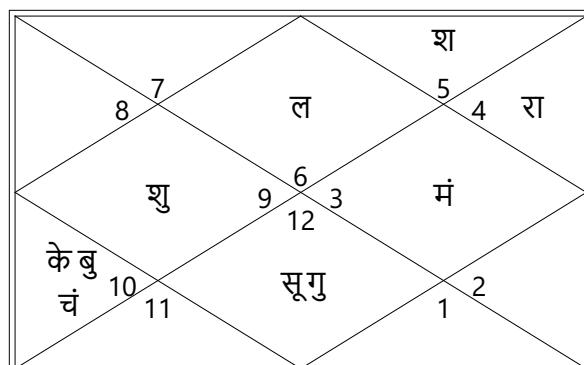
नवांश (जीवनसाथी)



दशांश (कर्मफल)



द्वादशांश (माता-पिता)

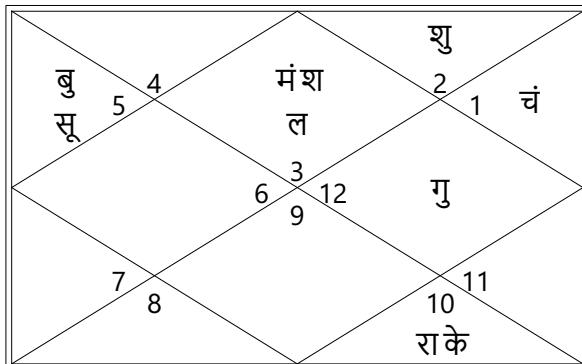


Aumarya

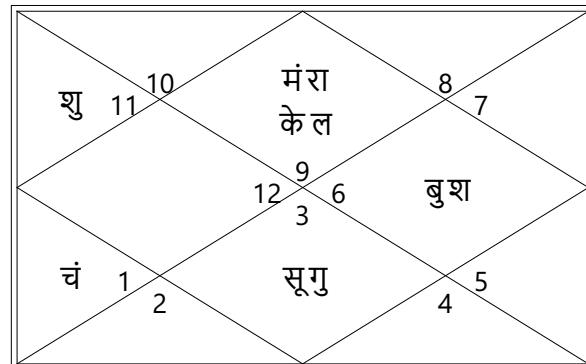
वर्ग कुण्डलियां-2



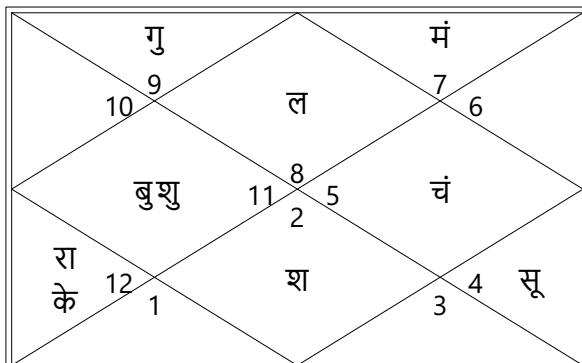
षोडशांश (वाहन)



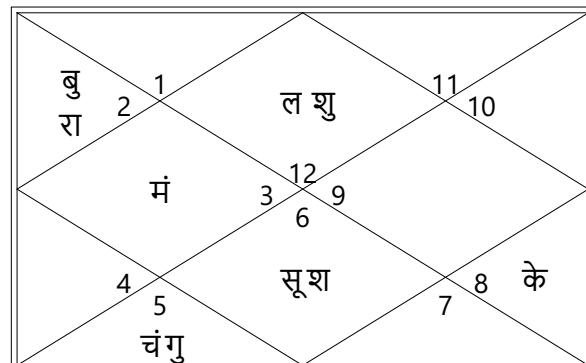
विंशांश (उपासना)



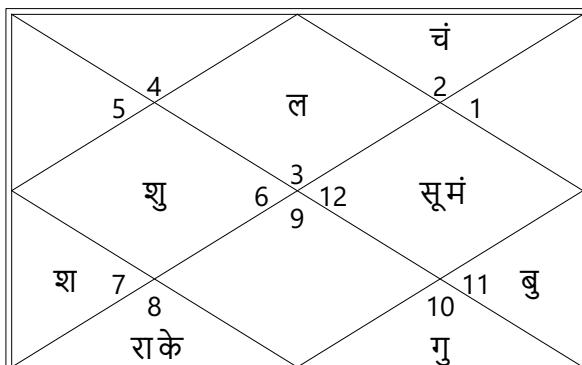
चतुर्विंशांश (विद्या)



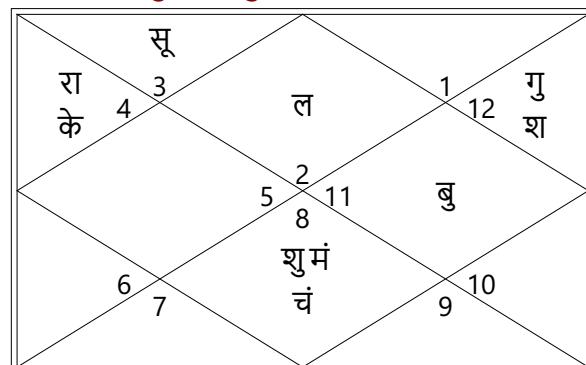
सप्तविंशांश (बलाबल)



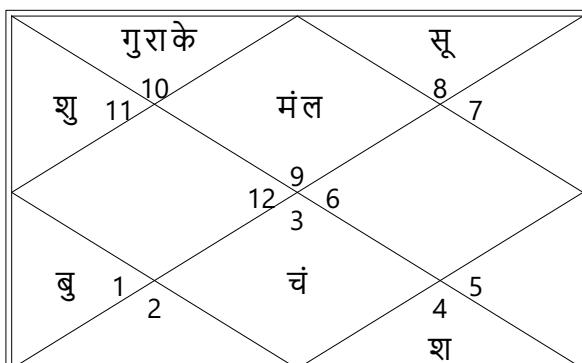
त्रिंशांश (अरिष्ट)



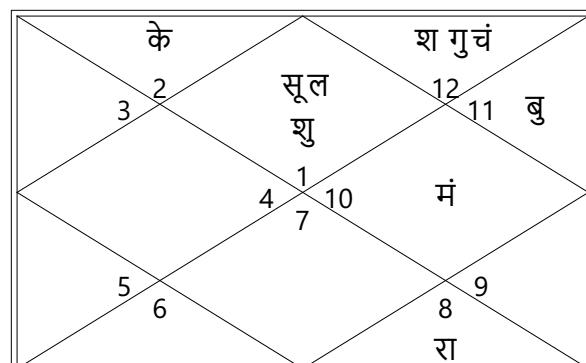
खवेदांश (शुभ-अशुभफल)



अक्षवेदांश (सभी क्षेत्र)



षष्ठ्यांश (सभी क्षेत्र)





उपग्रह

गुलिकादि उपग्रह समूह

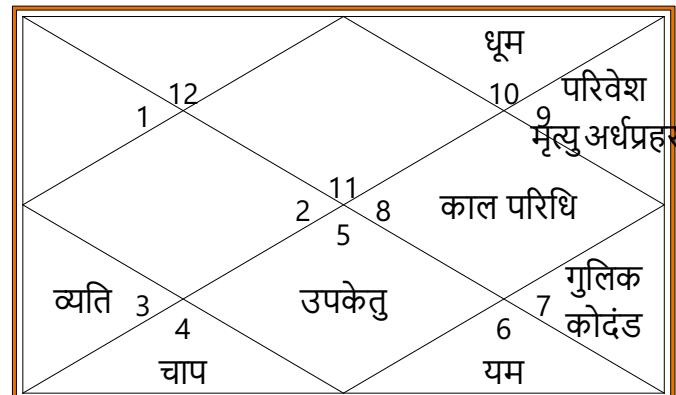
जन्म मध्याह्न से सूर्यास्त के बीच * सूर्योदय-सूर्यास्त : 07:43-19:06 * जन्मवार : गुरुवार

| उपग्रह | स्वामी | उपग्रह की अवधि | आरम्भ (पराशर विधि) | | | | अन्त (कालिदास विधि) | | | |
|-----------|--------|----------------|--------------------|----------|-------------|----|---------------------|----------|-------------|----|
| | | | राशि | अंश | नक्षत्र | पद | राशि | अंश | नक्षत्र | पद |
| कालवेला | सू. | 11:59-13:25 | वृश्चिक | 00:27:42 | विशाखा | 4 | वृश्चिक | 16:11:29 | अनुराधा | 4 |
| परिधि | च | 13:25-14:50 | वृश्चिक | 16:11:29 | अनुराधा | 4 | धनु | 03:42:42 | मूल | 2 |
| मृत्यु | मं | 14:50-16:15 | धनु | 03:42:42 | मूल | 2 | धनु | 25:43:14 | पूर्वाषाढ़ा | 4 |
| अर्धप्रहर | बु | 16:15-17:41 | धनु | 25:43:14 | पूर्वाषाढ़ा | 4 | मकर | 28:17:34 | धनिष्ठा | 2 |
| यमकण्टक | गु | 07:43-09:09 | कन्या | 15:13:39 | हस्त | 2 | तुला | 00:19:37 | चित्रा | 3 |
| कोदण्ड | शु | 09:09-10:34 | तुला | 00:19:37 | चित्रा | 3 | तुला | 15:20:48 | स्वाति | 3 |
| गुलिक | श | 10:34-11:59 | तुला | 15:20:48 | स्वाति | 3 | वृश्चिक | 00:27:42 | विशाखा | 4 |

धूमादि उपग्रह समूह

| उपग्रह | स्वामी | राशि | अंश | नक्षत्र | पद |
|-----------|--------|-------|----------|----------------|----|
| धूम | मं | मकर | 28:59:46 | धनिष्ठा | 2 |
| व्यतिपात | रा | मिथुन | 01:00:14 | मृगशिरा | 3 |
| परिवेश | चं | धनु | 01:00:14 | मूल | 1 |
| इन्द्रचाप | शु | कर्क | 28:59:46 | आश्लेषा | 4 |
| उपकेतु | के | सिंह | 15:39:46 | पूर्वाफाल्नुनी | 1 |

उपग्रह



अन्य विशेष लग्न व गणनाएं

| | | | | |
|--------------------|---------|----------------------|-------------------------------|----------------|
| भाव लग्न | कुंभ | 24:29:10 | योगी बिन्दु | 20:22:29 कन्या |
| होरा लग्न | सिंह | 03:44:42 | योगी | चं |
| घटिका लग्न | धनु | 01:31:16 | अवयोगी/अन्य योगी | बु/बु |
| इन्दु लग्न | सिंह | 15:00:00 | 64वां नवांश (चन्द्र/लग्न) | मेष/मिथुन |
| बीज स्फुट | मिथुन | 17:43:40 | 22वां द्रेष्काण (लग्न/चन्द्र) | मकर/सिंह |
| जन्म कुण्डली/नवांश | विषम/सम | 50 प्रतिशत (मध्यमफल) | सर्प द्रेष्काण | मंगलगुरुकेतु |

Aumarya

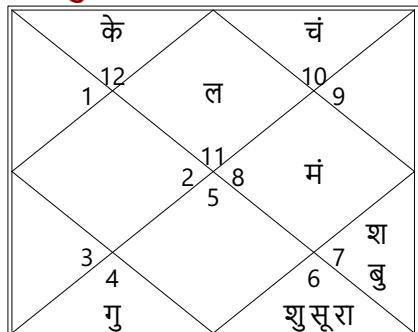


जन्म कुण्डलियाँ

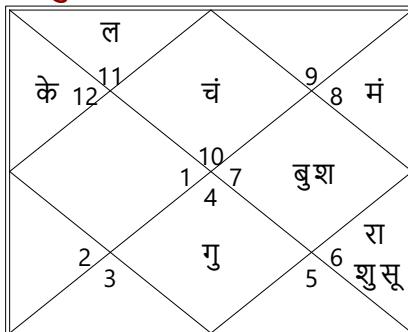
जन्म दिन : 2 अक्टूबर 2014, गुरुवार
जन्म समय : 18:21:00 घटे
जन्म स्थान : Calgary, Alberta, Canada

रेखांश/अक्षांश : 114°05'00 51°05'00
समयक्षेत्र : 07:00:00 घटे
समय संशोधन : 01:00:00 घटे

जन्म कुण्डली



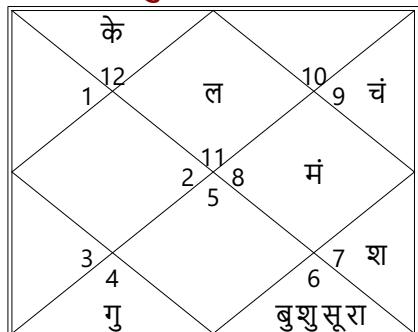
चंद्र कुण्डली



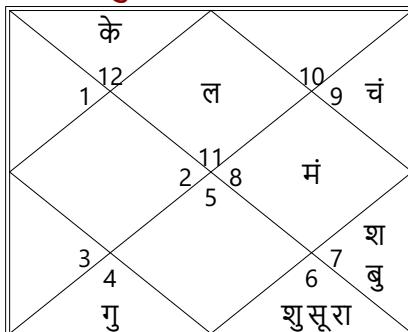
सूर्य कुण्डली



श्रीपति भाव कुण्डली



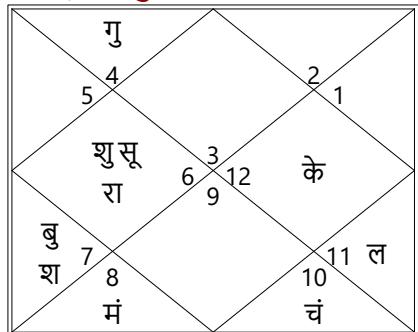
सम भाव कुण्डली



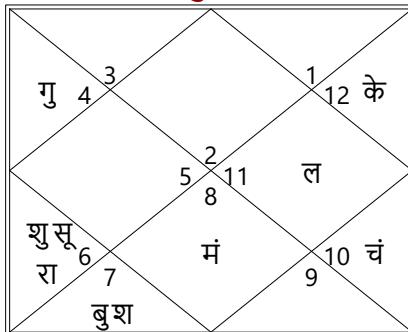
के.पी. भाव कुण्डली



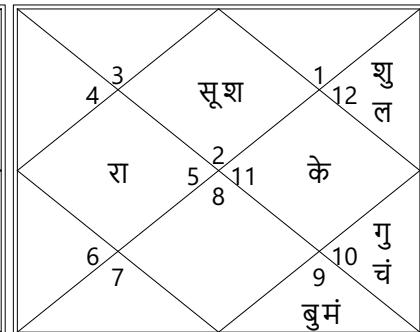
आरुढ़ लग्र कुण्डली



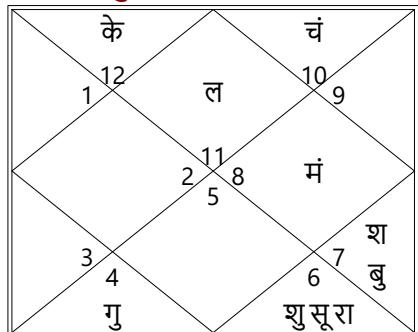
कारकांश (जन्म कुण्डली)



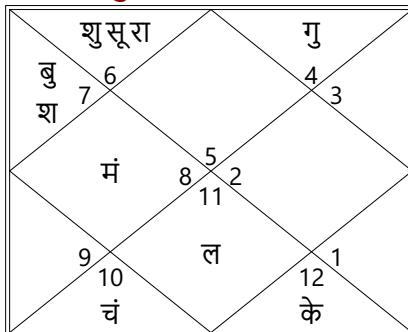
कारकांश (नवांश)



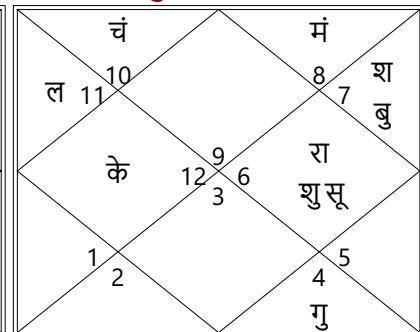
भाव लग्र कुण्डली



होरा लग्र कुण्डली



घटिका लग्र कुण्डली





नैसर्गिक मैत्री चक्र

| | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|-------|------------------------------|------------------------------|---------------------------------|-----------------------------|-------------------------|----------------------------|---------------------------------|---------------------------------|--------------------------------|
| मित्र | चन्द्र मंगल गुरु | सूर्य बुध | सूर्य चन्द्र गुरु केतु | सूर्य शुक्र | सूर्य चन्द्र मंगल | बुध शनि राहु केतु | बुध शुक्र राहु | गुरु शुक्र शनि | मंगल शुक्र |
| शत्रु | शुक्र शनि राहु केतु | राहु केतु | बुध राहु | चन्द्र | बुध शुक्र | सूर्य चन्द्र | सूर्य चन्द्र मंगल केतु | सूर्य चन्द्र मंगल केतु | सूर्य चन्द्र शनि केतु |
| सम | बुध | मंगल गुरु शुक्र शनि | शुक्र शनि | मंगल गुरु शनि राहु | शनि राहु केतु | मंगल गुरु | गुरु | बुध | गुरु बुध |

तात्कालिक मैत्री चक्र

| | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|-------|---------------------------|--------------------------|---------------------------------------|---|--------------------------------|---------------------------|---|----------------------------|---|
| मित्र | मंगल बुध गुरु शनि | मंगल बुध शनि केतु | सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि राहु | सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शुक्र राहु | सूर्य बुध शुक्र शनि राहु | मंगल बुध गुरु शनि | सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शुक्र राहु | मंगल बुध गुरु शनि | चन्द्र |
| शत्रु | चन्द्र शुक्र राहु केतु | सूर्य गुरु शुक्र राहु | गुरु केतु | शनि केतु | चन्द्र मंगल केतु | सूर्य चन्द्र राहु केतु | बुध केतु | सूर्य चन्द्र शुक्र केतु | सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र शनि राहु |

पंचधा मैत्री चक्र

| | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|----------|--------------------|------------|-----------------------|-------------------|--------------------------|--------------|--------------------------|----------------------|----------------------|
| अतिमित्र | मंगल गुरु | बुध | सूर्य चन्द्र | सूर्य शुक्र | सूर्य | बुध शनि | शुक्र राहु | गुरु शनि | |
| मित्र | बुध | मंगल शनि | शुक्र शनि | मंगल गुरु राहु | शनि राहु | मंगल गुरु | गुरु | बुध | |
| सम | चन्द्र शनि | सूर्य केतु | बुध गुरु राहु केतु | चन्द्र | चन्द्र मंगल बुध शुक्र | राहु केतु | सूर्य चन्द्र मंगल बुध | मंगल शुक्र | चन्द्र मंगल शुक्र |
| शत्रु | | गुरु शुक्र | | शनि केतु | केतु | | | | बुध गुरु |
| अतिशत्रु | शुक्र राहु केतु | राहु | | | | सूर्य चन्द्र | केतु | सूर्य चन्द्र केतु | सूर्य शनि राहु |



षोडशवर्ग सारणी

षोडशवर्ग में राशियों में ग्रह

| | लग्र | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|--------------|---------|---------|---------|---------|---------|-------|---------|-------|---------|---------|
| जन्म | कुंभ | कन्या | मकर | वृश्चिक | तुला | कर्क | कन्या | तुला | कन्या | मीन |
| होरा | कर्क | सिंह | कर्क | सिंह | सिंह | कर्क | कर्क | सिंह | सिंह | सिंह |
| द्रेष्काण | मिथुन | मकर | मकर | मीन | तुला | मीन | कन्या | मिथुन | वृष | वृश्चिक |
| चतुर्थश | सिंह | मीन | मकर | वृष | मकर | मकर | धनु | कक | मिथुन | धनु |
| सप्तांश | मिथुन | मिथुन | कर्क | कन्या | वृश्चिक | मिथुन | वृष | मेष | सिंह | कुंभ |
| नवांश | मीन | वृष | मकर | धनु | धनु | मकर | मीन | वृष | सिंह | कुंभ |
| दशांश | सिंह | तुला | कन्या | मकर | धनु | तुला | सिंह | मिथुन | मकर | कर्क |
| द्वादशांश | कन्या | मीन | मकर | मिथुन | मकर | मीन | धनु | सिंह | कर्क | मकर |
| षोडशांश | मिथुन | सिंह | मेष | मिथुन | सिंह | मीन | वृष | मिथुन | मकर | मकर |
| विंशांश | धनु | मिथुन | मेष | धनु | कन्या | मिथुन | कुंभ | कन्या | धनु | धनु |
| चतुर्विंशांश | वृश्चिक | कर्क | सिंह | तुला | कुंभ | धनु | कुंभ | वृष | मीन | मीन |
| सप्तविंशांश | मीन | कन्या | सिंह | मिथुन | वृष | सिंह | मीन | कन्या | वृष | वृश्चिक |
| त्रिंशांश | मिथुन | मीन | वृष | मीन | कुंभ | मकर | कन्या | तुला | वृश्चिक | वृश्चिक |
| खवेदांश | वृष | मिथुन | वृश्चिक | वृश्चिक | कुंभ | मीन | वृश्चिक | मीन | कर्क | कर्क |
| अक्षवेदांश | धनु | वृश्चिक | मिथुन | धनु | मेष | मकर | कुंभ | कर्क | मकर | मकर |
| षष्ठ्यांश | मेष | मेष | मीन | मकर | कुंभ | मीन | मेष | मीन | वृश्चिक | वृष |

षोडशवर्ग में शुभाशुभ

| | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|--------------|-----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|-----------|-----------|
| जन्म | मित्र | मित्र | स्वराशि | अतिमित्र | उच्च | नीच | उच्च | स्वराशि | स्वराशि |
| होरा | मूलत्रिक. | स्वराशि | सम | सम | सम | अतिशत्रु | अतिशत्रु | सम | सम |
| द्रेष्काण | अतिशत्रु | शत्रु | सम | अतिमित्र | स्वराशि | नीच | सम | उच्च | उच्च |
| चतुर्थश | अतिमित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | नीच | मित्र | अतिशत्रु | मूलत्रिक. | मूलत्रिक. |
| सप्तांश | शत्रु | स्वराशि | सम | मित्र | अतिशत्रु | स्वराशि | नीच | सम | सम |
| नवांश | सम | शत्रु | अतिमित्र | मित्र | नीच | उच्च | अतिमित्र | सम | सम |
| दशांश | नीच | अतिमित्र | उच्च | मित्र | सम | सम | सम | सम | सम |
| द्वादशांश | सम | शत्रु | अतिशत्रु | शत्रु | स्वराशि | मित्र | अतिशत्रु | सम | सम |
| षोडशांश | मूलत्रिक. | मित्र | सम | सम | स्वराशि | स्वराशि | अतिमित्र | सम | सम |
| विंशांश | मित्र | शत्रु | सम | उच्च | सम | सम | सम | सम | मूलत्रिक. |
| चतुर्विंशांश | अतिमित्र | अतिमित्र | शत्रु | मित्र | स्वराशि | अतिमित्र | अतिमित्र | सम | स्वराशि |
| सप्तविंशांश | शत्रु | अतिमित्र | सम | अतिमित्र | अतिमित्र | मीन | सम | उच्च | उच्च |
| त्रिंशांश | आतिमित्र | उच्च | अतिमित्र | शत्रु | नीच | नीच | उच्च | उच्च | उच्च |
| खवेदांश | शत्रु | नीच | स्वराशि | मित्र | स्वराशि | शत्रु | शत्रु | सम | सम |
| अक्षवेदांश | अतिमित्र | अतिमित्र | अतिमित्र | शत्रु | नीच | सम | सम | सम | सम |
| षष्ठ्यांश | उच्च | शत्रु | उच्च | मित्र | स्वराशि | मित्र | शत्रु | नीच | नीच |

विशेषक बल

| | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|----------|-------|--------|------|-----|------|-------|-----|------|------|
| षड्वर्ग | 12 | 15 | 14 | 16 | 15 | 16 | 15 | 9 | 7 |
| सप्तवर्ग | 14 | 15 | 13 | 14 | 16 | 16 | 14 | 9 | 7 |
| दशवर्ग | 15 | 13 | 14 | 13 | 16 | 15 | 14 | 10 | 8 |
| षोडशवर्ग | 15 | 13 | 14 | 14 | 16 | 16 | 14 | 11 | 7 |



ग्रहों का षड्बल

| | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|-------------------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|
| उच्च बल | 8.11 | 19.46 | 37.01 | 52.31 | 54.26 | 5.71 | 57.78 |
| सप्तवर्गीय बल | 114.38 | 123.75 | 90.00 | 105.00 | 127.50 | 129.38 | 97.50 |
| ओज-युग्म बल | 0.00 | 30.00 | 15.00 | 30.00 | 0.00 | 30.00 | 15.00 |
| केन्द्रादिं बल | 30.00 | 15.00 | 60.00 | 15.00 | 15.00 | 30.00 | 15.00 |
| द्रेष्काण बल | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| 1. स्थान बल | 152.49 | 188.21 | 202.01 | 202.31 | 196.76 | 195.09 | 185.28 |
| 2. दिग्बल | 35.45 | 10.68 | 56.57 | 16.28 | 9.01 | 26.49 | 37.53 |
| नतोन्त्र बल | 35.51 | 24.49 | 24.49 | 60.00 | 35.51 | 35.51 | 24.49 |
| पक्ष बल | 24.76 | 35.24 | 24.76 | 24.76 | 35.24 | 35.24 | 24.76 |
| त्रिभाग बल | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 60.00 | 0.00 | 60.00 |
| वर्ष बल | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 15.00 |
| मास बल | 0.00 | 30.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| वार बल | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 45.00 | 0.00 | 0.00 |
| होरा बल | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 60.00 | 0.00 |
| आयन बल | 24.93 | 57.09 | 1.30 | 45.96 | 50.74 | 27.95 | 53.22 |
| युद्ध बल | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| 3. काल बल | 85.20 | 146.82 | 50.55 | 130.73 | 226.48 | 158.69 | 177.47 |
| 4. चेष्टा बल | 24.93 | 35.24 | 42.92 | 55.19 | 33.78 | 6.49 | 24.71 |
| 5. नैसर्गिक बल | 60.00 | 51.42 | 17.16 | 25.74 | 34.26 | 42.84 | 8.58 |
| 6. द्वक बल | 17.02 | -36.63 | 54.39 | 33.79 | -16.54 | 14.12 | 48.54 |
| कुल षड्बल | 375.09 | 395.74 | 423.60 | 464.03 | 483.76 | 443.73 | 482.11 |
| षड्बल (रूप में) | 6.25 | 6.60 | 7.06 | 7.73 | 8.06 | 7.40 | 8.04 |
| न्यूनतम वांछनीय | 390 | 360 | 300 | 420 | 390 | 330 | 300 |
| वांछनीय का अंश | 0.96 | 1.10 | 1.41 | 1.10 | 1.24 | 1.34 | 1.61 |
| स्थान बल वांछित का अंश | 0.92 | 1.42 | 2.10 | 1.23 | 1.19 | 1.47 | 1.93 |
| दिग्बल वांछित का अंश | 1.01 | 0.21 | 1.89 | 0.47 | 0.26 | 0.53 | 1.25 |
| काल बल वांछित का अंश | 0.76 | 1.47 | 0.75 | 1.17 | 2.02 | 1.59 | 2.65 |
| चेष्टा बल वांछित का अंश | 0.50 | 1.17 | 1.07 | 1.10 | 0.68 | 0.22 | 0.62 |
| द्वक्बल वांछित का अंश | 0.83 | 1.43 | 0.06 | 1.53 | 1.69 | 0.70 | 2.66 |
| तुलनात्मक स्थिति | 7 | 6 | 2 | 5 | 4 | 3 | 1 |
| इष्ट फल | 17.43 | 27.35 | 39.97 | 53.75 | 44.02 | 6.10 | 41.25 |
| कष्ट फल | 42.57 | 32.65 | 20.03 | 6.25 | 15.98 | 53.90 | 18.75 |

भावबल

| | I | II | III | IV | V | VI | VII | VIII | IX | X | XI | XII |
|---------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|-----|-----|-----|-----|
| भावमध्य राशि | कु | मी | मे | वृ | मि | क | सि | क | तु | वृ | ध | म |
| भावमध्य अंश | 19 | 19 | 19 | 19 | 19 | 19 | 19 | 19 | 19 | 19 | 19 | 19 |
| भावाधिपति बल | 482 | 483 | 423 | 443 | 464 | 395 | 375 | 464 | 443 | 423 | 483 | 482 |
| भाव दिग्बल | 60 | 40 | 10 | 0 | 20 | 50 | 30 | 9 | 19 | 30 | 50 | 20 |
| भाव दृष्टि बल | 9 | 34 | -24 | -62 | -39 | -17 | 1 | 18 | 44 | 54 | -5 | -2 |
| ग्रह | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 60 | 0 | -60 | 0 | -60 | 0 | 0 |
| दिन-रात्रि | 15 | 0 | 0 | 0 | 15 | 0 | 15 | 15 | 15 | 15 | 0 | 0 |
| कुल भावबल | 567 | 558 | 409 | 381 | 459 | 488 | 422 | 448 | 523 | 463 | 529 | 499 |



ग्रहों पर दृष्टि

दृष्टि देने वाले ग्रह

| द्रष्ट ग्रह | अंश | सूर्य 165:39 | चन्द्र 271:22 | मंगल 229:01 | बुध 188:05 | गुरु 112:12 | शुक्र 159:51 | शनि 206:38 | राहु 175:13 | केतु 355:13 |
|----------------|--------|-----------------|------------------|----------------|---------------|----------------|-----------------|---------------|----------------|----------------|
| सूर्य | 165:39 | - | 1/2 (22) | - (1) | - | 1/4 (11) | - | - | - | 4/4 (40) |
| चन्द्र | 271:22 | 1/2 (37) | - | 1/4 (6) | 3/4 (38) | 4/4 (18) | 1/2 (34) | 3/4 (57) | 4/4 (48) | - (11) |
| मंगल | 229:01 | 1/4 (18) | - | - | - (5) | 4/4 (58) | 1/4 (24) | - | 1/4 (11) | 4/4 (56) |
| बुध | 188:05 | - | 1/4 (11) | - | - | 3/4 (30) | - | - | - | 3/4 (53) |
| गुरु | 112:12 | - | 4/4 (49) | 1/2 (28) | 1/4 (7) | - | - | 4/4 (55) | - (1) | 4/4 (58) |
| शुक्र | 159:51 | - | 1/2 (25) | - (4) | - | 1/4 (8) | - | - | - | 4/4 (29) |
| शनि | 206:38 | - (5) | 1/4 (2) | - | - | 3/4 (47) | - (8) | - | - | 3/4 (45) |
| राहु | 175:13 | - | 1/2 (18) | - | - | 1/4 (18) | - | - | - | 4/4 (59) |
| केतु | 355:13 | 4/4 (55) | 1/4 (38) | 1/2 (23) | - (34) | 4/4 (56) | 4/4 (52) | - (1) | 4/4 (59) | - |

श्रीपति भावों पर दृष्टि

दृष्टि देने वाले ग्रह

| द्रष्ट भाव | अंश | सूर्य 165:39 | चन्द्र 271:22 | मंगल 229:01 | बुध 188:05 | गुरु 112:12 | शुक्र 159:51 | शनि 206:38 | राहु 175:13 | केतु 355:13 |
|---------------|--------|-----------------|------------------|----------------|---------------|----------------|-----------------|---------------|----------------|----------------|
| प्रथम | 319:14 | 7 | 8 | 59 | 18 | 46 | 18 | 33 | 35 | - |
| द्वितीय | 352:36 | 56 | 36 | 26 | 29 | 59 | 53 | 4 | 54 | - |
| तृतीय | 25:57 | 39 | 32 | 13 | 51 | 13 | 36 | 58 | 45 | - |
| चतुर्थ | 59:19 | 23 | 2 | 60 | 34 | - | 20 | 43 | 55 | 19 |
| पंचम | 85:57 | 9 | 49 | 53 | 21 | - | 6 | 30 | 14 | 45 |
| षष्ठ | 112:36 | - | 49 | 28 | 7 | - | - | 55 | 1 | 58 |
| सप्तम | 139:14 | - | 36 | 14 | - | - | - | 14 | - | 35 |
| अष्टम | 172:36 | - | 19 | - | - | 15 | - | - | - | 54 |
| नवम | 205:57 | 5 | 2 | - | - | 46 | 8 | - | - | 45 |
| दशम | 239:19 | 28 | - | - | 10 | 52 | 34 | 5 | 19 | 55 |
| एकादश | 265:57 | 39 | - | 3 | 32 | 7 | 36 | 58 | 45 | 14 |
| द्वादश | 292:36 | 23 | - | 20 | 37 | 59 | 17 | 47 | 58 | 1 |



ग्रहों की अवस्थाएं

| ग्रह | जाग्रदाद्य अवस्था (3 का समूह) | बालाद्य अवस्था (5 का समूह) | लजिताद्य अवस्था (6 का समूह) | दीप्ताद्य अवस्था (9 का समूह) | शयनाद्य अवस्था (12 का समूह) |
|--------|-------------------------------------|----------------------------------|-----------------------------------|------------------------------------|-----------------------------------|
| सूर्य | स्वप्न (मध्यमफल) | युवा (पूर्णफल) | मुदित | शान्त (मित्र) | प्रकाशन (उदार) |
| चन्द्र | स्वप्न (मध्यमफल) | मृत (शून्यफल) | मुदित | शान्त (मित्र) | गमन (नेत्ररोग भयभीत) |
| मंगल | जागृत (पूर्णफल) | कुमार (आधाफल) | मुदित | स्वस्थ (स्वक्षेत्र) | कौतुक (विनोदी) |
| बुध | स्वप्न (मध्यमफल) | कुमार (आधाफल) | क्षुधित | मुदित (अधिमित्र) | कौतुक (विलक्षण गानविद्या) |
| गुरु | जागृत (पूर्णफल) | कुमार (आधाफल) | गर्वित मुदित | दीप्त (उच्च) | उपवेश (वाचाल/गर्वला) |
| शुक्र | सुषुप्ति (शून्यफल) | वृद्ध (अत्यलपफल) | क्षोभित | खल (पापराशि) | कौतुक (उल्कृष्ट विद्यायुक्त) |
| शनि | जागृत (पूर्णफल) | मृत (शून्यफल) | गर्वित | दीप्त (उच्च) | सभावास (नीनिपूर्ण महातेजस्वी) |
| राहु | जागृत (पूर्णफल) | बाल (चतुर्थांशफल) | मुदित क्षोभित | स्वस्थ (स्वक्षेत्र) | सभावास (विद्वान अनेक गुण) |
| केतु | जागृत (पूर्णफल) | बाल (चतुर्थांशफल) | मुदित | स्वस्थ (स्वक्षेत्र) | कौतुक (विनोदी स्थानभ्रष्ट) |

टिप्पणी - जाग्रदाद्य व बालाद्य अवस्थाओं में कोष्ठक में ग्रहों के फल की मात्रा व शयनाद्य अवस्था में ग्रहों की अवस्थाओं का फल दिया गया है।

नीचभंग योग

शुक्र के नीचभंग योग :-

- शुक्र नवांश में उच्च का है।
- शुक्र का डिस्पोजिटर चन्द्र से केन्द्र में है।
- गुरु जोकि उच्च राशि का स्वामी है, वह चन्द्र से केन्द्र में है।
- गुरु जोकि उच्च राशि का स्वामी है, वह डिस्पोजिटर से केन्द्र में है।

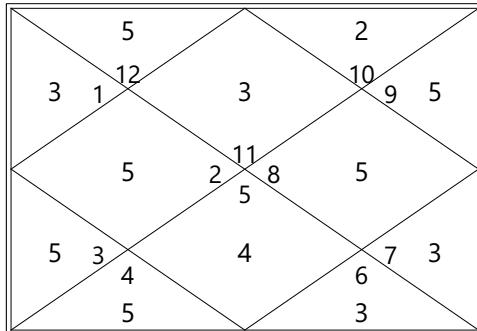


अष्टकवर्ग - भिन्नाष्टक वर्ग

सूर्य

| सूर्य राशि | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | |
|------------|---|---|---|---|----|----|----|---|---|---|---|---|----|
| शनि | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| गुरु | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| मंगल | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| सूर्य | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| शुक्र | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 3 |
| बुध | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| चन्द्र | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 4 |
| लग्न | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 6 |
| योग | 3 | 3 | 5 | 5 | 2 | 3 | 5 | 3 | 5 | 5 | 5 | 4 | 48 |

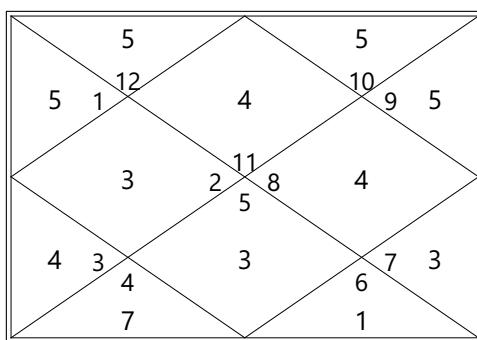
सूर्य



चन्द्र

| चन्द्र राशि | 10 | 11 | 12 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | |
|-------------|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|
| शनि | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 4 |
| गुरु | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 7 |
| मंगल | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 7 |
| सूर्य | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 6 |
| शुक्र | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 7 |
| बुध | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 8 |
| चन्द्र | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 6 |
| लग्न | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 4 |
| योग | 5 | 4 | 5 | 5 | 3 | 4 | 7 | 3 | 1 | 3 | 4 | 5 | 49 |

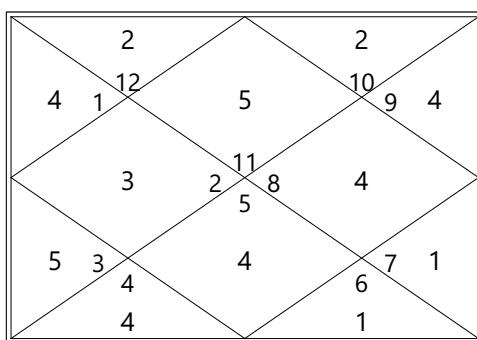
चन्द्र



मंगल

| मंगल राशि | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | |
|-----------|---|---|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|----|
| शनि | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 7 |
| गुरु | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| मंगल | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 7 |
| सूर्य | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 5 |
| शुक्र | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 4 |
| बुध | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 4 |
| चन्द्र | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| लग्न | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 5 |
| योग | 4 | 4 | 2 | 5 | 2 | 4 | 3 | 5 | 4 | 4 | 1 | 1 | 39 |

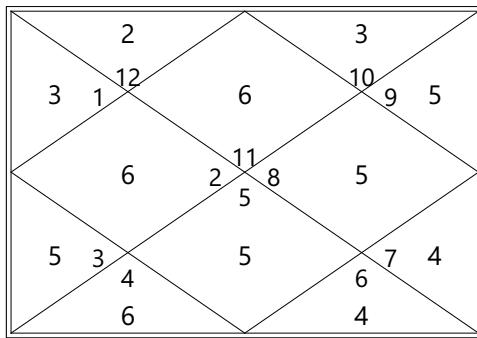
मंगल



बुध

| बुध राशि | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | |
|----------|---|---|---|----|----|----|---|---|---|---|---|---|----|
| शनि | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| गुरु | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| मंगल | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| सूर्य | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 5 |
| शुक्र | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 8 |
| बुध | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| चन्द्र | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 6 |
| लग्न | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 7 |
| योग | 4 | 5 | 5 | 3 | 6 | 2 | 3 | 6 | 5 | 6 | 5 | 4 | 54 |

बुध



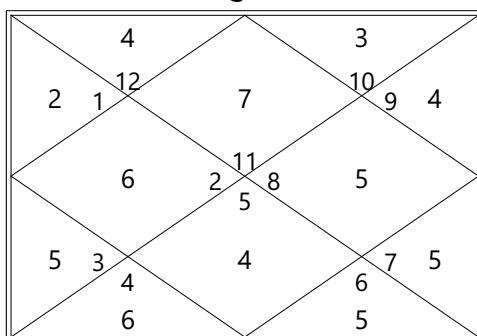


अष्टकवर्ग - भिन्नाष्टक वर्ग

गुरु

| गुरु राशि | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 1 | 2 | 3 | |
|-----------|---|---|---|---|---|---|----|----|----|---|---|---|----|
| शनि | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| गुरु | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| मंगल | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 7 |
| सूर्य | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 9 |
| शुक्र | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 6 |
| बुध | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 8 |
| चन्द्र | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 5 |
| लग्न | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 9 |
| योग | 6 | 4 | 5 | 5 | 5 | 4 | 3 | 7 | 4 | 2 | 6 | 5 | 56 |

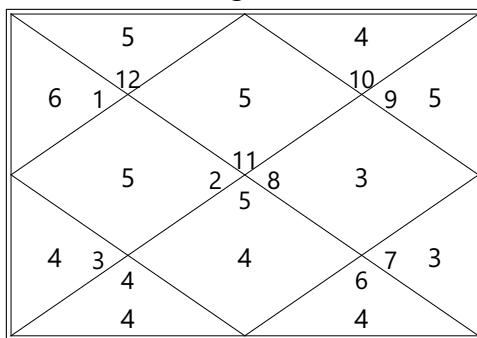
गुरु



शुक्र

| शुक्र राशि | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | |
|------------|---|---|---|---|----|----|----|---|---|---|---|---|----|
| शनि | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| गुरु | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 5 |
| मंगल | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 6 |
| सूर्य | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 3 |
| शुक्र | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 9 |
| बुध | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 5 |
| चन्द्र | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 9 |
| लग्न | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 8 |
| योग | 4 | 3 | 3 | 5 | 4 | 5 | 5 | 6 | 5 | 4 | 4 | 4 | 52 |

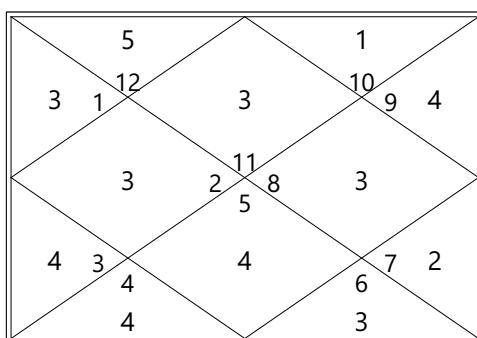
शुक्र



शनि

| शनि राशि | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | |
|----------|---|---|---|----|----|----|---|---|---|---|---|---|----|
| शनि | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 4 |
| गुरु | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| मंगल | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 6 |
| सूर्य | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 7 |
| शुक्र | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 3 |
| बुध | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 6 |
| चन्द्र | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| लग्न | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 6 |
| योग | 2 | 3 | 4 | 1 | 3 | 5 | 3 | 3 | 4 | 4 | 4 | 3 | 39 |

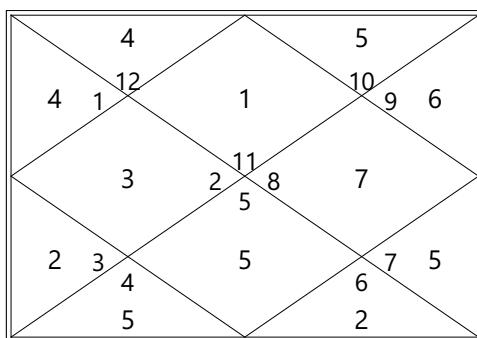
शनि



लग्न

| लग्न राशि | 11 | 12 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | |
|-----------|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|
| शनि | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 6 |
| गुरु | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 9 |
| मंगल | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 5 |
| सूर्य | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 6 |
| शुक्र | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| बुध | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 7 |
| चन्द्र | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 5 |
| लग्न | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 4 |
| योग | 1 | 4 | 4 | 3 | 2 | 5 | 5 | 2 | 5 | 7 | 6 | 5 | 49 |

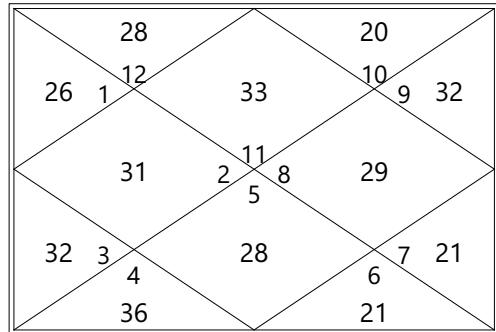
लग्न



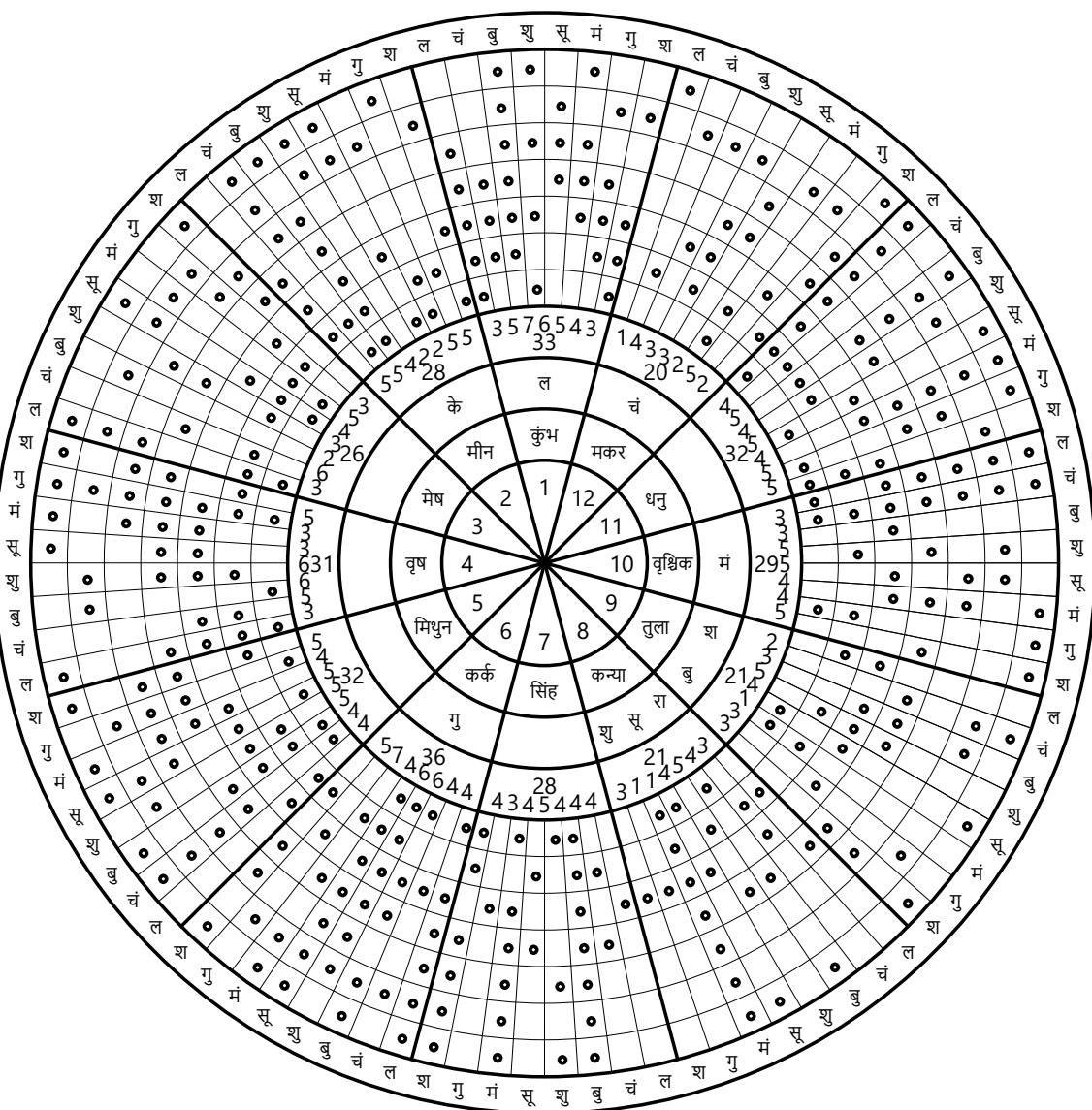


सर्वाष्टक वर्ग

| राशि | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | |
|--------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| लग्न | 4 | 3 | 2 | 5 | 5 | 2 | 5 | 7 | 6 | 5 | 1 | 4 | 49 |
| सूर्य | 3 | 5 | 5 | 5 | 4 | 3 | 3 | 5 | 5 | 2 | 3 | 5 | 48 |
| चन्द्र | 5 | 3 | 4 | 7 | 3 | 1 | 3 | 4 | 5 | 5 | 4 | 5 | 49 |
| मंगल | 4 | 3 | 5 | 4 | 4 | 1 | 1 | 4 | 4 | 2 | 5 | 2 | 39 |
| बुध | 3 | 6 | 5 | 6 | 5 | 4 | 4 | 5 | 5 | 3 | 6 | 2 | 54 |
| गुरु | 2 | 6 | 5 | 6 | 4 | 5 | 5 | 5 | 4 | 3 | 7 | 4 | 56 |
| शुक्र | 6 | 5 | 4 | 4 | 4 | 4 | 3 | 3 | 5 | 4 | 5 | 5 | 52 |
| शनि | 3 | 3 | 4 | 4 | 4 | 3 | 2 | 3 | 4 | 1 | 3 | 5 | 39 |
| | 26 | 31 | 32 | 36 | 28 | 21 | 21 | 29 | 32 | 20 | 33 | 28 | 337 |



सर्वचन्चा चक्र



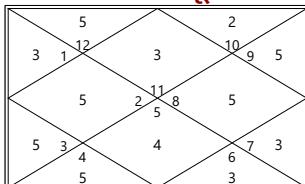
Aumarya



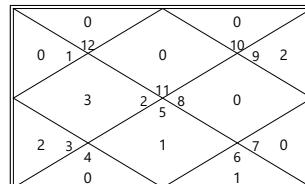
अष्टकवर्ग - शोधन

शोधन से पूर्व

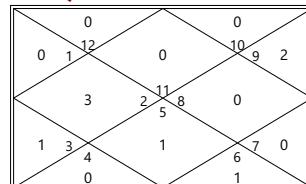
| सूर्य | |
|-------------|----|
| राशि पिण्ड | 72 |
| ग्रह पिण्ड | 12 |
| शुद्ध पिण्ड | 84 |



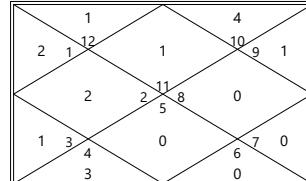
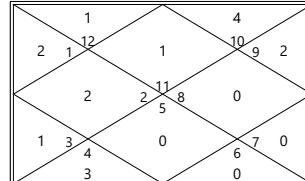
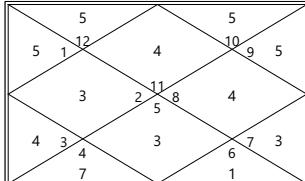
त्रिकोण शोधन



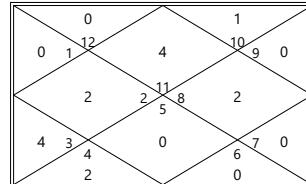
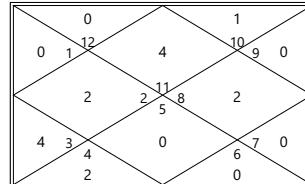
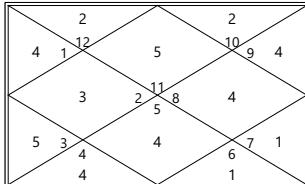
एकाधिपत्य शोधन



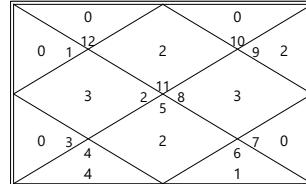
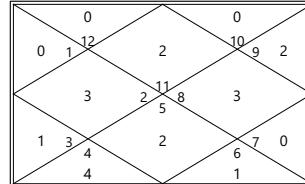
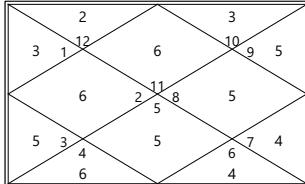
| चन्द्र | |
|-------------|-----|
| राशि पिण्ड | 106 |
| ग्रह पिण्ड | 50 |
| शुद्ध पिण्ड | 156 |



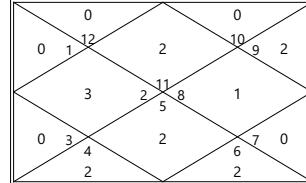
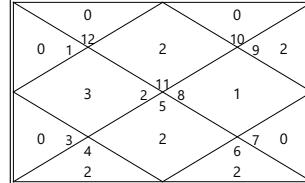
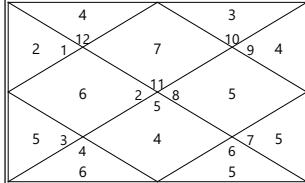
| मंगल | |
|-------------|-----|
| राशि पिण्ड | 125 |
| ग्रह पिण्ड | 41 |
| शुद्ध पिण्ड | 166 |



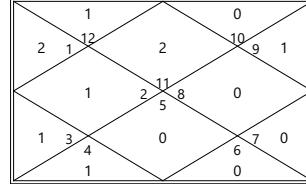
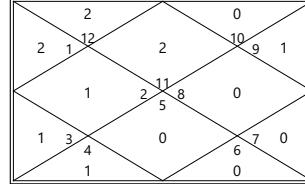
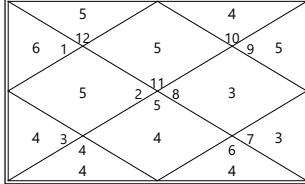
| बुध | |
|-------------|-----|
| राशि पिण्ड | 136 |
| ग्रह पिण्ड | 76 |
| शुद्ध पिण्ड | 212 |



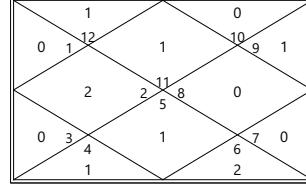
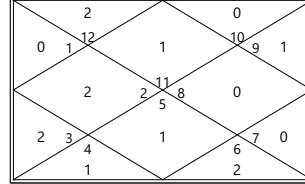
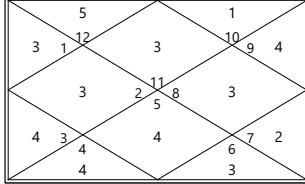
| गुरु | |
|-------------|-----|
| राशि पिण्ड | 118 |
| ग्रह पिण्ड | 52 |
| शुद्ध पिण्ड | 170 |



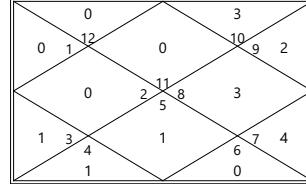
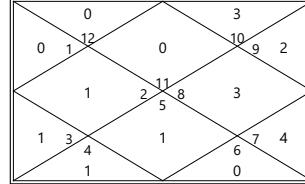
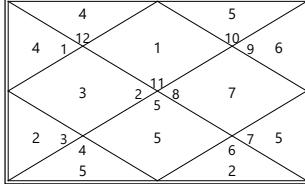
| शुक्र | |
|-------------|----|
| राशि पिण्ड | 79 |
| ग्रह पिण्ड | 10 |
| शुद्ध पिण्ड | 89 |



| शनि | |
|-------------|-----|
| राशि पिण्ड | 78 |
| ग्रह पिण्ड | 34 |
| शुद्ध पिण्ड | 112 |



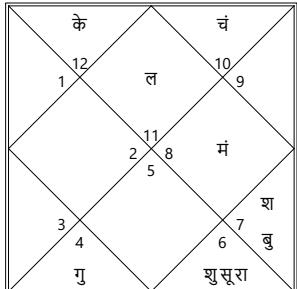
| लग्न | |
|-------------|-----|
| राशि पिण्ड | 107 |
| ग्रह पिण्ड | 89 |
| शुद्ध पिण्ड | 196 |



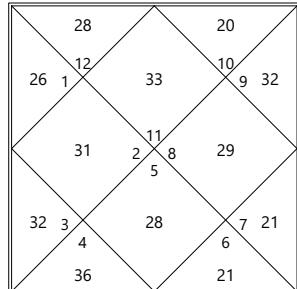


वर्ग कुण्डलिया-अष्टकवर्ग

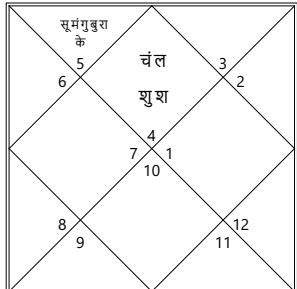
जन्म कुण्डली



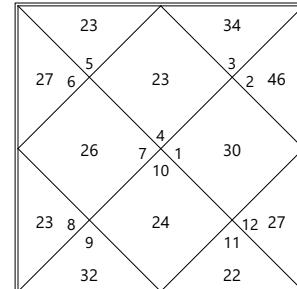
समुदाय अष्टकवर्ग



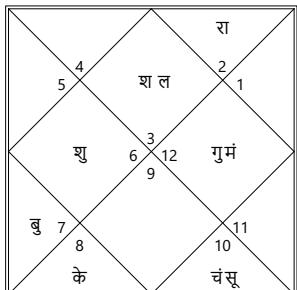
होरा (धन-सम्पत्ति)



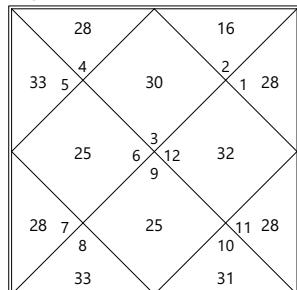
समुदाय अष्टकवर्ग



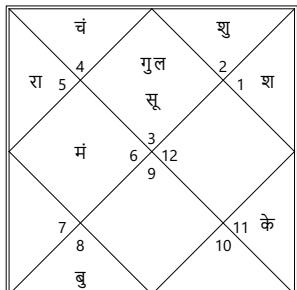
द्रेष्काण (भाई-बहन)



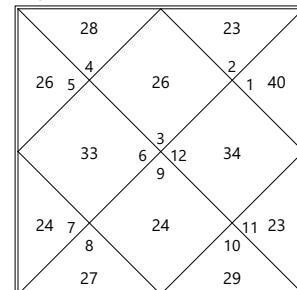
समुदाय अष्टकवर्ग



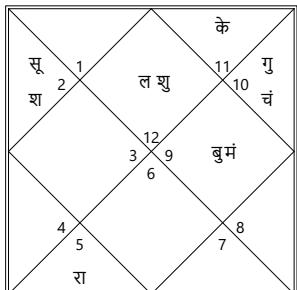
सप्तांश (संतान)



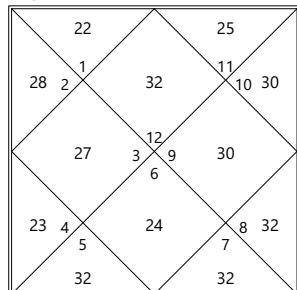
समुदाय अष्टकवर्ग



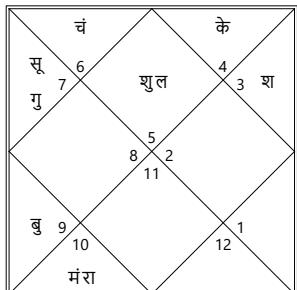
नवांश (जीवनसाथी)



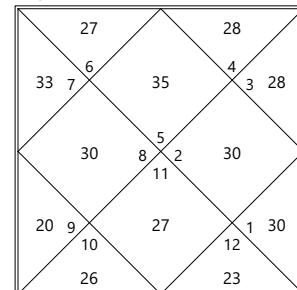
समुदाय अष्टकवर्ग



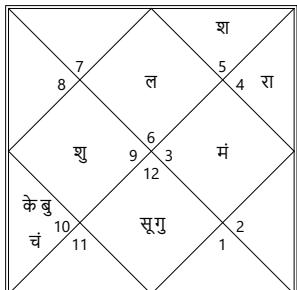
दशांश (कर्मफल)



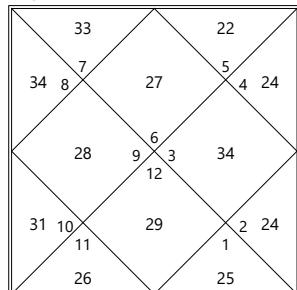
समुदाय अष्टकवर्ग



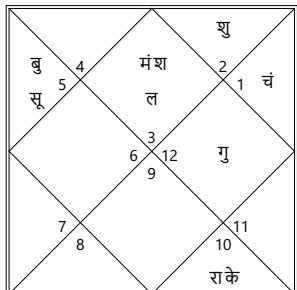
द्वादशांश (माता-पिता)



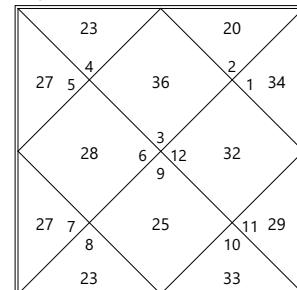
समुदाय अष्टकवर्ग



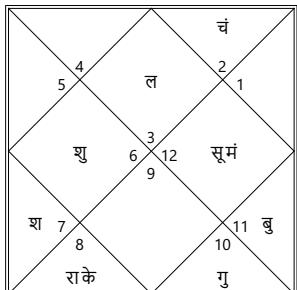
षोडशांश (वाहन)



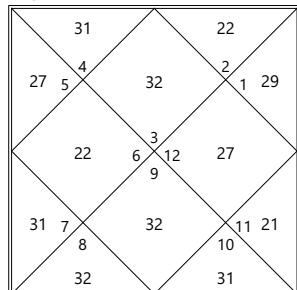
समुदाय अष्टकवर्ग



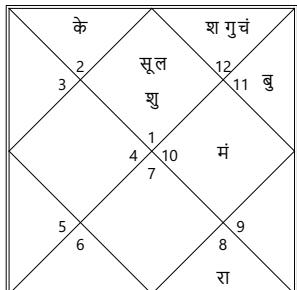
विशांश (अरिष्ट)



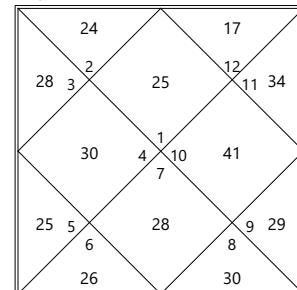
समुदाय अष्टकवर्ग



षष्ठ्यांश (सभी क्षेत्र)



समुदाय अष्टकवर्ग





ग्रहों का शारीरिक संरचना पर प्रभाव

सूक्ष्म पद्धति

| ग्रह | शरीर का अंग |
|--------|-----------------------|
| सूर्य | बायीं छाती |
| चन्द्र | बायीं आँख |
| मंगल | बायाँ पार्श्व |
| बुध | बायाँ कपोल |
| गुरु | दायें घुटने का अधोभाग |
| शुक्र | बायाँ जबड़ा |
| शनि | बायाँ ठेहुना |
| राहु | बायें घुटने का अधोभाग |
| केतु | लिंग |

स्थूल पद्धति

| ग्रह | शरीर का अंग | शरीर का अंग |
|--------|---------------|-------------|
| सूर्य | कमर | लिंग |
| चन्द्र | घुटने | पैर |
| मंगल | लिंग | घुटने |
| बुध | वस्ति (पेंझु) | जाँध |
| गुरु | हृदय | कमर |
| शुक्र | कमर | लिंग |
| शनि | वस्ति (पेंझु) | जाँध |
| राहु | कमर | लिंग |
| केतु | पैर | मुख |

नक्षत्र पद्धति

| ग्रह | नक्षत्र | प्रथम मत | द्वितीय मत |
|--------|----------------|----------------|----------------------|
| सूर्य | हस्त | दोनों हथेलियाँ | अंगुलियाँ |
| चन्द्र | उत्तराषाढ़ा | दोनों जाँध | कमर |
| मंगल | ज्येष्ठा | जीभ | शरीर का दायाँ हिस्सा |
| बुध | स्वाति | दाँत | छाती |
| गुरु | आश्लेषा | नाखून | कान |
| शुक्र | उत्तराफाल्पुनी | लिंग | बायाँ हाथ |
| शनि | विशाखा | दोनों बाजू | स्तन |
| राहु | चित्रा | माथा | गर्दन |
| केतु | रेवती | दोनों बगल | घुटने |



विंशोत्तरी महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : सूर्य 3वर्ष-10मास-17दिन
जन्मकालीन दशा : सू-ल-ल-ल-ल

सूर्य (6व)

0 वर्ष से 3वर्ष 10म

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------|
| सूर्य | - | |
| चन्द्र | - | |
| मंगल | - | |
| राहु | - | |
| गुरु | 02-10-2014 - 26-06-2015 | |
| शनि | 26-06-2015 - 07-06-2016 | |
| बुध | 07-06-2016 - 13-04-2017 | |
| केतु | 13-04-2017 - 19-08-2017 | |
| शुक्र | 19-08-2017 - 19-08-2018 | |

चन्द्र (10व)

3वर्ष 10म से 3वर्ष 10म

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------|
| चन्द्र | 19-08-2018 - 20-06-2019 | |
| मंगल | 20-06-2019 - 19-01-2020 | |
| राहु | 19-01-2020 - 20-07-2021 | |
| गुरु | 20-07-2021 - 19-11-2022 | |
| शनि | 19-11-2022 - 19-06-2024 | |
| बुध | 19-06-2024 - 18-11-2025 | |
| केतु | 18-11-2025 - 19-06-2026 | |
| शुक्र | 19-06-2026 - 18-02-2028 | |
| सूर्य | 18-02-2028 - 19-08-2028 | |

मंगल (7व)

13वर्ष 10म से 0वर्ष 10म

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------|
| मंगल | 19-08-2028 - 15-01-2029 | |
| राहु | 15-01-2029 - 02-02-2030 | |
| गुरु | 02-02-2030 - 09-01-2031 | |
| शनि | 09-01-2031 - 18-02-2032 | |
| बुध | 18-02-2032 - 14-02-2033 | |
| केतु | 14-02-2033 - 13-07-2033 | |
| शुक्र | 13-07-2033 - 12-09-2034 | |
| सूर्य | 12-09-2034 - 18-01-2035 | |
| चन्द्र | 18-01-2035 - 19-08-2035 | |

राहु (18व)

20वर्ष 10म से 8वर्ष 10म

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------------|
| राहु | 19-08-2035 | 02-05-2038 |
| गुरु | 02-05-2038 - 24-09-2040 | |
| शनि | 24-09-2040 - 01-08-2043 | |
| बुध | 01-08-2043 - 17-02-2046 | |
| केतु | 17-02-2046 - 08-03-2047 | |
| शुक्र | 08-03-2047 - 08-03-2050 | |
| सूर्य | 08-03-2050 - 30-01-2051 | |
| चन्द्र | 30-01-2051 - 31-07-2052 | |
| मंगल | 31-07-2052 - 19-08-2053 | |

गुरु (16व)

38वर्ष 10म से 4वर्ष 10म

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------------|
| गुरु | 19-08-2053 | 07-10-2055 |
| शनि | 07-10-2055 - 19-04-2058 | |
| बुध | 19-04-2058 - 25-07-2060 | |
| केतु | 25-07-2060 - 01-07-2061 | |
| शुक्र | 01-07-2061 - 01-03-2064 | |
| सूर्य | 01-03-2064 - 18-12-2064 | |
| चन्द्र | 18-12-2064 - 19-04-2066 | |
| मंगल | 19-04-2066 - 26-03-2067 | |
| राहु | 26-03-2067 - 19-08-2069 | |

शनि (19व)

54वर्ष 10म से 3वर्ष 10म

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 19-08-2069 | 21-08-2072 |
| बुध | 21-08-2072 | 02-05-2075 |
| केतु | 02-05-2075 | 09-06-2076 |
| शुक्र | 09-06-2076 | 10-08-2079 |
| सूर्य | 10-08-2079 | 22-07-2080 |
| चन्द्र | 22-07-2080 | 20-02-2082 |
| मंगल | 20-02-2082 | 01-04-2083 |
| राहु | 01-04-2083 | 05-02-2086 |
| गुरु | 05-02-2086 | 18-08-2088 |

बुध (17व)

73वर्ष 10म से 0वर्ष 10म

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------|
| बुध | 18-08-2088 - 15-01-2091 | |
| केतु | 15-01-2091 - 12-01-2092 | |
| शुक्र | 12-01-2092 - 12-11-2094 | |
| सूर्य | 12-11-2094 - 18-09-2095 | |
| चन्द्र | 18-09-2095 - 17-02-2097 | |
| मंगल | 17-02-2097 - 14-02-2098 | |
| राहु | 14-02-2098 - 03-09-2100 | |
| गुरु | 03-09-2100 - 10-12-2102 | |
| शनि | 10-12-2102 - 19-08-2105 | |

केतु (7व)

90वर्ष 10म से 97वर्ष 10म

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| केतु | 19-08-2105 | 15-01-2106 |
| शुक्र | 15-01-2106 | 18-03-2107 |
| सूर्य | 18-03-2107 | 23-07-2107 |
| चन्द्र | 23-07-2107 | 21-02-2108 |
| मंगल | 21-02-2108 | 20-07-2108 |
| राहु | 20-07-2108 | 07-08-2109 |
| गुरु | 07-08-2109 | 14-07-2110 |
| शनि | 14-07-2110 | 23-08-2111 |
| बुध | 23-08-2111 | 19-08-2112 |

शुक्र (20व)

97वर्ष 10म से 117वर्ष 10म

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | 19-08-2112 | 20-12-2115 |
| सूर्य | 20-12-2115 | 19-12-2116 |
| चन्द्र | 19-12-2116 | 19-08-2118 |
| मंगल | 19-08-2118 | 20-10-2119 |
| राहु | 20-10-2119 | 19-10-2122 |
| गुरु | 19-10-2122 | 19-06-2125 |
| शनि | 19-06-2125 | 19-08-2128 |
| बुध | 19-08-2128 | 20-06-2131 |
| केतु | 20-06-2131 | 19-08-2132 |



विंशोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

सूर्य महादशा : 02-10-2014 से 19-08-2018

आयु : ०व ०म से ३व १०म

सूर्य-सूर्य

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------|------|
| सूर्य | - | |
| चन्द्र | - | |
| मंगल | - | |
| राहु | - | |
| गुरु | - | |
| शनि | - | |
| बुध | - | |
| केतु | - | |
| शुक्र | - | |

सूर्य-चन्द्र

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------|------|
| चन्द्र | - | |
| मंगल | - | |
| राहु | - | |
| गुरु | - | |
| शनि | - | |
| बुध | - | |
| केतु | - | |
| शुक्र | - | |
| सूर्य | - | |

सूर्य-मंगल

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------|------|
| मंगल | - | |
| राहु | - | |
| गुरु | - | |
| शनि | - | |
| बुध | - | |
| केतु | - | |
| शुक्र | - | |
| सूर्य | - | |
| चन्द्र | - | |

सूर्य-राहु

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------|------|
| राहु | - | |
| गुरु | - | |
| शनि | - | |
| बुध | - | |
| केतु | - | |
| शुक्र | - | |
| सूर्य | - | |
| चन्द्र | - | |
| मंगल | - | |

सूर्य-गुरु

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| गुरु | 02-10-2014 - 16-10-2014 | |
| शनि | 16-10-2014 - 01-12-2014 | |
| बुध | 01-12-2014 - 11-01-2015 | |
| केतु | 11-01-2015 - 28-01-2015 | |
| शुक्र | 28-01-2015 - 18-03-2015 | |
| सूर्य | 18-03-2015 - 02-04-2015 | |
| चन्द्र | 02-04-2015 - 26-04-2015 | |
| मंगल | 26-04-2015 - 13-05-2015 | |
| राहु | 13-05-2015 - 26-06-2015 | |

सूर्य-शनि

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| शनि | 26-06-2015 - 20-08-2015 | |
| बुध | 20-08-2015 - 08-10-2015 | |
| केतु | 08-10-2015 - 28-10-2015 | |
| शुक्र | 28-10-2015 - 25-12-2015 | |
| सूर्य | 25-12-2015 - 11-01-2016 | |
| चन्द्र | 11-01-2016 - 09-02-2016 | |
| मंगल | 09-02-2016 - 29-02-2016 | |
| राहु | 29-02-2016 - 21-04-2016 | |
| गुरु | 21-04-2016 - 07-06-2016 | |

सूर्य-बुध

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| बुध | 07-06-2016 - 21-07-2016 | |
| केतु | 21-07-2016 - 08-08-2016 | |
| शुक्र | 08-08-2016 - 29-09-2016 | |
| सूर्य | 29-09-2016 - 14-10-2016 | |
| चन्द्र | 14-10-2016 - 09-11-2016 | |
| मंगल | 09-11-2016 - 27-11-2016 | |
| राहु | 27-11-2016 - 13-01-2017 | |
| गुरु | 13-01-2017 - 23-02-2017 | |
| शनि | 23-02-2017 - 13-04-2017 | |

सूर्य-केतु

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| केतु | 13-04-2017 - 21-04-2017 | |
| शुक्र | 21-04-2017 - 12-05-2017 | |
| सूर्य | 12-05-2017 - 18-05-2017 | |
| चन्द्र | 18-05-2017 - 29-05-2017 | |
| मंगल | 29-05-2017 - 05-06-2017 | |
| राहु | 05-06-2017 - 25-06-2017 | |
| गुरु | 25-06-2017 - 12-07-2017 | |
| शनि | 12-07-2017 - 01-08-2017 | |
| बुध | 01-08-2017 - 19-08-2017 | |

सूर्य-शुक्र

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| शुक्र | 19-08-2017 - 19-10-2017 | |
| सूर्य | 19-10-2017 - 06-11-2017 | |
| चन्द्र | 06-11-2017 - 07-12-2017 | |
| मंगल | 07-12-2017 - 28-12-2017 | |
| राहु | 28-12-2017 - 21-02-2018 | |
| गुरु | 21-02-2018 - 10-04-2018 | |
| शनि | 10-04-2018 - 07-06-2018 | |
| बुध | 07-06-2018 - 29-07-2018 | |
| केतु | 29-07-2018 - 19-08-2018 | |

आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।



विंशोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

चन्द्र महादशा : 19-08-2018 से 19-08-2028

आयु : 3व 10म से 13व 10म

| चन्द्र-चन्द्र | | 3व 10म* |
|---------------|-------------------------|---------|
| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
| चन्द्र | 19-08-2018 - 14-09-2018 | |
| मंगल | 14-09-2018 - 01-10-2018 | |
| राहु | 01-10-2018 - 16-11-2018 | |
| गुरु | 16-11-2018 - 27-12-2018 | |
| शनि | 27-12-2018 - 13-02-2019 | |
| बुध | 13-02-2019 - 28-03-2019 | |
| केतु | 28-03-2019 - 15-04-2019 | |
| शुक्र | 15-04-2019 - 04-06-2019 | |
| सूर्य | 04-06-2019 - 20-06-2019 | |

| चन्द्र-मंगल | | 4व 8म |
|-------------|-------------------------|-------|
| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
| मंगल | 20-06-2019 - 02-07-2019 | |
| राहु | 02-07-2019 - 03-08-2019 | |
| गुरु | 03-08-2019 - 31-08-2019 | |
| शनि | 31-08-2019 - 04-10-2019 | |
| बुध | 04-10-2019 - 03-11-2019 | |
| केतु | 03-11-2019 - 16-11-2019 | |
| शुक्र | 16-11-2019 - 21-12-2019 | |
| सूर्य | 21-12-2019 - 01-01-2020 | |
| चन्द्र | 01-01-2020 - 19-01-2020 | |

| चन्द्र-राहु | | 5व 3म |
|-------------|-------------------------|-------|
| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
| राहु | 19-01-2020 - 10-04-2020 | |
| गुरु | 10-04-2020 - 22-06-2020 | |
| शनि | 22-06-2020 - 17-09-2020 | |
| बुध | 17-09-2020 - 03-12-2020 | |
| केतु | 03-12-2020 - 04-01-2021 | |
| शुक्र | 04-01-2021 - 06-04-2021 | |
| सूर्य | 06-04-2021 - 03-05-2021 | |
| चन्द्र | 03-05-2021 - 18-06-2021 | |
| मंगल | 18-06-2021 - 20-07-2021 | |

| चन्द्र-गुरु | | 6व 9म |
|-------------|-------------------------|-------|
| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
| गुरु | 20-07-2021 - 22-09-2021 | |
| शनि | 22-09-2021 - 09-12-2021 | |
| बुध | 09-12-2021 - 16-02-2022 | |
| केतु | 16-02-2022 - 16-03-2022 | |
| शुक्र | 16-03-2022 - 05-06-2022 | |
| सूर्य | 05-06-2022 - 30-06-2022 | |
| चन्द्र | 30-06-2022 - 09-08-2022 | |
| मंगल | 09-08-2022 - 07-09-2022 | |
| राहु | 07-09-2022 - 19-11-2022 | |

| चन्द्र-शनि | | 8व 1म |
|------------|-------------------------|-------|
| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
| शनि | 19-11-2022 - 18-02-2023 | |
| बुध | 18-02-2023 - 11-05-2023 | |
| केतु | 11-05-2023 - 14-06-2023 | |
| शुक्र | 14-06-2023 - 18-09-2023 | |
| सूर्य | 18-09-2023 - 17-10-2023 | |
| चन्द्र | 17-10-2023 - 04-12-2023 | |
| मंगल | 04-12-2023 - 07-01-2024 | |
| राहु | 07-01-2024 - 03-04-2024 | |
| गुरु | 03-04-2024 - 19-06-2024 | |

| चन्द्र-बुध | | 9व 8म |
|------------|-------------------------|-------|
| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
| बुध | 19-06-2024 - 31-08-2024 | |
| केतु | 31-08-2024 - 30-09-2024 | |
| शुक्र | 30-09-2024 - 26-12-2024 | |
| सूर्य | 26-12-2024 - 20-01-2025 | |
| चन्द्र | 20-01-2025 - 05-03-2025 | |
| मंगल | 05-03-2025 - 04-04-2025 | |
| राहु | 04-04-2025 - 20-06-2025 | |
| गुरु | 20-06-2025 - 28-08-2025 | |
| शनि | 28-08-2025 - 18-11-2025 | |

| चन्द्र-केतु | | 11व 1म |
|-------------|-------------------------|--------|
| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
| केतु | 18-11-2025 - 01-12-2025 | |
| शुक्र | 01-12-2025 - 05-01-2026 | |
| सूर्य | 05-01-2026 - 16-01-2026 | |
| चन्द्र | 16-01-2026 - 03-02-2026 | |
| मंगल | 03-02-2026 - 15-02-2026 | |
| राहु | 15-02-2026 - 19-03-2026 | |
| गुरु | 19-03-2026 - 16-04-2026 | |
| शनि | 16-04-2026 - 20-05-2026 | |
| बुध | 20-05-2026 - 19-06-2026 | |

| चन्द्र-शुक्र | | 11व 8म |
|--------------|-------------------------|--------|
| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
| शुक्र | 19-06-2026 - 29-09-2026 | |
| सूर्य | 29-09-2026 - 29-10-2026 | |
| चन्द्र | 29-10-2026 - 19-12-2026 | |
| मंगल | 19-12-2026 - 23-01-2027 | |
| राहु | 23-01-2027 - 25-04-2027 | |
| गुरु | 25-04-2027 - 15-07-2027 | |
| शनि | 15-07-2027 - 19-10-2027 | |
| बुध | 19-10-2027 - 14-01-2028 | |
| केतु | 14-01-2028 - 18-02-2028 | |

| चन्द्र-सूर्य | | 13व 4म |
|--------------|-------------------------|--------|
| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
| सूर्य | 18-02-2028 - 27-02-2028 | |
| चन्द्र | 27-02-2028 - 13-03-2028 | |
| मंगल | 13-03-2028 - 24-03-2028 | |
| राहु | 24-03-2028 - 20-04-2028 | |
| गुरु | 20-04-2028 - 15-05-2028 | |
| शनि | 15-05-2028 - 13-06-2028 | |
| बुध | 13-06-2028 - 09-07-2028 | |
| केतु | 09-07-2028 - 19-07-2028 | |
| शुक्र | 19-07-2028 - 19-08-2028 | |

आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।



विंशोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

मंगल महादशा : 19-08-2028 से 19-08-2035

आयु : 13व 10म से 20व 10म

मंगल-मंगल

13व10म*

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| मंगल | 19-08-2028 - 27-08-2028 | |
| राहु | 27-08-2028 - 19-09-2028 | |
| गुरु | 19-09-2028 - 09-10-2028 | |
| शनि | 09-10-2028 - 01-11-2028 | |
| बुध | 01-11-2028 - 22-11-2028 | |
| केतु | 22-11-2028 - 01-12-2028 | |
| शुक्र | 01-12-2028 - 26-12-2028 | |
| सूर्य | 26-12-2028 - 02-01-2029 | |
| चन्द्र | 02-01-2029 - 15-01-2029 | |

मंगल-राहु

14व3म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| राहु | 15-01-2029 - 13-03-2029 | |
| गुरु | 13-03-2029 - 03-05-2029 | |
| शनि | 03-05-2029 - 03-07-2029 | |
| बुध | 03-07-2029 - 27-08-2029 | |
| केतु | 27-08-2029 - 18-09-2029 | |
| शुक्र | 18-09-2029 - 21-11-2029 | |
| सूर्य | 21-11-2029 - 10-12-2029 | |
| चन्द्र | 10-12-2029 - 11-01-2030 | |
| मंगल | 11-01-2030 - 02-02-2030 | |

मंगल-गुरु

15व4म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| गुरु | 02-02-2030 - 20-03-2030 | |
| शनि | 20-03-2030 - 13-05-2030 | |
| बुध | 13-05-2030 - 30-06-2030 | |
| केतु | 30-06-2030 - 20-07-2030 | |
| शुक्र | 20-07-2030 - 15-09-2030 | |
| सूर्य | 15-09-2030 - 02-10-2030 | |
| चन्द्र | 02-10-2030 - 30-10-2030 | |
| मंगल | 30-10-2030 - 19-11-2030 | |
| राहु | 19-11-2030 - 09-01-2031 | |

मंगल-शनि

16व3म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| शनि | 09-01-2031 - 14-03-2031 | |
| बुध | 14-03-2031 - 11-05-2031 | |
| केतु | 11-05-2031 - 03-06-2031 | |
| शुक्र | 03-06-2031 - 10-08-2031 | |
| सूर्य | 10-08-2031 - 30-08-2031 | |
| चन्द्र | 30-08-2031 - 03-10-2031 | |
| मंगल | 03-10-2031 - 26-10-2031 | |
| राहु | 26-10-2031 - 26-12-2031 | |
| गुरु | 26-12-2031 - 18-02-2032 | |

मंगल-बुध

17व4म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| बुध | 18-02-2032 - 09-04-2032 | |
| केतु | 09-04-2032 - 30-04-2032 | |
| शुक्र | 30-04-2032 - 30-06-2032 | |
| सूर्य | 30-06-2032 - 18-07-2032 | |
| चन्द्र | 18-07-2032 - 17-08-2032 | |
| मंगल | 17-08-2032 - 07-09-2032 | |
| राहु | 07-09-2032 - 01-11-2032 | |
| गुरु | 01-11-2032 - 19-12-2032 | |
| शनि | 19-12-2032 - 14-02-2033 | |

मंगल-केतु

18व4म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| केतु | 14-02-2033 - 23-02-2033 | |
| शुक्र | 23-02-2033 - 20-03-2033 | |
| सूर्य | 20-03-2033 - 27-03-2033 | |
| चन्द्र | 27-03-2033 - 09-04-2033 | |
| मंगल | 09-04-2033 - 17-04-2033 | |
| राहु | 17-04-2033 - 10-05-2033 | |
| गुरु | 10-05-2033 - 30-05-2033 | |
| शनि | 30-05-2033 - 22-06-2033 | |
| बुध | 22-06-2033 - 13-07-2033 | |

मंगल-शुक्र

18व9म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| शुक्र | 13-07-2033 - 22-09-2033 | |
| सूर्य | 22-09-2033 - 14-10-2033 | |
| चन्द्र | 14-10-2033 - 18-11-2033 | |
| मंगल | 18-11-2033 - 13-12-2033 | |
| राहु | 13-12-2033 - 15-02-2034 | |
| गुरु | 15-02-2034 - 13-04-2034 | |
| शनि | 13-04-2034 - 19-06-2034 | |
| बुध | 19-06-2034 - 19-08-2034 | |
| केतु | 19-08-2034 - 12-09-2034 | |

मंगल-सूर्य

19व11म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| सूर्य | 12-09-2034 - 19-09-2034 | |
| चन्द्र | 19-09-2034 - 30-09-2034 | |
| मंगल | 30-09-2034 - 07-10-2034 | |
| राहु | 07-10-2034 - 26-10-2034 | |
| गुरु | 26-10-2034 - 12-11-2034 | |
| शनि | 12-11-2034 - 02-12-2034 | |
| बुध | 02-12-2034 - 21-12-2034 | |
| केतु | 21-12-2034 - 28-12-2034 | |
| शुक्र | 28-12-2034 - 18-01-2035 | |

मंगल-चन्द्र

20व3म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| चन्द्र | 18-01-2035 - 05-02-2035 | |
| मंगल | 05-02-2035 - 18-02-2035 | |
| राहु | 18-02-2035 - 21-03-2035 | |
| गुरु | 21-03-2035 - 19-04-2035 | |
| शनि | 19-04-2035 - 23-05-2035 | |
| बुध | 23-05-2035 - 22-06-2035 | |
| केतु | 22-06-2035 - 04-07-2035 | |
| शुक्र | 04-07-2035 - 09-08-2035 | |
| सूर्य | 09-08-2035 - 19-08-2035 | |

आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।



विंशोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

राहु महादशा : 19-08-2035 से 19-08-2053

आयु : 20व 10म से 38व 10म

राहु-राहु

20व10म*

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| राहु | 19-08-2035 | - 14-01-2036 |
| गुरु | 14-01-2036 | - 25-05-2036 |
| शनि | 25-05-2036 | - 28-10-2036 |
| बुध | 28-10-2036 | - 17-03-2037 |
| केतु | 17-03-2037 | - 13-05-2037 |
| शुक्र | 13-05-2037 | - 25-10-2037 |
| सूर्य | 25-10-2037 | - 13-12-2037 |
| चन्द्र | 13-12-2037 | - 05-03-2038 |
| मंगल | 05-03-2038 | - 02-05-2038 |

राहु-गुरु

23व7म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| गुरु | 02-05-2038 | - 26-08-2038 |
| शनि | 26-08-2038 | - 12-01-2039 |
| बुध | 12-01-2039 | - 16-05-2039 |
| केतु | 16-05-2039 | - 07-07-2039 |
| शुक्र | 07-07-2039 | - 30-11-2039 |
| सूर्य | 30-11-2039 | - 12-01-2040 |
| चन्द्र | 12-01-2040 | - 26-03-2040 |
| मंगल | 26-03-2040 | - 16-05-2040 |
| राहु | 16-05-2040 | - 24-09-2040 |

राहु-शनि

25व11म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| शनि | 24-09-2040 | - 08-03-2041 |
| बुध | 08-03-2041 | - 02-08-2041 |
| केतु | 02-08-2041 | - 02-10-2041 |
| शुक्र | 02-10-2041 | - 25-03-2042 |
| सूर्य | 25-03-2042 | - 16-05-2042 |
| चन्द्र | 16-05-2042 | - 10-08-2042 |
| मंगल | 10-08-2042 | - 10-10-2042 |
| राहु | 10-10-2042 | - 15-03-2043 |
| गुरु | 15-03-2043 | - 01-08-2043 |

राहु-बुध

28व9म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| बुध | 01-08-2043 | - 11-12-2043 |
| केतु | 11-12-2043 | - 03-02-2044 |
| शुक्र | 03-02-2044 | - 08-07-2044 |
| सूर्य | 08-07-2044 | - 23-08-2044 |
| चन्द्र | 23-08-2044 | - 09-11-2044 |
| मंगल | 09-11-2044 | - 02-01-2045 |
| राहु | 02-01-2045 | - 22-05-2045 |
| गुरु | 22-05-2045 | - 23-09-2045 |
| शनि | 23-09-2045 | - 17-02-2046 |

राहु-केतु

31व4म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| केतु | 17-02-2046 | - 12-03-2046 |
| शुक्र | 12-03-2046 | - 15-05-2046 |
| सूर्य | 15-05-2046 | - 03-06-2046 |
| चन्द्र | 03-06-2046 | - 05-07-2046 |
| मंगल | 05-07-2046 | - 27-07-2046 |
| राहु | 27-07-2046 | - 23-09-2046 |
| गुरु | 23-09-2046 | - 13-11-2046 |
| शनि | 13-11-2046 | - 13-01-2047 |
| बुध | 13-01-2047 | - 08-03-2047 |

राहु-शुक्र

32व5म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| शुक्र | 08-03-2047 | - 07-09-2047 |
| सूर्य | 07-09-2047 | - 31-10-2047 |
| चन्द्र | 31-10-2047 | - 31-01-2048 |
| मंगल | 31-01-2048 | - 04-04-2048 |
| राहु | 04-04-2048 | - 15-09-2048 |
| गुरु | 15-09-2048 | - 08-02-2049 |
| शनि | 08-02-2049 | - 01-08-2049 |
| बुध | 01-08-2049 | - 03-01-2050 |
| केतु | 03-01-2050 | - 08-03-2050 |

राहु-सूर्य

35व5म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| सूर्य | 08-03-2050 | - 24-03-2050 |
| चन्द्र | 24-03-2050 | - 20-04-2050 |
| मंगल | 20-04-2050 | - 10-05-2050 |
| राहु | 10-05-2050 | - 28-06-2050 |
| गुरु | 28-06-2050 | - 11-08-2050 |
| शनि | 11-08-2050 | - 02-10-2050 |
| बुध | 02-10-2050 | - 17-11-2050 |
| केतु | 17-11-2050 | - 07-12-2050 |
| शुक्र | 07-12-2050 | - 30-01-2051 |

राहु-चन्द्र

36व3म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| चन्द्र | 30-01-2051 | - 17-03-2051 |
| मंगल | 17-03-2051 | - 18-04-2051 |
| राहु | 18-04-2051 | - 09-07-2051 |
| गुरु | 09-07-2051 | - 20-09-2051 |
| शनि | 20-09-2051 | - 16-12-2051 |
| बुध | 16-12-2051 | - 03-03-2052 |
| केतु | 03-03-2052 | - 04-04-2052 |
| शुक्र | 04-04-2052 | - 04-07-2052 |
| सूर्य | 04-07-2052 | - 31-07-2052 |

राहु-मंगल

37व9म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| मंगल | 31-07-2052 | - 23-08-2052 |
| राहु | 23-08-2052 | - 19-10-2052 |
| गुरु | 19-10-2052 | - 09-12-2052 |
| शनि | 09-12-2052 | - 08-02-2053 |
| बुध | 08-02-2053 | - 03-04-2053 |
| केतु | 03-04-2053 | - 26-04-2053 |
| शुक्र | 26-04-2053 | - 29-06-2053 |
| सूर्य | 29-06-2053 | - 18-07-2053 |
| चन्द्र | 18-07-2053 | - 19-08-2053 |

आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।



विंशोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

गुरु महादशा : 19-08-2053 से 19-08-2069

आयु : 38व 10म से 54व 10म

गुरु-गुरु

38व10म*

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| गुरु | 19-08-2053 | - 01-12-2053 |
| शनि | 01-12-2053 | - 03-04-2054 |
| बुध | 03-04-2054 | - 22-07-2054 |
| केतु | 22-07-2054 | - 06-09-2054 |
| शुक्र | 06-09-2054 | - 14-01-2055 |
| सूर्य | 14-01-2055 | - 22-02-2055 |
| चन्द्र | 22-02-2055 | - 28-04-2055 |
| मंगल | 28-04-2055 | - 12-06-2055 |
| राहु | 12-06-2055 | - 07-10-2055 |

गुरु-शनि

41व0म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| शनि | 07-10-2055 | - 01-03-2056 |
| बुध | 01-03-2056 | - 11-07-2056 |
| केतु | 11-07-2056 | - 02-09-2056 |
| शुक्र | 02-09-2056 | - 04-02-2057 |
| सूर्य | 04-02-2057 | - 22-03-2057 |
| चन्द्र | 22-03-2057 | - 07-06-2057 |
| मंगल | 07-06-2057 | - 31-07-2057 |
| राहु | 31-07-2057 | - 17-12-2057 |
| गुरु | 17-12-2057 | - 19-04-2058 |

गुरु-बुध

43व6म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| बुध | 19-04-2058 | - 14-08-2058 |
| केतु | 14-08-2058 | - 02-10-2058 |
| शुक्र | 02-10-2058 | - 17-02-2059 |
| सूर्य | 17-02-2059 | - 30-03-2059 |
| चन्द्र | 30-03-2059 | - 07-06-2059 |
| मंगल | 07-06-2059 | - 25-07-2059 |
| राहु | 25-07-2059 | - 27-11-2059 |
| गुरु | 27-11-2059 | - 16-03-2060 |
| शनि | 16-03-2060 | - 25-07-2060 |

गुरु-केतु

45व9म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| केतु | 25-07-2060 | - 14-08-2060 |
| शुक्र | 14-08-2060 | - 10-10-2060 |
| सूर्य | 10-10-2060 | - 27-10-2060 |
| चन्द्र | 27-10-2060 | - 24-11-2060 |
| मंगल | 24-11-2060 | - 14-12-2060 |
| राहु | 14-12-2060 | - 03-02-2061 |
| गुरु | 03-02-2061 | - 21-03-2061 |
| शनि | 21-03-2061 | - 14-05-2061 |
| बुध | 14-05-2061 | - 01-07-2061 |

गुरु-शुक्र

46व8म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| शुक्र | 01-07-2061 | - 10-12-2061 |
| सूर्य | 10-12-2061 | - 28-01-2062 |
| चन्द्र | 28-01-2062 | - 19-04-2062 |
| मंगल | 19-04-2062 | - 15-06-2062 |
| राहु | 15-06-2062 | - 08-11-2062 |
| गुरु | 08-11-2062 | - 18-03-2063 |
| शनि | 18-03-2063 | - 19-08-2063 |
| बुध | 19-08-2063 | - 04-01-2064 |
| केतु | 04-01-2064 | - 01-03-2064 |

गुरु-सूर्य

49व4म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| सूर्य | 01-03-2064 | - 16-03-2064 |
| चन्द्र | 16-03-2064 | - 09-04-2064 |
| मंगल | 09-04-2064 | - 26-04-2064 |
| राहु | 26-04-2064 | - 09-06-2064 |
| गुरु | 09-06-2064 | - 18-07-2064 |
| शनि | 18-07-2064 | - 02-09-2064 |
| बुध | 02-09-2064 | - 13-10-2064 |
| केतु | 13-10-2064 | - 30-10-2064 |
| शुक्र | 30-10-2064 | - 18-12-2064 |

गुरु-चन्द्र

50व2म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| चन्द्र | 18-12-2064 | - 28-01-2065 |
| मंगल | 28-01-2065 | - 25-02-2065 |
| राहु | 25-02-2065 | - 09-05-2065 |
| गुरु | 09-05-2065 | - 13-07-2065 |
| शनि | 13-07-2065 | - 28-09-2065 |
| बुध | 28-09-2065 | - 06-12-2065 |
| केतु | 06-12-2065 | - 04-01-2066 |
| शुक्र | 04-01-2066 | - 26-03-2066 |
| सूर्य | 26-03-2066 | - 19-04-2066 |

गुरु-मंगल

51व6म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| मंगल | 19-04-2066 | - 09-05-2066 |
| राहु | 09-05-2066 | - 29-06-2066 |
| गुरु | 29-06-2066 | - 14-08-2066 |
| शनि | 14-08-2066 | - 07-10-2066 |
| बुध | 07-10-2066 | - 24-11-2066 |
| केतु | 24-11-2066 | - 14-12-2066 |
| शुक्र | 14-12-2066 | - 09-02-2067 |
| सूर्य | 09-02-2067 | - 26-02-2067 |
| चन्द्र | 26-02-2067 | - 26-03-2067 |

गुरु-राहु

52व5म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| राहु | 26-03-2067 | - 05-08-2067 |
| गुरु | 05-08-2067 | - 29-11-2067 |
| शनि | 29-11-2067 | - 16-04-2068 |
| बुध | 16-04-2068 | - 18-08-2068 |
| केतु | 18-08-2068 | - 09-10-2068 |
| शुक्र | 09-10-2068 | - 04-03-2069 |
| सूर्य | 04-03-2069 | - 16-04-2069 |
| चन्द्र | 16-04-2069 | - 28-06-2069 |
| मंगल | 28-06-2069 | - 19-08-2069 |

आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।



विंशोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

शनि महादशा : 19-08-2069 से 18-08-2088

आयु : 54व 10म से 73व 10म

शनि-शनि

54व10म*

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| शनि | 19-08-2069 | - 09-02-2070 |
| बुध | 09-02-2070 | - 14-07-2070 |
| केतु | 14-07-2070 | - 16-09-2070 |
| शुक्र | 16-09-2070 | - 18-03-2071 |
| सूर्य | 18-03-2071 | - 12-05-2071 |
| चन्द्र | 12-05-2071 | - 12-08-2071 |
| मंगल | 12-08-2071 | - 15-10-2071 |
| राहु | 15-10-2071 | - 28-03-2072 |
| गुरु | 28-03-2072 | - 21-08-2072 |

शनि-बुध

57व10म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| बुध | 21-08-2072 | - 08-01-2073 |
| केतु | 08-01-2073 | - 06-03-2073 |
| शुक्र | 06-03-2073 | - 17-08-2073 |
| सूर्य | 17-08-2073 | - 05-10-2073 |
| चन्द्र | 05-10-2073 | - 26-12-2073 |
| मंगल | 26-12-2073 | - 21-02-2074 |
| राहु | 21-02-2074 | - 19-07-2074 |
| गुरु | 19-07-2074 | - 27-11-2074 |
| शनि | 27-11-2074 | - 02-05-2075 |

शनि-केतु

60व7म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| केतु | 02-05-2075 | - 25-05-2075 |
| शुक्र | 25-05-2075 | - 01-08-2075 |
| सूर्य | 01-08-2075 | - 21-08-2075 |
| चन्द्र | 21-08-2075 | - 24-09-2075 |
| मंगल | 24-09-2075 | - 17-10-2075 |
| राहु | 17-10-2075 | - 17-12-2075 |
| गुरु | 17-12-2075 | - 09-02-2076 |
| शनि | 09-02-2076 | - 13-04-2076 |
| बुध | 13-04-2076 | - 09-06-2076 |

शनि-शुक्र

61व8म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| शुक्र | 09-06-2076 | - 19-12-2076 |
| सूर्य | 19-12-2076 | - 15-02-2077 |
| चन्द्र | 15-02-2077 | - 22-05-2077 |
| मंगल | 22-05-2077 | - 29-07-2077 |
| राहु | 29-07-2077 | - 18-01-2078 |
| गुरु | 18-01-2078 | - 21-06-2078 |
| शनि | 21-06-2078 | - 22-12-2078 |
| बुध | 22-12-2078 | - 03-06-2079 |
| केतु | 03-06-2079 | - 10-08-2079 |

शनि-सूर्य

64व10म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| सूर्य | 10-08-2079 | - 27-08-2079 |
| चन्द्र | 27-08-2079 | - 25-09-2079 |
| मंगल | 25-09-2079 | - 15-10-2079 |
| राहु | 15-10-2079 | - 06-12-2079 |
| गुरु | 06-12-2079 | - 22-01-2080 |
| शनि | 22-01-2080 | - 17-03-2080 |
| बुध | 17-03-2080 | - 05-05-2080 |
| केतु | 05-05-2080 | - 25-05-2080 |
| शुक्र | 25-05-2080 | - 22-07-2080 |

शनि-चन्द्र

65व9म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| चन्द्र | 22-07-2080 | - 08-09-2080 |
| मंगल | 08-09-2080 | - 12-10-2080 |
| राहु | 12-10-2080 | - 07-01-2081 |
| गुरु | 07-01-2081 | - 25-03-2081 |
| शनि | 25-03-2081 | - 24-06-2081 |
| बुध | 24-06-2081 | - 14-09-2081 |
| केतु | 14-09-2081 | - 18-10-2081 |
| शुक्र | 18-10-2081 | - 22-01-2082 |
| सूर्य | 22-01-2082 | - 20-02-2082 |

शनि-मंगल

67व4म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| मंगल | 20-02-2082 | - 16-03-2082 |
| राहु | 16-03-2082 | - 16-05-2082 |
| गुरु | 16-05-2082 | - 09-07-2082 |
| शनि | 09-07-2082 | - 11-09-2082 |
| बुध | 11-09-2082 | - 07-11-2082 |
| केतु | 07-11-2082 | - 01-12-2082 |
| शुक्र | 01-12-2082 | - 06-02-2083 |
| सूर्य | 06-02-2083 | - 26-02-2083 |
| चन्द्र | 26-02-2083 | - 01-04-2083 |

शनि-राहु

68व5म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| राहु | 01-04-2083 | - 04-09-2083 |
| गुरु | 04-09-2083 | - 21-01-2084 |
| शनि | 21-01-2084 | - 04-07-2084 |
| बुध | 04-07-2084 | - 28-11-2084 |
| केतु | 28-11-2084 | - 28-01-2085 |
| शुक्र | 28-01-2085 | - 20-07-2085 |
| सूर्य | 20-07-2085 | - 10-09-2085 |
| चन्द्र | 10-09-2085 | - 06-12-2085 |
| मंगल | 06-12-2085 | - 05-02-2086 |

शनि-गुरु

71व4म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| गुरु | 05-02-2086 | - 08-06-2086 |
| शनि | 08-06-2086 | - 02-11-2086 |
| बुध | 02-11-2086 | - 13-03-2087 |
| केतु | 13-03-2087 | - 06-05-2087 |
| शुक्र | 06-05-2087 | - 07-10-2087 |
| सूर्य | 07-10-2087 | - 22-11-2087 |
| चन्द्र | 22-11-2087 | - 07-02-2088 |
| मंगल | 07-02-2088 | - 01-04-2088 |
| राहु | 01-04-2088 | - 18-08-2088 |

आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।



विंशोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

बुध महादशा : 18-08-2088 से 19-08-2105

आयु : 73व 10म से 90व 10म

बुध-बुध 73व10म*

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| बुध | 18-08-2088 | - 21-12-2088 |
| केतु | 21-12-2088 | - 10-02-2089 |
| शुक्र | 10-02-2089 | - 07-07-2089 |
| सूर्य | 07-07-2089 | - 20-08-2089 |
| चन्द्र | 20-08-2089 | - 01-11-2089 |
| मंगल | 01-11-2089 | - 22-12-2089 |
| राहु | 22-12-2089 | - 03-05-2090 |
| गुरु | 03-05-2090 | - 29-08-2090 |
| शनि | 29-08-2090 | - 15-01-2091 |

बुध-केतु 76व3म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| केतु | 15-01-2091 | - 05-02-2091 |
| शुक्र | 05-02-2091 | - 06-04-2091 |
| सूर्य | 06-04-2091 | - 24-04-2091 |
| चन्द्र | 24-04-2091 | - 25-05-2091 |
| मंगल | 25-05-2091 | - 15-06-2091 |
| राहु | 15-06-2091 | - 08-08-2091 |
| गुरु | 08-08-2091 | - 25-09-2091 |
| शनि | 25-09-2091 | - 22-11-2091 |
| बुध | 22-11-2091 | - 12-01-2092 |

बुध-शुक्र 77व3म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| शुक्र | 12-01-2092 | - 03-07-2092 |
| सूर्य | 03-07-2092 | - 23-08-2092 |
| चन्द्र | 23-08-2092 | - 18-11-2092 |
| मंगल | 18-11-2092 | - 17-01-2093 |
| राहु | 17-01-2093 | - 21-06-2093 |
| गुरु | 21-06-2093 | - 06-11-2093 |
| शनि | 06-11-2093 | - 19-04-2094 |
| बुध | 19-04-2094 | - 13-09-2094 |
| केतु | 13-09-2094 | - 12-11-2094 |

बुध-सूर्य 80व1म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| सूर्य | 12-11-2094 | - 27-11-2094 |
| चन्द्र | 27-11-2094 | - 23-12-2094 |
| मंगल | 23-12-2094 | - 10-01-2095 |
| राहु | 10-01-2095 | - 26-02-2095 |
| गुरु | 26-02-2095 | - 08-04-2095 |
| शनि | 08-04-2095 | - 28-05-2095 |
| बुध | 28-05-2095 | - 11-07-2095 |
| केतु | 11-07-2095 | - 29-07-2095 |
| शुक्र | 29-07-2095 | - 18-09-2095 |

बुध-चन्द्र 80व11म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| चन्द्र | 18-09-2095 | - 31-10-2095 |
| मंगल | 31-10-2095 | - 01-12-2095 |
| राहु | 01-12-2095 | - 16-02-2096 |
| गुरु | 16-02-2096 | - 25-04-2096 |
| शनि | 25-04-2096 | - 16-07-2096 |
| बुध | 16-07-2096 | - 27-09-2096 |
| केतु | 27-09-2096 | - 28-10-2096 |
| शुक्र | 28-10-2096 | - 22-01-2097 |
| सूर्य | 22-01-2097 | - 17-02-2097 |

बुध-मंगल 82व4म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| मंगल | 17-02-2097 | - 10-03-2097 |
| राहु | 10-03-2097 | - 03-05-2097 |
| गुरु | 03-05-2097 | - 21-06-2097 |
| शनि | 21-06-2097 | - 17-08-2097 |
| बुध | 17-08-2097 | - 07-10-2097 |
| केतु | 07-10-2097 | - 28-10-2097 |
| शुक्र | 28-10-2097 | - 28-12-2097 |
| सूर्य | 28-12-2097 | - 15-01-2098 |
| चन्द्र | 15-01-2098 | - 14-02-2098 |

बुध-राहु 83व4म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| राहु | 14-02-2098 | - 04-07-2098 |
| गुरु | 04-07-2098 | - 05-11-2098 |
| शनि | 05-11-2098 | - 01-04-2099 |
| बुध | 01-04-2099 | - 11-08-2099 |
| केतु | 11-08-2099 | - 05-10-2099 |
| शुक्र | 05-10-2099 | - 09-03-2100 |
| सूर्य | 09-03-2100 | - 24-04-2100 |
| चन्द्र | 24-04-2100 | - 11-07-2100 |
| मंगल | 11-07-2100 | - 03-09-2100 |

बुध-गुरु 85व11म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| गुरु | 03-09-2100 | - 23-12-2100 |
| शनि | 23-12-2100 | - 03-05-2101 |
| बुध | 03-05-2101 | - 28-08-2101 |
| केतु | 28-08-2101 | - 15-10-2101 |
| शुक्र | 15-10-2101 | - 02-03-2102 |
| सूर्य | 02-03-2102 | - 13-04-2102 |
| चन्द्र | 13-04-2102 | - 21-06-2102 |
| मंगल | 21-06-2102 | - 08-08-2102 |
| राहु | 08-08-2102 | - 10-12-2102 |

बुध-शनि 88व2म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| शनि | 10-12-2102 | - 15-05-2103 |
| बुध | 15-05-2103 | - 01-10-2103 |
| केतु | 01-10-2103 | - 28-11-2103 |
| शुक्र | 28-11-2103 | - 09-05-2104 |
| सूर्य | 09-05-2104 | - 28-06-2104 |
| चन्द्र | 28-06-2104 | - 17-09-2104 |
| मंगल | 17-09-2104 | - 14-11-2104 |
| दक्षिण | 14-11-2104 | - 10-04-2105 |
| गुरु | 10-04-2105 | - 19-08-2105 |

आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।



विंशोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

केतु महादशा : 19-08-2105 से 19-08-2112
आयु : 90व 10म से 97व 10म

केतु-केतु

90व10म*

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| केतु | 19-08-2105 | - 28-08-2105 |
| शुक्र | 28-08-2105 | - 22-09-2105 |
| सूर्य | 22-09-2105 | - 29-09-2105 |
| चन्द्र | 29-09-2105 | - 12-10-2105 |
| मंगल | 12-10-2105 | - 20-10-2105 |
| राहु | 20-10-2105 | - 12-11-2105 |
| गुरु | 12-11-2105 | - 02-12-2105 |
| शनि | 02-12-2105 | - 25-12-2105 |
| बुध | 25-12-2105 | - 15-01-2106 |

केतु-शुक्र

91व3म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| शुक्र | 15-01-2106 | - 28-03-2106 |
| सूर्य | 28-03-2106 | - 18-04-2106 |
| चन्द्र | 18-04-2106 | - 23-05-2106 |
| मंगल | 23-05-2106 | - 17-06-2106 |
| राहु | 17-06-2106 | - 20-08-2106 |
| गुरु | 20-08-2106 | - 16-10-2106 |
| शनि | 16-10-2106 | - 22-12-2106 |
| बुध | 22-12-2106 | - 21-02-2107 |
| केतु | 21-02-2107 | - 18-03-2107 |

केतु-सूर्य

92व5म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| सूर्य | 18-03-2107 | - 24-03-2107 |
| चन्द्र | 24-03-2107 | - 04-04-2107 |
| मंगल | 04-04-2107 | - 11-04-2107 |
| राहु | 11-04-2107 | - 30-04-2107 |
| गुरु | 30-04-2107 | - 17-05-2107 |
| शनि | 17-05-2107 | - 07-06-2107 |
| बुध | 07-06-2107 | - 25-06-2107 |
| केतु | 25-06-2107 | - 02-07-2107 |
| शुक्र | 02-07-2107 | - 23-07-2107 |

केतु-चन्द्र

92व9म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| चन्द्र | 23-07-2107 | - 10-08-2107 |
| मंगल | 10-08-2107 | - 23-08-2107 |
| राहु | 23-08-2107 | - 24-09-2107 |
| गुरु | 24-09-2107 | - 22-10-2107 |
| शनि | 22-10-2107 | - 25-11-2107 |
| बुध | 25-11-2107 | - 25-12-2107 |
| केतु | 25-12-2107 | - 06-01-2108 |
| शुक्र | 06-01-2108 | - 11-02-2108 |
| सूर्य | 11-02-2108 | - 21-02-2108 |

केतु-मंगल

93व4म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| मंगल | 21-02-2108 | - 01-03-2108 |
| राहु | 01-03-2108 | - 24-03-2108 |
| गुरु | 24-03-2108 | - 12-04-2108 |
| शनि | 12-04-2108 | - 06-05-2108 |
| बुध | 06-05-2108 | - 27-05-2108 |
| केतु | 27-05-2108 | - 05-06-2108 |
| शुक्र | 05-06-2108 | - 30-06-2108 |
| सूर्य | 30-06-2108 | - 07-07-2108 |
| चन्द्र | 07-07-2108 | - 20-07-2108 |

केतु-राहु

93व9म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| राहु | 20-07-2108 | - 15-09-2108 |
| गुरु | 15-09-2108 | - 05-11-2108 |
| शनि | 05-11-2108 | - 05-01-2109 |
| बुध | 05-01-2109 | - 28-02-2109 |
| केतु | 28-02-2109 | - 23-03-2109 |
| शुक्र | 23-03-2109 | - 26-05-2109 |
| सूर्य | 26-05-2109 | - 14-06-2109 |
| चन्द्र | 14-06-2109 | - 16-07-2109 |
| मंगल | 16-07-2109 | - 07-08-2109 |

केतु-गुरु

94व10म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| गुरु | 07-08-2109 | - 22-09-2109 |
| शनि | 22-09-2109 | - 15-11-2109 |
| बुध | 15-11-2109 | - 02-01-2110 |
| केतु | 02-01-2110 | - 22-01-2110 |
| शुक्र | 22-01-2110 | - 20-03-2110 |
| सूर्य | 20-03-2110 | - 06-04-2110 |
| चन्द्र | 06-04-2110 | - 04-05-2110 |
| मंगल | 04-05-2110 | - 24-05-2110 |
| राहु | 24-05-2110 | - 14-07-2110 |

केतु-शनि

95व9म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| शनि | 14-07-2110 | - 16-09-2110 |
| बुध | 16-09-2110 | - 12-11-2110 |
| केतु | 12-11-2110 | - 06-12-2110 |
| शुक्र | 06-12-2110 | - 12-02-2111 |
| सूर्य | 12-02-2111 | - 04-03-2111 |
| चन्द्र | 04-03-2111 | - 07-04-2111 |
| मंगल | 07-04-2111 | - 30-04-2111 |
| राहु | 30-04-2111 | - 30-06-2111 |
| गुरु | 30-06-2111 | - 23-08-2111 |

केतु-बुध

96व10म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|------------|--------------|
| बुध | 23-08-2111 | - 13-10-2111 |
| केतु | 13-10-2111 | - 03-11-2111 |
| शुक्र | 03-11-2111 | - 03-01-2112 |
| सूर्य | 03-01-2112 | - 21-01-2112 |
| चन्द्र | 21-01-2112 | - 20-02-2112 |
| मंगल | 20-02-2112 | - 12-03-2112 |
| राहु | 12-03-2112 | - 05-05-2112 |
| गुरु | 05-05-2112 | - 23-06-2112 |
| शनि | 23-06-2112 | - 19-08-2112 |

आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।



विंशोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

शुक्र महादशा : 19-08-2112 से 19-08-2132

आयु : 97व 10म से 117व 10म

शुक्र-शुक्र

97व10म*

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| शुक्र | 19-08-2112 - 10-03-2113 | |
| सूर्य | 10-03-2113 - 10-05-2113 | |
| चन्द्र | 10-05-2113 - 19-08-2113 | |
| मंगल | 19-08-2113 - 29-10-2113 | |
| राहु | 29-10-2113 - 30-04-2114 | |
| गुरु | 30-04-2114 - 09-10-2114 | |
| शनि | 09-10-2114 - 20-04-2115 | |
| बुध | 20-04-2115 - 09-10-2115 | |
| केतु | 09-10-2115 - 20-12-2115 | |

शुक्र-सूर्य

101व2म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| सूर्य | 20-12-2115 - 07-01-2116 | |
| चन्द्र | 07-01-2116 - 06-02-2116 | |
| मंगल | 06-02-2116 - 28-02-2116 | |
| राहु | 28-02-2116 - 22-04-2116 | |
| गुरु | 22-04-2116 - 10-06-2116 | |
| शनि | 10-06-2116 - 07-08-2116 | |
| बुध | 07-08-2116 - 28-09-2116 | |
| केतु | 28-09-2116 - 19-10-2116 | |
| शुक्र | 19-10-2116 - 19-12-2116 | |

शुक्र-चन्द्र

102व2म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| चन्द्र | 19-12-2116 - 07-02-2117 | |
| मंगल | 07-02-2117 - 15-03-2117 | |
| राहु | 15-03-2117 - 14-06-2117 | |
| गुरु | 14-06-2117 - 03-09-2117 | |
| शनि | 03-09-2117 - 09-12-2117 | |
| बुध | 09-12-2117 - 05-03-2118 | |
| केतु | 05-03-2118 - 10-04-2118 | |
| शुक्र | 10-04-2118 - 20-07-2118 | |
| सूर्य | 20-07-2118 - 19-08-2118 | |

शुक्र-मंगल

103व10म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| मंगल | 19-08-2118 - 13-09-2118 | |
| राहु | 13-09-2118 - 16-11-2118 | |
| गुरु | 16-11-2118 - 12-01-2119 | |
| शनि | 12-01-2119 - 21-03-2119 | |
| बुध | 21-03-2119 - 20-05-2119 | |
| केतु | 20-05-2119 - 14-06-2119 | |
| शुक्र | 14-06-2119 - 24-08-2119 | |
| सूर्य | 24-08-2119 - 14-09-2119 | |
| चन्द्र | 14-09-2119 - 20-10-2119 | |

शुक्र-राहु

105व0म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| राहु | 20-10-2119 - 01-04-2120 | |
| गुरु | 01-04-2120 - 25-08-2120 | |
| शनि | 25-08-2120 - 15-02-2121 | |
| बुध | 15-02-2121 - 20-07-2121 | |
| केतु | 20-07-2121 - 22-09-2121 | |
| शुक्र | 22-09-2121 - 23-03-2122 | |
| सूर्य | 23-03-2122 - 17-05-2122 | |
| चन्द्र | 17-05-2122 - 16-08-2122 | |
| मंगल | 16-08-2122 - 19-10-2122 | |

शुक्र-गुरु

108व0म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| गुरु | 19-10-2122 - 26-02-2123 | |
| शनि | 26-02-2123 - 30-07-2123 | |
| बुध | 30-07-2123 - 15-12-2123 | |
| केतु | 15-12-2123 - 10-02-2124 | |
| शुक्र | 10-02-2124 - 22-07-2124 | |
| सूर्य | 22-07-2124 - 08-09-2124 | |
| चन्द्र | 08-09-2124 - 28-11-2124 | |
| मंगल | 28-11-2124 - 24-01-2125 | |
| राहु | 24-01-2125 - 19-06-2125 | |

शुक्र-शनि

110व8म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| शनि | 19-06-2125 - 19-12-2125 | |
| बुध | 19-12-2125 - 01-06-2126 | |
| केतु | 01-06-2126 - 08-08-2126 | |
| शुक्र | 08-08-2126 - 17-02-2127 | |
| सूर्य | 17-02-2127 - 15-04-2127 | |
| चन्द्र | 15-04-2127 - 21-07-2127 | |
| मंगल | 21-07-2127 - 26-09-2127 | |
| राहु | 26-09-2127 - 18-03-2128 | |
| गुरु | 18-03-2128 - 19-08-2128 | |

शुक्र-बुध

113व10म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| बुध | 19-08-2128 - 13-01-2129 | |
| केतु | 13-01-2129 - 14-03-2129 | |
| शुक्र | 14-03-2129 - 02-09-2129 | |
| सूर्य | 02-09-2129 - 24-10-2129 | |
| चन्द्र | 24-10-2129 - 18-01-2130 | |
| मंगल | 18-01-2130 - 20-03-2130 | |
| राहु | 20-03-2130 - 22-08-2130 | |
| गुरु | 22-08-2130 - 07-01-2131 | |
| शनि | 07-01-2131 - 20-06-2131 | |

शुक्र-केतु

116व8म

| प्रत्यंतर | आरम्भ | अन्त |
|-----------|-------------------------|------|
| केतु | 20-06-2131 - 15-07-2131 | |
| शुक्र | 15-07-2131 - 24-09-2131 | |
| सूर्य | 24-09-2131 - 15-10-2131 | |
| चन्द्र | 15-10-2131 - 19-11-2131 | |
| मंगल | 19-11-2131 - 14-12-2131 | |
| राहु | 14-12-2131 - 16-02-2132 | |
| गुरु | 16-02-2132 - 13-04-2132 | |
| शनि | 13-04-2132 - 20-06-2132 | |
| बुध | 20-06-2132 - 19-08-2132 | |

आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।



विंशोत्तरी प्रत्यंतर व सूक्ष्म दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा समाप्ति काल की हैं।

चंद्र-केतु-शुक्र

| आरम्भ | 01-12-2025 |
|-------|------------------|
| अन्त | 05-01-2026 |
| शुक्र | 07-12-2025 02:59 |
| सूर्य | 08-12-2025 21:36 |
| चंद्र | 11-12-2025 20:37 |
| मंगल | 13-12-2025 22:20 |
| राहु | 19-12-2025 06:10 |
| गुरु | 23-12-2025 23:48 |
| शनि | 29-12-2025 14:44 |
| बुध | 03-01-2026 15:28 |
| कैतु | 05-01-2026 17:11 |

चंद्र-केतु-सूर्य

| आरम्भ | 05-01-2026 |
|-------|------------------|
| अन्त | 16-01-2026 |
| सूर्य | 06-01-2026 05:58 |
| चंद्र | 07-01-2026 03:16 |
| मंगल | 07-01-2026 18:11 |
| राहु | 09-01-2026 08:32 |
| गुरु | 10-01-2026 18:37 |
| शनि | 12-01-2026 11:06 |
| बुध | 13-01-2026 23:19 |
| कैतु | 14-01-2026 14:14 |
| शुक्र | 16-01-2026 08:51 |

चंद्र-केतु-चंद्र

| आरम्भ | 16-01-2026 |
|-------|------------------|
| अन्त | 03-02-2026 |
| चंद्र | 17-01-2026 20:21 |
| मंगल | 18-01-2026 21:13 |
| राहु | 21-01-2026 13:08 |
| गुरु | 23-01-2026 21:57 |
| शनि | 26-01-2026 17:25 |
| बुध | 29-01-2026 05:47 |
| कैतु | 30-01-2026 06:38 |
| शुक्र | 02-02-2026 05:39 |
| सूर्य | 03-02-2026 02:58 |

चंद्र-केतु-मंगल

| आरम्भ | 03-02-2026 |
|-------|------------------|
| अन्त | 15-02-2026 |
| मंगल | 03-02-2026 20:22 |
| राहु | 05-02-2026 17:06 |
| गुरु | 07-02-2026 08:52 |
| शनि | 09-02-2026 08:06 |
| बुध | 11-02-2026 02:21 |
| कैतु | 11-02-2026 19:45 |
| शुक्र | 13-02-2026 21:28 |
| सूर्य | 14-02-2026 12:23 |
| चंद्र | 15-02-2026 13:14 |

चंद्र-केतु-राहु

| आरम्भ | 15-02-2026 |
|-------|------------------|
| अन्त | 19-03-2026 |
| राहु | 20-02-2026 08:18 |
| गुरु | 24-02-2026 14:34 |
| शनि | 01-03-2026 16:00 |
| बुध | 06-03-2026 04:40 |
| कैतु | 08-03-2026 01:24 |
| शुक्र | 13-03-2026 09:14 |
| सूर्य | 14-03-2026 23:35 |
| चंद्र | 17-03-2026 15:30 |
| मंगल | 19-03-2026 12:15 |

चंद्र-केतु-गुरु

| आरम्भ | 19-03-2026 |
|-------|------------------|
| अन्त | 16-04-2026 |
| गुरु | 23-03-2026 07:09 |
| शनि | 27-03-2026 19:06 |
| बुध | 31-03-2026 19:41 |
| कैतु | 02-04-2026 11:28 |
| शुक्र | 07-04-2026 05:06 |
| सूर्य | 08-04-2026 15:11 |
| चंद्र | 11-04-2026 00:00 |
| मंगल | 12-04-2026 15:46 |
| राहु | 16-04-2026 22:02 |

चंद्र-केतु-शनि

| आरम्भ | 16-04-2026 |
|-------|------------------|
| अन्त | 20-05-2026 |
| शनि | 22-04-2026 06:14 |
| बुध | 27-04-2026 00:55 |
| कैतु | 29-04-2026 00:09 |
| शुक्र | 04-05-2026 15:05 |
| सूर्य | 06-05-2026 07:34 |
| चंद्र | 09-05-2026 03:02 |
| मंगल | 11-05-2026 02:16 |
| राहु | 16-05-2026 03:42 |
| गुरु | 20-05-2026 15:39 |

चंद्र-केतु-बुध

| आरम्भ | 20-05-2026 |
|-------|------------------|
| अन्त | 19-06-2026 |
| बुध | 24-05-2026 22:17 |
| कैतु | 26-05-2026 16:32 |
| शुक्र | 31-05-2026 17:16 |
| सूर्य | 02-06-2026 05:29 |
| चंद्र | 04-06-2026 17:51 |
| मंगल | 06-06-2026 12:07 |
| राहु | 11-06-2026 00:46 |
| गुरु | 15-06-2026 01:21 |
| शनि | 19-06-2026 20:03 |

चंद्र-शुक्र-शुक्र

| आरम्भ | 19-06-2026 |
|-------|------------------|
| अन्त | 29-09-2026 |
| शुक्र | 06-07-2026 17:53 |
| सूर्य | 11-07-2026 19:37 |
| चंद्र | 20-07-2026 06:32 |
| मंगल | 26-07-2026 04:35 |
| राहु | 10-08-2026 09:49 |
| गुरु | 23-08-2026 22:29 |
| शनि | 09-09-2026 00:01 |
| बुध | 23-09-2026 08:58 |
| कैतु | 29-09-2026 07:00 |

चंद्र-शुक्र-सूर्य

| आरम्भ | 29-09-2026 |
|-------|------------------|
| अन्त | 29-10-2026 |
| सूर्य | 30-09-2026 19:31 |
| चंद्र | 03-10-2026 08:24 |
| मंगल | 05-10-2026 03:01 |
| राहु | 09-10-2026 16:35 |
| गुरु | 13-10-2026 17:59 |
| शनि | 18-10-2026 13:38 |
| बुध | 22-10-2026 21:08 |
| कैतु | 24-10-2026 15:44 |
| शुक्र | 29-10-2026 17:29 |

चंद्र-शुक्र-चंद्र

| आरम्भ | 29-10-2026 |
|-------|------------------|
| अन्त | 19-12-2026 |
| चंद्र | 02-11-2026 22:56 |
| मंगल | 05-11-2026 21:58 |
| राहु | 13-11-2026 12:35 |
| गुरु | 20-11-2026 06:55 |
| शनि | 28-11-2026 07:41 |
| बुध | 05-12-2026 12:09 |
| कैतु | 08-12-2026 11:10 |
| शुक्र | 16-12-2026 22:05 |
| सूर्य | 19-12-2026 10:58 |

चंद्र-शुक्र-मंगल

| आरम्भ | 19-12-2026 |
|-------|------------------|
| अन्त | 23-01-2027 |
| मंगल | 21-12-2026 12:40 |
| राहु | 26-12-2026 20:30 |
| गुरु | 31-12-2026 14:08 |
| शनि | 06-01-2027 05:04 |
| बुध | 11-01-2027 05:48 |
| कैतु | 13-01-2027 07:31 |
| शुक्र | 19-01-2027 05:34 |
| सूर्य | 21-01-2027 00:10 |
| चंद्र | 23-01-2027 23:11 |



विंशोत्तरी प्रत्यंतर व सूक्ष्म दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा समाप्ति काल की हैं।

| चंद्र-शुक्र-राहु | | चंद्र-शुक्र-गुरु | | चंद्र-शुक्र-शनि | | चंद्र-शुक्र-बुध | |
|------------------|------------------|------------------|------------------|-----------------|------------------|-----------------|------------------|
| आरम्भ | 23-01-2027 | आरम्भ | 25-04-2027 | आरम्भ | 15-07-2027 | आरम्भ | 19-10-2027 |
| अन्त | 25-04-2027 | अन्त | 15-07-2027 | अन्त | 19-10-2027 | अन्त | 14-01-2028 |
| राहु | 06-02-2027 15:55 | गुरु | 06-05-2027 02:22 | शनि | 30-07-2027 16:52 | बुध | 01-11-2027 01:01 |
| गुरु | 18-02-2027 20:06 | शनि | 18-05-2027 22:48 | बुध | 13-08-2027 08:34 | केतु | 06-11-2027 01:45 |
| शनि | 05-03-2027 07:05 | बुध | 30-05-2027 10:46 | केतु | 18-08-2027 23:30 | शुक्र | 20-11-2027 10:42 |
| बुध | 18-03-2027 05:32 | केतु | 04-06-2027 04:23 | शुक्र | 04-09-2027 01:02 | सूर्य | 24-11-2027 18:11 |
| केतु | 23-03-2027 13:22 | शुक्र | 17-06-2027 17:03 | सूर्य | 08-09-2027 20:42 | चंद्र | 01-12-2027 22:39 |
| शुक्र | 07-04-2027 18:37 | सूर्य | 21-06-2027 18:27 | चंद्र | 16-09-2027 21:28 | मंगल | 06-12-2027 23:23 |
| सूर्य | 12-04-2027 08:11 | चंद्र | 28-06-2027 12:47 | मंगल | 22-09-2027 12:24 | राहु | 19-12-2027 21:51 |
| चंद्र | 19-04-2027 22:49 | मंगल | 03-07-2027 06:25 | राहु | 06-10-2027 23:23 | गुरु | 31-12-2027 09:48 |
| मंगल | 25-04-2027 06:39 | राहु | 15-07-2027 10:36 | गुरु | 19-10-2027 19:48 | शनि | 14-01-2028 01:31 |

| चंद्र-शुक्र-केतु | | चंद्र-सूर्य-सूर्य | | चंद्र-सूर्य-चंद्र | | चंद्र-सूर्य-मंगल | |
|------------------|------------------|-------------------|------------------|-------------------|------------------|------------------|------------------|
| आरम्भ | 14-01-2028 | आरम्भ | 18-02-2028 | आरम्भ | 27-02-2028 | आरम्भ | 13-03-2028 |
| अन्त | 18-02-2028 | अन्त | 27-02-2028 | अन्त | 13-03-2028 | अन्त | 24-03-2028 |
| केतु | 16-01-2028 03:13 | सूर्य | 19-02-2028 00:42 | चंद्र | 28-02-2028 23:19 | मंगल | 14-03-2028 13:03 |
| शुक्र | 22-01-2028 01:16 | चंद्र | 19-02-2028 18:58 | मंगल | 29-02-2028 20:38 | राहु | 16-03-2028 03:24 |
| सूर्य | 23-01-2028 19:52 | मंगल | 20-02-2028 07:45 | राहु | 03-03-2028 03:25 | गुरु | 17-03-2028 13:29 |
| चंद्र | 26-01-2028 18:53 | राहु | 21-02-2028 16:37 | गुरु | 05-03-2028 04:07 | शनि | 19-03-2028 05:58 |
| मंगल | 28-01-2028 20:36 | गुरु | 22-02-2028 21:50 | शनि | 07-03-2028 13:57 | बुध | 20-03-2028 18:11 |
| राहु | 03-02-2028 04:26 | शनि | 24-02-2028 08:32 | बुध | 09-03-2028 17:41 | केतु | 21-03-2028 09:06 |
| गुरु | 07-02-2028 22:04 | बुध | 25-02-2028 15:35 | केतु | 10-03-2028 15:00 | शुक्र | 23-03-2028 03:42 |
| शनि | 13-02-2028 13:00 | केतु | 26-02-2028 04:22 | शुक्र | 13-03-2028 03:52 | सूर्य | 23-03-2028 16:29 |
| बुध | 18-02-2028 13:44 | शुक्र | 27-02-2028 16:53 | सूर्य | 13-03-2028 22:08 | चंद्र | 24-03-2028 13:48 |

| चंद्र-सूर्य-राहु | | चंद्र-सूर्य-गुरु | | चंद्र-सूर्य-शनि | | चंद्र-सूर्य-बुध | |
|------------------|------------------|------------------|------------------|-----------------|------------------|-----------------|------------------|
| आरम्भ | 24-03-2028 | आरम्भ | 20-04-2028 | आरम्भ | 15-05-2028 | आरम्भ | 13-06-2028 |
| अन्त | 20-04-2028 | अन्त | 15-05-2028 | अन्त | 13-06-2028 | अन्त | 09-07-2028 |
| राहु | 28-03-2028 16:25 | गुरु | 24-04-2028 05:09 | शनि | 19-05-2028 21:30 | बुध | 16-06-2028 21:33 |
| गुरु | 01-04-2028 08:04 | शनि | 28-04-2028 01:41 | बुध | 23-05-2028 23:49 | केतु | 18-06-2028 09:46 |
| शनि | 05-04-2028 16:10 | बुध | 01-05-2028 12:28 | केतु | 25-05-2028 16:17 | शुक्र | 22-06-2028 17:15 |
| बुध | 09-04-2028 13:18 | केतु | 02-05-2028 22:33 | शुक्र | 30-05-2028 11:57 | सूर्य | 24-06-2028 00:18 |
| केतु | 11-04-2028 03:39 | शुक्र | 06-05-2028 23:57 | सूर्य | 31-05-2028 22:39 | चंद्र | 26-06-2028 04:02 |
| शुक्र | 15-04-2028 17:13 | सूर्य | 08-05-2028 05:10 | चंद्र | 03-06-2028 08:29 | मंगल | 27-06-2028 16:15 |
| सूर्य | 17-04-2028 02:06 | चंद्र | 10-05-2028 05:52 | मंगल | 05-06-2028 00:58 | राहु | 01-07-2028 13:24 |
| चंद्र | 19-04-2028 08:53 | मंगल | 11-05-2028 15:58 | राहु | 09-06-2028 09:03 | गुरु | 05-07-2028 00:11 |
| मंगल | 20-04-2028 23:14 | राहु | 15-05-2028 07:37 | गुरु | 13-06-2028 05:35 | शनि | 09-07-2028 02:30 |



विंशोत्तरी प्रत्यंतर व सूक्ष्म दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा समाप्ति काल की हैं।

| चंद्र-सूर्य-केतु | | चंद्र-सूर्य-शुक्र | | मंगल-मंगल-मंगल | | मंगल-मंगल-राहु | |
|------------------|------------------|-------------------|------------------|----------------|------------------|----------------|------------------|
| आरम्भ | 09-07-2028 | आरम्भ | 19-07-2028 | आरम्भ | 19-08-2028 | आरम्भ | 27-08-2028 |
| अन्त | 19-07-2028 | अन्त | 19-08-2028 | अन्त | 27-08-2028 | अन्त | 19-09-2028 |
| केतु | 09-07-2028 17:24 | शुक्र | 24-07-2028 19:55 | मंगल | 19-08-2028 16:50 | राहु | 31-08-2028 05:59 |
| शुक्र | 11-07-2028 12:01 | सूर्य | 26-07-2028 08:26 | राहु | 21-08-2028 00:09 | गुरु | 03-09-2028 05:34 |
| सूर्य | 12-07-2028 00:48 | चंद्र | 28-07-2028 21:18 | गुरु | 22-08-2028 03:59 | शनि | 06-09-2028 18:35 |
| चंद्र | 12-07-2028 22:06 | मंगल | 30-07-2028 15:55 | शनि | 23-08-2028 13:03 | बुध | 09-09-2028 22:38 |
| मंगल | 13-07-2028 13:01 | राहु | 04-08-2028 05:30 | बुध | 24-08-2028 18:37 | केतु | 11-09-2028 05:57 |
| राहु | 15-07-2028 03:22 | गुरु | 08-08-2028 06:53 | केतु | 25-08-2028 06:48 | शुक्र | 14-09-2028 23:27 |
| गुरु | 16-07-2028 13:28 | शनि | 13-08-2028 02:33 | शुक्र | 26-08-2028 17:36 | सूर्य | 16-09-2028 02:17 |
| शनि | 18-07-2028 05:57 | बुध | 17-08-2028 10:02 | सूर्य | 27-08-2028 04:03 | चंद्र | 17-09-2028 23:02 |
| बुध | 19-07-2028 18:10 | केतु | 19-08-2028 04:39 | चंद्र | 27-08-2028 21:27 | मंगल | 19-09-2028 06:21 |

| मंगल-मंगल-गुरु | | मंगल-मंगल-शनि | | मंगल-मंगल-बुध | | मंगल-मंगल-केतु | |
|----------------|------------------|---------------|------------------|---------------|------------------|----------------|------------------|
| आरम्भ | 19-09-2028 | आरम्भ | 09-10-2028 | आरम्भ | 01-11-2028 | आरम्भ | 22-11-2028 |
| अन्त | 09-10-2028 | अन्त | 01-11-2028 | अन्त | 22-11-2028 | अन्त | 01-12-2028 |
| गुरु | 21-09-2028 21:59 | शनि | 12-10-2028 21:20 | बुध | 04-11-2028 18:10 | केतु | 23-11-2028 09:35 |
| शनि | 25-09-2028 01:33 | बुध | 16-10-2028 05:37 | केतु | 05-11-2028 23:45 | शुक्र | 24-11-2028 20:23 |
| बुध | 27-09-2028 21:09 | केतु | 17-10-2028 14:41 | शुक्र | 09-11-2028 12:16 | सूर्य | 25-11-2028 06:50 |
| केतु | 29-09-2028 01:00 | शुक्र | 21-10-2028 13:08 | सूर्य | 10-11-2028 13:37 | चंद्र | 26-11-2028 00:14 |
| शुक्र | 02-10-2028 08:32 | सूर्य | 22-10-2028 17:28 | चंद्र | 12-11-2028 07:52 | मंगल | 26-11-2028 12:25 |
| सूर्य | 03-10-2028 08:24 | चंद्र | 24-10-2028 16:42 | मंगल | 13-11-2028 13:27 | राहु | 27-11-2028 19:44 |
| चंद्र | 05-10-2028 00:10 | मंगल | 26-10-2028 01:46 | राहु | 16-11-2028 17:31 | गुरु | 28-11-2028 23:34 |
| मंगल | 06-10-2028 04:01 | राहु | 29-10-2028 14:46 | गुरु | 19-11-2028 13:07 | शनि | 30-11-2028 08:38 |
| राहु | 09-10-2028 03:36 | गुरु | 01-11-2028 18:20 | शनि | 22-11-2028 21:25 | बुध | 01-12-2028 14:12 |

| मंगल-मंगल-शुक्र | | मंगल-मंगल-सूर्य | | मंगल-मंगल-चंद्र | | मंगल-राहु-राहु | |
|-----------------|------------------|-----------------|------------------|-----------------|------------------|----------------|------------------|
| आरम्भ | 01-12-2028 | आरम्भ | 26-12-2028 | आरम्भ | 02-01-2029 | आरम्भ | 15-01-2029 |
| अन्त | 26-12-2028 | अन्त | 02-01-2029 | अन्त | 15-01-2029 | अन्त | 13-03-2029 |
| शुक्र | 05-12-2028 17:38 | सूर्य | 26-12-2028 19:43 | चंद्र | 03-01-2029 22:36 | राहु | 23-01-2029 23:07 |
| सूर्य | 06-12-2028 23:28 | चंद्र | 27-12-2028 10:38 | मंगल | 04-01-2029 16:00 | गुरु | 31-01-2029 15:12 |
| चंद्र | 09-12-2028 01:11 | मंगल | 27-12-2028 21:04 | राहु | 06-01-2029 12:44 | शनि | 09-02-2029 17:48 |
| मंगल | 10-12-2028 11:59 | राहु | 28-12-2028 23:55 | गुरु | 08-01-2029 04:30 | बुध | 17-02-2029 21:23 |
| राहु | 14-12-2028 05:28 | गुरु | 29-12-2028 23:47 | शनि | 10-01-2029 03:44 | केतु | 21-02-2029 05:55 |
| गुरु | 17-12-2028 13:00 | शनि | 31-12-2028 04:07 | बुध | 11-01-2029 22:00 | शुक्र | 02-03-2029 20:01 |
| शनि | 21-12-2028 11:27 | बुध | 01-01-2029 05:28 | केतु | 12-01-2029 15:24 | सूर्य | 05-03-2029 17:03 |
| बुध | 24-12-2028 23:58 | केतु | 01-01-2029 15:55 | शुक्र | 14-01-2029 17:06 | चंद्र | 10-03-2029 12:06 |
| केतु | 26-12-2028 10:46 | शुक्र | 02-01-2029 21:44 | सूर्य | 15-01-2029 08:01 | मंगल | 13-03-2029 20:38 |



अष्टोत्तरी महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : शनि 6वर्ष 3मास 25दिन

जन्मकालीन दशा : शा-ल-ल-ल-ल

शनि (10व)

0 वर्ष - 6वर्ष

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------|
| शनि | | - |
| गुरु | | - |
| राहु | 02-10-2014 - 14-11-2014 | |
| शुक्र | 14-11-2014 - 25-10-2016 | |
| सूर्य | 25-10-2016 - 16-05-2017 | |
| चन्द्र | 16-05-2017 - 05-10-2018 | |
| मंगल | 05-10-2018 - 02-07-2019 | |
| बुध | 02-07-2019 - 27-01-2021 | |

गुरु (19व)

6वर्ष - 25वर्ष

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------|
| गुरु | 27-01-2021 - 01-06-2024 | |
| राहु | 01-06-2024 - 12-07-2026 | |
| शुक्र | 12-07-2026 - 23-03-2030 | |
| सूर्य | 23-03-2030 - 12-04-2031 | |
| चन्द्र | 12-04-2031 - 01-12-2033 | |
| मंगल | 01-12-2033 - 29-04-2035 | |
| बुध | 29-04-2035 - 25-04-2038 | |
| शनि | 25-04-2038 - 28-01-2040 | |

राहु (12व)

25वर्ष - 37वर्ष

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------|
| राहु | 28-01-2040 - 29-05-2041 | |
| शुक्र | 29-05-2041 - 28-09-2043 | |
| सूर्य | 28-09-2043 - 29-05-2044 | |
| चन्द्र | 29-05-2044 - 27-01-2046 | |
| मंगल | 27-01-2046 - 18-12-2046 | |
| बुध | 18-12-2046 - 07-11-2048 | |
| शनि | 07-11-2048 - 18-12-2049 | |
| गुरु | 18-12-2049 - 28-01-2052 | |

शुक्र (21व)

37वर्ष - 58वर्ष

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------|
| शुक्र | 28-01-2052 - 27-02-2056 | |
| सूर्य | 27-02-2056 - 28-04-2057 | |
| चन्द्र | 28-04-2057 - 29-03-2060 | |
| मंगल | 29-03-2060 - 18-10-2061 | |
| बुध | 18-10-2061 - 06-02-2065 | |
| शनि | 06-02-2065 - 17-01-2067 | |
| गुरु | 17-01-2067 - 28-09-2070 | |
| राहु | 28-09-2070 - 27-01-2073 | |

सूर्य (6व)

58वर्ष - 64वर्ष

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------|
| सूर्य | 27-01-2073 - 29-05-2073 | |
| चन्द्र | 29-05-2073 - 29-03-2074 | |
| मंगल | 29-03-2074 - 07-09-2074 | |
| बुध | 07-09-2074 - 18-08-2075 | |
| शनि | 18-08-2075 - 08-03-2076 | |
| गुरु | 08-03-2076 - 29-03-2077 | |
| राहु | 29-03-2077 - 27-11-2077 | |
| शुक्र | 27-11-2077 - 27-01-2079 | |

चन्द्र (15व)

64वर्ष - 79वर्ष

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------|
| चन्द्र | 27-01-2079 - 26-02-2081 | |
| मंगल | 26-02-2081 - 08-04-2082 | |
| बुध | 08-04-2082 - 18-08-2084 | |
| शनि | 18-08-2084 - 07-01-2086 | |
| गुरु | 07-01-2086 - 28-08-2088 | |
| राहु | 28-08-2088 - 28-04-2090 | |
| शुक्र | 28-04-2090 - 29-03-2093 | |
| सूर्य | 29-03-2093 - 27-01-2094 | |

मंगल (8व)

79वर्ष - 87वर्ष

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------|
| मंगल | 27-01-2094 - 31-08-2094 | |
| बुध | 31-08-2094 - 04-12-2095 | |
| शनि | 04-12-2095 - 31-08-2096 | |
| गुरु | 31-08-2096 - 27-01-2098 | |
| राहु | 27-01-2098 - 18-12-2098 | |
| शुक्र | 18-12-2098 - 09-07-2100 | |
| सूर्य | 09-07-2100 - 18-12-2100 | |
| चन्द्र | 18-12-2100 - 28-01-2102 | |

बुध (17व)

87वर्ष - 104वर्ष

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|-------------------------|------|
| बुध | 28-01-2102 - 01-10-2104 | |
| शनि | 01-10-2104 - 29-04-2106 | |
| गुरु | 29-04-2106 - 26-04-2109 | |
| राहु | 26-04-2109 - 16-03-2111 | |
| शुक्र | 16-03-2111 - 06-07-2114 | |
| सूर्य | 06-07-2114 - 16-06-2115 | |
| चन्द्र | 16-06-2115 - 25-10-2117 | |
| मंगल | 25-10-2117 - 28-01-2119 | |

अष्टोत्तरी दशा लागू करने का नियम :

लग्न के अतिरिक्त राहु लग्नेश से केन्द्र या त्रिकोण में हो या कृष्णपक्ष में दिन में या शुक्लपक्ष में रात्रि में जन्म हो।



अष्टोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा समाप्ति काल की हैं।

| शनि-राहु | शनि-शुक्र | शनि-सूर्य | शनि-चंद्र | शनि-मंगल |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| आरम्भ 02-10-2014 | आरम्भ 14-11-2014 | आरम्भ 25-10-2016 | आरम्भ 16-05-2017 | आरम्भ 05-10-2018 |
| अन्त 14-11-2014 | अन्त 25-10-2016 | अन्त 16-05-2017 | अन्त 05-10-2018 | अन्त 02-07-2019 |
| राहु | शुक्र 02-04-2015 | सूर्य 05-11-2016 | चंद्र 25-07-2017 | मंगल 25-10-2018 |
| शुक्र | सूर्य 11-05-2015 | चंद्र 03-12-2016 | मंगल 01-09-2017 | बुध 06-12-2018 |
| सूर्य | चंद्र 18-08-2015 | मंगल 18-12-2016 | बुध 19-11-2017 | शनि 01-01-2019 |
| चंद्र | मंगल 09-10-2015 | बुध 19-01-2017 | शनि 05-01-2018 | गुरु 17-02-2019 |
| मंगल | बुध 29-01-2016 | शनि 07-02-2017 | गुरु 05-04-2018 | राहु 19-03-2019 |
| बुध | शनि 04-04-2016 | गुरु 15-03-2017 | राहु 31-05-2018 | शुक्र 11-05-2019 |
| शनि | गुरु 07-08-2016 | राहु 06-04-2017 | शुक्र 07-09-2018 | सूर्य 26-05-2019 |
| गुरु | राहु 14-11-2014 | शुक्र 16-05-2017 | सूर्य 05-10-2018 | चंद्र 02-07-2019 |

| शनि-बुध | गुरु-गुरु | गुरु-राहु | गुरु-शुक्र | गुरु-सूर्य |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| आरम्भ 02-07-2019 | आरम्भ 27-01-2021 | आरम्भ 01-06-2024 | आरम्भ 12-07-2026 | आरम्भ 23-03-2030 |
| अन्त 27-01-2021 | अन्त 01-06-2024 | अन्त 12-07-2026 | अन्त 23-03-2030 | अन्त 12-04-2031 |
| बुध 01-10-2019 | गुरु 30-08-2021 | राहु 26-08-2024 | शुक्र 01-04-2027 | सूर्य 13-04-2030 |
| शनि 23-11-2019 | राहु 13-01-2022 | शुक्र 23-01-2025 | सूर्य 15-06-2027 | चंद्र 06-06-2030 |
| गुरु 03-03-2020 | शुक्र 07-09-2022 | सूर्य 07-03-2025 | चंद्र 19-12-2027 | मंगल 04-07-2030 |
| राहु 06-05-2020 | सूर्य 14-11-2022 | चंद्र 22-06-2025 | मंगल 28-03-2028 | बुध 03-09-2030 |
| शुक्र 26-08-2020 | चंद्र 03-05-2023 | मंगल 18-08-2025 | बुध 26-10-2028 | शनि 09-10-2030 |
| सूर्य 27-09-2020 | मंगल 01-08-2023 | बुध 17-12-2025 | शनि 28-02-2029 | गुरु 15-12-2030 |
| चंद्र 16-12-2020 | बुध 09-02-2024 | शनि 27-02-2026 | गुरु 24-10-2029 | राहु 27-01-2031 |
| मंगल 27-01-2021 | शनि 01-06-2024 | गुरु 12-07-2026 | राहु 23-03-2030 | शुक्र 12-04-2031 |

| गुरु-चंद्र | गुरु-मंगल | गुरु-बुध | गुरु-शनि | राहु-राहु |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| आरम्भ 12-04-2031 | आरम्भ 01-12-2033 | आरम्भ 29-04-2035 | आरम्भ 25-04-2038 | आरम्भ 28-01-2040 |
| अन्त 01-12-2033 | अन्त 29-04-2035 | अन्त 25-04-2038 | अन्त 28-01-2040 | अन्त 29-05-2041 |
| चंद्र 24-08-2031 | मंगल 08-01-2034 | बुध 18-10-2035 | शनि 24-06-2038 | राहु 22-03-2040 |
| मंगल 03-11-2031 | बुध 30-03-2034 | शनि 27-01-2036 | गुरु 15-10-2038 | शुक्र 25-06-2040 |
| बुध 03-04-2032 | शनि 17-05-2034 | गुरु 06-08-2036 | राहु 25-12-2038 | सूर्य 22-07-2040 |
| शनि 01-07-2032 | गुरु 15-08-2034 | राहु 06-12-2036 | शुक्र 29-04-2039 | चंद्र 27-09-2040 |
| गुरु 18-12-2032 | राहु 11-10-2034 | शुक्र 06-07-2037 | सूर्य 04-06-2039 | मंगल 03-11-2040 |
| राहु 04-04-2033 | शुक्र 19-01-2035 | सूर्य 05-09-2037 | चंद्र 01-09-2039 | बुध 18-01-2041 |
| शुक्र 08-10-2033 | सूर्य 17-02-2035 | चंद्र 03-02-2038 | मंगल 19-10-2039 | शनि 04-03-2041 |
| सूर्य 01-12-2033 | चंद्र 29-04-2035 | मंगल 25-04-2038 | बुध 28-01-2040 | गुरु 29-05-2041 |



अष्टोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा समाप्ति काल की हैं।

| राहु-शुक्र | |
|------------|------------|
| आरम्भ | 29-05-2041 |
| अन्त | 28-09-2043 |
| शुक्र | 11-11-2041 |
| सूर्य | 28-12-2041 |
| चंद्र | 25-04-2042 |
| मंगल | 27-06-2042 |
| बुध | 09-11-2042 |
| शनि | 27-01-2043 |
| गुरु | 25-06-2043 |
| राहु | 28-09-2043 |

| राहु-सूर्य | |
|------------|------------|
| आरम्भ | 28-09-2043 |
| अन्त | 29-05-2044 |
| सूर्य | 12-10-2043 |
| चंद्र | 15-11-2043 |
| मंगल | 03-12-2043 |
| बुध | 10-01-2044 |
| शनि | 01-02-2044 |
| गुरु | 15-03-2044 |
| राहु | 11-04-2044 |
| शुक्र | 29-05-2044 |

| राहु-चंद्र | |
|------------|------------|
| आरम्भ | 29-05-2044 |
| अन्त | 27-01-2046 |
| चंद्र | 21-08-2044 |
| मंगल | 05-10-2044 |
| बुध | 09-01-2045 |
| शनि | 06-03-2045 |
| गुरु | 22-06-2045 |
| राहु | 28-08-2045 |
| शुक्र | 25-12-2045 |
| सूर्य | 27-01-2046 |

| राहु-मंगल | |
|-----------|------------|
| आरम्भ | 27-01-2046 |
| अन्त | 18-12-2046 |
| मंगल | 20-02-2046 |
| बुध | 13-04-2046 |
| शनि | 13-05-2046 |
| गुरु | 09-07-2046 |
| राहु | 14-08-2046 |
| शुक्र | 16-10-2046 |
| सूर्य | 03-11-2046 |
| चंद्र | 18-12-2046 |

| राहु-बुध | |
|----------|------------|
| आरम्भ | 18-12-2046 |
| अन्त | 07-11-2048 |
| बुध | 06-04-2047 |
| शनि | 09-06-2047 |
| गुरु | 08-10-2047 |
| राहु | 24-12-2047 |
| शुक्र | 06-05-2048 |
| सूर्य | 13-06-2048 |
| चंद्र | 17-09-2048 |
| मंगल | 07-11-2048 |

| राहु-शनि | |
|----------|------------|
| आरम्भ | 07-11-2048 |
| अन्त | 18-12-2049 |
| शनि | 15-12-2048 |
| गुरु | 24-02-2049 |
| राहु | 10-04-2049 |
| शुक्र | 28-06-2049 |
| सूर्य | 20-07-2049 |
| चंद्र | 15-09-2049 |
| मंगल | 15-10-2049 |
| बुध | 18-12-2049 |

| राहु-गुरु | |
|-----------|------------|
| आरम्भ | 18-12-2049 |
| अन्त | 28-01-2052 |
| गुरु | 02-05-2050 |
| राहु | 27-07-2050 |
| शुक्र | 24-12-2050 |
| सूर्य | 05-02-2051 |
| चंद्र | 23-05-2051 |
| मंगल | 19-07-2051 |
| बुध | 17-11-2051 |
| शनि | 28-01-2052 |

| शुक्र-शुक्र | |
|-------------|------------|
| आरम्भ | 28-01-2052 |
| अन्त | 27-02-2056 |
| शुक्र | 13-11-2052 |
| सूर्य | 04-02-2053 |
| चंद्र | 30-08-2053 |
| मंगल | 18-12-2053 |
| बुध | 10-08-2054 |
| शनि | 26-12-2054 |
| गुरु | 15-09-2055 |
| राहु | 27-02-2056 |

| शुक्र-सूर्य | |
|-------------|------------|
| आरम्भ | 27-02-2056 |
| अन्त | 28-04-2057 |
| सूर्य | 22-03-2056 |
| चंद्र | 20-05-2056 |
| मंगल | 21-06-2056 |
| बुध | 27-08-2056 |
| शनि | 05-10-2056 |
| गुरु | 19-12-2056 |
| राहु | 05-02-2057 |
| शुक्र | 28-04-2057 |

| शुक्र-चंद्र | |
|-------------|------------|
| आरम्भ | 28-04-2057 |
| अन्त | 29-03-2060 |
| चंद्र | 23-09-2057 |
| मंगल | 11-12-2057 |
| बुध | 28-05-2058 |
| शनि | 04-09-2058 |
| गुरु | 10-03-2059 |
| राहु | 06-07-2059 |
| शुक्र | 29-01-2060 |
| सूर्य | 29-03-2060 |

| शुक्र-मंगल | |
|------------|------------|
| आरम्भ | 29-03-2060 |
| अन्त | 18-10-2061 |
| मंगल | 10-05-2060 |
| बुध | 07-08-2060 |
| शनि | 29-09-2060 |
| गुरु | 07-01-2061 |
| राहु | 11-03-2061 |
| शुक्र | 29-06-2061 |
| सूर्य | 31-07-2061 |
| चंद्र | 18-10-2061 |

| शुक्र-बुध | |
|-----------|------------|
| आरम्भ | 18-10-2061 |
| अन्त | 06-02-2065 |
| बुध | 26-04-2062 |
| शनि | 16-08-2062 |
| गुरु | 16-03-2063 |
| राहु | 28-07-2063 |
| शुक्र | 19-03-2064 |
| सूर्य | 25-05-2064 |
| चंद्र | 09-11-2064 |
| मंगल | 06-02-2065 |

| शुक्र-शनि | |
|-----------|------------|
| आरम्भ | 06-02-2065 |
| अन्त | 17-01-2067 |
| शनि | 13-04-2065 |
| गुरु | 16-08-2065 |
| राहु | 03-11-2065 |
| शुक्र | 21-03-2066 |
| सूर्य | 29-04-2066 |
| चंद्र | 06-08-2066 |
| मंगल | 28-09-2066 |
| बुध | 17-01-2067 |

| शुक्र-गुरु | |
|------------|------------|
| आरम्भ | 17-01-2067 |
| अन्त | 28-09-2070 |
| गुरु | 12-09-2067 |
| राहु | 09-02-2068 |
| शुक्र | 28-10-2068 |
| सूर्य | 11-01-2069 |
| चंद्र | 17-07-2069 |
| मंगल | 25-10-2069 |
| बुध | 26-05-2070 |
| शनि | 28-09-2070 |

| शुक्र-राहु | |
|------------|------------|
| आरम्भ | 28-09-2070 |
| अन्त | 27-01-2073 |
| राहु | 31-12-2070 |
| शुक्र | 15-06-2071 |
| सूर्य | 01-08-2071 |
| चंद्र | 28-11-2071 |
| मंगल | 30-01-2072 |
| बुध | 12-06-2072 |
| शनि | 30-08-2072 |
| गुरु | 27-01-2073 |



अष्टोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा समाप्ति काल की हैं।

सूर्य-सूर्य

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 27-01-2073 |
| अन्त | 29-05-2073 |
| सूर्य | 03-02-2073 |
| चंद्र | 20-02-2073 |
| मंगल | 01-03-2073 |
| बुध | 20-03-2073 |
| शनि | 31-03-2073 |
| गुरु | 21-04-2073 |
| राहु | 05-05-2073 |
| शुक्र | 29-05-2073 |

सूर्य-चंद्र

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 29-05-2073 |
| अन्त | 29-03-2074 |
| चंद्र | 10-07-2073 |
| मंगल | 01-08-2073 |
| बुध | 18-09-2073 |
| शनि | 17-10-2073 |
| गुरु | 09-12-2073 |
| राहु | 12-01-2074 |
| शुक्र | 12-03-2074 |
| सूर्य | 29-03-2074 |

सूर्य-मंगल

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 29-03-2074 |
| अन्त | 07-09-2074 |
| मंगल | 10-04-2074 |
| बुध | 06-05-2074 |
| शनि | 21-05-2074 |
| गुरु | 18-06-2074 |
| राहु | 06-07-2074 |
| शुक्र | 07-08-2074 |
| सूर्य | 16-08-2074 |
| चंद्र | 07-09-2074 |

सूर्य-बुध

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 07-09-2074 |
| अन्त | 18-08-2075 |
| बुध | 01-11-2074 |
| शनि | 03-12-2074 |
| गुरु | 01-02-2075 |
| राहु | 12-03-2075 |
| शुक्र | 18-05-2075 |
| सूर्य | 06-06-2075 |
| चंद्र | 24-07-2075 |
| मंगल | 18-08-2075 |

सूर्य-शनि

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 18-08-2075 |
| अन्त | 08-03-2076 |
| शनि | 06-09-2075 |
| गुरु | 12-10-2075 |
| राहु | 03-11-2075 |
| शुक्र | 13-12-2075 |
| सूर्य | 24-12-2075 |
| चंद्र | 21-01-2076 |
| मंगल | 05-02-2076 |
| बुध | 08-03-2076 |

सूर्य-गुरु

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 08-03-2076 |
| अन्त | 29-03-2077 |
| गुरु | 15-05-2076 |
| राहु | 27-06-2076 |
| शुक्र | 10-09-2076 |
| सूर्य | 01-10-2076 |
| चंद्र | 24-11-2076 |
| मंगल | 22-12-2076 |
| बुध | 21-02-2077 |
| शनि | 29-03-2077 |

सूर्य-राहु

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 29-03-2077 |
| अन्त | 27-11-2077 |
| राहु | 25-04-2077 |
| शुक्र | 11-06-2077 |
| सूर्य | 25-06-2077 |
| चंद्र | 29-07-2077 |
| मंगल | 16-08-2077 |
| बुध | 23-09-2077 |
| शनि | 15-10-2077 |
| गुरु | 27-11-2077 |

सूर्य-शुक्र

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 27-11-2077 |
| अन्त | 27-01-2079 |
| शुक्र | 18-02-2078 |
| सूर्य | 14-03-2078 |
| चंद्र | 12-05-2078 |
| मंगल | 13-06-2078 |
| बुध | 19-08-2078 |
| शनि | 27-09-2078 |
| गुरु | 11-12-2078 |
| राहु | 27-01-2079 |

चंद्र-चंद्र

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 27-01-2079 |
| अन्त | 26-02-2081 |
| चंद्र | 13-05-2079 |
| मंगल | 08-07-2079 |
| बुध | 05-11-2079 |
| शनि | 15-01-2080 |
| गुरु | 28-05-2080 |
| राहु | 20-08-2080 |
| शुक्र | 15-01-2081 |
| सूर्य | 26-02-2081 |

चंद्र-मंगल

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 26-02-2081 |
| अन्त | 08-04-2082 |
| मंगल | 28-03-2081 |
| बुध | 31-05-2081 |
| शनि | 08-07-2081 |
| गुरु | 17-09-2081 |
| राहु | 01-11-2081 |
| शुक्र | 19-01-2082 |
| सूर्य | 11-02-2082 |
| चंद्र | 08-04-2082 |

चंद्र-बुध

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 08-04-2082 |
| अन्त | 18-08-2084 |
| बुध | 22-08-2082 |
| शनि | 10-11-2082 |
| गुरु | 10-04-2083 |
| राहु | 15-07-2083 |
| शुक्र | 30-12-2083 |
| सूर्य | 16-02-2084 |
| चंद्र | 15-06-2084 |
| मंगल | 18-08-2084 |

चंद्र-शनि

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 18-08-2084 |
| अन्त | 07-01-2086 |
| शनि | 03-10-2084 |
| गुरु | 01-01-2085 |
| राहु | 26-02-2085 |
| शुक्र | 05-06-2085 |
| सूर्य | 03-07-2085 |
| चंद्र | 11-09-2085 |
| मंगल | 19-10-2085 |
| बुध | 07-01-2086 |

चंद्र-गुरु

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 07-01-2086 |
| अन्त | 28-08-2088 |
| गुरु | 25-06-2086 |
| राहु | 10-10-2086 |
| शुक्र | 16-04-2087 |
| सूर्य | 08-06-2087 |
| चंद्र | 20-10-2087 |
| मंगल | 31-12-2087 |
| बुध | 30-05-2088 |
| शनि | 28-08-2088 |

चंद्र-राहु

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 28-08-2088 |
| अन्त | 28-04-2090 |
| राहु | 03-11-2088 |
| शुक्र | 02-03-2089 |
| सूर्य | 04-04-2089 |
| चंद्र | 28-06-2089 |
| मंगल | 12-08-2089 |
| बुध | 16-11-2089 |
| शनि | 11-01-2090 |
| गुरु | 28-04-2090 |

चंद्र-शुक्र

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 28-04-2090 |
| अन्त | 29-03-2093 |
| शुक्र | 21-11-2090 |
| सूर्य | 20-01-2091 |
| चंद्र | 17-06-2091 |
| मंगल | 04-09-2091 |
| बुध | 18-02-2092 |
| शनि | 27-05-2092 |
| गुरु | 30-11-2092 |
| राहु | 29-03-2093 |



अष्टोत्तरी अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा समाप्ति काल की हैं।

| चंद्र-सूर्य | मंगल-मंगल | मंगल-बुध | मंगल-शनि | मंगल-गुरु |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| आरम्भ 29-03-2093 | आरम्भ 27-01-2094 | आरम्भ 31-08-2094 | आरम्भ 04-12-2095 | आरम्भ 31-08-2096 |
| अन्त 27-01-2094 | अन्त 31-08-2094 | अन्त 04-12-2095 | अन्त 31-08-2096 | अन्त 27-01-2098 |
| सूर्य 15-04-2093 | मंगल 12-02-2094 | बुध 12-11-2094 | शनि 29-12-2095 | गुरु 29-11-2096 |
| चंद्र 27-05-2093 | बुध 18-03-2094 | शनि 24-12-2094 | गुरु 15-02-2096 | राहु 25-01-2097 |
| मंगल 18-06-2093 | शनि 07-04-2094 | गुरु 15-03-2095 | राहु 16-03-2096 | शुक्र 05-05-2097 |
| बुध 05-08-2093 | गुरु 15-05-2094 | राहु 05-05-2095 | शुक्र 08-05-2096 | सूर्य 03-06-2097 |
| शनि 02-09-2093 | राहु 08-06-2094 | शुक्र 03-08-2095 | सूर्य 23-05-2096 | चंद्र 13-08-2097 |
| गुरु 26-10-2093 | शुक्र 20-07-2094 | सूर्य 28-08-2095 | चंद्र 29-06-2096 | मंगल 20-09-2097 |
| राहु 29-11-2093 | सूर्य 01-08-2094 | चंद्र 31-10-2095 | मंगल 19-07-2096 | बुध 10-12-2097 |
| शुक्र 27-01-2094 | चंद्र 31-08-2094 | मंगल 04-12-2095 | बुध 31-08-2096 | शनि 27-01-2098 |

| मंगल-राहु | मंगल-शुक्र | मंगल-सूर्य | मंगल-चंद्र | बुध-बुध |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| आरम्भ 27-01-2098 | आरम्भ 18-12-2098 | आरम्भ 09-07-2100 | आरम्भ 18-12-2100 | आरम्भ 28-01-2102 |
| अन्त 18-12-2098 | अन्त 09-07-2100 | अन्त 18-12-2100 | अन्त 28-01-2102 | अन्त 01-10-2104 |
| राहु 04-03-2098 | शुक्र 07-04-2099 | सूर्य 18-07-2100 | चंद्र 12-02-2101 | बुध 01-07-2102 |
| शुक्र 06-05-2098 | सूर्य 09-05-2099 | चंद्र 09-08-2100 | मंगल 15-03-2101 | शनि 29-09-2102 |
| सूर्य 24-05-2098 | चंद्र 27-07-2099 | मंगल 21-08-2100 | बुध 17-05-2101 | गुरु 20-03-2103 |
| चंद्र 08-07-2098 | मंगल 07-09-2099 | बुध 16-09-2100 | शनि 24-06-2101 | राहु 07-07-2103 |
| मंगल 01-08-2098 | बुध 05-12-2099 | शनि 01-10-2100 | गुरु 03-09-2101 | शुक्र 13-01-2104 |
| बुध 21-09-2098 | शनि 27-01-2100 | गुरु 30-10-2100 | राहु 18-10-2101 | सूर्य 07-03-2104 |
| शनि 22-10-2098 | गुरु 07-05-2100 | राहु 17-11-2100 | शुक्र 05-01-2102 | चंद्र 21-07-2104 |
| गुरु 18-12-2098 | राहु 09-07-2100 | शुक्र 18-12-2100 | सूर्य 28-01-2102 | मंगल 01-10-2104 |

| बुध-शनि | बुध-गुरु | बुध-राहु | बुध-शुक्र | बुध-सूर्य |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| आरम्भ 01-10-2104 | आरम्भ 29-04-2106 | आरम्भ 26-04-2109 | आरम्भ 16-03-2111 | आरम्भ 06-07-2114 |
| अन्त 29-04-2106 | अन्त 26-04-2109 | अन्त 16-03-2111 | अन्त 06-07-2114 | अन्त 16-06-2115 |
| शनि 24-11-2104 | गुरु 07-11-2106 | राहु 11-07-2109 | शुक्र 06-11-2111 | सूर्य 25-07-2114 |
| गुरु 05-03-2105 | राहु 09-03-2107 | शुक्र 22-11-2109 | सूर्य 12-01-2112 | चंद्र 11-09-2114 |
| राहु 08-05-2105 | शुक्र 07-10-2107 | सूर्य 31-12-2109 | चंद्र 28-06-2112 | मंगल 06-10-2114 |
| शुक्र 27-08-2105 | सूर्य 07-12-2107 | चंद्र 06-04-2110 | मंगल 25-09-2112 | बुध 30-11-2114 |
| सूर्य 28-09-2105 | चंद्र 07-05-2108 | मंगल 27-05-2110 | बुध 03-04-2113 | शनि 01-01-2115 |
| चंद्र 17-12-2105 | मंगल 26-07-2108 | बुध 12-09-2110 | शनि 24-07-2113 | गुरु 02-03-2115 |
| मंगल 29-01-2106 | बुध 14-01-2109 | शनि 15-11-2110 | गुरु 22-02-2114 | राहु 10-04-2115 |
| बुध 29-04-2106 | शनि 26-04-2109 | गुरु 16-03-2111 | राहु 06-07-2114 | शुक्र 16-06-2115 |



योगिनी महा व अन्तर दशाएं

(प्रथम चक्र)

भोग्य दशा : संकटा 5वर्ष 2मास 3दिन

| संकटा (8व) | ० वर्ष - | ५व2म | मंगला (1व) | ५व2म - | ६व2म | पिंगला (2व) | ६व2म - | ८व2म |
|------------|------------|------------|------------|------------|------------|-------------|------------|------------|
| अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त |
| संकटारा | | | मंगला चं | 05-12-2019 | 15-12-2019 | पिंगला सू | 04-12-2020 | 13-01-2021 |
| मंगला चं | | | पिंगला सू | 15-12-2019 | 04-01-2020 | धान्या गु | 13-01-2021 | 15-03-2021 |
| पिंगला सू | | | धान्या गु | 04-01-2020 | 03-02-2020 | भ्रामरी मं | 15-03-2021 | 04-06-2021 |
| धान्या गु | 02-10-2014 | 14-01-2015 | भ्रामरी मं | 03-02-2020 | 15-03-2020 | भद्रिका बु | 04-06-2021 | 14-09-2021 |
| भ्रामरी मं | 14-01-2015 | 05-12-2015 | भद्रिकाबु | 15-03-2020 | 05-05-2020 | उल्का श | 14-09-2021 | 14-01-2022 |
| भद्रिकाबु | 05-12-2015 | 13-01-2017 | उल्का श | 05-05-2020 | 05-07-2020 | सिद्धा शु | 14-01-2022 | 05-06-2022 |
| उल्का श | 13-01-2017 | 15-05-2018 | सिद्धा शु | 05-07-2020 | 14-09-2020 | संकटा रा | 05-06-2022 | 14-11-2022 |
| सिद्धा शु | 15-05-2018 | 05-12-2019 | संकटा रा | 14-09-2020 | 04-12-2020 | मंगला चं | 14-11-2022 | 04-12-2022 |

| धान्या (3व) | ८व2म - | ११व2म | भ्रामरी (4व) | ११व2म - | १५व2म | भद्रिका (5व) | १५व2म - | २०व2म |
|-------------|------------|------------|--------------|------------|------------|--------------|------------|------------|
| अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त |
| धान्या गु | 04-12-2022 | 06-03-2023 | भ्रामरी मं | 04-12-2025 | 15-05-2026 | भद्रिका बु | 04-12-2029 | 15-08-2030 |
| भ्रामरी मं | 06-03-2023 | 05-07-2023 | भद्रिकाबु | 15-05-2026 | 04-12-2026 | उल्का श | 15-08-2030 | 15-06-2031 |
| भद्रिकाबु | 05-07-2023 | 05-12-2023 | उल्का श | 04-12-2026 | 05-08-2027 | सिद्धा शु | 15-06-2031 | 04-06-2032 |
| उल्का श | 05-12-2023 | 04-06-2024 | सिद्धा शु | 05-08-2027 | 15-05-2028 | संकटा रा | 04-06-2032 | 15-07-2033 |
| सिद्धा शु | 04-06-2024 | 03-01-2025 | संकटा रा | 15-05-2028 | 05-04-2029 | मंगला चं | 15-07-2033 | 04-09-2033 |
| संकटा रा | 03-01-2025 | 04-09-2025 | मंगला चं | 05-04-2029 | 15-05-2029 | पिंगला सू | 04-09-2033 | 14-12-2033 |
| मंगला चं | 04-09-2025 | 04-10-2025 | पिंगला सू | 15-05-2029 | 04-08-2029 | धान्या गु | 14-12-2033 | 15-05-2034 |
| पिंगला सू | 04-10-2025 | 04-12-2025 | धान्या गु | 04-08-2029 | 04-12-2029 | भ्रामरी मं | 15-05-2034 | 04-12-2034 |

| उल्का (6व) | २०व2म - | २६व2म | सिद्धा (7व) | २६व2म - | ३३व2म |
|------------|------------|------------|-------------|------------|------------|
| अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त |
| उल्का श | 04-12-2034 | 04-12-2035 | सिद्धा शु | 04-12-2040 | 15-04-2042 |
| सिद्धा शु | 04-12-2035 | 03-02-2037 | संकटा रा | 15-04-2042 | 04-11-2043 |
| संकटा रा | 03-02-2037 | 05-06-2038 | मंगला चं | 04-11-2043 | 14-01-2044 |
| मंगला चं | 05-06-2038 | 04-08-2038 | पिंगला सू | 14-01-2044 | 04-06-2044 |
| पिंगला सू | 04-08-2038 | 04-12-2038 | धान्या गु | 04-06-2044 | 03-01-2045 |
| धान्या गु | 04-12-2038 | 05-06-2039 | भ्रामरी मं | 03-01-2045 | 14-10-2045 |
| भ्रामरी मं | 05-06-2039 | 03-02-2040 | भद्रिकाबु | 14-10-2045 | 04-10-2046 |
| भद्रिकाबु | 03-02-2040 | 04-12-2040 | उल्का श | 04-10-2046 | 04-12-2047 |



योगिनी महा व अन्तर दशाएं
(द्वितीय चक्र)

| संकटा (8व) | | 33व2म - 41व2म | | मंगला (1व) | | 41व2म - 42व2म | | पिंगला (2व) | | 42व2म - 44व2म | |
|-------------------|------------|----------------------|------------|-------------------|------------|----------------------|------------|--------------------|------------|----------------------|------------|
| अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त |
| संकटारा | 04-12-2047 | 14-09-2049 | मंगला चं | 04-12-2055 | 14-12-2055 | पिंगला सू | 04-12-2056 | 13-01-2057 | धान्या गु | 13-01-2057 | 15-03-2057 |
| मंगला चं | 14-09-2049 | 04-12-2049 | पिंगला सू | 14-12-2055 | 04-01-2056 | धान्या गु | 04-01-2056 | 03-02-2056 | भ्रामरी मं | 15-03-2057 | 04-06-2057 |
| पिंगला सू | 04-12-2049 | 15-05-2050 | धान्या गु | 04-01-2056 | 03-02-2056 | भ्रामरी मं | 03-02-2056 | 15-03-2056 | भद्रिकाबु | 04-06-2057 | 14-09-2057 |
| धान्या गु | 15-05-2050 | 14-01-2051 | भ्रामरी मं | 03-02-2056 | 15-03-2056 | भद्रिकाबु | 15-03-2056 | 05-05-2056 | उल्का श | 14-09-2057 | 13-01-2058 |
| भ्रामरी मं | 14-01-2051 | 04-12-2051 | भद्रिकाबु | 15-03-2056 | 05-05-2056 | उल्का श | 05-05-2056 | 04-07-2056 | सिद्धा शु | 13-01-2058 | 04-06-2058 |
| भद्रिकाबु | 04-12-2051 | 13-01-2053 | उल्का श | 05-05-2056 | 04-07-2056 | सिद्धा शु | 04-07-2056 | 13-09-2056 | संकटा रा | 04-06-2058 | 14-11-2058 |
| उल्का श | 13-01-2053 | 15-05-2054 | सिद्धा शु | 04-07-2056 | 13-09-2056 | संकटा रा | 13-09-2056 | 04-12-2056 | मंगला चं | 14-11-2058 | 04-12-2058 |
| सिद्धा शु | 15-05-2054 | 04-12-2055 | | | | | | | | | |

| धान्या (3व) | | 44व2म - 47व2म | | भ्रामरी (4व) | | 47व2म - 51व2म | | भद्रिका (5व) | | 51व2म - 56व2म | |
|--------------------|------------|----------------------|------------|---------------------|------------|----------------------|------------|---------------------|------------|----------------------|------------|
| अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त |
| धान्या गु | 04-12-2058 | 05-03-2059 | भ्रामरी मं | 04-12-2061 | 15-05-2062 | भद्रिकाबु | 15-05-2062 | 04-12-2062 | उल्का श | 14-08-2066 | 15-06-2067 |
| भ्रामरी मं | 05-03-2059 | 05-07-2059 | भद्रिकाबु | 15-05-2062 | 04-12-2062 | उल्का श | 04-12-2062 | 05-08-2063 | सिद्धा शु | 15-06-2067 | 04-06-2068 |
| भद्रिकाबु | 05-07-2059 | 04-12-2059 | उल्का श | 04-12-2062 | 05-08-2063 | सिद्धा शु | 05-08-2063 | 15-05-2064 | संकटा रा | 04-06-2068 | 15-07-2069 |
| उल्का श | 04-12-2059 | 04-06-2060 | सिद्धा शु | 05-08-2063 | 15-05-2064 | संकटा रा | 15-05-2064 | 04-04-2065 | मंगला चं | 15-07-2069 | 03-09-2069 |
| सिद्धा शु | 04-06-2060 | 03-01-2061 | संकटा रा | 15-05-2064 | 04-04-2065 | मंगला चं | 04-04-2065 | 15-05-2065 | पिंगला सू | 03-09-2069 | 14-12-2069 |
| संकटा रा | 03-01-2061 | 03-09-2061 | मंगला चं | 04-04-2065 | 15-05-2065 | पिंगला सू | 15-05-2065 | 04-08-2065 | धान्या गु | 14-12-2069 | 15-05-2070 |
| मंगला चं | 03-09-2061 | 04-10-2061 | धान्या गु | 04-08-2065 | 04-12-2065 | धान्या गु | 04-08-2065 | 04-12-2065 | भ्रामरी मं | 15-05-2070 | 04-12-2070 |
| पिंगला सू | 04-10-2061 | 04-12-2061 | | | | | | | | | |

| उल्का (6व) | | 56व2म - 62व2म | | सिद्धा (7व) | | 62व2म - 69व2म | |
|-------------------|------------|----------------------|------------|--------------------|------------|----------------------|------------|
| अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ |
| उल्का श | 04-12-2070 | 04-12-2071 | सिद्धा शु | 03-12-2076 | 15-04-2078 | संकटा रा | 15-04-2078 |
| सिद्धा शु | 04-12-2071 | 02-02-2073 | संकटा रा | 02-02-2073 | 04-06-2074 | मंगला चं | 04-11-2079 |
| संकटा रा | 02-02-2073 | 04-06-2074 | मंगला चं | 04-06-2074 | 04-08-2074 | पिंगला सू | 14-01-2080 |
| मंगला चं | 04-06-2074 | 04-08-2074 | पिंगला सू | 04-08-2074 | 04-12-2074 | धान्या गु | 04-06-2080 |
| पिंगला सू | 04-08-2074 | 04-12-2074 | धान्या गु | 04-12-2074 | 05-06-2075 | भ्रामरी मं | 03-01-2081 |
| धान्या गु | 04-12-2074 | 05-06-2075 | भ्रामरी मं | 05-06-2075 | 03-02-2076 | भद्रिकाबु | 14-10-2081 |
| भ्रामरी मं | 05-06-2075 | 03-02-2076 | भद्रिकाबु | 03-02-2076 | 03-12-2076 | उल्का श | 04-10-2082 |
| भद्रिकाबु | 03-02-2076 | 03-12-2076 | | | | | |



योगिनी महा व अन्तर दशाएं

(तृतीय चक्र)

| संकटा (8व) | | 69व2म - | 77व2म | मंगला (1व) | | 77व2म - | 78व2म | पिंगला (2व) | | 78व2म - | 80व2म |
|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|-------------|------------|------------|------------|
| अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त |
| संकटारा | 04-12-2083 | 13-09-2085 | मंगला चं | 04-12-2091 | 14-12-2091 | पिंगला सू | 03-12-2092 | 13-01-2093 | धान्या गु | 13-01-2093 | 15-03-2093 |
| मंगला चं | 13-09-2085 | 04-12-2085 | पिंगला सू | 14-12-2091 | 03-01-2092 | धान्या गु | 03-01-2092 | 03-02-2092 | भ्रामरी मं | 15-03-2093 | 04-06-2093 |
| पिंगला सू | 04-12-2085 | 15-05-2086 | धान्या गु | 03-01-2092 | 03-02-2092 | भ्रामरी मं | 03-02-2092 | 15-03-2092 | भद्रिका बु | 04-06-2093 | 13-09-2093 |
| धान्या गु | 15-05-2086 | 13-01-2087 | भ्रामरी मं | 03-02-2092 | 15-03-2092 | उल्का श | 13-09-2093 | 13-01-2094 | उल्का श | 13-09-2093 | 13-01-2094 |
| भ्रामरी मं | 13-01-2087 | 04-12-2087 | भद्रिका बु | 15-03-2092 | 04-05-2092 | सिद्धा शु | 13-01-2094 | 04-06-2094 | सिद्धा शु | 13-01-2094 | 04-06-2094 |
| भद्रिका बु | 04-12-2087 | 13-01-2089 | उल्का श | 04-05-2092 | 04-07-2092 | सिद्धा शु | 04-07-2092 | 13-09-2092 | संकटा रा | 04-06-2094 | 13-11-2094 |
| उल्का श | 13-01-2089 | 15-05-2090 | सिद्धा शु | 04-07-2092 | 13-09-2092 | संकटा रा | 13-09-2092 | 03-12-2091 | मंगला चं | 13-11-2094 | 04-12-2094 |
| सिद्धा शु | 15-05-2090 | 04-12-2091 | संकटा रा | 13-09-2092 | 03-12-2092 | मंगला चं | 13-11-2094 | 04-12-2094 | | | |

| धान्या (3व) | | 80व2म - | 83व2म | भ्रामरी (4व) | | 83व2म - | 87व2म | भद्रिका (5व) | | 87व2म - | 92व2म |
|-------------|------------|------------|------------|--------------|------------|------------|------------|--------------|------------|------------|------------|
| अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त |
| धान्या गु | 04-12-2094 | 05-03-2095 | भ्रामरी मं | 03-12-2097 | 15-05-2098 | भद्रिका बु | 04-12-2101 | 15-08-2102 | उल्का श | 15-08-2102 | 15-06-2103 |
| भ्रामरी मं | 05-03-2095 | 05-07-2095 | भद्रिका बु | 15-05-2098 | 04-12-2098 | सिद्धा शु | 15-06-2103 | 05-06-2104 | सिद्धा शु | 15-06-2103 | 05-06-2104 |
| भद्रिका बु | 05-07-2095 | 04-12-2095 | उल्का श | 04-12-2098 | 04-08-2099 | संकटा रा | 05-06-2104 | 15-07-2105 | संकटा रा | 05-06-2104 | 15-07-2105 |
| उल्का श | 04-12-2095 | 04-06-2096 | सिद्धा शु | 04-08-2099 | 15-05-2100 | मंगला चं | 15-07-2105 | 04-09-2105 | मंगला चं | 15-07-2105 | 04-09-2105 |
| सिद्धा शु | 04-06-2096 | 03-01-2097 | संकटा रा | 15-05-2100 | 05-04-2101 | पिंगला सू | 04-09-2105 | 15-12-2105 | पिंगला सू | 04-09-2105 | 15-12-2105 |
| संकटा रा | 03-01-2097 | 03-09-2097 | मंगला चं | 05-04-2101 | 16-05-2101 | धान्या गु | 15-12-2105 | 16-05-2106 | धान्या गु | 15-12-2105 | 16-05-2106 |
| मंगला चं | 03-09-2097 | 04-10-2097 | पिंगला सू | 16-05-2101 | 05-08-2101 | भ्रामरी मं | 16-05-2106 | 05-12-2106 | भ्रामरी मं | 16-05-2106 | 05-12-2106 |
| पिंगला सू | 04-10-2097 | 03-12-2097 | धान्या गु | 05-08-2101 | 04-12-2101 | | | | | | |

| उल्का (6व) | | 92व2म - | 98व2म | सिद्धा (7व) | | 98व2म - | 105व2म | |
|------------|------------|------------|------------|-------------|------------|------------|------------|------------|
| अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त | अन्तरदशा | आरम्भ | अन्त |
| उल्का श | 05-12-2106 | 05-12-2107 | सिद्धा शु | 04-12-2112 | 15-04-2114 | संकटा रा | 15-04-2114 | 04-11-2115 |
| सिद्धा शु | 05-12-2107 | 03-02-2109 | संकटा रा | 03-02-2109 | 05-06-2110 | मंगला चं | 04-11-2115 | 14-01-2116 |
| संकटा रा | 03-02-2109 | 05-06-2110 | मंगला चं | 05-06-2110 | 05-08-2110 | पिंगला सू | 14-01-2116 | 04-06-2116 |
| मंगला चं | 05-06-2110 | 05-08-2110 | पिंगला सू | 05-08-2110 | 05-12-2110 | धान्या गु | 04-06-2116 | 04-01-2117 |
| पिंगला सू | 05-08-2110 | 05-12-2110 | धान्या गु | 05-12-2110 | 05-06-2112 | भ्रामरी मं | 04-01-2117 | 15-10-2117 |
| धान्या गु | 05-12-2110 | 05-06-2112 | भ्रामरी मं | 05-06-2111 | 04-02-2112 | भद्रिका बु | 15-10-2117 | 05-10-2118 |
| भ्रामरी मं | 05-06-2111 | 04-02-2112 | भद्रिका बु | 04-02-2112 | 04-12-2112 | उल्का श | 05-10-2118 | 05-12-2119 |
| भद्रिका बु | 04-02-2112 | 04-12-2112 | उल्का श | | | | | |



कालचक्र महा व अन्तर दशाएं

* भोग्य दशा : तुला ५व १०मा ५दि * जीव राशि : मिथुन * देह राशि : मकर

| तुला (१६व) | ०व ०मा | कन्या (९व) | ५व १०म | कर्क (२१व) | १४व १०म | सिंह (५व) | ३५व १०म |
|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|
| आरम्भ | | आरम्भ | ०७-०८-२०२० | आरम्भ | ०७-०८-२०२९ | आरम्भ | ०७-०८-२०५० |
| अन्त | | अन्त | ०७-०५-२०२१ | अन्त | ०८-०५-२०३१ | अन्त | ०६-०१-२०५१ |
| ७ तुला | | ६ कन्या | ०७-०८-२०२० | ४ कर्क | ०७-०८-२०२९ | ११ कुंभ | ०७-०८-२०५० |
| ८ वृश्चिक | | ५ सिंह | ०७-०५-२०२१ | ३ मिथुन जी | ०८-०५-२०३१ | १२ मीन | ०६-०१-२०५१ |
| ९ धनु | | ४ कर्क | ०५-०२-२०२२ | २ वृष | ०५-०२-२०३३ | १ मेष | ०७-०६-२०५१ |
| १० मकर दे | | ३ मिथुन जी | ०६-११-२०२२ | १ मेष | ०६-११-२०३४ | २ वृष | ०६-११-२०५१ |
| ११ कुंभ | | २ वृष | ०७-०८-२०२३ | १२ मीन | ०६-०८-२०३६ | ३ मिथुन जी | ०७-०४-२०५२ |
| १२ मीन | | १ मेष | ०७-०५-२०२४ | ११ कुंभ | ०८-०५-२०३८ | ४ कर्क | ०६-०९-२०५२ |
| १ मेष | | १२ मीन | ०५-०२-२०२५ | १० मकर दे | ०६-०२-२०४० | ५ सिंह | ०५-०२-२०५३ |
| २ वृष | ०२-१०-२०१४ | ११ कुंभ | ०६-११-२०२५ | ९ धनु | ०६-११-२०४१ | ६ कन्या | ०७-०७-२०५३ |
| ३ मिथुन जी | ०८-०४-२०१५ | १० मकर दे | ०७-०८-२०२६ | ८ वृश्चिक | ०७-०८-२०४३ | ७ तुला | ०६-१२-२०५३ |
| ४ कर्क | ०७-०८-२०१६ | ९ धनु | ०८-०५-२०२७ | ७ तुला | ०७-०५-२०४५ | ८ वृश्चिक | ०७-०५-२०५४ |
| ५ सिंह | ०७-१२-२०१७ | ८ वृश्चिक | ०६-०२-२०२८ | ६ कन्या | ०५-०२-२०४७ | ९ धनु | ०७-१०-२०५४ |
| ६ कन्या | ०८-०४-२०१९ | ७ तुला | ०६-११-२०२८ | ५ सिंह | ०६-११-२०४८ | १० मकर दे | ०८-०३-२०५५ |

| मिथुन (९व) | ४०व १०म | वृष (१६व) | ४९व १०म | मेष (७व) | ६५व १०म | मीन (१०व) | ७२व १०म |
|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|
| आरम्भ | ०७-०८-२०५५ | आरम्भ | ०६-०८-२०६४ | आरम्भ | ०६-०८-२०८० | आरम्भ | ०७-०८-२०८७ |
| अन्त | ०७-०५-२०५६ | अन्त | ०६-१२-२०६५ | अन्त | ०७-०३-२०८१ | अन्त | ०६-०६-२०८८ |
| ९ धनु | ०७-०८-२०५५ | ८ वृश्चिक | ०६-०८-२०६४ | ७ तुला | ०६-०८-२०८० | ६ कन्या | ०७-०८-२०८७ |
| १० मकर दे | ०७-०५-२०५६ | ७ तुला | ०६-१२-२०६५ | ८ वृश्चिक | ०७-०३-२०८१ | ५ सिंह | ०६-०६-२०८८ |
| ११ कुंभ | ०५-०२-२०५७ | ६ कन्या | ०७-०४-२०६७ | ९ धनु | ०६-१०-२०८१ | ४ कर्क | ०६-०४-२०८९ |
| १२ मीन | ०६-११-२०५७ | ५ सिंह | ०६-०८-२०६८ | १० मकर दे | ०७-०५-२०८२ | ३ मिथुन जी | ०५-०२-२०९० |
| १ मेष | ०७-०८-२०५८ | ४ कर्क | ०६-१२-२०६९ | ११ कुंभ | ०६-१२-२०८२ | २ वृष | ०६-१२-२०९० |
| २ वृष | ०८-०५-२०५९ | ३ मिथुन जी | ०७-०४-२०७१ | १२ मीन | ०७-०७-२०८३ | १ मेष | ०७-१०-२०९१ |
| ३ मिथुन जी | ०६-०२-२०६० | २ वृष | ०६-०८-२०७२ | १ मेष | ०५-०२-२०८४ | १२ मीन | ०६-०८-२०९२ |
| ४ कर्क | ०६-११-२०६० | १ मेष | ०६-१२-२०७३ | २ वृष | ०५-०९-२०८४ | ११ कुंभ | ०६-०६-२०९३ |
| ५ सिंह | ०६-०८-२०६१ | १२ मीन | ०७-०४-२०७५ | ३ मिथुन जी | ०७-०४-२०८५ | १० मकर दे | ०७-०४-२०९४ |
| ६ कन्या | ०७-०५-२०६२ | ११ कुंभ | ०६-०८-२०७६ | ४ कर्क | ०६-११-२०८५ | ९ धनु | ०५-०२-२०९५ |
| ७ तुला | ०५-०२-२०६३ | १० मकर दे | ०६-१२-२०७७ | ५ सिंह | ०७-०६-२०८६ | ८ वृश्चिक | ०६-१२-२०९५ |
| ८ वृश्चिक | ०६-११-२०६३ | ९ धनु | ०७-०४-२०७९ | ६ कन्या | ०६-०१-२०८७ | ७ तुला | ०६-१०-२०९६ |

| कुंभ (४व) | ८२व १०म | मकर (४व) | ८६व १०म | धनु (१०व) | ९०व १०म | मेष (७व) | १००व १०म |
|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|
| आरम्भ | ०६-०८-२०९७ | आरम्भ | ०७-०८-२१०१ | आरम्भ | ०७-०८-२१०५ | आरम्भ | ०८-०८-२११५ |
| अन्त | ०६-१२-२०९७ | अन्त | ०७-१२-२१०१ | अन्त | ०७-०६-२१०६ | अन्त | ०८-०३-२११६ |
| ११ कुंभ | ०६-०८-२०९७ | ४ कर्क | ०७-०८-२१०१ | ९ धनु | ०७-०८-२१०५ | ७ तुला | ०८-०८-२११५ |
| १२ मीन | ०६-१२-२०९७ | ३ मिथुन जी | ०७-१२-२१०१ | १० मकर दे | ०७-०६-२१०६ | ८ वृश्चिक | ०८-०३-२११६ |
| १ मेष | ०७-०४-२०९८ | २ वृष | ०८-०४-२१०२ | ११ कुंभ | ०८-०४-२१०७ | ९ धनु | ०७-१०-२११६ |
| २ वृष | ०६-०८-२०९८ | १ मेष | ०७-०८-२१०२ | १२ मीन | ०६-०२-२१०८ | १० मकर दे | ०८-०५-२११७ |
| ३ मिथुन जी | ०६-१२-२०९८ | १२ मीन | ०७-१२-२१०२ | १ मेष | ०७-१२-२१०८ | ११ कुंभ | ०७-१२-२११७ |
| ४ कर्क | ०७-०४-२०९९ | ११ कुंभ | ०८-०४-२१०३ | २ वृष | ०७-१०-२१०९ | १२ मीन | ०८-०७-२११८ |
| ५ सिंह | ०७-०८-२०९९ | १० मकर दे | ०८-०८-२१०३ | ३ मिथुन जी | ०७-०८-२११० | १ मेष | ०६-०२-२११९ |
| ६ कन्या | ०६-१२-२०९९ | ९ धनु | ०७-१२-२१०३ | ४ कर्क | ०८-०६-२१११ | २ वृष | ०७-०९-२११९ |
| ७ तुला | ०७-०४-२१०० | ८ वृश्चिक | ०७-०४-२१०४ | ५ सिंह | ०७-०४-२११२ | ३ मिथुन जी | ०७-०४-२१२० |
| ८ वृश्चिक | ०७-०८-२१०० | ७ तुला | ०७-०८-२१०४ | ६ कन्या | ०५-०२-२११३ | ४ कर्क | ०६-११-२१२० |
| ९ धनु | ०७-१२-२१०० | ६ कन्या | ०७-१२-२१०४ | ७ तुला | ०७-१२-२११३ | ५ सिंह | ०७-०६-२१२१ |
| १० मकर दे | ०७-०४-२१०१ | ५ सिंह | ०७-०४-२१०५ | ८ वृश्चिक | ०७-१०-२११४ | ६ कन्या | ०६-०१-२१२२ |

* तिथियाँ दशा आरम्भ काल की दी गई हैं। *



कालचक्र अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

*नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं।
* जीव राशि : मिथुन * देह राशि : मकर

तुला-वृष

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2014 |
| अन्त | 08-04-2015 |
| वृश्चिक | |
| तुला | |
| कन्या | |
| सिंह | |
| कर्क | |
| मिथुन | |
| वृष | |
| मेष | 02-10-2014 |
| मीन | 27-10-2014 |
| कुंभ | 07-12-2014 |
| मकर | 16-01-2015 |
| धनु | 26-02-2015 |

तुला-मिथुन जी

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 08-04-2015 |
| अन्त | 07-08-2016 |
| धनु | 08-04-2015 |
| मकर | 18-05-2015 |
| कुंभ | 28-06-2015 |
| मीन | 07-08-2015 |
| मेष | 17-09-2015 |
| वृष | 27-10-2015 |
| मिथुन | 07-12-2015 |
| वृश्चिक | |
| कर्क | |
| कन्या | |
| सिंह | |
| धनु | |
| मेष | |
| मीन | |
| कुंभ | |
| मकर | |
| धनु | |

तुला-कर्क

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-08-2016 |
| अन्त | 07-12-2017 |
| कर्क | 07-08-2016 |
| मिथुन | 16-09-2016 |
| वृष | 27-10-2016 |
| मेष | 06-12-2016 |
| मीन | 16-01-2017 |
| वृश्चिक | |
| कर्क | |
| कन्या | |
| सिंह | |
| धनु | |
| मेष | |
| मीन | |
| कुंभ | |
| मकर | |
| धनु | |

तुला-सिंह

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-12-2017 |
| अन्त | 08-04-2019 |
| कुंभ | 07-12-2017 |
| मीन | 16-01-2018 |
| मेष | 26-02-2018 |
| वृष | 07-04-2018 |
| मिथुन | 18-05-2018 |
| कर्क | 27-06-2018 |
| सिंह | 07-08-2018 |
| कन्या | 17-09-2018 |
| तुला | 27-10-2018 |
| वृश्चिक | 07-12-2018 |
| धनु | 16-01-2019 |
| मेष | 26-02-2019 |
| मीन | 07-12-2019 |
| कुंभ | 17-01-2020 |
| मकर | 26-02-2020 |
| धनु | 07-04-2020 |
| वृश्चिक | 17-05-2020 |
| तुला | 27-06-2020 |

तुला-कन्या

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 08-04-2019 |
| अन्त | 07-08-2020 |
| कन्या | 08-04-2019 |
| सिंह | 18-05-2019 |
| कर्क | 28-06-2019 |
| मिथुन | 07-08-2019 |
| वृष | 17-09-2019 |
| मेष | 27-10-2019 |
| मीन | 07-12-2019 |
| कुंभ | 17-01-2020 |
| मकर | 26-02-2020 |
| धनु | 07-04-2020 |
| वृश्चिक | 17-05-2020 |
| तुला | 27-06-2020 |

कन्या-कन्या

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-08-2020 |
| अन्त | 07-05-2021 |
| कन्या | 07-08-2020 |
| सिंह | 29-08-2020 |
| कर्क | 21-09-2020 |
| मिथुन | 14-10-2020 |
| वृष | 06-11-2020 |
| मेष | 29-11-2020 |
| मीन | 21-12-2020 |
| कुंभ | 13-01-2021 |
| मकर | 05-02-2021 |
| धनु | 28-02-2021 |
| वृश्चिक | 23-03-2021 |
| तुला | 15-04-2021 |

कन्या-सिंह

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-05-2021 |
| अन्त | 05-02-2022 |
| कुंभ | 07-05-2021 |
| मीन | 30-05-2021 |
| मेष | 22-06-2021 |
| वृष | 15-07-2021 |
| मिथुन | 07-08-2021 |
| वृश्चिक | |
| कर्क | |
| कन्या | |
| सिंह | |
| धनु | |
| मेष | |
| मीन | |
| कुंभ | |
| मकर | |
| धनु | |

कन्या-कर्क

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 05-02-2022 |
| अन्त | 06-11-2022 |
| कर्क | 05-02-2022 |
| मिथुन | 28-02-2022 |
| वृष | 23-03-2022 |
| मेष | 15-04-2022 |
| मीन | 08-05-2022 |
| वृश्चिक | |
| कर्क | |
| कन्या | |
| सिंह | |
| धनु | |
| मेष | |
| मीन | |
| कुंभ | |
| मकर | |
| धनु | |

कन्या-मिथुन जी

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 06-11-2022 |
| अन्त | 07-08-2023 |
| धनु | 06-11-2022 |
| मकर | 29-11-2022 |
| कुंभ | 22-12-2022 |
| मीन | 14-01-2023 |
| मेष | 06-02-2023 |
| वृष | 28-02-2023 |
| मिथुन | 23-03-2023 |
| वृश्चिक | |
| कर्क | |
| कन्या | |
| सिंह | |
| धनु | |
| मेष | |
| मीन | |
| कुंभ | |
| मकर | |
| धनु | |

कन्या-वृष

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-08-2023 |
| अन्त | 07-05-2024 |
| वृश्चिक | 07-08-2023 |
| तुला | 30-08-2023 |
| कन्या | 22-09-2023 |
| सिंह | 15-10-2023 |
| कर्क | 07-11-2023 |
| मिथुन | 29-11-2023 |
| वृष | 22-12-2023 |
| मेष | 14-01-2024 |
| मीन | 06-02-2024 |
| कुंभ | 29-02-2024 |
| मकर | 23-03-2024 |
| धनु | 14-04-2024 |

कन्या-मेष

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-05-2024 |
| अन्त | 05-02-2025 |
| तुला | 07-05-2024 |
| वृश्चिक | 30-05-2024 |
| धनु | 22-06-2024 |
| मकर | 15-07-2024 |
| कुंभ | 06-08-2024 |
| मीन | 29-08-2024 |
| मेष | 21-09-2024 |
| वृष | 14-10-2024 |
| मिथुन | 06-11-2024 |
| कर्क | 29-11-2024 |
| सिंह | 21-12-2024 |
| कन्या | 13-01-2025 |

कन्या-मीन

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 05-02-2025 |
| अन्त | 06-11-2025 |
| कन्या | 05-02-2025 |
| सिंह | 28-02-2025 |
| कर्क | 23-03-2025 |
| मिथुन | 15-04-2025 |
| वृष | 07-05-2025 |
| मेष | 30-05-2025 |
| मीन | 22-06-2025 |
| वृश्चिक | 15-07-2025 |
| कर्क | 07-08-2025 |
| कन्या | 15-04-2026 |
| सिंह | 23-03-2026 |
| धनु | 22-06-2026 |
| मकर | 15-07-2026 |
| धनु | 06-08-2026 |

कन्या-कुंभ

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 06-11-2025 |
| अन्त | 07-08-2026 |
| कुंभ | 06-11-2025 |
| मीन | 29-11-2025 |
| मेष | 22-12-2025 |
| वृष | 14-01-2026 |
| मिथुन | 05-02-2026 |
| वृश्चिक | |
| कर्क | |
| कन्या | |
| सिंह | |
| धनु | |
| मेष | |
| मीन | |
| कुंभ | |
| मकर | |
| धनु | |

कन्या-मकर दे

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-08-2026 |
| अन्त | 08-05-2027 |
| धनु | 07-08-2026 |
| मिथुन | 30-08-2026 |
| वृष | 22-09-2026 |
| मेष | 14-10-2026 |
| मीन | 06-11-2026 |
| वृश्चिक | |
| कर्क | |
| कन्या | |
| सिंह | |
| धनु | |
| मेष | |
| मीन | |
| कुंभ | |
| मकर | |
| धनु | |

कन्या-धनु

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 08-05-2027 |
| अन्त | 06-02-2028 |
| धनु | 08-05-2027 |
| मकर | 31-05-2027 |
| कुंभ | 23-06-2027 |
| मीन | 15-07-2027 |
| मेष | 07-08-2027 |
| वृष | 30-08-2027 |
| मिथुन | 22-09-2027 |
| वृश्चिक | |
| कर्क | |
| कन्या | |
| सिंह | |
| धनु | |
| मेष | |
| मीन | |
| कुंभ | |
| मकर | |
| धनु | |





कालचक्र अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

*नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं।
* जीव राशि : मिथुन * देह राशि : मकर

| कन्या-वृश्चिक | कन्या-तुला | कर्क-कर्क | कर्क-मिथुन जी | कर्क-वृष |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| आरम्भ 06-02-2028 | आरम्भ 06-11-2028 | आरम्भ 07-08-2029 | आरम्भ 08-05-2031 | आरम्भ 05-02-2033 |
| अन्त 06-11-2028 | अन्त 07-08-2029 | अन्त 08-05-2031 | अन्त 05-02-2033 | अन्त 06-11-2034 |
| वृश्चिक 06-02-2028 | तुला 06-11-2028 | कर्क 07-08-2029 | धनु 08-05-2031 | वृश्चिक 05-02-2033 |
| तुला 29-02-2028 | वृश्चिक 29-11-2028 | मिथुन 29-09-2029 | मकर 30-06-2031 | तुला 30-03-2033 |
| कन्या 22-03-2028 | धनु 21-12-2028 | वृष 21-11-2029 | कुंभ 22-08-2031 | कन्या 23-05-2033 |
| सिंह 14-04-2028 | मकर 13-01-2029 | मेष 14-01-2030 | मीन 15-10-2031 | सिंह 15-07-2033 |
| कर्क 07-05-2028 | कुंभ 05-02-2029 | मीन 08-03-2030 | मेष 07-12-2031 | कर्क 06-09-2033 |
| मिथुन 30-05-2028 | मीन 28-02-2029 | कुंभ 30-04-2030 | वृष 29-01-2032 | मिथुन 29-10-2033 |
| वृष 22-06-2028 | मेष 23-03-2029 | मकर 22-06-2030 | मिथुन 22-03-2032 | वृष 22-12-2033 |
| मेष 15-07-2028 | वृष 15-04-2029 | धनु 15-08-2030 | कर्क 15-05-2032 | मेष 13-02-2034 |
| मीन 06-08-2028 | मिथुन 07-05-2029 | वृश्चिक 07-10-2030 | सिंह 07-07-2032 | मीन 07-04-2034 |
| कुंभ 29-08-2028 | कर्क 30-05-2029 | तुला 29-11-2030 | कन्या 29-08-2032 | कुंभ 30-05-2034 |
| मकर 21-09-2028 | सिंह 22-06-2029 | कन्या 21-01-2031 | तुला 22-10-2032 | मकर 23-07-2034 |
| धनु 14-10-2028 | कन्या 15-07-2029 | सिंह 16-03-2031 | वृश्चिक 14-12-2032 | धनु 14-09-2034 |

| कर्क-मेष | कर्क-मीन | कर्क-कुंभ | कर्क-मकर दे | कर्क-धनु |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| आरम्भ 06-11-2034 | आरम्भ 06-08-2036 | आरम्भ 08-05-2038 | आरम्भ 06-02-2040 | आरम्भ 06-11-2041 |
| अन्त 06-08-2036 | अन्त 08-05-2038 | अन्त 06-02-2040 | अन्त 06-11-2041 | अन्त 07-08-2043 |
| तुला 06-11-2034 | कन्या 06-08-2036 | कुंभ 08-05-2038 | कर्क 06-02-2040 | धनु 06-11-2041 |
| वृश्चिक 29-12-2034 | सिंह 29-09-2036 | मीन 30-06-2038 | मिथुन 30-03-2040 | मकर 29-12-2041 |
| धनु 21-02-2035 | कर्क 21-11-2036 | मेष 22-08-2038 | वृष 22-05-2040 | कुंभ 20-02-2042 |
| मकर 15-04-2035 | मिथुन 13-01-2037 | वृष 14-10-2038 | मेष 15-07-2040 | मीन 15-04-2042 |
| कुंभ 07-06-2035 | वृष 07-03-2037 | मिथुन 07-12-2038 | मीन 06-09-2040 | मेष 07-06-2042 |
| मीन 31-07-2035 | मेष 30-04-2037 | कर्क 29-01-2039 | कुंभ 29-10-2040 | वृष 30-07-2042 |
| मेष 22-09-2035 | मीन 22-06-2037 | सिंह 23-03-2039 | मकर 21-12-2040 | मिथुन 22-09-2042 |
| वृष 14-11-2035 | कुंभ 14-08-2037 | कन्या 15-05-2039 | धनु 13-02-2041 | कर्क 14-11-2042 |
| मिथुन 06-01-2036 | मकर 07-10-2037 | तुला 08-07-2039 | वृश्चिक 07-04-2041 | सिंह 06-01-2043 |
| कर्क 29-02-2036 | धनु 29-11-2037 | वृश्चिक 30-08-2039 | तुला 30-05-2041 | कन्या 28-02-2043 |
| सिंह 22-04-2036 | वृश्चिक 21-01-2038 | धनु 22-10-2039 | कन्या 22-07-2041 | तुला 23-04-2043 |
| कन्या 14-06-2036 | तुला 15-03-2038 | मकर 14-12-2039 | सिंह 14-09-2041 | वृश्चिक 15-06-2043 |

| कर्क-वृश्चिक | कर्क-तुला | कर्क-कन्या | कर्क-सिंह | सिंह-कुंभ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| आरम्भ 07-08-2043 | आरम्भ 07-05-2045 | आरम्भ 05-02-2047 | आरम्भ 06-11-2048 | आरम्भ 07-08-2050 |
| अन्त 07-05-2045 | अन्त 05-02-2047 | अन्त 06-11-2048 | अन्त 07-08-2050 | अन्त 06-01-2051 |
| वृश्चिक 07-08-2043 | तुला 07-05-2045 | कन्या 05-02-2047 | कुंभ 06-11-2048 | कुंभ 07-08-2050 |
| तुला 29-09-2043 | वृश्चिक 30-06-2045 | सिंह 31-03-2047 | मीन 29-12-2048 | मीन 19-08-2050 |
| कन्या 22-11-2043 | धनु 22-08-2045 | कर्क 23-05-2047 | मेष 20-02-2049 | मेष 01-09-2050 |
| सिंह 14-01-2044 | मकर 14-10-2045 | मिथुन 15-07-2047 | वृष 14-04-2049 | वृष 14-09-2050 |
| कर्क 07-03-2044 | कुंभ 06-12-2045 | वृष 07-09-2047 | मिथुन 07-06-2049 | मिथुन 27-09-2050 |
| मिथुन 29-04-2044 | मीन 29-01-2046 | मेष 30-10-2047 | कर्क 30-07-2049 | कर्क 09-10-2050 |
| वृष 22-06-2044 | मेष 23-03-2046 | मीन 22-12-2047 | सिंह 21-09-2049 | सिंह 22-10-2050 |
| मेष 14-08-2044 | वृष 15-05-2046 | कुंभ 13-02-2048 | कन्या 13-11-2049 | कन्या 04-11-2050 |
| मीन 06-10-2044 | मिथुन 07-07-2046 | मकर 07-04-2048 | तुला 06-01-2050 | तुला 16-11-2050 |
| कुंभ 28-11-2044 | कर्क 30-08-2046 | धनु 30-05-2048 | वृश्चिक 28-02-2050 | वृश्चिक 29-11-2050 |
| मकर 21-01-2045 | सिंह 22-10-2046 | वृश्चिक 22-07-2048 | धनु 22-04-2050 | धनु 12-12-2050 |
| धनु 15-03-2045 | कन्या 14-12-2046 | तुला 13-09-2048 | मकर 15-06-2050 | मकर 24-12-2050 |



कालचक्र अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

*नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं।
* जीव राशि : मिथुन * देह राशि : मकर

सिंह-मीन

आरम्भ 06-01-2051

अन्त 07-06-2051

| | |
|---------|------------|
| कन्या | 06-01-2051 |
| सिंह | 19-01-2051 |
| कर्क | 31-01-2051 |
| मिथुन | 13-02-2051 |
| वृष | 26-02-2051 |
| मेष | 10-03-2051 |
| मीन | 23-03-2051 |
| कुंभ | 05-04-2051 |
| मकर | 17-04-2051 |
| धनु | 30-04-2051 |
| वृश्चिक | 13-05-2051 |
| तुला | 25-05-2051 |

सिंह-मेष

आरम्भ 07-06-2051

अन्त 06-11-2051

| | |
|---------|------------|
| तुला | 07-06-2051 |
| वृश्चिक | 20-06-2051 |
| धनु | 03-07-2051 |
| मकर | 15-07-2051 |
| वृष | 28-07-2051 |
| मेष | 10-08-2051 |
| मीन | 22-08-2051 |
| कुंभ | 04-09-2051 |
| मिथुन | 17-09-2051 |
| कर्क | 29-09-2051 |
| सिंह | 12-10-2051 |
| कन्या | 25-10-2051 |

सिंह-वृष

आरम्भ 06-11-2051

अन्त 07-04-2052

| | |
|---------|------------|
| वृश्चिक | 06-11-2051 |
| तुला | 19-11-2051 |
| कन्या | 02-12-2051 |
| सिंह | 14-12-2051 |
| कर्क | 27-12-2051 |
| मिथुन | 09-01-2052 |
| वृष | 21-01-2052 |
| मेष | 03-02-2052 |
| मीन | 16-02-2052 |
| कुंभ | 28-02-2052 |
| मकर | 12-03-2052 |
| धनु | 25-03-2052 |

सिंह-मिथुन जी

आरम्भ 07-04-2052

अन्त 06-09-2052

| | |
|---------|------------|
| धनु | 07-04-2052 |
| मकर | 19-04-2052 |
| कुंभ | 02-05-2052 |
| मीन | 15-05-2052 |
| मेष | 27-05-2052 |
| वृष | 09-06-2052 |
| मिथुन | 22-06-2052 |
| कर्क | 04-07-2052 |
| धनु | 03-12-2052 |
| वृश्चिक | 16-12-2052 |
| तुला | 29-12-2052 |
| कन्या | 11-01-2053 |
| सिंह | 23-01-2053 |

सिंह-कर्क

आरम्भ 06-09-2052

अन्त 05-02-2053

| | |
|---------|------------|
| कर्क | 06-09-2052 |
| मिथुन | 18-09-2052 |
| वृष | 01-10-2052 |
| मेष | 14-10-2052 |
| मीन | 26-10-2052 |
| कुंभ | 08-11-2052 |
| मकर | 21-11-2052 |
| धनु | 03-12-2052 |
| वृश्चिक | 16-12-2052 |
| तुला | 29-12-2052 |
| कन्या | 11-01-2053 |
| सिंह | 23-01-2053 |

सिंह-सिंह

आरम्भ 05-02-2053

अन्त 07-07-2053

| | |
|---------|------------|
| कुंभ | 05-02-2053 |
| मीन | 18-02-2053 |
| मेष | 02-03-2053 |
| वृष | 15-03-2053 |
| मिथुन | 28-03-2053 |
| कर्क | 09-04-2053 |
| सिंह | 22-04-2053 |
| कन्या | 05-05-2053 |
| तुला | 17-05-2053 |
| वृश्चिक | 30-05-2053 |
| धनु | 12-06-2053 |
| मकर | 24-06-2053 |

सिंह-कन्या

आरम्भ 07-07-2053

अन्त 06-12-2053

| | |
|---------|------------|
| कन्या | 07-07-2053 |
| सिंह | 20-07-2053 |
| कर्क | 01-08-2053 |
| मिथुन | 14-08-2053 |
| वृष | 27-08-2053 |
| धनु | 01-09-2053 |
| मेष | 21-09-2053 |
| कुंभ | 04-10-2053 |
| मकर | 17-10-2053 |
| धनु | 29-10-2053 |
| वृश्चिक | 11-11-2053 |
| तुला | 24-11-2053 |

सिंह-तुला

आरम्भ 06-12-2053

अन्त 07-05-2054

| | |
|---------|------------|
| तुला | 06-12-2053 |
| वृश्चिक | 19-12-2053 |
| धनु | 01-01-2054 |
| मकर | 13-01-2054 |
| कुंभ | 26-01-2054 |
| मीन | 08-02-2054 |
| मेष | 20-02-2054 |
| वृष | 05-03-2054 |
| मिथुन | 18-03-2054 |
| कर्क | 30-03-2054 |
| सिंह | 12-04-2054 |
| कन्या | 25-04-2054 |

सिंह-वृश्चिक

आरम्भ 07-05-2054

अन्त 07-10-2054

| | |
|---------|------------|
| वृश्चिक | 07-05-2054 |
| तुला | 20-05-2054 |
| कन्या | 02-06-2054 |
| सिंह | 14-06-2054 |
| कर्क | 27-06-2054 |
| मिथुन | 10-07-2054 |
| वृष | 23-07-2054 |
| मेष | 04-08-2054 |
| मीन | 17-08-2054 |
| कुंभ | 30-08-2054 |
| मकर | 11-09-2054 |
| धनु | 24-09-2054 |

सिंह-धनु

आरम्भ 07-10-2054

अन्त 08-03-2055

| | |
|---------|------------|
| धनु | 07-10-2054 |
| मकर | 19-10-2054 |
| कुंभ | 01-11-2054 |
| मीन | 14-11-2054 |
| मेष | 26-11-2054 |
| मिथुन | 09-12-2054 |
| वृष | 22-12-2054 |
| सिंह | 16-01-2055 |
| कन्या | 29-01-2055 |
| तुला | 10-02-2055 |
| वृश्चिक | 23-02-2055 |

सिंह-मकर दे

आरम्भ 08-03-2055

अन्त 07-08-2055

| | |
|---------|------------|
| कर्क | 08-03-2055 |
| मिथुन | 21-03-2055 |
| वृष | 02-04-2055 |
| मेष | 15-04-2055 |
| मीन | 28-04-2055 |
| कुंभ | 10-05-2055 |
| मकर | 23-05-2055 |
| धनु | 05-06-2055 |
| वृश्चिक | 17-06-2055 |
| तुला | 30-06-2055 |
| कन्या | 13-07-2055 |
| सिंह | 25-07-2055 |

मिथुन-धनु

आरम्भ 07-08-2055

अन्त 07-05-2056

| | |
|---------|------------|
| धनु | 07-08-2055 |
| मकर | 30-08-2055 |
| कुंभ | 22-09-2055 |
| मीन | 14-10-2055 |
| मेष | 06-11-2055 |
| वृष | 29-11-2055 |
| मिथुन | 22-12-2055 |
| कर्क | 14-01-2056 |
| सिंह | 06-02-2056 |
| कन्या | 28-02-2056 |
| तुला | 22-03-2056 |
| वृश्चिक | 14-04-2056 |

मिथुन-मकर दे

आरम्भ 07-05-2056

अन्त 05-02-2057

| | |
|---------|------------|
| कर्क | 07-05-2056 |
| मिथुन | 30-05-2056 |
| वृष | 22-06-2056 |
| मेष | 14-07-2056 |
| मीन | 06-08-2056 |
| कुंभ | 29-08-2056 |
| मकर | 21-09-2056 |
| धनु | 14-10-2056 |
| वृश्चिक | 06-11-2056 |
| तुला | 28-11-2056 |
| कन्या | 21-12-2056 |
| सिंह | 13-01-2057 |

मिथुन-कुंभ

आरम्भ 05-02-2057

अन्त 06-11-2057

| | |
|---------|------------|
| कुंभ | 05-02-2057 |
| मीन | 28-02-2057 |
| मेष | 23-03-2057 |
| वृष | 14-04-2057 |
| मिथुन | 07-05-2057 |
| कर्क | 30-05-2057 |
| सिंह | 22-06-2057 |
| मीन | 15-07-2057 |
| कुंभ | 15-04-2058 |
| मकर | 07-05-2058 |
| धनु | 30-05-2058 |
| वृश्चिक | 22-06-2058 |
| तुला | 15-07-2058 |





कालचक्र अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

*नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं।
* जीव राशि : मिथुन * देह राशि : मकर

| मिथुन-मेष | मिथुन-वृष | मिथुन-मिथुन जी | मिथुन-कर्क | मिथुन-सिंह |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| आरम्भ 07-08-2058 | आरम्भ 08-05-2059 | आरम्भ 06-02-2060 | आरम्भ 06-11-2060 | आरम्भ 06-08-2061 |
| अन्त 08-05-2059 | अन्त 06-02-2060 | अन्त 06-11-2060 | अन्त 06-08-2061 | अन्त 07-05-2062 |
| तुला 07-08-2058 | वृश्चिक 08-05-2059 | धनु 06-02-2060 | कर्क 06-11-2060 | कुंभ 06-08-2061 |
| वृश्चिक 30-08-2058 | तुला 30-05-2059 | मकर 28-02-2060 | मिथुन 28-11-2060 | मीन 29-08-2061 |
| धनु 21-09-2058 | कन्या 22-06-2059 | कुंभ 22-03-2060 | वृष 21-12-2060 | मेष 21-09-2061 |
| मकर 14-10-2058 | सिंह 15-07-2059 | मीन 14-04-2060 | मेष 13-01-2061 | वृष 14-10-2061 |
| कुंभ 06-11-2058 | कर्क 07-08-2059 | मेष 07-05-2060 | मीन 05-02-2061 | मिथुन 06-11-2061 |
| मीन 29-11-2058 | मिथुन 30-08-2059 | वृष 30-05-2060 | कुंभ 28-02-2061 | कर्क 29-11-2061 |
| मेष 22-12-2058 | वृष 22-09-2059 | मिथुन 22-06-2060 | मकर 22-03-2061 | सिंह 21-12-2061 |
| वृष 14-01-2059 | मेष 14-10-2059 | कर्क 14-07-2060 | धनु 14-04-2061 | कन्या 13-01-2062 |
| मिथुन 05-02-2059 | मीन 06-11-2059 | सिंह 06-08-2060 | वृश्चिक 07-05-2061 | तुला 05-02-2062 |
| कर्क 28-02-2059 | कुंभ 29-11-2059 | कन्या 29-08-2060 | तुला 30-05-2061 | वृश्चिक 28-02-2062 |
| सिंह 23-03-2059 | मकर 22-12-2059 | तुला 21-09-2060 | कन्या 22-06-2061 | धनु 23-03-2062 |
| कन्या 15-04-2059 | धनु 14-01-2060 | वृश्चिक 14-10-2060 | सिंह 15-07-2061 | मकर 15-04-2062 |

| मिथुन-कन्या | मिथुन-तुला | मिथुन-वृश्चिक | वृष-वृश्चिक | वृष-तुला |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| आरम्भ 07-05-2062 | आरम्भ 05-02-2063 | आरम्भ 06-11-2063 | आरम्भ 06-08-2064 | आरम्भ 06-12-2065 |
| अन्त 05-02-2063 | अन्त 06-11-2063 | अन्त 06-08-2064 | अन्त 06-12-2065 | अन्त 07-04-2067 |
| कन्या 07-05-2062 | तुला 05-02-2063 | वृश्चिक 06-11-2063 | वृश्चिक 06-08-2064 | तुला 06-12-2065 |
| सिंह 30-05-2062 | वृश्चिक 28-02-2063 | तुला 29-11-2063 | तुला 16-09-2064 | वृश्चिक 16-01-2066 |
| कर्क 22-06-2062 | धनु 23-03-2063 | कन्या 22-12-2063 | कन्या 26-10-2064 | धनु 25-02-2066 |
| मिथुन 15-07-2062 | मकर 15-04-2063 | सिंह 14-01-2064 | सिंह 06-12-2064 | मकर 07-04-2066 |
| वृष 07-08-2062 | कुंभ 08-05-2063 | कर्क 06-02-2064 | कर्क 16-01-2065 | कुंभ 18-05-2066 |
| मेष 30-08-2062 | मीन 30-05-2063 | मिथुन 28-02-2064 | मिथुन 25-02-2065 | मीन 27-06-2066 |
| मीन 21-09-2062 | मेष 22-06-2063 | वृष 22-03-2064 | वृष 07-04-2065 | मेष 07-08-2066 |
| कुंभ 14-10-2062 | वृष 15-07-2063 | मेष 14-04-2064 | मेष 17-05-2065 | वृष 16-09-2066 |
| मकर 06-11-2062 | मिथुन 07-08-2063 | मीन 07-05-2064 | मीन 27-06-2065 | मिथुन 27-10-2066 |
| धनु 29-11-2062 | कर्क 30-08-2063 | कुंभ 30-05-2064 | कुंभ 06-08-2065 | कर्क 06-12-2066 |
| वृश्चिक 22-12-2062 | सिंह 22-09-2063 | मकर 22-06-2064 | मकर 16-09-2065 | सिंह 16-01-2067 |
| तुला 13-01-2063 | कन्या 14-10-2063 | धनु 14-07-2064 | धनु 27-10-2065 | कन्या 26-02-2067 |

| वृष-कन्या | वृष-सिंह | वृष-कर्क | वृष-मिथुन जी | वृष-वृष |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| आरम्भ 07-04-2067 | आरम्भ 06-08-2068 | आरम्भ 06-12-2069 | आरम्भ 07-04-2071 | आरम्भ 07-04-2071 |
| अन्त 06-08-2068 | अन्त 06-12-2069 | अन्त 07-04-2071 | अन्त 06-08-2072 | अन्त 06-12-2073 |
| कन्या 07-04-2067 | कुंभ 06-08-2068 | कर्क 06-12-2069 | धनु 07-04-2071 | वृश्चिक 06-08-2072 |
| सिंह 18-05-2067 | मोन 16-09-2068 | मिथुन 16-01-2070 | मकर 18-05-2071 | तुला 16-09-2072 |
| कर्क 27-06-2067 | मेष 26-10-2068 | वृष 25-02-2070 | कुंभ 27-06-2071 | कन्या 26-10-2072 |
| मिथुन 07-08-2067 | वृष 06-12-2068 | मेष 07-04-2070 | मीन 07-08-2071 | सिंह 06-12-2072 |
| वृष 16-09-2067 | मिथुन 15-01-2069 | मीन 17-05-2070 | मेष 16-09-2071 | कर्क 15-01-2073 |
| मेष 27-10-2067 | कर्क 25-02-2069 | कुंभ 27-06-2070 | वृष 27-10-2071 | मिथुन 25-02-2073 |
| मीन 07-12-2067 | सिंह 07-04-2069 | मकर 07-08-2070 | मिथुन 07-12-2071 | वृष 07-04-2073 |
| कुंभ 16-01-2068 | कन्या 17-05-2069 | धनु 16-09-2070 | कर्क 16-01-2072 | मेष 17-05-2073 |
| मकर 26-02-2068 | तुला 27-06-2069 | वृश्चिक 27-10-2070 | सिंह 26-02-2072 | मीन 27-06-2073 |
| धनु 06-04-2068 | वृश्चिक 06-08-2069 | तुला 06-12-2070 | कन्या 06-04-2072 | कुंभ 06-08-2073 |
| वृश्चिक 17-05-2068 | धनु 16-09-2069 | कन्या 16-01-2071 | तुला 17-05-2072 | मकर 16-09-2073 |
| तुला 27-06-2068 | मकर 27-10-2069 | सिंह 26-02-2071 | वृश्चिक 27-06-2072 | धनु 27-10-2073 |



कालचक्र अन्तर व प्रत्यंतर दशाएं

*नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं।
* जीव राशि : मिथुन * देह राशि : मकर

वृष-मेष

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 06-12-2073 |
| अन्त | 07-04-2075 |
| तुला | 06-12-2073 |
| वृश्चिक | 16-01-2074 |
| धनु | 25-02-2074 |
| मकर | 07-04-2074 |
| कुंभ | 17-05-2074 |
| मीन | 27-06-2074 |
| मेष | 07-08-2074 |
| वृष | 16-09-2074 |
| मिथुन | 27-10-2074 |
| कर्क | 06-12-2074 |
| सिंह | 16-01-2075 |
| कन्या | 26-02-2075 |

वृष-मीन

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-04-2075 |
| अन्त | 06-08-2076 |
| कन्या | 07-04-2075 |
| सिंह | 18-05-2075 |
| कर्क | 27-06-2075 |
| मिथुन | 07-08-2075 |
| वृष | 16-09-2075 |
| मैष | 27-10-2075 |
| मीन | 07-12-2075 |
| कुंभ | 16-01-2076 |
| मकर | 26-02-2076 |
| धनु | 06-04-2076 |
| वृश्चिक | 17-05-2076 |
| तुला | 27-06-2076 |

वृष-कुंभ

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 06-08-2076 |
| अन्त | 06-12-2077 |
| कुंभ | 06-08-2076 |
| मीन | 16-09-2076 |
| मेष | 26-10-2076 |
| वृष | 06-12-2076 |
| मिथुन | 15-01-2077 |
| कर्क | 25-02-2077 |
| सिंह | 07-04-2077 |
| कन्या | 17-05-2077 |
| तुला | 27-06-2077 |
| वृश्चिक | 06-08-2077 |
| धनु | 16-09-2077 |
| मकर | 26-10-2077 |

वृष-मकर दे

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 06-12-2077 |
| अन्त | 07-04-2079 |
| कर्क | 06-12-2077 |
| मिथुन | 16-01-2078 |
| वृष | 25-02-2078 |
| मैष | 07-04-2078 |
| मीन | 17-05-2078 |
| कुंभ | 27-06-2078 |
| मकर | 07-08-2078 |
| धनु | 16-09-2078 |
| वृश्चिक | 27-10-2078 |
| तुला | 06-12-2078 |
| कन्या | 16-01-2079 |
| तुला | 17-05-2080 |
| सिंह | 25-02-2079 |

वृष-धनु

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-04-2079 |
| अन्त | 06-08-2080 |
| धनु | 07-04-2079 |
| मकर | 18-05-2079 |
| कुंभ | 27-06-2079 |
| मीन | 07-08-2079 |
| मेष | 16-09-2079 |
| वृष | 27-10-2079 |
| मिथुन | 07-12-2079 |
| कर्क | 16-01-2080 |
| सिंह | 26-02-2080 |
| तुला | 06-04-2080 |
| कन्या | 16-04-2080 |
| तुला | 17-05-2080 |
| वृश्चिक | 26-06-2080 |

मेष-तुला

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 06-08-2080 |
| अन्त | 07-03-2081 |
| तुला | 06-08-2080 |
| वृश्चिक | 24-08-2080 |
| धनु | 11-09-2080 |
| मकर | 28-09-2080 |
| कुंभ | 16-10-2080 |
| मीन | 03-11-2080 |
| मेष | 21-11-2080 |
| वृष | 08-12-2080 |
| मिथुन | 26-12-2080 |
| कर्क | 13-01-2081 |
| सिंह | 31-01-2081 |
| कन्या | 17-02-2081 |

मेष-वृश्चिक

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-03-2081 |
| अन्त | 06-10-2081 |
| वृश्चिक | 07-03-2081 |
| तुला | 25-03-2081 |
| कन्या | 12-04-2081 |
| सिंह | 29-04-2081 |
| कर्क | 17-05-2081 |
| मिथुन | 04-06-2081 |
| वृष | 22-06-2081 |
| मैष | 09-07-2081 |
| मीन | 27-07-2081 |
| कुंभ | 14-08-2081 |
| मकर | 01-09-2081 |
| धनु | 18-09-2081 |

मेष-धनु

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 06-10-2081 |
| अन्त | 07-05-2082 |
| धनु | 06-10-2081 |
| मकर | 24-10-2081 |
| कुंभ | 11-11-2081 |
| मीन | 28-11-2081 |
| मेष | 16-12-2081 |
| वृष | 03-01-2082 |
| मिथुन | 21-01-2082 |
| कर्क | 07-02-2082 |
| सिंह | 25-02-2082 |
| कन्या | 15-03-2082 |
| तुला | 02-04-2082 |
| वृश्चिक | 19-04-2082 |

मेष-मकर दे

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-05-2082 |
| अन्त | 06-12-2082 |
| कर्क | 07-05-2082 |
| मिथुन | 25-05-2082 |
| वृष | 12-06-2082 |
| मैष | 29-06-2082 |
| मीन | 17-07-2082 |
| कुंभ | 04-08-2082 |
| मकर | 22-08-2082 |
| धनु | 09-09-2082 |
| वृश्चिक | 26-09-2082 |
| तुला | 14-10-2082 |
| कन्या | 01-11-2082 |
| धनु | 02-06-2083 |
| मकर | 20-06-2083 |

मेष-कुंभ

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 06-12-2082 |
| अन्त | 07-07-2083 |
| कुंभ | 06-12-2082 |
| मीन | 24-12-2082 |
| मेष | 11-01-2083 |
| वृष | 29-01-2083 |
| मिथुन | 15-02-2083 |
| कर्क | 05-03-2083 |
| सिंह | 23-03-2083 |
| कन्या | 10-04-2083 |
| तुला | 27-04-2083 |
| वृश्चिक | 15-05-2083 |
| धनु | 02-06-2083 |
| मकर | 20-06-2083 |

मेष-मीन

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-07-2083 |
| अन्त | 05-02-2084 |
| कन्या | 07-07-2083 |
| सिंह | 25-07-2083 |
| कर्क | 12-08-2083 |
| मिथुन | 30-08-2083 |
| वृष | 16-09-2083 |
| मैष | 04-10-2083 |
| मीन | 22-10-2083 |
| कुंभ | 09-11-2083 |
| मकर | 26-11-2083 |
| धनु | 14-12-2083 |
| वृश्चिक | 01-01-2084 |
| तुला | 19-01-2084 |

मेष-मेष

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 05-02-2084 |
| अन्त | 05-09-2084 |
| तुला | 05-02-2084 |
| वृश्चिक | 23-02-2084 |
| धनु | 12-03-2084 |
| मकर | 30-03-2084 |
| कुंभ | 16-04-2084 |
| मीन | 04-05-2084 |
| मेष | 22-05-2084 |
| वृष | 09-06-2084 |
| मिथुन | 26-06-2084 |
| कर्क | 14-07-2084 |
| सिंह | 01-08-2084 |
| कन्या | 19-08-2084 |

मेष-वृष

| | |
|-------|------------|
| आरम्भ | 05-09-2084 |
| अन्त | 07-04-2085 |
| वृष | 05-09-2084 |
| तुला | 23-09-2084 |
| कन्या | 11-10-2084 |
| सिंह | 29-10-2084 |
| कर्क | 15-11-2084 |
| मिथुन | 03-12-2084 |
| वृष | 21-12-2084 |
| मैष | 08-01-2085 |
| मीन | 26-01-2085 |
| कुंभ | 12-02-2085 |
| मकर | 02-03-2085 |
| धनु | 20-03-2085 |

मेष-मिथुन जी

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 07-04-2085 |
| अन्त | 06-11-2085 |
| धनु | 07-04-2085 |
| मकर | 24-04-2085 |
| कुंभ | 12-05-2085 |
| मीन | 30-05-2085 |
| मेष | 17-06-2085 |
| वृष | 04-07-2085 |
| मिथुन | 22-07-2085 |
| कर्क | 09-08-2085 |
| सिंह | 27-08-2085 |
| कन्या | 13-09-2085 |
| तुला | 01-10-2085 |
| वृश्चिक | 19-10-2085 |

मेष-कर्क

| | |
|---------|------------|
| आरम्भ | 06-11-2085 |
| अन्त | 07-06-2086 |
| कर्क | 06-11-2085 |
| मिथुन | 23-11-2085 |
| वृष | 11-12-2085 |
| मैष | 29-12-2085 |
| मीन | 16-01-2086 |
| कुंभ | 02-02-2086 |
| मकर | 20-02-2086 |
| धनु | 10-03-2086 |
| वृश्चिक | 28-03-2086 |
| तुला | 14-04-2086 |
| कन्या | 02-05-2086 |
| सिंह | 20-05-2086 |



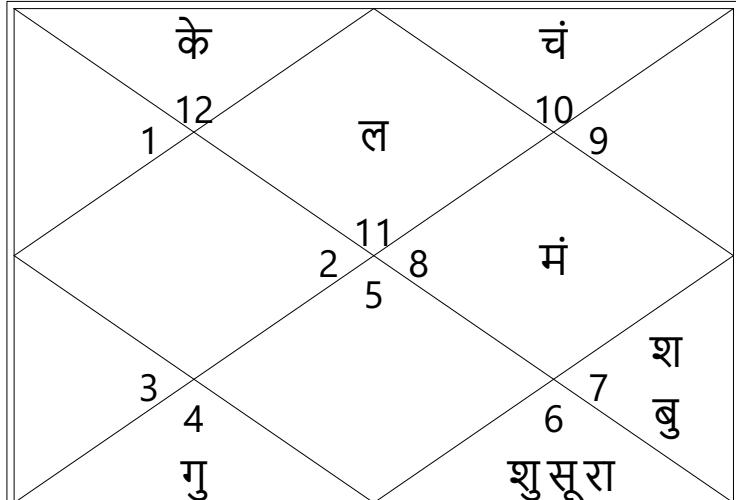


जैमिनी पद्धति

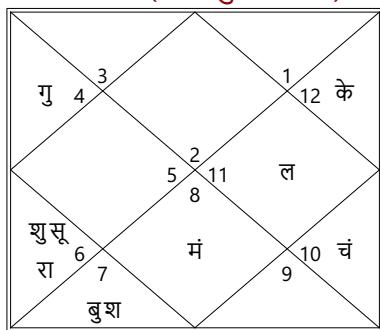
चर कारक

| आत्म | अमात्य | भ्रातृ | मातृ | पितृ | ज्ञाति | स्त्री |
|-------|--------|--------|-------|-------|--------|--------|
| शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र |
| 26:38 | 22:12 | 19:01 | 15:39 | 09:51 | 08:05 | 01:22 |

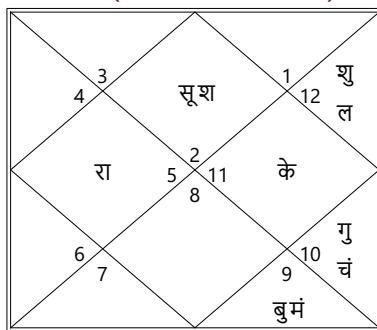
जन्म कुण्डली 2 अक्टूबर 2014 18:21:00 घंटे Calgary, Alberta, Canada



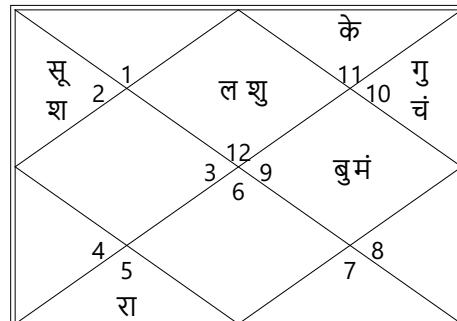
कारकांश (जन्म कुण्डली में)



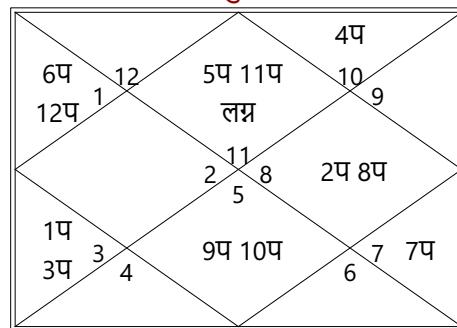
स्वांश (कारकांश नवांश में)



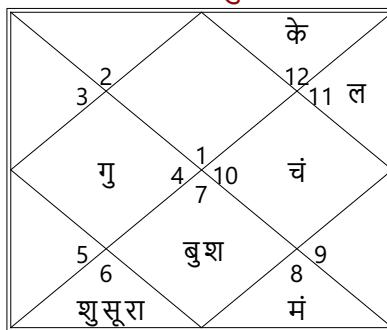
नवांश



पद कुण्डली



उपपद लग्न कुण्डली



जैमिनी दृष्टियाँ

द्विस्वभाव राशियों में स्थित ग्रहों में दृष्टियाँ सू-शु-रा-के चर व स्थिर राशियों में स्थित ग्रहों में दृष्टियाँ चं-मं, गु-मं

विशेष गणनाएं

- | | |
|------------------|--------------------|
| जैमिनी होरा लग्न | : सिंह 03:44:42 |
| वर्णद लग्न | : मिथुन |
| प्राणपद लग्न | : वृश्चिक 20:50:12 |
| आरुढ़ लग्न | : मिथुन |
| उपपद | : मेष |
| दध राशि | : सिंह, वृश्चिक |
| ब्रह्मा | : बुध |
| महेश्वर | : शुक्र |
| रुद्र | : बुध |



जैमिनी चरदशा

नीचे दी गई तिथियां दशा समाप्ति काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| कुंभ (5व) | 0व0म | मीन (8व) | 5व0म | मेष (7व) | 13व0म | वृष (4व) | 20व0म |
|-----------|------------|-----------|------------|-----------|------------|-----------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2014 | आरम्भ | 02-10-2019 | आरम्भ | 02-10-2027 | आरम्भ | 02-10-2034 |
| अन्त | 02-10-2019 | अन्त | 02-10-2027 | अन्त | 02-10-2034 | अन्त | 02-10-2038 |
| 12 मीन | 03-03-2015 | 1 मेष | 02-06-2020 | 2 वृष | 02-05-2028 | 1 मेष | 01-02-2035 |
| 1 मेष | 03-08-2015 | 2 वृष | 31-01-2021 | 3 मिथुन | 02-12-2028 | 12 मीन | 03-06-2035 |
| 2 वृष | 02-01-2016 | 3 मिथुन | 02-10-2021 | 4 कर्क | 03-07-2029 | 11 कुंभ | 02-10-2035 |
| 3 मिथुन | 02-06-2016 | 4 कर्क | 02-06-2022 | 5 सिंह | 01-02-2030 | 10 मकर | 01-02-2036 |
| 4 कर्क | 01-11-2016 | 5 सिंह | 01-02-2023 | 6 कन्या | 02-09-2030 | 9 धनु | 02-06-2036 |
| 5 सिंह | 02-04-2017 | 6 कन्या | 02-10-2023 | 7 तुला | 03-04-2031 | 8 वृश्चिक | 02-10-2036 |
| 6 कन्या | 02-09-2017 | 7 तुला | 02-06-2024 | 8 वृश्चिक | 02-11-2031 | 7 तुला | 31-01-2037 |
| 7 तुला | 01-02-2018 | 8 वृश्चिक | 31-01-2025 | 9 धनु | 02-06-2032 | 6 कन्या | 02-06-2037 |
| 8 वृश्चिक | 03-07-2018 | 9 धनु | 02-10-2025 | 10 मकर | 01-01-2033 | 5 सिंह | 02-10-2037 |
| 9 धनु | 02-12-2018 | 10 मकर | 02-06-2026 | 11 कुंभ | 02-08-2033 | 4 कर्क | 01-02-2038 |
| 10 मकर | 03-05-2019 | 11 कुंभ | 01-02-2027 | 12 मीन | 03-03-2034 | 3 मिथुन | 02-06-2038 |
| 11 कुंभ | 02-10-2019 | 12 मीन | 02-10-2027 | 1 मेष | 02-10-2034 | 2 वृष | 02-10-2038 |

| मिथुन (4व) | 24व0म | कर्क (6व) | 28व0म | सिंह (11व) | 33व11म | कन्या (11व) | 45व0म |
|------------|------------|-----------|------------|------------|------------|-------------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2038 | आरम्भ | 02-10-2042 | आरम्भ | 01-10-2048 | आरम्भ | 02-10-2059 |
| अन्त | 02-10-2042 | अन्त | 01-10-2048 | अन्त | 02-10-2059 | अन्त | 02-10-2070 |
| 2 वृष | 01-02-2039 | 3 मिथुन | 03-04-2043 | 6 कन्या | 01-09-2049 | 7 तुला | 01-09-2060 |
| 1 मेष | 03-06-2039 | 2 वृष | 02-10-2043 | 7 तुला | 02-08-2050 | 8 वृश्चिक | 02-08-2061 |
| 12 मीन | 02-10-2039 | 1 मेष | 02-04-2044 | 8 वृश्चिक | 03-07-2051 | 9 धनु | 03-07-2062 |
| 11 कुंभ | 01-02-2040 | 12 मीन | 02-10-2044 | 9 धनु | 02-06-2052 | 10 मकर | 02-06-2063 |
| 10 मकर | 02-06-2040 | 11 कुंभ | 02-04-2045 | 10 मकर | 03-05-2053 | 11 कुंभ | 02-05-2064 |
| 9 धनु | 02-10-2040 | 10 मकर | 02-10-2045 | 11 कुंभ | 02-04-2054 | 12 मीन | 02-04-2065 |
| 8 वृश्चिक | 31-01-2041 | 9 धनु | 02-04-2046 | 12 मीन | 03-03-2055 | 1 मेष | 03-03-2066 |
| 7 तुला | 02-06-2041 | 8 वृश्चिक | 02-10-2046 | 1 मेष | 01-02-2056 | 2 वृष | 01-02-2067 |
| 6 कन्या | 02-10-2041 | 7 तुला | 03-04-2047 | 2 वृष | 01-01-2057 | 3 मिथुन | 01-01-2068 |
| 5 सिंह | 01-02-2042 | 6 कन्या | 02-10-2047 | 3 मिथुन | 02-12-2057 | 4 कर्क | 01-12-2068 |
| 4 कर्क | 02-06-2042 | 5 सिंह | 02-04-2048 | 4 कर्क | 01-11-2058 | 5 सिंह | 01-11-2069 |
| 3 मिथुन | 02-10-2042 | 4 कर्क | 01-10-2048 | 5 सिंह | 02-10-2059 | 6 कन्या | 02-10-2070 |

| तुला (11व) | 56व0म | वृश्चिक (4व) | 66व11म | धनु (7व) | 70व11म | मकर (3व) | 77व11म |
|------------|------------|--------------|------------|-----------|------------|-----------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2070 | आरम्भ | 01-10-2081 | आरम्भ | 01-10-2085 | आरम्भ | 01-10-2092 |
| अन्त | 01-10-2081 | अन्त | 01-10-2085 | अन्त | 01-10-2092 | अन्त | 02-10-2095 |
| 8 वृश्चिक | 02-09-2071 | 7 तुला | 31-01-2082 | 8 वृश्चिक | 03-05-2086 | 9 धनु | 31-12-2092 |
| 9 धनु | 01-08-2072 | 6 कन्या | 02-06-2082 | 7 तुला | 02-12-2086 | 8 वृश्चिक | 02-04-2093 |
| 10 मकर | 02-07-2073 | 5 सिंह | 02-10-2082 | 6 कन्या | 03-07-2087 | 7 तुला | 02-07-2093 |
| 11 कुंभ | 02-06-2074 | 4 कर्क | 31-01-2083 | 5 सिंह | 01-02-2088 | 6 कन्या | 01-10-2093 |
| 12 मीन | 03-05-2075 | 3 मिथुन | 02-06-2083 | 4 कर्क | 01-09-2088 | 5 सिंह | 01-01-2094 |
| 1 मेष | 02-04-2076 | 2 वृष | 02-10-2083 | 3 मिथुन | 02-04-2089 | 4 कर्क | 02-04-2094 |
| 2 वृष | 02-03-2077 | 1 मेष | 01-02-2084 | 2 वृष | 01-11-2089 | 3 मिथुन | 02-07-2094 |
| 3 मिथुन | 31-01-2078 | 12 मीन | 01-06-2084 | 1 मेष | 02-06-2090 | 2 वृष | 02-10-2094 |
| 4 कर्क | 01-01-2079 | 11 कुंभ | 01-10-2084 | 12 मीन | 01-01-2091 | 1 मेष | 01-01-2095 |
| 5 सिंह | 02-12-2079 | 10 मकर | 31-01-2085 | 11 कुंभ | 02-08-2091 | 12 मीन | 02-04-2095 |
| 6 कन्या | 01-11-2080 | 9 धनु | 02-06-2085 | 10 मकर | 02-03-2092 | 11 कुंभ | 03-07-2095 |
| 7 तुला | 01-10-2081 | 8 वृश्चिक | 01-10-2085 | 9 धनु | 01-10-2092 | 10 मकर | 02-10-2095 |



जैमिनी चरदशा

नीचे दी गई तिथियां दशा समाप्ति काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| कुंभ (5व) | 81व0म | मीन (8व) | 86व0म | मेष (7व) | 94व0म | वृष (4व) | 101व0म |
|-----------|------------|----------|------------|-----------|------------|-----------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2095 | आरम्भ | 02-10-2100 | आरम्भ | 02-10-2108 | आरम्भ | 03-10-2115 |
| अन्त | 02-10-2100 | अन्त | 02-10-2108 | अन्त | 03-10-2115 | अन्त | 03-10-2119 |
| 12 मीन | 02-03-2096 | 1 मेष | 03-06-2101 | 2 वृष | 03-05-2109 | 1 मेष | 01-02-2116 |
| 1 मेष | 01-08-2096 | 2 वृष | 01-02-2102 | 3 मिथुन | 02-12-2109 | 12 मीन | 02-06-2116 |
| 2 वृष | 31-12-2096 | 3 मिथुन | 03-10-2102 | 4 कर्क | 03-07-2110 | 11 कुंभ | 02-10-2116 |
| 3 मिथुन | 02-06-2097 | 4 कर्क | 03-06-2103 | 5 सिंह | 01-02-2111 | 10 मकर | 01-02-2117 |
| 4 कर्क | 01-11-2097 | 5 सिंह | 02-02-2104 | 6 कन्या | 02-09-2111 | 9 धनु | 02-06-2117 |
| 5 सिंह | 02-04-2098 | 6 कन्या | 02-10-2104 | 7 तुला | 02-04-2112 | 8 वृश्चिक | 02-10-2117 |
| 6 कन्या | 01-09-2098 | 7 तुला | 03-06-2105 | 8 वृश्चिक | 01-11-2112 | 7 तुला | 01-02-2118 |
| 7 तुला | 31-01-2099 | 9 धनु | 03-10-2106 | 9 धनु | 02-06-2113 | 6 कन्या | 03-06-2118 |
| 8 वृश्चिक | 03-07-2099 | 10 मकर | 03-06-2107 | 10 मकर | 02-01-2114 | 5 सिंह | 02-10-2118 |
| 9 धनु | 02-12-2099 | 11 कुंभ | 02-02-2108 | 11 कुंभ | 03-08-2114 | 4 कर्क | 01-02-2119 |
| 10 मकर | 03-05-2100 | 12 मीन | 02-10-2108 | 12 मीन | 04-03-2115 | 3 मिथुन | 03-06-2119 |
| 11 कुंभ | 02-10-2100 | | | 1 मेष | 03-10-2115 | 2 वृष | 03-10-2119 |

| मिथुन (4व) | 105व0म | कर्क (6व) | 109व0म | सिंह (11व) | 115व0म | कन्या (11व) | 126व0म |
|------------|------------|-----------|------------|------------|------------|-------------|------------|
| आरम्भ | 03-10-2119 | आरम्भ | 03-10-2123 | आरम्भ | 02-10-2129 | आरम्भ | 02-10-2140 |
| अन्त | 03-10-2123 | अन्त | 02-10-2129 | अन्त | 02-10-2140 | अन्त | 02-10-2151 |
| 2 वृष | 01-02-2120 | 3 मिथुन | 02-04-2124 | 6 कन्या | 02-09-2130 | 7 तुला | 02-09-2141 |
| 1 मेष | 02-06-2120 | 2 वृष | 02-10-2124 | 7 तुला | 03-08-2131 | 8 वृश्चिक | 02-08-2142 |
| 12 मीन | 02-10-2120 | 1 मेष | 03-04-2125 | 8 वृश्चिक | 03-07-2132 | 9 धनु | 03-07-2143 |
| 11 कुंभ | 01-02-2121 | 12 मीन | 02-10-2125 | 9 धनु | 02-06-2133 | 10 मकर | 02-06-2144 |
| 10 मकर | 02-06-2121 | 11 कुंभ | 03-04-2126 | 10 मकर | 03-05-2134 | 11 कुंभ | 03-05-2145 |
| 9 धनु | 02-10-2121 | 10 मकर | 02-10-2126 | 11 कुंभ | 03-04-2135 | 12 मीन | 03-04-2146 |
| 8 वृश्चिक | 01-02-2122 | 9 धनु | 03-04-2127 | 12 मीन | 03-03-2136 | 1 मेष | 03-03-2147 |
| 7 तुला | 03-06-2122 | 8 वृश्चिक | 03-10-2127 | 1 मेष | 01-02-2137 | 2 वृष | 01-02-2148 |
| 6 कन्या | 02-10-2122 | 7 तुला | 02-04-2128 | 2 वृष | 01-01-2138 | 3 मिथुन | 01-01-2149 |
| 5 सिंह | 01-02-2123 | 6 कन्या | 02-10-2128 | 3 मिथुन | 02-12-2138 | 4 कर्क | 02-12-2149 |
| 4 कर्क | 03-06-2123 | 5 सिंह | 02-04-2129 | 4 कर्क | 02-11-2139 | 5 सिंह | 02-11-2150 |
| 3 मिथुन | 03-10-2123 | 4 कर्क | 02-10-2129 | 5 सिंह | 02-10-2140 | 6 कन्या | 02-10-2151 |

| तुला (11व) | 137व0म | वृश्चिक (4व) | 148व0म | धनु (7व) | 152व0म | मकर (3व) | 159व0म |
|------------|------------|--------------|------------|-----------|------------|-----------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2151 | आरम्भ | 02-10-2162 | आरम्भ | 02-10-2166 | आरम्भ | 02-10-2173 |
| अन्त | 02-10-2162 | अन्त | 02-10-2166 | अन्त | 02-10-2173 | अन्त | 01-10-2176 |
| 8 वृश्चिक | 01-09-2152 | 7 तुला | 01-02-2163 | 8 वृश्चिक | 03-05-2167 | 9 धनु | 01-01-2174 |
| 9 धनु | 02-08-2153 | 6 कन्या | 03-06-2163 | 7 तुला | 02-12-2167 | 8 वृश्चिक | 02-04-2174 |
| 10 मकर | 03-07-2154 | 5 सिंह | 02-10-2163 | 6 कन्या | 02-07-2168 | 7 तुला | 03-07-2174 |
| 11 कुंभ | 03-06-2155 | 4 कर्क | 01-02-2164 | 5 सिंह | 31-01-2169 | 6 कन्या | 02-10-2174 |
| 12 मीन | 02-05-2156 | 3 मिथुन | 02-06-2164 | 4 कर्क | 01-09-2169 | 5 सिंह | 01-01-2175 |
| 1 मेष | 02-04-2157 | 2 वृष | 02-10-2164 | 3 मिथुन | 02-04-2170 | 4 कर्क | 03-04-2175 |
| 2 वृष | 03-03-2158 | 1 मेष | 31-01-2165 | 2 वृष | 01-11-2170 | 3 मिथुन | 03-07-2175 |
| 3 मिथुन | 01-02-2159 | 12 मीन | 02-06-2165 | 1 मेष | 03-06-2171 | 2 वृष | 02-10-2175 |
| 4 कर्क | 02-01-2160 | 11 कुंभ | 02-10-2165 | 12 मीन | 02-01-2172 | 1 मेष | 02-01-2176 |
| 5 सिंह | 01-12-2160 | 10 मकर | 01-02-2166 | 11 कुंभ | 02-08-2172 | 12 मीन | 02-04-2176 |
| 6 कन्या | 01-11-2161 | 9 धनु | 02-06-2166 | 10 मकर | 03-03-2173 | 11 कुंभ | 02-07-2176 |
| 7 तुला | 02-10-2162 | 8 वृश्चिक | 02-10-2166 | 9 धनु | 02-10-2173 | 10 मकर | 01-10-2176 |



जैमिनी स्थिर दशा

नीचे दी गई तिथियां दशा समाप्ति काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| तुला (7व) | 0वर्ष | वृश्चिक (8व) | 7वर्ष | धनु (9व) | 15वर्ष | मकर (7व) | 24वर्ष |
|------------|------------|--------------|------------|-----------|---|------------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2014 | आरम्भ | 02-10-2021 | आरम्भ | 02-10-2029 | आरम्भ | 02-10-2038 |
| अन्त | 02-10-2021 | अन्त | 02-10-2029 | अन्त | 02-10-2038 | अन्त | 02-10-2045 |
| 7 तुला | 03-05-2015 | 8 वृश्चिक | 02-06-2022 | 9 धनु | 03-07-2030 | 4 कर्क | 03-05-2039 |
| 8 वृश्चिक | 02-12-2015 | 7 तुला | 01-02-2023 | 10 मकर | 03-04-2031 | 3 मिथुन | 02-12-2039 |
| 9 धनु | 02-07-2016 | 6 कन्या | 02-10-2023 | 11 कुंभ | 02-01-2032 | 2 वृष | 02-07-2040 |
| 10 मकर | 31-01-2017 | 5 सिंह | 02-06-2024 | 12 मीन | 02-10-2032 | 1 मेष | 31-01-2041 |
| 11 कुंभ | 02-09-2017 | 4 कर्क | 31-01-2025 | 1 मेष | 03-07-2033 | 12 मीन | 01-09-2041 |
| 12 मीन | 03-04-2018 | 3 मिथुन | 02-10-2025 | 2 वृष | 02-04-2034 | 11 कुंभ | 02-04-2042 |
| 1 मेष | 02-11-2018 | 2 वृष | 02-06-2026 | 3 मिथुन | 01-01-2035 | 10 मकर | 01-11-2042 |
| 2 वृष | 03-06-2019 | 1 मेष | 01-02-2027 | 4 कर्क | 02-10-2035 | 9 धनु | 03-06-2043 |
| 3 मिथुन | 02-01-2020 | 12 मीन | 02-10-2027 | 5 सिंह | 02-07-2036 | 8 वृश्चिक | 02-01-2044 |
| 4 कर्क | 02-08-2020 | 11 कुंभ | 02-06-2028 | 6 कन्या | 02-04-2037 | 7 तुला | 02-08-2044 |
| 5 सिंह | 03-03-2021 | 10 मकर | 31-01-2029 | 7 तुला | 01-01-2038 | 6 कन्या | 03-03-2045 |
| 6 कन्या | 02-10-2021 | 9 धनु | 02-10-2029 | 8 वृश्चिक | 02-10-2038 | 5 सिंह | 02-10-2045 |
| कुंभ (8व) | 31वर्ष | मीन (9व) | 39वर्ष | मेष (7व) | 48वर्ष | वृष (8व) | 55वर्ष |
| आरम्भ | 02-10-2045 | आरम्भ | 02-10-2053 | आरम्भ | 02-10-2062 <th>आरम्भ</th> <td>02-10-2069</td> | आरम्भ | 02-10-2069 |
| अन्त | 02-10-2053 | अन्त | 02-10-2062 | अन्त | 02-10-2069 <th>अन्त</th> <td>02-10-2077</td> | अन्त | 02-10-2077 |
| 11 कुंभ | 02-06-2046 | 6 कन्या | 03-07-2054 | 7 तुला | 03-05-2063 | 8 वृश्चिक | 02-06-2070 |
| 12 मीन | 01-02-2047 | 5 सिंह | 03-04-2055 | 8 वृश्चिक | 02-12-2063 | 7 तुला | 01-02-2071 |
| 1 मेष | 02-10-2047 | 4 कर्क | 02-01-2056 | 9 धनु | 02-07-2064 | 6 कन्या | 02-10-2071 |
| 2 वृष | 02-06-2048 | 3 मिथुन | 01-10-2056 | 10 मकर | 31-01-2065 | 5 सिंह | 02-06-2072 |
| 3 मिथुन | 31-01-2049 | 2 वृष | 02-07-2057 | 11 कुंभ | 01-09-2065 | 4 कर्क | 31-01-2073 |
| 4 कर्क | 02-10-2049 | 1 मेष | 02-04-2058 | 12 मीन | 02-04-2066 | 3 मिथुन | 02-10-2073 |
| 5 सिंह | 02-06-2050 | 12 मीन | 01-01-2059 | 1 मेष | 01-11-2066 | 2 वृष | 02-06-2074 |
| 6 कन्या | 01-02-2051 | 11 कुंभ | 02-10-2059 | 2 वृष | 02-06-2067 | 1 मेष | 01-02-2075 |
| 7 तुला | 02-10-2051 | 10 मकर | 02-07-2060 | 3 मिथुन | 01-01-2068 | 12 मीन | 02-10-2075 |
| 8 वृश्चिक | 02-06-2052 | 9 धनु | 02-04-2061 | 4 कर्क | 01-08-2068 | 11 कुंभ | 02-06-2076 |
| 9 धनु | 31-01-2053 | 8 वृश्चिक | 01-01-2062 | 5 सिंह | 03-03-2069 | 10 मकर | 31-01-2077 |
| 10 मकर | 02-10-2053 | 7 तुला | 02-10-2062 | 6 कन्या | 02-10-2069 | 9 धनु | 02-10-2077 |
| मिथुन (9व) | 63वर्ष | कर्क (7व) | 72वर्ष | सिंह (8व) | 78वर्ष | कन्या (9व) | 87वर्ष |
| आरम्भ | 02-10-2077 | आरम्भ | 02-10-2086 | आरम्भ | 01-10-2093 <th>आरम्भ</th> <td>02-10-2101</td> | आरम्भ | 02-10-2101 |
| अन्त | 02-10-2086 | अन्त | 01-10-2093 | अन्त | 02-10-2101 <th>अन्त</th> <td>03-10-2110</td> | अन्त | 03-10-2110 |
| 9 धनु | 02-07-2078 | 4 कर्क | 03-05-2087 | 11 कुंभ | 02-06-2094 | 6 कन्या | 03-07-2102 |
| 10 मकर | 02-04-2079 | 3 मिथुन | 02-12-2087 | 12 मीन | 31-01-2095 | 5 सिंह | 03-04-2103 |
| 11 कुंभ | 01-01-2080 | 2 वृष | 02-07-2088 | 1 मेष | 02-10-2095 | 4 कर्क | 02-01-2104 |
| 12 मीन | 01-10-2080 | 1 मेष | 31-01-2089 | 2 वृष | 01-06-2096 | 3 मिथुन | 02-10-2104 |
| 1 मेष | 02-07-2081 | 12 मीन | 01-09-2089 | 3 मिथुन | 31-01-2097 | 2 वृष | 03-07-2105 |
| 2 वृष | 02-04-2082 | 11 कुंभ | 02-04-2090 | 4 कर्क | 01-10-2097 | 1 मेष | 03-04-2106 |
| 3 मिथुन | 01-01-2083 | 10 मकर | 01-11-2090 | 5 सिंह | 02-06-2098 | 12 मीन | 02-01-2107 |
| 4 कर्क | 02-10-2083 | 9 धनु | 02-06-2091 | 6 कन्या | 31-01-2099 | 11 कुंभ | 03-10-2107 |
| 5 सिंह | 02-07-2084 | 8 वृश्चिक | 01-01-2092 | 7 तुला | 02-10-2099 | 10 मकर | 03-07-2108 |
| 6 कन्या | 02-04-2085 | 7 तुला | 01-08-2092 | 8 वृश्चिक | 02-06-2100 | 9 धनु | 03-04-2109 |
| 7 तुला | 01-01-2086 | 6 कन्या | 02-03-2093 | 9 धनु | 01-02-2101 | 8 वृश्चिक | 02-01-2110 |
| 8 वृश्चिक | 02-10-2086 | 5 सिंह | 01-10-2093 | 10 मकर | 02-10-2101 | 7 तुला | 03-10-2110 |



निरयान शूल दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| तुला (10व) | ०व ०म | कुंभ (5व) | १०व ०म | वृष (३व) | १५व ०म | सिंह (११व) | १८व ०म |
|--------------|------------|-----------|------------|------------|------------|-------------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2014 | आरम्भ | 02-10-2024 | आरम्भ | 02-10-2029 | आरम्भ | 02-10-2032 |
| अन्त | 02-10-2024 | अन्त | 02-10-2029 | अन्त | 02-10-2032 | अन्त | 02-10-2043 |
| 7 तुला | 02-10-2014 | 11 कुंभ | 02-10-2024 | 8 वृश्चिक | 02-10-2029 | 11 कुंभ | 02-10-2032 |
| 8 वृश्चिक | 03-08-2015 | 12 मीन | 03-03-2025 | 7 तुला | 01-01-2030 | 12 मीन | 01-09-2033 |
| 9 धनु | 02-06-2016 | 1 मेष | 02-08-2025 | 6 कन्या | 03-04-2030 | 1 मेष | 02-08-2034 |
| 10 मकर | 02-04-2017 | 2 वृष | 01-01-2026 | 5 सिंह | 03-07-2030 | 2 वृष | 03-07-2035 |
| 11 कुंभ | 01-02-2018 | 3 मिथुन | 02-06-2026 | 4 कर्क | 02-10-2030 | 3 मिथुन | 02-06-2036 |
| 12 मीन | 02-12-2018 | 4 कक्ष | 02-11-2026 | 3 मिथुन | 01-01-2031 | 4 कक्ष | 03-05-2037 |
| 1 मेष | 02-10-2019 | 5 सिंह | 03-04-2027 | 2 वृष | 03-04-2031 | 5 सिंह | 02-04-2038 |
| 2 वृष | 02-08-2020 | 6 कन्या | 02-09-2027 | 1 मेष | 03-07-2031 | 6 कन्या | 03-03-2039 |
| 3 मिथुन | 02-06-2021 | 7 तुला | 01-02-2028 | 12 मीन | 02-10-2031 | 7 तुला | 01-02-2040 |
| 4 कर्क | 03-04-2022 | 8 वृश्चिक | 02-07-2028 | 11 कुंभ | 02-01-2032 | 8 वृश्चिक | 01-01-2041 |
| 5 सिंह | 01-02-2023 | 9 धनु | 02-12-2028 | 10 मकर | 02-04-2032 | 9 धनु | 02-12-2041 |
| 6 कन्या | 02-12-2023 | 10 मकर | 03-05-2029 | 9 धनु | 02-07-2032 | 10 मकर | 01-11-2042 |
| वृश्चिक (४व) | २९व ०म | मकर (४व) | ३३व ०म | मेष (७व) | ३७व ०म | कर्क (६व) | ४४व ०म |
| आरम्भ | 02-10-2043 | आरम्भ | 02-10-2047 | आरम्भ | 02-10-2051 | आरम्भ | 02-10-2058 |
| अन्त | 02-10-2047 | अन्त | 02-10-2051 | अन्त | 02-10-2058 | अन्त | 01-10-2064 |
| 8 वृश्चिक | 02-10-2043 | 4 कर्क | 02-10-2047 | 7 तुला | 02-10-2051 | 4 कर्क | 02-10-2058 |
| 7 तुला | 01-02-2044 | 3 मिथुन | 01-02-2048 | 8 वृश्चिक | 02-05-2052 | 3 मिथुन | 03-04-2059 |
| 6 कन्या | 02-06-2044 | 2 वृष | 02-06-2048 | 9 धनु | 01-12-2052 | 2 वृष | 02-10-2059 |
| 5 सिंह | 02-10-2044 | 1 मेष | 01-10-2048 | 10 मकर | 02-07-2053 | 1 मेष | 02-04-2060 |
| 4 कर्क | 31-01-2045 | 12 मीन | 31-01-2049 | 11 कुंभ | 31-01-2054 | 12 मीन | 01-10-2060 |
| 3 मिथुन | 02-06-2045 | 11 कुंभ | 02-06-2049 | 12 मीन | 02-09-2054 | 11 कुंभ | 02-04-2061 |
| 2 वृष | 02-10-2045 | 10 मकर | 02-10-2049 | 1 मेष | 03-04-2055 | 10 मकर | 02-10-2061 |
| 1 मेष | 01-02-2046 | 9 धनु | 31-01-2050 | 2 वृष | 02-11-2055 | 9 धनु | 02-04-2062 |
| 12 मीन | 02-06-2046 | 8 वृश्चिक | 02-06-2050 | 3 मिथुन | 02-06-2056 | 8 वृश्चिक | 02-10-2062 |
| 11 कुंभ | 02-10-2046 | 7 तुला | 02-10-2050 | 4 कर्क | 01-01-2057 | 7 तुला | 03-04-2063 |
| 10 मकर | 01-02-2047 | 6 कन्या | 01-02-2051 | 5 सिंह | 02-08-2057 | 6 कन्या | 02-10-2063 |
| 9 धनु | 03-06-2047 | 5 सिंह | 02-06-2051 | 6 कन्या | 03-03-2058 | 5 सिंह | 02-04-2064 |
| धनु (८व) | ४९व ११म | मीन (९व) | ५७व ११म | मिथुन (४व) | ६६व ११म | कन्या (११व) | ७०व ११म |
| आरम्भ | 01-10-2064 | आरम्भ | 01-10-2072 | आरम्भ | 01-10-2081 | आरम्भ | 01-10-2085 |
| अन्त | 01-10-2072 | अन्त | 01-10-2081 | अन्त | 01-10-2085 | अन्त | 01-10-2096 |
| 9 धनु | 01-10-2064 | 6 कन्या | 01-10-2072 | 9 धनु | 01-10-2081 | 6 कन्या | 01-10-2085 |
| 10 मकर | 02-06-2065 | 5 सिंह | 02-07-2073 | 10 मकर | 31-01-2082 | 5 सिंह | 01-09-2086 |
| 11 कुंभ | 31-01-2066 | 4 कर्क | 02-04-2074 | 11 कुंभ | 02-06-2082 | 4 कर्क | 02-08-2087 |
| 12 मीन | 02-10-2066 | 3 मिथुन | 01-01-2075 | 12 मीन | 02-10-2082 | 3 मिथुन | 02-07-2088 |
| 1 मेष | 02-06-2067 | 2 वृष | 02-10-2075 | 1 मेष | 31-01-2083 | 2 वृष | 02-06-2089 |
| 2 वृष | 01-02-2068 | 1 मेष | 02-07-2076 | 2 वृष | 02-06-2083 | 1 मेष | 02-05-2090 |
| 3 मिथुन | 01-10-2068 | 12 मीन | 02-04-2077 | 3 मिथुन | 02-10-2083 | 12 मीन | 02-04-2091 |
| 4 कर्क | 02-06-2069 | 11 कुंभ | 01-01-2078 | 4 कर्क | 01-02-2084 | 11 कुंभ | 02-03-2092 |
| 5 सिंह | 31-01-2070 | 10 मकर | 02-10-2078 | 5 सिंह | 01-06-2084 | 10 मकर | 31-01-2093 |
| 6 कन्या | 02-10-2070 | 9 धनु | 03-07-2079 | 6 कन्या | 01-10-2084 | 9 धनु | 01-01-2094 |
| 7 तुला | 02-06-2071 | 8 वृश्चिक | 02-04-2080 | 7 तुला | 31-01-2085 | 8 वृश्चिक | 02-12-2094 |
| 8 वृश्चिक | 01-02-2072 | 7 तुला | 01-01-2081 | 8 वृश्चिक | 02-06-2085 | 7 तुला | 01-11-2095 |



निरयान शूल दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| मकर (4व) | 81व 11म | मकर (4व) | 90व 0म | वृष (3व) | 91व 0म | वृष (3व) | 100व 0म |
|------------------|------------|----------------|------------|------------------|------------|----------------|------------|
| आरम्भ | 01-10-2096 | आरम्भ | 02-10-2100 | आरम्भ | 03-07-2107 | आरम्भ | 02-01-2114 |
| अन्त | 02-10-2100 | अन्त | 03-07-2107 | अन्त | 02-01-2114 | अन्त | 03-06-2118 |
| 4 कर्क | 01-10-2096 | 4 कर्क | 02-10-2100 | 1 मेष | 03-07-2107 | 1 मेष | 02-01-2114 |
| 3 मिथुन | 31-01-2097 | 3 मिथुन | 03-06-2101 | 12 मीन | 03-10-2107 | 9 धनु | 02-10-2114 |
| 2 वृष | 02-06-2097 | 2 वृष | 01-02-2102 | 11 कुंभ | 02-01-2108 | 10 मकर | 01-02-2115 |
| 1 मेष | 01-10-2097 | 1 मेष | 03-10-2102 | 10 मकर | 02-04-2108 | 11 कुंभ | 03-06-2115 |
| 12 मीन | 31-01-2098 | 12 मीन | 03-06-2103 | 9 धनु | 03-07-2108 | 12 मीन | 03-10-2115 |
| 11 कुंभ | 02-06-2098 | 11 कुंभ | 02-02-2104 | 8 वृश्चिक | 02-10-2108 | 1 मेष | 01-02-2116 |
| 10 मकर | 02-10-2098 | 11 कुंभ | 02-10-2104 | 7 तुला | 03-07-2109 | 2 वृष | 02-06-2116 |
| 9 धनु | 31-01-2099 | 12 मीन | 02-09-2105 | 6 कन्या | 03-04-2110 | 3 मिथुन | 02-10-2116 |
| 8 वृश्चिक | 02-06-2099 | 5 सिंह | 03-07-2106 | 5 सिंह | 02-01-2111 | 4 कर्क | 01-02-2117 |
| 7 तुला | 02-10-2099 | 4 कर्क | 03-10-2106 | 4 कर्क | 03-10-2111 | 5 सिंह | 02-06-2117 |
| 6 कन्या | 01-02-2100 | 3 मिथुन | 02-01-2107 | 3 मिथुन | 03-07-2112 | 6 कन्या | 02-10-2117 |
| 5 सिंह | 02-06-2100 | 2 वृष | 03-04-2107 | 2 वृष | 03-04-2113 | 7 तुला | 01-02-2118 |

| मिथुन (4व) | 108व 0म | वृश्चिक (4व) | 116व 0म | वृश्चिक (4व) | 124व 0म | मकर (4व) | 129व 0म |
|------------------|------------|------------------|------------|------------------|------------|------------------|------------|
| आरम्भ | 03-06-2118 | आरम्भ | 02-06-2124 | आरम्भ | 01-02-2130 | आरम्भ | 03-06-2134 |
| अन्त | 02-06-2124 | अन्त | 01-02-2130 | अन्त | 03-06-2134 | अन्त | 02-09-2141 |
| 8 वृश्चिक | 03-06-2118 | 3 मिथुन | 02-06-2124 | 3 मिथुन | 01-02-2130 | 5 सिंह | 03-06-2134 |
| 9 धनु | 02-10-2118 | 2 वृष | 02-10-2124 | 4 कर्क | 02-10-2130 | 4 कर्क | 02-10-2134 |
| 10 मकर | 03-06-2119 | 1 मेष | 01-02-2125 | 3 मिथुन | 01-02-2131 | 3 मिथुन | 03-06-2135 |
| 11 कुंभ | 01-02-2120 | 12 मीन | 02-06-2125 | 2 वृष | 03-06-2131 | 2 वृष | 01-02-2136 |
| 12 मीन | 02-10-2120 | 11 कुंभ | 02-10-2125 | 1 मेष | 03-10-2131 | 1 मेष | 02-10-2136 |
| 1 मेष | 02-06-2121 | 10 मकर | 01-02-2126 | 12 मीन | 01-02-2132 | 12 मीन | 02-06-2137 |
| 2 वृष | 01-02-2122 | 9 धनु | 03-06-2126 | 11 कुंभ | 02-06-2132 | 11 कुंभ | 01-02-2138 |
| 8 वृश्चिक | 02-10-2122 | 8 वृश्चिक | 02-10-2126 | 10 मकर | 02-10-2132 | 7 तुला | 02-10-2138 |
| 7 तुला | 01-02-2123 | 7 तुला | 03-06-2127 | 9 धनु | 01-02-2133 | 8 वृश्चिक | 03-05-2139 |
| 6 कन्या | 03-06-2123 | 6 कन्या | 01-02-2128 | 8 वृश्चिक | 02-06-2133 | 9 धनु | 02-12-2139 |
| 5 सिंह | 03-10-2123 | 5 सिंह | 02-10-2128 | 7 तुला | 02-10-2133 | 10 मकर | 02-07-2140 |
| 4 कर्क | 01-02-2124 | 4 कर्क | 02-06-2129 | 6 कन्या | 01-02-2134 | 11 कुंभ | 01-02-2141 |

| मेष (7व) | 135व 0म | कर्क (6व) | 139व 0म | मीन (9व) | 142व 0म | मिथुन (4व) | 150व 0म |
|----------------|------------|------------------|------------|----------------|------------|------------------|------------|
| आरम्भ | 02-09-2141 | आरम्भ | 02-10-2147 | आरम्भ | 03-04-2155 | आरम्भ | 01-02-2160 |
| अन्त | 02-10-2147 | अन्त | 03-04-2155 | अन्त | 01-02-2160 | अन्त | 01-02-2167 |
| 12 मीन | 02-09-2141 | 8 वृश्चिक | 02-10-2147 | 4 कर्क | 03-04-2155 | 7 तुला | 01-02-2160 |
| 1 मेष | 03-04-2142 | 7 तुला | 02-04-2148 | 3 मिथुन | 02-01-2156 | 8 वृश्चिक | 02-06-2160 |
| 2 वृष | 02-11-2142 | 6 कन्या | 02-10-2148 | 9 धनु | 02-10-2156 | 9 धनु | 02-10-2160 |
| 3 मिथुन | 03-06-2143 | 5 सिंह | 02-04-2149 | 10 मकर | 31-01-2157 | 10 मकर | 02-06-2161 |
| 4 कर्क | 03-10-2143 | 9 धनु | 02-10-2149 | 11 कुंभ | 02-06-2157 | 11 कुंभ | 01-02-2162 |
| 3 मिथुन | 02-04-2144 | 10 मकर | 02-06-2150 | 12 मीन | 02-10-2157 | 12 मीन | 02-10-2162 |
| 2 वृष | 02-10-2144 | 11 कुंभ | 01-02-2151 | 1 मेष | 01-02-2158 | 1 मेष | 03-06-2163 |
| 1 मेष | 02-04-2145 | 12 मीन | 02-10-2151 | 2 वृष | 02-06-2158 | 2 वृष | 01-02-2164 |
| 12 मीन | 02-10-2145 | 1 मेष | 02-06-2152 | 3 मिथुन | 02-10-2158 | 6 कन्या | 02-10-2164 |
| 11 कुंभ | 03-04-2146 | 2 वृष | 31-01-2153 | 4 कर्क | 01-02-2159 | 5 सिंह | 01-09-2165 |
| 10 मकर | 02-10-2146 | 6 कन्या | 02-10-2153 | 5 सिंह | 03-06-2159 | 2 वृष | 02-06-2166 |
| 9 धनु | 03-04-2147 | 5 सिंह | 03-07-2154 | 6 कन्या | 02-10-2159 | 1 मेष | 02-10-2166 |



द्वगदशा

नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| तुला (10व) | ०व ०म* | कुंभ (5व) | १०व ०म | वृष (३व) | १५व ०म | सिंह (११व) | १८व ०म |
|---------------------|----------------|-----------------|----------------|-------------------|----------------|--------------------|----------------|
| आरम्भ | 02-10-2014 | आरम्भ | 02-10-2024 | आरम्भ | 02-10-2029 | आरम्भ | 02-10-2032 |
| अन्त | 02-10-2024 | अन्त | 02-10-2029 | अन्त | 02-10-2032 | अन्त | 02-10-2043 |
| 7 तुला | 02-10-2014 | 11 कुंभ | 02-10-2024 | 8 वृश्चिक | 02-10-2029 | 11 कुंभ | 02-10-2032 |
| 8 वृश्चिक | 03-08-2015 | 12 मीन | 03-03-2025 | 7 तुला | 01-01-2030 | 12 मीन | 01-09-2033 |
| 9 धनु | 02-06-2016 | 1 मेष | 02-08-2025 | 6 कन्या | 03-04-2030 | 1 मेष | 02-08-2034 |
| 10 मकर | 02-04-2017 | 2 वृष | 01-01-2026 | 5 सिंह | 03-07-2030 | 2 वृष | 03-07-2035 |
| 11 कुंभ | 01-02-2018 | 3 मिथुन | 02-06-2026 | 4 कर्क | 02-10-2030 | 3 मिथुन | 02-06-2036 |
| 12 मीन | 02-12-2018 | 4 कक्ष | 02-11-2026 | 3 मिथुन | 01-01-2031 | 4 कक्ष | 03-05-2037 |
| 1 मेष | 02-10-2019 | 5 सिंह | 03-04-2027 | 2 वृष | 03-04-2031 | 5 सिंह | 02-04-2038 |
| 2 वृष | 02-08-2020 | 6 कन्या | 02-09-2027 | 1 मेष | 03-07-2031 | 6 कन्या | 03-03-2039 |
| 3 मिथुन | 02-06-2021 | 7 तुला | 01-02-2028 | 12 मीन | 02-10-2031 | 7 तुला | 01-02-2040 |
| 4 कर्क | 03-04-2022 | 8 वृश्चिक | 02-07-2028 | 11 कुंभ | 02-01-2032 | 8 वृश्चिक | 01-01-2041 |
| 5 सिंह | 01-02-2023 | 9 धनु | 02-12-2028 | 10 मकर | 02-04-2032 | 9 धनु | 02-12-2041 |
| 6 कन्या | 02-12-2023 | 10 मकर | 03-05-2029 | 9 धनु | 02-07-2032 | 10 मकर | 01-11-2042 |
| वृश्चिक (4व) | २९व ०म | मकर (4व) | ३३व ०म | मेष (७व) | ३७व ०म | कर्क (६व) | ४४व ०म |
| आरम्भ | 02-10-2043 | आरम्भ | 02-10-2047 | आरम्भ | 02-10-2051 | आरम्भ | 02-10-2058 |
| अन्त | 02-10-2047 | अन्त | 02-10-2051 | अन्त | 02-10-2058 | अन्त | 01-10-2064 |
| 8 वृश्चिक | 02-10-2043 | 4 कर्क | 02-10-2047 | 7 तुला | 02-10-2051 | 4 कर्क | 02-10-2058 |
| 7 तुला | 01-02-2044 | 3 मिथुन | 01-02-2048 | 8 वृश्चिक | 02-05-2052 | 3 मिथुन | 03-04-2059 |
| 6 कन्या | 02-06-2044 | 2 वृष | 02-06-2048 | 9 धनु | 01-12-2052 | 2 वृष | 02-10-2059 |
| 5 सिंह | 02-10-2044 | 1 मेष | 01-10-2048 | 10 मकर | 02-07-2053 | 1 मेष | 02-04-2060 |
| 4 कर्क | 31-01-2045 | 12 मीन | 31-01-2049 | 11 कुंभ | 31-01-2054 | 12 मीन | 01-10-2060 |
| 3 मिथुन | 02-06-2045 | 11 कुंभ | 02-06-2049 | 12 मीन | 02-09-2054 | 11 कुंभ | 02-04-2061 |
| 2 वृष | 02-10-2045 | 10 मकर | 02-10-2049 | 1 मेष | 03-04-2055 | 10 मकर | 02-10-2061 |
| 1 मेष | 01-02-2046 | 9 धनु | 31-01-2050 | 2 वृष | 02-11-2055 | 9 धनु | 02-04-2062 |
| 12 मीन | 02-06-2046 | 8 वृश्चिक | 02-06-2050 | 3 मिथुन | 02-06-2056 | 8 वृश्चिक | 02-10-2062 |
| 11 कुंभ | 02-10-2046 | 7 तुला | 02-10-2050 | 4 कर्क | 01-01-2057 | 7 तुला | 03-04-2063 |
| 10 मकर | 01-02-2047 | 6 कन्या | 01-02-2051 | 5 सिंह | 02-08-2057 | 6 कन्या | 02-10-2063 |
| 9 धनु | 03-06-2047 | 5 सिंह | 02-06-2051 | 6 कन्या | 03-03-2058 | 5 सिंह | 02-04-2064 |
| धनु (8व) | ४९व ११म | मीन (9व) | ५७व ११म | मिथुन (4व) | ६६व ११म | कन्या (११व) | ७०व ११म |
| आरम्भ | 01-10-2064 | आरम्भ | 01-10-2072 | आरम्भ | 01-10-2081 | आरम्भ | 01-10-2085 |
| अन्त | 01-10-2072 | अन्त | 01-10-2081 | अन्त | 01-10-2085 | अन्त | 01-10-2096 |
| 9 धनु | 01-10-2064 | 6 कन्या | 01-10-2072 | 9 धनु | 01-10-2081 | 6 कन्या | 01-10-2085 |
| 10 मकर | 02-06-2065 | 5 सिंह | 02-07-2073 | 10 मकर | 31-01-2082 | 5 सिंह | 01-09-2086 |
| 11 कुंभ | 31-01-2066 | 4 कर्क | 02-04-2074 | 11 कुंभ | 02-06-2082 | 4 कर्क | 02-08-2087 |
| 12 मीन | 02-10-2066 | 3 मिथुन | 01-01-2075 | 12 मीन | 02-10-2082 | 3 मिथुन | 02-07-2088 |
| 1 मेष | 02-06-2067 | 2 वृष | 02-10-2075 | 1 मेष | 31-01-2083 | 2 वृष | 02-06-2089 |
| 2 वृष | 01-02-2068 | 1 मेष | 02-07-2076 | 2 वृष | 02-06-2083 | 1 मेष | 02-05-2090 |
| 3 मिथुन | 01-10-2068 | 12 मीन | 02-04-2077 | 3 मिथुन | 02-10-2083 | 12 मीन | 02-04-2091 |
| 4 कर्क | 02-06-2069 | 11 कुंभ | 01-01-2078 | 4 कर्क | 01-02-2084 | 11 कुंभ | 02-03-2092 |
| 5 सिंह | 31-01-2070 | 10 मकर | 02-10-2078 | 5 सिंह | 01-06-2084 | 10 मकर | 31-01-2093 |
| 6 कन्या | 02-10-2070 | 9 धनु | 03-07-2079 | 6 कन्या | 01-10-2084 | 9 धनु | 01-01-2094 |
| 7 तुला | 02-06-2071 | 8 वृश्चिक | 02-04-2080 | 7 तुला | 31-01-2085 | 8 वृश्चिक | 02-12-2094 |
| 8 वृश्चिक | 01-02-2072 | 7 तुला | 01-01-2081 | 8 वृश्चिक | 02-06-2085 | 7 तुला | 01-11-2095 |



द्वगदशा

नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| मकर (4व) | 81व 11म | मकर (4व) | 90व 0म | वृष (3व) | 91व 0म | वृष (3व) | 100व 0म |
|-------------------|------------|---------------------|------------|---------------------|------------|-------------------|------------|
| आरम्भ | 01-10-2096 | आरम्भ | 02-10-2100 | आरम्भ | 03-07-2107 | आरम्भ | 02-01-2114 |
| अन्त | 02-10-2100 | अन्त | 03-07-2107 | अन्त | 02-01-2114 | अन्त | 03-06-2118 |
| 4 कर्क | 01-10-2096 | 4 कर्क | 02-10-2100 | 1 मेष | 03-07-2107 | 1 मेष | 02-01-2114 |
| 3 मिथुन | 31-01-2097 | 3 मिथुन | 03-06-2101 | 12 मीन | 03-10-2107 | 9 धनु | 02-10-2114 |
| 2 वृष | 02-06-2097 | 2 वृष | 01-02-2102 | 11 कुंभ | 02-01-2108 | 10 मकर | 01-02-2115 |
| 1 मेष | 01-10-2097 | 1 मेष | 03-10-2102 | 10 मकर | 02-04-2108 | 11 कुंभ | 03-06-2115 |
| 12 मीन | 31-01-2098 | 12 मीन | 03-06-2103 | 9 धनु | 03-07-2108 | 12 मीन | 03-10-2115 |
| 11 कुंभ | 02-06-2098 | 11 कुंभ | 02-02-2104 | 8 वृश्चिक | 02-10-2108 | 1 मेष | 01-02-2116 |
| 10 मकर | 02-10-2098 | 11 कुंभ | 02-10-2104 | 7 तुला | 03-07-2109 | 2 वृष | 02-06-2116 |
| 9 धनु | 31-01-2099 | 12 मीन | 02-09-2105 | 6 कन्या | 03-04-2110 | 3 मिथुन | 02-10-2116 |
| 8 वृश्चिक | 02-06-2099 | 5 सिंह | 03-07-2106 | 5 सिंह | 02-01-2111 | 4 कर्क | 01-02-2117 |
| 7 तुला | 02-10-2099 | 4 कर्क | 03-10-2106 | 4 कर्क | 03-10-2111 | 5 सिंह | 02-06-2117 |
| 6 कन्या | 01-02-2100 | 3 मिथुन | 02-01-2107 | 3 मिथुन | 03-07-2112 | 6 कन्या | 02-10-2117 |
| 5 सिंह | 02-06-2100 | 2 वृष | 03-04-2107 | 2 वृष | 03-04-2113 | 7 तुला | 01-02-2118 |
| मिथुन (4व) | 108व 0म | वृश्चिक (4व) | 116व 0म | वृश्चिक (4व) | 124व 0म | मकर (4व) | 129व 0म |
| आरम्भ | 03-06-2118 | आरम्भ | 02-06-2124 | आरम्भ | 01-02-2130 | आरम्भ | 03-06-2134 |
| अन्त | 02-06-2124 | अन्त | 01-02-2130 | अन्त | 03-06-2134 | अन्त | 02-09-2141 |
| 8 वृश्चिक | 03-06-2118 | 3 मिथुन | 02-06-2124 | 3 मिथुन | 01-02-2130 | 5 सिंह | 03-06-2134 |
| 9 धनु | 02-10-2118 | 2 वृष | 02-10-2124 | 4 कर्क | 02-10-2130 | 4 कर्क | 02-10-2134 |
| 10 मकर | 03-06-2119 | 1 मेष | 01-02-2125 | 3 मिथुन | 01-02-2131 | 3 मिथुन | 03-06-2135 |
| 11 कुंभ | 01-02-2120 | 12 मीन | 02-06-2125 | 2 वृष | 03-06-2131 | 2 वृष | 01-02-2136 |
| 12 मीन | 02-10-2120 | 11 कुंभ | 02-10-2125 | 1 मेष | 03-10-2131 | 1 मेष | 02-10-2136 |
| 1 मेष | 02-06-2121 | 10 मकर | 01-02-2126 | 12 मीन | 01-02-2132 | 12 मीन | 02-06-2137 |
| 2 वृष | 01-02-2122 | 9 धनु | 03-06-2126 | 11 कुंभ | 02-06-2132 | 11 कुंभ | 01-02-2138 |
| 8 वृश्चिक | 02-10-2122 | 8 वृश्चिक | 02-10-2126 | 10 मकर | 02-10-2132 | 7 तुला | 02-10-2138 |
| 7 तुला | 01-02-2123 | 7 तुला | 03-06-2127 | 9 धनु | 01-02-2133 | 8 वृश्चिक | 03-05-2139 |
| 6 कन्या | 03-06-2123 | 6 कन्या | 01-02-2128 | 8 वृश्चिक | 02-06-2133 | 9 धनु | 02-12-2139 |
| 5 सिंह | 03-10-2123 | 5 सिंह | 02-10-2128 | 7 तुला | 02-10-2133 | 10 मकर | 02-07-2140 |
| 4 कर्क | 01-02-2124 | 4 कर्क | 02-06-2129 | 6 कन्या | 01-02-2134 | 11 कुंभ | 01-02-2141 |
| मेष (7व) | 135व 0म | कर्क (6व) | 139व 0म | मीन (9व) | 142व 0म | मिथुन (4व) | 150व 0म |
| आरम्भ | 02-09-2141 | आरम्भ | 02-10-2147 | आरम्भ | 03-04-2155 | आरम्भ | 01-02-2160 |
| अन्त | 02-10-2147 | अन्त | 03-04-2155 | अन्त | 01-02-2160 | अन्त | 01-02-2167 |
| 12 मीन | 02-09-2141 | 8 वृश्चिक | 02-10-2147 | 4 कर्क | 03-04-2155 | 7 तुला | 01-02-2160 |
| 1 मेष | 03-04-2142 | 7 तुला | 02-04-2148 | 3 मिथुन | 02-01-2156 | 8 वृश्चिक | 02-06-2160 |
| 2 वृष | 02-11-2142 | 6 कन्या | 02-10-2148 | 9 धनु | 02-10-2156 | 9 धनु | 02-10-2160 |
| 3 मिथुन | 03-06-2143 | 5 सिंह | 02-04-2149 | 10 मकर | 31-01-2157 | 10 मकर | 02-06-2161 |
| 4 कर्क | 03-10-2143 | 9 धनु | 02-10-2149 | 11 कुंभ | 02-06-2157 | 11 कुंभ | 01-02-2162 |
| 3 मिथुन | 02-04-2144 | 10 मकर | 02-06-2150 | 12 मीन | 02-10-2157 | 12 मीन | 02-10-2162 |
| 2 वृष | 02-10-2144 | 11 कुंभ | 01-02-2151 | 1 मेष | 01-02-2158 | 1 मेष | 03-06-2163 |
| 1 मेष | 02-04-2145 | 12 मीन | 02-10-2151 | 2 वृष | 02-06-2158 | 2 वृष | 01-02-2164 |
| 12 मीन | 02-10-2145 | 1 मेष | 02-06-2152 | 3 मिथुन | 02-10-2158 | 6 कन्या | 02-10-2164 |
| 11 कुंभ | 03-04-2146 | 2 वृष | 31-01-2153 | 4 कर्क | 01-02-2159 | 5 सिंह | 01-09-2165 |
| 10 मकर | 02-10-2146 | 6 कन्या | 02-10-2153 | 5 सिंह | 03-06-2159 | 2 वृष | 02-06-2166 |
| 9 धनु | 03-04-2147 | 5 सिंह | 03-07-2154 | 6 कन्या | 02-10-2159 | 1 मेष | 02-10-2166 |



नवांश दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| धनु (7व) | ०व ०म | मकर (9व) | ७व ०म | कुंभ (8व) | १६व ०म | मीन (4व) | २४व ०म |
|-----------|------------|-----------|------------|-----------|------------|-----------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2014 | आरम्भ | 02-10-2021 | आरम्भ | 02-10-2030 | आरम्भ | 02-10-2038 |
| अन्त | 02-10-2021 | अन्त | 02-10-2030 | अन्त | 02-10-2038 | अन्त | 02-10-2042 |
| 9 धनु | 02-10-2014 | 4 कर्क | 02-10-2021 | 11 कुंभ | 02-10-2030 | 6 कन्या | 02-10-2038 |
| 10 मकर | 03-05-2015 | 3 मिथुन | 03-07-2022 | 12 मीन | 03-06-2031 | 5 सिंह | 01-02-2039 |
| 11 कुंभ | 02-12-2015 | 2 वृष | 03-04-2023 | 1 मेष | 01-02-2032 | 4 कर्क | 03-06-2039 |
| 12 मीन | 02-07-2016 | 1 मेष | 02-01-2024 | 2 वृष | 02-10-2032 | 3 मिथुन | 02-10-2039 |
| 1 मेष | 31-01-2017 | 12 मीन | 02-10-2024 | 3 मिथुन | 02-06-2033 | 2 वृष | 01-02-2040 |
| 2 वृष | 02-09-2017 | 11 कुंभ | 03-07-2025 | 4 कर्क | 01-02-2034 | 1 मेष | 02-06-2040 |
| 3 मिथुन | 03-04-2018 | 10 मकर | 03-04-2026 | 5 सिंह | 02-10-2034 | 12 मीन | 02-10-2040 |
| 4 कर्क | 02-11-2018 | 9 धनु | 01-01-2027 | 6 कन्या | 03-06-2035 | 11 कुंभ | 31-01-2041 |
| 5 सिंह | 03-06-2019 | 8 वृश्चिक | 02-10-2027 | 7 तुला | 01-02-2036 | 10 मकर | 02-06-2041 |
| 6 कन्या | 02-01-2020 | 7 तुला | 02-07-2028 | 8 वृश्चिक | 02-10-2036 | 9 धनु | 02-10-2041 |
| 7 तुला | 02-08-2020 | 6 कन्या | 02-04-2029 | 9 धनु | 02-06-2037 | 8 वृश्चिक | 01-02-2042 |
| 8 वृश्चिक | 03-03-2021 | 5 सिंह | 01-01-2030 | 10 मकर | 01-02-2038 | 7 तुला | 02-06-2042 |

| मेष (7व) | २८व ०म | वृष (4व) | ३५व ०म | मिथुन (4व) | ३९व ०म | कर्क (6व) | ४३व ०म |
|-----------|------------|-----------|------------|------------|------------|-----------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2042 | आरम्भ | 02-10-2049 | आरम्भ | 02-10-2053 | आरम्भ | 02-10-2057 |
| अन्त | 02-10-2049 | अन्त | 02-10-2053 | अन्त | 02-10-2057 | अन्त | 02-10-2063 |
| 7 तुला | 02-10-2042 | 8 वृश्चिक | 02-10-2049 | 9 धनु | 02-10-2053 | 4 कर्क | 02-10-2057 |
| 8 वृश्चिक | 03-05-2043 | 7 तुला | 31-01-2050 | 10 मकर | 31-01-2054 | 3 मिथुन | 02-04-2058 |
| 9 धनु | 02-12-2043 | 6 कन्या | 02-06-2050 | 11 कुंभ | 02-06-2054 | 2 वृष | 02-10-2058 |
| 10 मकर | 02-07-2044 | 5 सिंह | 02-10-2050 | 12 मीन | 02-10-2054 | 1 मेष | 03-04-2059 |
| 11 कुंभ | 31-01-2045 | 4 कर्क | 01-02-2051 | 1 मेष | 01-02-2055 | 12 मीन | 02-10-2059 |
| 12 मीन | 01-09-2045 | 3 मिथुन | 02-06-2051 | 2 वृष | 02-06-2055 | 11 कुंभ | 02-04-2060 |
| 1 मेष | 02-04-2046 | 2 वृष | 02-10-2051 | 3 मिथुन | 02-10-2055 | 10 मकर | 01-10-2060 |
| 2 वृष | 01-11-2046 | 1 मेष | 01-02-2052 | 4 कर्क | 01-02-2056 | 9 धनु | 02-04-2061 |
| 3 मिथुन | 03-06-2047 | 12 मीन | 02-06-2052 | 5 सिंह | 02-06-2056 | 8 वृश्चिक | 02-10-2061 |
| 4 कर्क | 02-01-2048 | 11 कुंभ | 01-10-2052 | 6 कन्या | 01-10-2056 | 7 तुला | 02-04-2062 |
| 5 सिंह | 02-08-2048 | 10 मकर | 31-01-2053 | 7 तुला | 31-01-2057 | 6 कन्या | 02-10-2062 |
| 6 कन्या | 03-03-2049 | 9 धनु | 02-06-2053 | 8 वृश्चिक | 02-06-2057 | 5 सिंह | 03-04-2063 |

| सिंह (1व) | ४९व ०म | कन्या (1व) | ४९व ११म | तुला (11व) | ५१व ०म | वृश्चिक (12व) | ६१व ११म |
|-----------|------------|------------|------------|------------|------------|---------------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2063 | आरम्भ | 01-10-2064 | आरम्भ | 02-10-2065 | आरम्भ | 01-10-2076 |
| अन्त | 01-10-2064 | अन्त | 02-10-2065 | अन्त | 01-10-2076 | अन्त | 01-10-2088 |
| 11 कुंभ | 02-10-2063 | 6 कन्या | 01-10-2064 | 7 तुला | 02-10-2065 | 8 वृश्चिक | 01-10-2076 |
| 12 मीन | 02-11-2063 | 5 सिंह | 01-11-2064 | 8 वृश्चिक | 01-09-2066 | 7 तुला | 02-10-2077 |
| 1 मेष | 02-12-2063 | 4 कर्क | 01-12-2064 | 9 धनु | 02-08-2067 | 6 कन्या | 02-10-2078 |
| 2 वृष | 01-01-2064 | 3 मिथुन | 01-01-2065 | 10 मकर | 02-07-2068 | 5 सिंह | 02-10-2079 |
| 3 मिथुन | 01-02-2064 | 2 वृष | 31-01-2065 | 11 कुंभ | 02-06-2069 | 4 कर्क | 01-10-2080 |
| 4 कर्क | 02-03-2064 | 1 मेष | 03-03-2065 | 12 मीन | 03-05-2070 | 3 मिथुन | 01-10-2081 |
| 5 सिंह | 02-04-2064 | 12 मीन | 02-04-2065 | 1 मेष | 02-04-2071 | 2 वृष | 02-10-2082 |
| 6 कन्या | 02-05-2064 | 11 कुंभ | 02-05-2065 | 2 वृष | 02-03-2072 | 1 मेष | 02-10-2083 |
| 7 तुला | 02-06-2064 | 10 मकर | 02-06-2065 | 3 मिथुन | 31-01-2073 | 12 मीन | 01-10-2084 |
| 8 वृश्चिक | 02-07-2064 | 9 धनु | 02-07-2065 | 4 कर्क | 01-01-2074 | 11 कुंभ | 01-10-2085 |
| 9 धनु | 02-08-2064 | 8 वृश्चिक | 02-08-2065 | 5 सिंह | 02-12-2074 | 10 मकर | 02-10-2086 |
| 10 मकर | 01-09-2064 | 7 तुला | 01-09-2065 | 6 कन्या | 01-11-2075 | 9 धनु | 02-10-2087 |



नवांश दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| धनु (7व) | 73व 11म | मकर (9व) | 81व 0म | कुंभ (8व) | 90व 0म | मीन (4व) | 98व 0म |
|-----------|------------|------------|------------|------------|------------|---------------|------------|
| आरम्भ | 01-10-2088 | आरम्भ | 02-10-2095 | आरम्भ | 02-10-2104 | आरम्भ | 02-10-2112 |
| अन्त | 02-10-2095 | अन्त | 02-10-2104 | अन्त | 02-10-2112 | अन्त | 02-10-2116 |
| 9 धनु | 01-10-2088 | 4 कर्क | 02-10-2095 | 11 कुंभ | 02-10-2104 | 6 कन्या | 02-10-2112 |
| 10 मकर | 02-05-2089 | 3 मिथुन | 02-07-2096 | 12 मीन | 03-06-2105 | 5 सिंह | 01-02-2113 |
| 11 कुंभ | 01-12-2089 | 2 वृष | 02-04-2097 | 1 मेष | 01-02-2106 | 4 कर्क | 02-06-2113 |
| 12 मीन | 02-07-2090 | 1 मेष | 01-01-2098 | 2 वृष | 03-10-2106 | 3 मिथुन | 02-10-2113 |
| 1 मेष | 31-01-2091 | 12 मीन | 02-10-2098 | 3 मिथुन | 03-06-2107 | 2 वृष | 01-02-2114 |
| 2 वृष | 01-09-2091 | 11 कुंभ | 03-07-2099 | 4 कर्क | 02-02-2108 | 1 मेष | 03-06-2114 |
| 3 मिथुन | 02-04-2092 | 10 मकर | 02-04-2100 | 5 सिंह | 02-10-2108 | 12 मीन | 02-10-2114 |
| 4 कर्क | 01-11-2092 | 9 धनु | 01-01-2101 | 6 कन्या | 03-06-2109 | 11 कुंभ | 01-02-2115 |
| 5 सिंह | 02-06-2093 | 8 वृश्चिक | 02-10-2101 | 7 तुला | 01-02-2110 | 10 मकर | 03-06-2115 |
| 6 कन्या | 01-01-2094 | 7 तुला | 03-07-2102 | 8 वृश्चिक | 03-10-2110 | 9 धनु | 03-10-2115 |
| 7 तुला | 02-08-2094 | 6 कन्या | 03-04-2103 | 9 धनु | 03-06-2111 | 8 वृश्चिक | 01-02-2116 |
| 8 वृश्चिक | 03-03-2095 | 5 सिंह | 02-01-2104 | 10 मकर | 02-02-2112 | 7 तुला | 02-06-2116 |
| मेष (7व) | 102व 0म | वृष (4व) | 109व 0म | मिथुन (4व) | 113व 0म | कर्क (6व) | 117व 0म |
| आरम्भ | 02-10-2116 | आरम्भ | 03-10-2123 | आरम्भ | 03-10-2127 | आरम्भ | 03-10-2131 |
| अन्त | 03-10-2123 | अन्त | 03-10-2127 | अन्त | 03-10-2131 | अन्त | 02-10-2137 |
| 7 तुला | 02-10-2116 | 8 वृश्चिक | 03-10-2123 | 9 धनु | 03-10-2127 | 4 कर्क | 03-10-2131 |
| 8 वृश्चिक | 03-05-2117 | 7 तुला | 01-02-2124 | 10 मकर | 01-02-2128 | 3 मिथुन | 02-04-2132 |
| 9 धनु | 02-12-2117 | 6 कन्या | 02-06-2124 | 11 कुंभ | 02-06-2128 | 2 वृष | 02-10-2132 |
| 10 मकर | 03-07-2118 | 5 सिंह | 02-10-2124 | 12 मीन | 02-10-2128 | 1 मेष | 02-04-2133 |
| 11 कुंभ | 01-02-2119 | 4 कर्क | 01-02-2125 | 1 मेष | 01-02-2129 | 12 मीन | 02-10-2133 |
| 12 मीन | 02-09-2119 | 3 मिथुन | 02-06-2125 | 2 वृष | 02-06-2129 | 11 कुंभ | 03-04-2134 |
| 1 मेष | 02-04-2120 | 2 वृष | 02-10-2125 | 3 मिथुन | 02-10-2129 | 10 मकर | 02-10-2134 |
| 2 वृष | 01-11-2120 | 1 मेष | 01-02-2126 | 4 कर्क | 01-02-2130 | 9 धनु | 03-04-2135 |
| 3 मिथुन | 02-06-2121 | 12 मीन | 03-06-2126 | 5 सिंह | 03-06-2130 | 8 वृश्चिक | 03-10-2135 |
| 4 कर्क | 01-01-2122 | 11 कुंभ | 02-10-2126 | 6 कन्या | 02-10-2130 | 7 तुला | 02-04-2136 |
| 5 सिंह | 03-08-2122 | 10 मकर | 01-02-2127 | 7 तुला | 01-02-2131 | 6 कन्या | 02-10-2136 |
| 6 कन्या | 04-03-2123 | 9 धनु | 03-06-2127 | 8 वृश्चिक | 03-06-2131 | 5 सिंह | 02-04-2137 |
| सिंह (1व) | 123व 0म | कन्या (1व) | 124व 0म | तुला (11व) | 125व 0म | वृश्चिक (12व) | 136व 0म |
| आरम्भ | 02-10-2137 | आरम्भ | 02-10-2138 | आरम्भ | 03-10-2139 | आरम्भ | 02-10-2150 |
| अन्त | 02-10-2138 | अन्त | 03-10-2139 | अन्त | 02-10-2150 | अन्त | 02-10-2162 |
| 11 कुंभ | 02-10-2137 | 6 कन्या | 02-10-2138 | 7 तुला | 03-10-2139 | 8 वृश्चिक | 02-10-2150 |
| 12 मीन | 01-11-2137 | 5 सिंह | 02-11-2138 | 8 वृश्चिक | 01-09-2140 | 7 तुला | 02-10-2151 |
| 1 मेष | 02-12-2137 | 4 कर्क | 02-12-2138 | 9 धनु | 02-08-2141 | 6 कन्या | 02-10-2152 |
| 2 वृष | 01-01-2138 | 3 मिथुन | 02-01-2139 | 10 मकर | 03-07-2142 | 5 सिंह | 02-10-2153 |
| 3 मिथुन | 01-02-2138 | 2 वृष | 01-02-2139 | 11 कुंभ | 03-06-2143 | 4 कर्क | 02-10-2154 |
| 4 कर्क | 03-03-2138 | 1 मेष | 03-03-2139 | 12 मीन | 03-05-2144 | 3 मिथुन | 02-10-2155 |
| 5 सिंह | 03-04-2138 | 12 मीन | 03-04-2139 | 1 मेष | 02-04-2145 | 2 वृष | 02-10-2156 |
| 6 कन्या | 03-05-2138 | 11 कुंभ | 03-05-2139 | 2 वृष | 03-03-2146 | 1 मेष | 02-10-2157 |
| 7 तुला | 03-06-2138 | 10 मकर | 03-06-2139 | 3 मिथुन | 01-02-2147 | 12 मीन | 02-10-2158 |
| 8 वृश्चिक | 03-07-2138 | 9 धनु | 03-07-2139 | 4 कर्क | 02-01-2148 | 11 कुंभ | 02-10-2159 |
| 9 धनु | 02-08-2138 | 8 वृश्चिक | 03-08-2139 | 5 सिंह | 02-12-2148 | 10 मकर | 02-10-2160 |
| 10 मकर | 02-09-2138 | 7 तुला | 02-09-2139 | 6 कन्या | 01-11-2149 | 9 धनु | 02-10-2161 |



नारायण दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| कुंभ (5व) | ०व ०म | कर्क (6व) | ५व ०म | धनु (८व) | ११व ०म | वृष (३व) | १९व ०म |
|-------------------|------------|---------------|---------------------|---------------|-------------------|---------------|--------------------|
| आरम्भ | 02-10-2014 | आरम्भ | 02-10-2019 | आरम्भ | 02-10-2025 | आरम्भ | 02-10-2033 |
| अन्त | 02-10-2019 | अन्त | 02-10-2025 | अन्त | 02-10-2033 | अन्त | 02-10-2036 |
| 11 कुंभ | 02-10-2014 | 4 कर्क | 02-10-2019 | 9 धनु | 02-10-2025 | 8 वृश्चिक | 02-10-2033 |
| 12 मीन | 03-03-2015 | 3 मिथुन | 02-04-2020 | 10 मकर | 02-06-2026 | 7 तुला | 01-01-2034 |
| 1 मेष | 03-08-2015 | 2 वृष | 02-10-2020 | 11 कुंभ | 01-02-2027 | 6 कन्या | 02-04-2034 |
| 2 वृष | 02-01-2016 | 1 मेष | 02-04-2021 | 12 मीन | 02-10-2027 | 5 सिंह | 03-07-2034 |
| 3 मिथुन | 02-06-2016 | 12 मीन | 02-10-2021 | 1 मेष | 02-06-2028 | 4 कर्क | 02-10-2034 |
| 4 कर्क | 01-11-2016 | 11 कुंभ | 03-04-2022 | 2 वृष | 31-01-2029 | 3 मिथुन | 01-01-2035 |
| 5 सिंह | 02-04-2017 | 10 मकर | 02-10-2022 | 3 मिथुन | 02-10-2029 | 2 वृष | 03-04-2035 |
| 6 कन्या | 02-09-2017 | 9 धनु | 03-04-2023 | 4 कर्क | 02-06-2030 | 1 मेष | 03-07-2035 |
| 7 तुला | 01-02-2018 | 8 वृश्चिक | 02-10-2023 | 5 सिंह | 01-02-2031 | 12 मीन | 02-10-2035 |
| 8 वृश्चिक | 03-07-2018 | 7 तुला | 02-04-2024 | 6 कन्या | 02-10-2031 | 11 कुंभ | 02-01-2036 |
| 9 धनु | 02-12-2018 | 6 कन्या | 02-10-2024 | 7 तुला | 02-06-2032 | 10 मकर | 02-04-2036 |
| 10 मकर | 03-05-2019 | 5 सिंह | 02-04-2025 | 8 वृश्चिक | 31-01-2033 | 9 धनु | 02-07-2036 |
| तुला (10व) | | २२व ०म | मीन (9व) | ३२व ०म | सिंह (11व) | ४१व ०म | मकर (4व) |
| आरम्भ | 02-10-2036 | आरम्भ | 02-10-2046 | आरम्भ | 02-10-2055 | आरम्भ | 02-10-2066 |
| अन्त | 02-10-2046 | अन्त | 02-10-2055 | अन्त | 02-10-2066 | अन्त | 02-10-2070 |
| 7 तुला | 02-10-2036 | 6 कन्या | 02-10-2046 | 11 कुंभ | 02-10-2055 | 4 कर्क | 02-10-2066 |
| 8 वृश्चिक | 02-08-2037 | 5 सिंह | 03-07-2047 | 12 मीन | 01-09-2056 | 3 मिथुन | 01-02-2067 |
| 9 धनु | 02-06-2038 | 4 कर्क | 02-04-2048 | 1 मेष | 02-08-2057 | 2 वृष | 02-06-2067 |
| 10 मकर | 03-04-2039 | 3 मिथुन | 01-01-2049 | 2 वृष | 03-07-2058 | 1 मेष | 02-10-2067 |
| 11 कुंभ | 01-02-2040 | 2 वृष | 02-10-2049 | 3 मिथुन | 02-06-2059 | 12 मीन | 01-02-2068 |
| 12 मीन | 01-12-2040 | 1 मेष | 03-07-2050 | 4 कर्क | 02-05-2060 | 11 कुंभ | 02-06-2068 |
| 1 मेष | 02-10-2041 | 12 मीन | 03-04-2051 | 5 सिंह | 02-04-2061 | 10 मकर | 01-10-2068 |
| 2 वृष | 02-08-2042 | 11 कुंभ | 02-01-2052 | 6 कन्या | 03-03-2062 | 9 धनु | 31-01-2069 |
| 3 मिथुन | 03-06-2043 | 10 मकर | 01-10-2052 | 7 तुला | 01-02-2063 | 8 वृश्चिक | 02-06-2069 |
| 4 कर्क | 02-04-2044 | 9 धनु | 02-07-2053 | 8 वृश्चिक | 01-01-2064 | 7 तुला | 02-10-2069 |
| 5 सिंह | 31-01-2045 | 8 वृश्चिक | 02-04-2054 | 9 धनु | 01-12-2064 | 6 कन्या | 31-01-2070 |
| 6 कन्या | 02-12-2045 | 7 तुला | 01-01-2055 | 10 मकर | 01-11-2065 | 5 सिंह | 02-06-2070 |
| मिथुन (4व) | | ५६व ०म | वृश्चिक (4व) | ६०व ०म | मेष (७व) | ६४व ०म | कन्या (११व) |
| आरम्भ | 02-10-2070 | आरम्भ | 02-10-2074 | आरम्भ | 02-10-2078 | आरम्भ | 01-10-2085 |
| अन्त | 02-10-2074 | अन्त | 02-10-2078 | अन्त | 01-10-2085 | अन्त | 01-10-2096 |
| 9 धनु | 02-10-2070 | 8 वृश्चिक | 02-10-2074 | 7 तुला | 02-10-2078 | 6 कन्या | 01-10-2085 |
| 10 मकर | 01-02-2071 | 7 तुला | 01-02-2075 | 8 वृश्चिक | 03-05-2079 | 5 सिंह | 01-09-2086 |
| 11 कुंभ | 02-06-2071 | 6 कन्या | 02-06-2075 | 9 धनु | 02-12-2079 | 4 कर्क | 02-08-2087 |
| 12 मीन | 02-10-2071 | 5 सिंह | 02-10-2075 | 10 मकर | 02-07-2080 | 3 मिथुन | 02-07-2088 |
| 1 मेष | 01-02-2072 | 4 कर्क | 01-02-2076 | 11 कुंभ | 31-01-2081 | 2 वृष | 02-06-2089 |
| 2 वृष | 02-06-2072 | 3 मिथुन | 02-06-2076 | 12 मीन | 01-09-2081 | 1 मेष | 02-05-2090 |
| 3 मिथुन | 01-10-2072 | 2 वृष | 01-10-2076 | 1 मेष | 02-04-2082 | 12 मीन | 02-04-2091 |
| 4 कर्क | 31-01-2073 | 1 मेष | 31-01-2077 | 2 वृष | 01-11-2082 | 11 कुंभ | 02-03-2092 |
| 5 सिंह | 02-06-2073 | 12 मीन | 02-06-2077 | 3 मिथुन | 02-06-2083 | 10 मकर | 31-01-2093 |
| 6 कन्या | 02-10-2073 | 11 कुंभ | 02-10-2077 | 4 कर्क | 01-01-2084 | 9 धनु | 01-01-2094 |
| 7 तुला | 31-01-2074 | 10 मकर | 31-01-2078 | 5 सिंह | 01-08-2084 | 8 वृश्चिक | 02-12-2094 |
| 8 वृश्चिक | 02-06-2074 | 9 धनु | 02-06-2078 | 6 कन्या | 02-03-2085 | 7 तुला | 01-11-2095 |



नारायण दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| कुंभ (5व) | 81व 11म | कुंभ (5व) | 89व 0म | कर्क (6व) | 95व 0म | वृष (3व) | 99व 0म |
|------------|------------|--------------|------------|-----------|------------|------------|------------|
| आरम्भ | 01-10-2096 | आरम्भ | 02-10-2101 | आरम्भ | 03-10-2107 | आरम्भ | 03-04-2114 |
| अन्त | 02-10-2101 | अन्त | 03-10-2107 | अन्त | 03-04-2114 | अन्त | 03-04-2118 |
| 11 कुंभ | 01-10-2096 | 11 कुंभ | 02-10-2101 | 8 वृश्चिक | 03-10-2107 | 6 कन्या | 03-04-2114 |
| 12 मीन | 02-03-2097 | 12 मीन | 03-05-2102 | 7 तुला | 02-04-2108 | 5 सिंह | 03-07-2114 |
| 1 मेष | 01-08-2097 | 1 मेष | 02-12-2102 | 6 कन्या | 02-10-2108 | 4 कर्क | 02-10-2114 |
| 2 वृष | 01-01-2098 | 2 वृष | 04-07-2103 | 5 सिंह | 03-04-2109 | 3 मिथुन | 02-01-2115 |
| 3 मिथुन | 02-06-2098 | 4 कर्क | 03-10-2103 | 9 धनु | 02-10-2109 | 2 वृष | 03-04-2115 |
| 4 कर्क | 01-11-2098 | 3 मिथुन | 02-04-2104 | 10 मकर | 03-06-2110 | 1 मेष | 03-07-2115 |
| 5 सिंह | 02-04-2099 | 2 वृष | 02-10-2104 | 11 कुंभ | 01-02-2111 | 12 मीन | 03-10-2115 |
| 6 कन्या | 01-09-2099 | 1 मेष | 03-04-2105 | 12 मीन | 03-10-2111 | 11 कुंभ | 02-01-2116 |
| 7 तुला | 01-02-2100 | 12 मीन | 02-10-2105 | 1 मेष | 02-06-2112 | 10 मकर | 02-04-2116 |
| 8 वृश्चिक | 03-07-2100 | 11 कुंभ | 03-04-2106 | 2 वृष | 01-02-2113 | 9 धनु | 03-07-2116 |
| 9 धनु | 02-12-2100 | 10 मकर | 03-10-2106 | 8 वृश्चिक | 02-10-2113 | 8 वृश्चिक | 02-10-2116 |
| 10 मकर | 03-05-2101 | 9 धनु | 03-04-2107 | 7 तुला | 02-01-2114 | 7 तुला | 03-07-2117 |
| वृष (3व) | 108व 0म | मीन (9व) | 110व 0म | मकर (4व) | 113व 0म | मिथुन (4व) | 114व 0म |
| आरम्भ | 03-04-2118 | आरम्भ | 02-01-2127 | आरम्भ | 02-06-2132 | आरम्भ | 03-06-2138 |
| अन्त | 02-01-2127 | अन्त | 02-06-2132 | अन्त | 03-06-2138 | अन्त | 01-02-2144 |
| 6 कन्या | 03-04-2118 | 3 मिथुन | 02-01-2127 | 5 सिंह | 02-06-2132 | 2 वृष | 03-06-2138 |
| 5 सिंह | 02-01-2119 | 11 कुंभ | 03-10-2127 | 4 कर्क | 02-10-2132 | 3 मिथुन | 02-10-2138 |
| 4 कर्क | 03-10-2119 | 12 मीन | 01-09-2128 | 3 मिथुन | 02-06-2133 | 4 कर्क | 01-02-2139 |
| 3 मिथुन | 03-07-2120 | 2 वृष | 02-06-2129 | 2 वृष | 01-02-2134 | 5 सिंह | 03-06-2139 |
| 2 वृष | 03-04-2121 | 1 मेष | 02-10-2129 | 1 मेष | 02-10-2134 | 6 कन्या | 03-10-2139 |
| 1 मेष | 01-01-2122 | 12 मीन | 01-02-2130 | 12 मीन | 03-06-2135 | 7 तुला | 01-02-2140 |
| 7 तुला | 02-10-2122 | 11 कुंभ | 03-06-2130 | 11 कुंभ | 01-02-2136 | 8 वृश्चिक | 02-06-2140 |
| 8 वृश्चिक | 03-08-2123 | 10 मकर | 02-10-2130 | 9 धनु | 02-10-2136 | 9 धनु | 02-10-2140 |
| 9 धनु | 02-06-2124 | 9 धनु | 01-02-2131 | 10 मकर | 01-02-2137 | 10 मकर | 02-06-2141 |
| 6 कन्या | 02-10-2124 | 8 वृश्चिक | 03-06-2131 | 11 कुंभ | 02-06-2137 | 11 कुंभ | 01-02-2142 |
| 5 सिंह | 03-07-2125 | 7 तुला | 03-10-2131 | 12 मीन | 02-10-2137 | 12 मीन | 02-10-2142 |
| 4 कर्क | 03-04-2126 | 6 कन्या | 01-02-2132 | 1 मेष | 01-02-2138 | 1 मेष | 03-06-2143 |
| मिथुन (4व) | 122व 0म | वृश्चिक (4व) | 130व 0म | मेष (7व) | 138व 0म | कुंभ (5व) | 143व 0म |
| आरम्भ | 01-02-2144 | आरम्भ | 02-06-2148 | आरम्भ | 02-09-2155 | आरम्भ | 01-02-2162 |
| अन्त | 02-06-2148 | अन्त | 02-09-2155 | अन्त | 01-02-2162 | अन्त | 02-10-2167 |
| 2 वृष | 01-02-2144 | 9 धनु | 02-06-2148 | 12 मीन | 02-09-2155 | 7 तुला | 01-02-2162 |
| 8 वृश्चिक | 02-10-2144 | 8 वृश्चिक | 02-10-2148 | 1 मेष | 02-04-2156 | 8 वृश्चिक | 03-07-2162 |
| 7 तुला | 31-01-2145 | 7 तुला | 02-06-2149 | 2 वृष | 01-11-2156 | 9 धनु | 02-12-2162 |
| 6 कन्या | 02-06-2145 | 6 कन्या | 01-02-2150 | 3 मिथुन | 02-06-2157 | 10 मकर | 03-05-2163 |
| 5 सिंह | 02-10-2145 | 5 सिंह | 02-10-2150 | 6 कन्या | 02-10-2157 | 4 कर्क | 02-10-2163 |
| 4 कर्क | 01-02-2146 | 4 कर्क | 03-06-2151 | 5 सिंह | 02-09-2158 | 3 मिथुन | 02-04-2164 |
| 3 मिथुन | 02-06-2146 | 3 मिथुन | 01-02-2152 | 1 मेष | 03-08-2159 | 2 वृष | 02-10-2164 |
| 2 वृष | 02-10-2146 | 7 तुला | 02-10-2152 | 2 वृष | 02-01-2160 | 1 मेष | 02-04-2165 |
| 1 मेष | 01-02-2147 | 8 वृश्चिक | 03-05-2153 | 3 मिथुन | 02-06-2160 | 12 मीन | 02-10-2165 |
| 12 मीन | 03-06-2147 | 9 धनु | 02-12-2153 | 4 कर्क | 01-11-2160 | 11 कुंभ | 02-04-2166 |
| 11 कुंभ | 02-10-2147 | 10 मकर | 03-07-2154 | 5 सिंह | 02-04-2161 | 10 मकर | 02-10-2166 |
| 10 मकर | 01-02-2148 | 11 कुंभ | 01-02-2155 | 6 कन्या | 01-09-2161 | 9 धनु | 03-04-2167 |



लग्न केन्द्रादि राशी दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| कुंभ (5व) | ०व ०म | वृष (3व) | ५व ०म | सिंह (11व) | ८व ०म | वृश्चिक (4व) | १९व ०म |
|-----------------|---------------|-------------------|----------------|--------------------|---------------|-----------------|----------------|
| आरम्भ | 02-10-2014 | आरम्भ | 02-10-2019 | आरम्भ | 02-10-2022 | आरम्भ | 02-10-2033 |
| अन्त | 02-10-2019 | अन्त | 02-10-2022 | अन्त | 02-10-2033 | अन्त | 02-10-2037 |
| 11 कुंभ | 02-10-2014 | 8 वृश्चिक | 02-10-2019 | 11 कुंभ | 02-10-2022 | 8 वृश्चिक | 02-10-2033 |
| 12 मीन | 03-03-2015 | 7 तुला | 02-01-2020 | 12 मीन | 02-09-2023 | 7 तुला | 01-02-2034 |
| 1 मेष | 03-08-2015 | 6 कन्या | 02-04-2020 | 1 मेष | 02-08-2024 | 6 कन्या | 02-06-2034 |
| 2 वृष | 02-01-2016 | 5 सिंह | 02-07-2020 | 2 वृष | 03-07-2025 | 5 सिंह | 02-10-2034 |
| 3 मिथुन | 02-06-2016 | 4 कर्क | 02-10-2020 | 3 मिथुन | 02-06-2026 | 4 कर्क | 01-02-2035 |
| 4 कर्क | 01-11-2016 | 3 मिथुन | 01-01-2021 | 4 कर्क | 03-05-2027 | 3 मिथुन | 03-06-2035 |
| 5 सिंह | 02-04-2017 | 2 वृष | 02-04-2021 | 5 सिंह | 02-04-2028 | 2 वृष | 02-10-2035 |
| 6 कन्या | 02-09-2017 | 1 मेष | 03-07-2021 | 6 कन्या | 03-03-2029 | 1 मेष | 01-02-2036 |
| 7 तुला | 01-02-2018 | 12 मीन | 02-10-2021 | 7 तुला | 01-02-2030 | 12 मीन | 02-06-2036 |
| 8 वृश्चिक | 03-07-2018 | 11 कुंभ | 01-01-2022 | 8 वृश्चिक | 01-01-2031 | 11 कुंभ | 02-10-2036 |
| 9 धनु | 02-12-2018 | 10 मकर | 03-04-2022 | 9 धनु | 02-12-2031 | 10 मकर | 31-01-2037 |
| 10 मकर | 03-05-2019 | 9 धनु | 03-07-2022 | 10 मकर | 01-11-2032 | 9 धनु | 02-06-2037 |
| मीन (9व) | २३व ०म | मिथुन (4व) | ३२व ०म | कन्या (11व) | ३६व ०म | धनु (8व) | ४७व ०म |
| आरम्भ | 02-10-2037 | आरम्भ | 02-10-2046 | आरम्भ | 02-10-2050 | आरम्भ | 02-10-2061 |
| अन्त | 02-10-2046 | अन्त | 02-10-2050 | अन्त | 02-10-2061 | अन्त | 02-10-2069 |
| 6 कन्या | 02-10-2037 | 9 धनु | 02-10-2046 | 6 कन्या | 02-10-2050 | 9 धनु | 02-10-2061 |
| 5 सिंह | 03-07-2038 | 10 मकर | 01-02-2047 | 5 सिंह | 02-09-2051 | 10 मकर | 02-06-2062 |
| 4 कर्क | 03-04-2039 | 11 कुंभ | 03-06-2047 | 4 कर्क | 02-08-2052 | 11 कुंभ | 01-02-2063 |
| 3 मिथुन | 02-01-2040 | 12 मीन | 02-10-2047 | 3 मिथुन | 02-07-2053 | 12 मीन | 02-10-2063 |
| 2 वृष | 02-10-2040 | 1 मेष | 01-02-2048 | 2 वृष | 02-06-2054 | 1 मेष | 02-06-2064 |
| 1 मेष | 02-07-2041 | 2 वृष | 02-06-2048 | 1 मेष | 03-05-2055 | 2 वृष | 31-01-2065 |
| 12 मीन | 02-04-2042 | 3 मिथुन | 01-10-2048 | 12 मीन | 02-04-2056 | 3 मिथुन | 02-10-2065 |
| 11 कुंभ | 01-01-2043 | 4 कर्क | 31-01-2049 | 11 कुंभ | 03-03-2057 | 4 कर्क | 02-06-2066 |
| 10 मकर | 02-10-2043 | 5 सिंह | 02-06-2049 | 10 मकर | 31-01-2058 | 5 सिंह | 01-02-2067 |
| 9 धनु | 02-07-2044 | 6 कन्या | 02-10-2049 | 9 धनु | 01-01-2059 | 6 कन्या | 02-10-2067 |
| 8 वृश्चिक | 02-04-2045 | 7 तुला | 31-01-2050 | 8 वृश्चिक | 02-12-2059 | 7 तुला | 02-06-2068 |
| 7 तुला | 01-01-2046 | 8 वृश्चिक | 02-06-2050 | 7 तुला | 01-11-2060 | 8 वृश्चिक | 31-01-2069 |
| मेष (7व) | ५५व ०म | कर्क (6व) | ६१व ११म | तुला (10व) | ६८व ०म | मकर (4व) | ७७व ११म |
| आरम्भ | 02-10-2069 | आरम्भ | 01-10-2076 | आरम्भ | 02-10-2082 | आरम्भ | 01-10-2092 |
| अन्त | 01-10-2076 | अन्त | 02-10-2082 | अन्त | 01-10-2092 | अन्त | 01-10-2096 |
| 7 तुला | 02-10-2069 | 4 कर्क | 01-10-2076 | 7 तुला | 02-10-2082 | 4 कर्क | 01-10-2092 |
| 8 वृश्चिक | 03-05-2070 | 3 मिथुन | 02-04-2077 | 8 वृश्चिक | 02-08-2083 | 3 मिथुन | 31-01-2093 |
| 9 धनु | 02-12-2070 | 2 वृष | 02-10-2077 | 9 धनु | 01-06-2084 | 2 वृष | 02-06-2093 |
| 10 मकर | 03-07-2071 | 1 मेष | 02-04-2078 | 10 मकर | 02-04-2085 | 1 मेष | 01-10-2093 |
| 11 कुंभ | 01-02-2072 | 12 मीन | 02-10-2078 | 11 कुंभ | 31-01-2086 | 12 मीन | 31-01-2094 |
| 12 मीन | 01-09-2072 | 11 कुंभ | 02-04-2079 | 12 मीन | 02-12-2086 | 11 कुंभ | 02-06-2094 |
| 1 मेष | 02-04-2073 | 10 मकर | 02-10-2079 | 1 मेष | 02-10-2087 | 10 मकर | 02-10-2094 |
| 2 वृष | 01-11-2073 | 9 धनु | 02-04-2080 | 2 वृष | 01-08-2088 | 9 धनु | 31-01-2095 |
| 3 मिथुन | 02-06-2074 | 8 वृश्चिक | 01-10-2080 | 3 मिथुन | 02-06-2089 | 8 वृश्चिक | 02-06-2095 |
| 4 कर्क | 01-01-2075 | 7 तुला | 02-04-2081 | 4 कर्क | 02-04-2090 | 7 तुला | 02-10-2095 |
| 5 सिंह | 02-08-2075 | 6 कन्या | 01-10-2081 | 5 सिंह | 31-01-2091 | 6 कन्या | 01-02-2096 |
| 6 कन्या | 02-03-2076 | 5 सिंह | 02-04-2082 | 6 कन्या | 02-12-2091 | 5 सिंह | 01-06-2096 |



लग्न केन्द्रादि राशी दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| वृष (3व) | 81व 11म | वृष (3व) | 91व 0म | वृश्चिक (4व) | 92व 0म | वृश्चिक (4व) | 100व 0म |
|-------------------|----------------|-------------------|----------------|--------------------|----------------|-------------------|----------------|
| आरम्भ | 01-10-2096 | आरम्भ | 02-10-2099 | आरम्भ | 02-02-2108 | आरम्भ | 02-06-2113 |
| अन्त | 02-10-2099 | अन्त | 02-02-2108 | अन्त | 02-06-2113 | अन्त | 02-12-2118 |
| 8 वृश्चिक | 01-10-2096 | 8 वृश्चिक | 02-10-2099 | 4 कर्क | 02-02-2108 | 4 कर्क | 02-06-2113 |
| 7 तुला | 31-12-2096 | 7 तुला | 03-07-2100 | 3 मिथुन | 02-06-2108 | 3 मिथुन | 01-02-2114 |
| 6 कन्या | 02-04-2097 | 6 कन्या | 03-04-2101 | 2 वृष | 02-10-2108 | 11 कुंभ | 02-10-2114 |
| 5 सिंह | 02-07-2097 | 5 सिंह | 02-01-2102 | 1 मेष | 01-02-2109 | 12 मीन | 04-03-2115 |
| 4 कर्क | 01-10-2097 | 4 कर्क | 03-10-2102 | 12 मीन | 03-06-2109 | 1 मेष | 03-08-2115 |
| 3 मिथुन | 01-01-2098 | 3 मिथुन | 04-07-2103 | 11 कुंभ | 02-10-2109 | 2 वृष | 02-01-2116 |
| 2 वृष | 02-04-2098 | 2 वृष | 02-04-2104 | 10 मकर | 01-02-2110 | 3 मिथुन | 02-06-2116 |
| 1 मेष | 02-07-2098 | 1 मेष | 01-01-2105 | 9 धनु | 03-06-2110 | 4 कर्क | 01-11-2116 |
| 12 मीन | 02-10-2098 | 11 कुंभ | 02-10-2105 | 8 वृश्चिक | 03-10-2110 | 5 सिंह | 03-04-2117 |
| 11 कुंभ | 01-01-2099 | 12 मीन | 02-09-2106 | 7 तुला | 03-06-2111 | 6 कन्या | 02-09-2117 |
| 10 मकर | 02-04-2099 | 6 कन्या | 03-06-2107 | 6 कन्या | 02-02-2112 | 7 तुला | 01-02-2118 |
| 9 धनु | 03-07-2099 | 5 सिंह | 03-10-2107 | 5 सिंह | 02-10-2112 | 8 वृश्चिक | 03-07-2118 |
| कुंभ (5व) | 107व 0म | मिथुन (4व) | 115व 0म | कन्या (11व) | 116व 0म | कर्क (6व) | 120व 0म |
| आरम्भ | 02-12-2118 | आरम्भ | 01-02-2124 | आरम्भ | 02-09-2130 | आरम्भ | 02-10-2138 |
| अन्त | 01-02-2124 | अन्त | 02-09-2130 | अन्त | 02-10-2138 | अन्त | 02-06-2145 |
| 9 धनु | 02-12-2118 | 4 कर्क | 01-02-2124 | 5 सिंह | 02-09-2130 | 2 वृष | 02-10-2138 |
| 10 मकर | 04-05-2119 | 5 सिंह | 02-06-2124 | 10 मकर | 03-06-2131 | 1 मेष | 03-04-2139 |
| 11 कुंभ | 03-10-2119 | 6 कन्या | 02-10-2124 | 11 कुंभ | 01-02-2132 | 12 मीन | 03-10-2139 |
| 12 मीन | 03-05-2120 | 7 तुला | 01-02-2125 | 12 मीन | 02-10-2132 | 11 कुंभ | 02-04-2140 |
| 1 मेष | 02-12-2120 | 8 वृश्चिक | 02-06-2125 | 1 मेष | 02-06-2133 | 10 मकर | 02-10-2140 |
| 2 वृष | 03-07-2121 | 9 धनु | 02-10-2125 | 2 वृष | 01-02-2134 | 9 धनु | 02-04-2141 |
| 10 मकर | 01-02-2122 | 10 मकर | 03-06-2126 | 6 कन्या | 02-10-2134 | 8 वृश्चिक | 02-10-2141 |
| 11 कुंभ | 03-06-2122 | 11 कुंभ | 01-02-2127 | 5 सिंह | 03-07-2135 | 7 तुला | 03-04-2142 |
| 12 मीन | 02-10-2122 | 12 मीन | 03-10-2127 | 4 कर्क | 02-04-2136 | 6 कन्या | 02-10-2142 |
| 1 मेष | 01-02-2123 | 1 मेष | 02-06-2128 | 3 मिथुन | 01-01-2137 | 5 सिंह | 03-04-2143 |
| 2 वृष | 03-06-2123 | 2 वृष | 01-02-2129 | 4 कर्क | 02-10-2137 | 7 तुला | 03-10-2143 |
| 3 मिथुन | 03-10-2123 | 6 कन्या | 02-10-2129 | 3 मिथुन | 03-04-2138 | 8 वृश्चिक | 02-08-2144 |
| तुला (10व) | 123व 0म | मकर (4व) | 129व 0म | मेष (7व) | 131व 0म | सिंह (11व) | 139व 0म |
| आरम्भ | 02-06-2145 | आरम्भ | 02-10-2149 | आरम्भ | 02-04-2157 | आरम्भ | 01-01-2167 |
| अन्त | 02-10-2149 | अन्त | 02-04-2157 | अन्त | 01-01-2167 | अन्त | 02-10-2172 |
| 9 धनु | 02-06-2145 | 4 कर्क | 02-10-2149 | 1 मेष | 02-04-2157 | 8 वृश्चिक | 01-01-2167 |
| 3 मिथुन | 01-02-2146 | 3 मिथुन | 02-06-2150 | 2 वृष | 01-11-2157 | 9 धनु | 02-12-2167 |
| 2 वृष | 02-06-2146 | 2 वृष | 01-02-2151 | 3 मिथुन | 02-06-2158 | 10 मकर | 01-11-2168 |
| 1 मेष | 02-10-2146 | 1 मेष | 02-10-2151 | 11 कुंभ | 02-10-2158 | 8 वृश्चिक | 02-10-2169 |
| 12 मीन | 01-02-2147 | 12 मीन | 02-06-2152 | 12 मीन | 02-09-2159 | 7 तुला | 01-02-2170 |
| 11 कुंभ | 03-06-2147 | 11 कुंभ | 31-01-2153 | 1 मेष | 02-08-2160 | 6 कन्या | 02-06-2170 |
| 10 मकर | 02-10-2147 | 7 तुला | 02-10-2153 | 2 वृष | 03-07-2161 | 5 सिंह | 02-10-2170 |
| 9 धनु | 01-02-2148 | 8 वृश्चिक | 03-05-2154 | 3 मिथुन | 02-06-2162 | 4 कर्क | 01-02-2171 |
| 8 वृश्चिक | 02-06-2148 | 9 धनु | 02-12-2154 | 4 कर्क | 03-05-2163 | 3 मिथुन | 03-06-2171 |
| 7 तुला | 02-10-2148 | 10 मकर | 03-07-2155 | 5 सिंह | 02-04-2164 | 2 वृष | 02-10-2171 |
| 6 कन्या | 31-01-2149 | 11 कुंभ | 01-02-2156 | 6 कन्या | 03-03-2165 | 1 मेष | 01-02-2172 |
| 5 सिंह | 02-06-2149 | 12 मीन | 01-09-2156 | 7 तुला | 01-02-2166 | 12 मीन | 02-06-2172 |



शूल दशाएं

नीचे दी गई तिथियां दशा आरम्भ काल की हैं। * आयु दशा आरम्भ काल की दी गई है।

| कुंभ (9व) | ०व ०म | मीन (9व) | ९व ०म | मेष (9व) | १८व ०म | वृष (9व) | २७व ०म |
|-----------|------------|-----------|------------|-----------|------------|-----------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2014 | आरम्भ | 02-10-2023 | आरम्भ | 02-10-2032 | आरम्भ | 02-10-2041 |
| अन्त | 02-10-2023 | अन्त | 02-10-2032 | अन्त | 02-10-2041 | अन्त | 02-10-2050 |
| 11 कुंभ | 02-10-2014 | 12 मीन | 02-10-2023 | 1 मेष | 02-10-2032 | 2 वृष | 02-10-2041 |
| 12 मीन | 03-07-2015 | 11 कुंभ | 02-07-2024 | 2 वृष | 03-07-2033 | 1 मेष | 03-07-2042 |
| 1 मेष | 02-04-2016 | 10 मकर | 02-04-2025 | 3 मिथुन | 02-04-2034 | 12 मीन | 03-04-2043 |
| 2 वृष | 01-01-2017 | 9 धनु | 01-01-2026 | 4 कर्क | 01-01-2035 | 11 कुंभ | 02-01-2044 |
| 3 मिथुन | 02-10-2017 | 8 वृश्चिक | 02-10-2026 | 5 सिंह | 02-10-2035 | 10 मकर | 02-10-2044 |
| 4 कर्क | 03-07-2018 | 7 तुला | 03-07-2027 | 6 कन्या | 02-07-2036 | 9 धनु | 02-07-2045 |
| 5 सिंह | 03-04-2019 | 6 कन्या | 02-04-2028 | 7 तुला | 02-04-2037 | 8 वृश्चिक | 02-04-2046 |
| 6 कन्या | 02-01-2020 | 5 सिंह | 01-01-2029 | 8 वृश्चिक | 01-01-2038 | 7 तुला | 01-01-2047 |
| 7 तुला | 02-10-2020 | 4 कर्क | 02-10-2029 | 9 धनु | 02-10-2038 | 6 कन्या | 02-10-2047 |
| 8 वृश्चिक | 03-07-2021 | 3 मिथुन | 03-07-2030 | 10 मकर | 03-07-2039 | 5 सिंह | 02-07-2048 |
| 9 धनु | 03-04-2022 | 2 वृष | 03-04-2031 | 11 कुंभ | 02-04-2040 | 4 कर्क | 02-04-2049 |
| 10 मकर | 02-01-2023 | 1 मेष | 02-01-2032 | 12 मीन | 01-01-2041 | 3 मिथुन | 01-01-2050 |

| मिथुन (9व) | ३६व ०म | कर्क (9व) | ४५व ०म | सिंह (9व) | ५३व ११म | कन्या (9व) | ६३व ०म |
|------------|------------|-----------|------------|-----------|------------|------------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2050 | आरम्भ | 02-10-2059 | आरम्भ | 01-10-2068 | आरम्भ | 02-10-2077 |
| अन्त | 02-10-2059 | अन्त | 01-10-2068 | अन्त | 02-10-2077 | अन्त | 02-10-2086 |
| 3 मिथुन | 02-10-2050 | 4 कर्क | 02-10-2059 | 5 सिंह | 01-10-2068 | 6 कन्या | 02-10-2077 |
| 4 कर्क | 03-07-2051 | 3 मिथुन | 02-07-2060 | 6 कन्या | 02-07-2069 | 5 सिंह | 02-07-2078 |
| 5 सिंह | 02-04-2052 | 2 वृष | 02-04-2061 | 7 तुला | 02-04-2070 | 4 कर्क | 02-04-2079 |
| 6 कन्या | 01-01-2053 | 1 मेष | 01-01-2062 | 8 वृश्चिक | 01-01-2071 | 3 मिथुन | 01-01-2080 |
| 7 तुला | 02-10-2053 | 12 मीन | 02-10-2062 | 9 धनु | 02-10-2071 | 2 वृष | 01-10-2080 |
| 8 वृश्चिक | 03-07-2054 | 11 कुंभ | 03-07-2063 | 10 मकर | 02-07-2072 | 1 मेष | 02-07-2081 |
| 9 धनु | 03-04-2055 | 10 मकर | 02-04-2064 | 11 कुंभ | 02-04-2073 | 12 मीन | 02-04-2082 |
| 10 मकर | 02-01-2056 | 9 धनु | 01-01-2065 | 12 मीन | 01-01-2074 | 11 कुंभ | 01-01-2083 |
| 11 कुंभ | 01-10-2056 | 8 वृश्चिक | 02-10-2065 | 1 मेष | 02-10-2074 | 10 मकर | 02-10-2083 |
| 12 मीन | 02-07-2057 | 7 तुला | 03-07-2066 | 2 वृष | 03-07-2075 | 9 धनु | 02-07-2084 |
| 1 मेष | 02-04-2058 | 6 कन्या | 02-04-2067 | 3 मिथुन | 02-04-2076 | 8 वृश्चिक | 02-04-2085 |
| 2 वृष | 01-01-2059 | 5 सिंह | 01-01-2068 | 4 कर्क | 01-01-2077 | 7 तुला | 01-01-2086 |

| तुला (9व) | ७२व ०म | वृश्चिक (9व) | ८१व ०म | धनु (9व) | ९०व ०म | मकर (9व) | ९९व ०म |
|-----------|------------|--------------|------------|-----------|------------|-----------|------------|
| आरम्भ | 02-10-2086 | आरम्भ | 02-10-2095 | आरम्भ | 02-10-2104 | आरम्भ | 02-10-2113 |
| अन्त | 02-10-2095 | अन्त | 02-10-2104 | अन्त | 02-10-2113 | अन्त | 02-10-2122 |
| 7 तुला | 02-10-2086 | 8 वृश्चिक | 02-10-2095 | 9 धनु | 02-10-2104 | 10 मकर | 02-10-2113 |
| 8 वृश्चिक | 03-07-2087 | 7 तुला | 02-07-2096 | 10 मकर | 03-07-2105 | 9 धनु | 03-07-2114 |
| 9 धनु | 02-04-2088 | 6 कन्या | 02-04-2097 | 11 कुंभ | 03-04-2106 | 8 वृश्चिक | 03-04-2115 |
| 10 मकर | 31-12-2088 | 5 सिंह | 01-01-2098 | 12 मीन | 02-01-2107 | 7 तुला | 02-01-2116 |
| 11 कुंभ | 01-10-2089 | 4 कर्क | 02-10-2098 | 1 मेष | 03-10-2107 | 6 कन्या | 02-10-2116 |
| 12 मीन | 02-07-2090 | 3 मिथुन | 03-07-2099 | 2 वृष | 03-07-2108 | 5 सिंह | 03-07-2117 |
| 1 मेष | 02-04-2091 | 2 वृष | 02-04-2100 | 3 मिथुन | 03-04-2109 | 4 कर्क | 03-04-2118 |
| 2 वृष | 01-01-2092 | 1 मेष | 01-01-2101 | 4 कर्क | 02-01-2110 | 3 मिथुन | 02-01-2119 |
| 3 मिथुन | 01-10-2092 | 12 मीन | 02-10-2101 | 5 सिंह | 03-10-2110 | 2 वृष | 03-10-2119 |
| 4 कर्क | 02-07-2093 | 11 कुंभ | 03-07-2102 | 6 कन्या | 03-07-2111 | 1 मेष | 03-07-2120 |
| 5 सिंह | 02-04-2094 | 10 मकर | 03-04-2103 | 7 तुला | 02-04-2112 | 12 मीन | 03-04-2121 |
| 6 कन्या | 01-01-2095 | 9 धनु | 02-01-2104 | 8 वृश्चिक | 01-01-2113 | 11 कुंभ | 01-01-2122 |



त्रिभागी महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : सूर्य २व ७म २दि
 जन्मकालीन दशा : सू-ल-ल-ल-ल

सूर्य (४व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | | |
| चन्द्र | | |
| मंगल | | |
| राहु | | |
| गुरु | 02-10-2014 | 29-03-2015 |
| शनि | 29-03-2015 | 15-11-2015 |
| बुध | 15-11-2015 | 09-06-2016 |
| केतु | 09-06-2016 | 02-09-2016 |
| शुक्र | 02-09-2016 | 04-05-2017 |

चन्द्र (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 04-05-2017 | 23-11-2017 |
| मंगल | 23-11-2017 | 14-04-2018 |
| राहु | 14-04-2018 | 14-04-2019 |
| गुरु | 14-04-2019 | 04-03-2020 |
| शनि | 04-03-2020 | 24-03-2021 |
| बुध | 24-03-2021 | 04-03-2022 |
| केतु | 04-03-2022 | 24-07-2022 |
| शुक्र | 24-07-2022 | 03-09-2023 |
| सूर्य | 03-09-2023 | 03-01-2024 |

मंगल (४व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 03-01-2024 | 11-04-2024 |
| राहु | 11-04-2024 | 23-12-2024 |
| गुरु | 23-12-2024 | 07-08-2025 |
| शनि | 07-08-2025 | 04-05-2026 |
| बुध | 04-05-2026 | 01-01-2027 |
| केतु | 01-01-2027 | 10-04-2027 |
| शुक्र | 10-04-2027 | 19-01-2028 |
| सूर्य | 19-01-2028 | 13-04-2028 |
| चन्द्र | 13-04-2028 | 02-09-2028 |

राहु (१२व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | 02-09-2028 | 22-06-2030 |
| गुरु | 22-06-2030 | 27-01-2032 |
| शनि | 27-01-2032 | 21-12-2033 |
| बुध | 21-12-2033 | 03-09-2035 |
| केतु | 03-09-2035 | 16-05-2036 |
| शुक्र | 16-05-2036 | 16-05-2038 |
| सूर्य | 16-05-2038 | 21-12-2038 |
| चन्द्र | 21-12-2038 | 22-12-2039 |
| मंगल | 22-12-2039 | 02-09-2040 |

गुरु (१०व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | 02-09-2040 | 04-02-2042 |
| शनि | 04-02-2042 | 14-10-2043 |
| बुध | 14-10-2043 | 17-04-2045 |
| केतु | 17-04-2045 | 01-12-2045 |
| शुक्र | 01-12-2045 | 11-09-2047 |
| सूर्य | 11-09-2047 | 24-03-2048 |
| चन्द्र | 24-03-2048 | 12-02-2049 |
| मंगल | 12-02-2049 | 27-09-2049 |
| राहु | 27-09-2049 | 04-05-2051 |

शनि (१२व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 04-05-2051 | 06-05-2053 |
| बुध | 06-05-2053 | 20-02-2055 |
| केतु | 20-02-2055 | 17-11-2055 |
| शुक्र | 17-11-2055 | 27-12-2057 |
| सूर्य | 27-12-2057 | 15-08-2058 |
| चन्द्र | 15-08-2058 | 05-09-2059 |
| मंगल | 05-09-2059 | 01-06-2060 |
| राहु | 01-06-2060 | 26-04-2062 |
| गुरु | 26-04-2062 | 03-01-2064 |

बुध (११व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 03-01-2064 | 11-08-2065 |
| केतु | 11-08-2065 | 09-04-2066 |
| शुक्र | 09-04-2066 | 28-02-2068 |
| सूर्य | 28-02-2068 | 22-09-2068 |
| चन्द्र | 22-09-2068 | 02-09-2069 |
| मंगल | 02-09-2069 | 02-05-2070 |
| राहु | 02-05-2070 | 13-01-2072 |
| गुरु | 13-01-2072 | 18-07-2073 |
| शनि | 18-07-2073 | 04-05-2075 |

केतु (४व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| केतु | 04-05-2075 | 11-08-2075 |
| शुक्र | 11-08-2075 | 21-05-2076 |
| सूर्य | 21-05-2076 | 15-08-2076 |
| चन्द्र | 15-08-2076 | 04-01-2077 |
| मंगल | 04-01-2077 | 13-04-2077 |
| राहु | 13-04-2077 | 25-12-2077 |
| गुरु | 25-12-2077 | 09-08-2078 |
| शनि | 09-08-2078 | 06-05-2079 |
| बुध | 06-05-2079 | 02-01-2080 |

शुक्र (१३व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | 02-01-2080 | 24-03-2082 |
| सूर्य | 24-03-2082 | 23-11-2082 |
| चन्द्र | 23-11-2082 | 02-01-2084 |
| मंगल | 02-01-2084 | 12-10-2084 |
| राहु | 12-10-2084 | 13-10-2086 |
| गुरु | 13-10-2086 | 23-07-2088 |
| शनि | 23-07-2088 | 02-09-2090 |
| बुध | 02-09-2090 | 23-07-2092 |
| केतु | 23-07-2092 | 03-05-2093 |



त्रिभागी महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : सूर्य 2व 7म 2दि
 जन्मकालीन दशा : सू-ल-ल-ल-ल

सूर्य (4व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | 03-05-2093 | 15-07-2093 |
| चन्द्र | 15-07-2093 | 14-11-2093 |
| मंगल | 14-11-2093 | 07-02-2094 |
| राहु | 07-02-2094 | 15-09-2094 |
| गुरु | 15-09-2094 | 28-03-2095 |
| शनि | 28-03-2095 | 15-11-2095 |
| बुध | 15-11-2095 | 09-06-2096 |
| केतु | 09-06-2096 | 02-09-2096 |
| शुक्र | 02-09-2096 | 03-05-2097 |

चन्द्र (6व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 03-05-2097 | 22-11-2097 |
| मंगल | 22-11-2097 | 13-04-2098 |
| राहु | 13-04-2098 | 14-04-2099 |
| गुरु | 14-04-2099 | 04-03-2100 |
| शनि | 04-03-2100 | 25-03-2101 |
| बुध | 25-03-2101 | 05-03-2102 |
| केतु | 05-03-2102 | 25-07-2102 |
| शुक्र | 25-07-2102 | 04-09-2103 |
| सूर्य | 04-09-2103 | 03-01-2104 |

मंगल (4व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 03-01-2104 | 12-04-2104 |
| राहु | 12-04-2104 | 23-12-2104 |
| गुरु | 23-12-2104 | 08-08-2105 |
| शनि | 08-08-2105 | 04-05-2106 |
| बुध | 04-05-2106 | 01-01-2107 |
| केतु | 01-01-2107 | 10-04-2107 |
| शुक्र | 10-04-2107 | 19-01-2108 |
| सूर्य | 19-01-2108 | 14-04-2108 |
| चन्द्र | 14-04-2108 | 03-09-2108 |

राहु (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | 03-09-2108 | 22-06-2110 |
| गुरु | 22-06-2110 | 28-01-2112 |
| शनि | 28-01-2112 | 22-12-2113 |
| बुध | 22-12-2113 | 03-09-2115 |
| केतु | 03-09-2115 | 16-05-2116 |
| शुक्र | 16-05-2116 | 17-05-2118 |
| सूर्य | 17-05-2118 | 22-12-2118 |
| चन्द्र | 22-12-2118 | 22-12-2119 |
| मंगल | 22-12-2119 | 03-09-2120 |

गुरु (10व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | 03-09-2120 | 04-02-2122 |
| शनि | 04-02-2122 | 14-10-2123 |
| बुध | 14-10-2123 | 18-04-2125 |
| केतु | 18-04-2125 | 01-12-2125 |
| शुक्र | 01-12-2125 | 11-09-2127 |
| सूर्य | 11-09-2127 | 24-03-2128 |
| चन्द्र | 24-03-2128 | 12-02-2129 |
| मंगल | 12-02-2129 | 27-09-2129 |
| राहु | 27-09-2129 | 05-05-2131 |

शनि (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 05-05-2131 | 06-05-2133 |
| बुध | 06-05-2133 | 20-02-2135 |
| केतु | 20-02-2135 | 17-11-2135 |
| शुक्र | 17-11-2135 | 27-12-2137 |
| सूर्य | 27-12-2137 | 16-08-2138 |
| चन्द्र | 16-08-2138 | 05-09-2139 |
| मंगल | 05-09-2139 | 01-06-2140 |
| राहु | 01-06-2140 | 26-04-2142 |
| गुरु | 26-04-2142 | 03-01-2144 |

बुध (11व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 03-01-2144 | 11-08-2145 |
| केतु | 11-08-2145 | 10-04-2146 |
| शुक्र | 10-04-2146 | 29-02-2148 |
| सूर्य | 29-02-2148 | 23-09-2148 |
| चन्द्र | 23-09-2148 | 03-09-2149 |
| मंगल | 03-09-2149 | 02-05-2150 |
| राहु | 02-05-2150 | 13-01-2152 |
| गुरु | 13-01-2152 | 18-07-2153 |
| शनि | 18-07-2153 | 04-05-2155 |

केतु (4व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| केतु | 04-05-2155 | 12-08-2155 |
| शुक्र | 12-08-2155 | 22-05-2156 |
| सूर्य | 22-05-2156 | 15-08-2156 |
| चन्द्र | 15-08-2156 | 04-01-2157 |
| मंगल | 04-01-2157 | 14-04-2157 |
| राहु | 14-04-2157 | 25-12-2157 |
| गुरु | 25-12-2157 | 09-08-2158 |
| शनि | 09-08-2158 | 06-05-2159 |
| बुध | 06-05-2159 | 03-01-2160 |

शुक्र (13व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | 03-01-2160 | 24-03-2162 |
| सूर्य | 24-03-2162 | 23-11-2162 |
| चन्द्र | 23-11-2162 | 03-01-2164 |
| मंगल | 03-01-2164 | 13-10-2164 |
| राहु | 13-10-2164 | 13-10-2166 |
| गुरु | 13-10-2166 | 24-07-2168 |
| शनि | 24-07-2168 | 03-09-2170 |
| बुध | 03-09-2170 | 24-07-2172 |
| केतु | 24-07-2172 | 04-05-2173 |



त्रिभागी 40 महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : सूर्य १व ३म १६दि

जन्मकालीन दशा : सू-ल-ल-ल-ल

सूर्य (२व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | | |
| चन्द्र | | |
| मंगल | | |
| राहु | | |
| गुरु | 02-10-2014 | 30-12-2014 |
| शनि | 30-12-2014 | 25-04-2015 |
| बुध | 25-04-2015 | 06-08-2015 |
| केतु | 06-08-2015 | 18-09-2015 |
| शुक्र | 18-09-2015 | 18-01-2016 |

चन्द्र (३व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 18-01-2016 | 28-04-2016 |
| मंगल | 28-04-2016 | 08-07-2016 |
| राहु | 08-07-2016 | 07-01-2017 |
| गुरु | 07-01-2017 | 18-06-2017 |
| शनि | 18-06-2017 | 28-12-2017 |
| बुध | 28-12-2017 | 18-06-2018 |
| केतु | 18-06-2018 | 28-08-2018 |
| शुक्र | 28-08-2018 | 19-03-2019 |
| सूर्य | 19-03-2019 | 19-05-2019 |

मंगल (२व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 19-05-2019 | 08-07-2019 |
| राहु | 08-07-2019 | 13-11-2019 |
| गुरु | 13-11-2019 | 05-03-2020 |
| शनि | 05-03-2020 | 18-07-2020 |
| बुध | 18-07-2020 | 16-11-2020 |
| केतु | 16-11-2020 | 05-01-2021 |
| शुक्र | 05-01-2021 | 27-05-2021 |
| सूर्य | 27-05-2021 | 08-07-2021 |
| चन्द्र | 08-07-2021 | 17-09-2021 |

राहु (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | 17-09-2021 | 12-08-2022 |
| गुरु | 12-08-2022 | 31-05-2023 |
| शनि | 31-05-2023 | 12-05-2024 |
| बुध | 12-05-2024 | 19-03-2025 |
| केतु | 19-03-2025 | 24-07-2025 |
| शुक्र | 24-07-2025 | 25-07-2026 |
| सूर्य | 25-07-2026 | 11-11-2026 |
| चन्द्र | 11-11-2026 | 13-05-2027 |
| मंगल | 13-05-2027 | 18-09-2027 |

गुरु (५व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | 18-09-2027 | 03-06-2028 |
| शनि | 03-06-2028 | 08-04-2029 |
| बुध | 08-04-2029 | 09-01-2030 |
| केतु | 09-01-2030 | 03-05-2030 |
| शुक्र | 03-05-2030 | 23-03-2031 |
| सूर्य | 23-03-2031 | 29-06-2031 |
| चन्द्र | 29-06-2031 | 08-12-2031 |
| मंगल | 08-12-2031 | 31-03-2032 |
| राहु | 31-03-2032 | 17-01-2033 |

शनि (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 17-01-2033 | 18-01-2034 |
| बुध | 18-01-2034 | 12-12-2034 |
| केतु | 12-12-2034 | 26-04-2035 |
| शुक्र | 26-04-2035 | 15-05-2036 |
| सूर्य | 15-05-2036 | 08-09-2036 |
| चन्द्र | 08-09-2036 | 20-03-2037 |
| मंगल | 20-03-2037 | 02-08-2037 |
| राहु | 02-08-2037 | 14-07-2038 |
| गुरु | 14-07-2038 | 19-05-2039 |

बुध (५व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 19-05-2039 | 07-03-2040 |
| केतु | 07-03-2040 | 06-07-2040 |
| शुक्र | 06-07-2040 | 16-06-2041 |
| सूर्य | 16-06-2041 | 27-09-2041 |
| चन्द्र | 27-09-2041 | 19-03-2042 |
| मंगल | 19-03-2042 | 18-07-2042 |
| राहु | 18-07-2042 | 24-05-2043 |
| गुरु | 24-05-2043 | 24-02-2044 |
| शनि | 24-02-2044 | 17-01-2045 |

केतु (२व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| केतु | 17-01-2045 | 07-03-2045 |
| शुक्र | 07-03-2045 | 27-07-2045 |
| सूर्य | 27-07-2045 | 08-09-2045 |
| चन्द्र | 08-09-2045 | 18-11-2045 |
| मंगल | 18-11-2045 | 07-01-2046 |
| राहु | 07-01-2046 | 15-05-2046 |
| गुरु | 15-05-2046 | 05-09-2046 |
| शनि | 05-09-2046 | 18-01-2047 |
| बुध | 18-01-2047 | 19-05-2047 |

शुक्र (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | 19-05-2047 | 28-06-2048 |
| सूर्य | 28-06-2048 | 27-10-2048 |
| चन्द्र | 27-10-2048 | 18-05-2049 |
| मंगल | 18-05-2049 | 07-10-2049 |
| राहु | 07-10-2049 | 08-10-2050 |
| गुरु | 08-10-2050 | 28-08-2051 |
| शनि | 28-08-2051 | 17-09-2052 |
| बुध | 17-09-2052 | 28-08-2053 |
| केतु | 28-08-2053 | 17-01-2054 |



त्रिभागी 40 महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : सूर्य 1व 3म 16दि
 जन्मकालीन दशा : सू-ल-ल-ल-ल

सूर्य (2व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | 17-01-2054 | 22-02-2054 |
| चन्द्र | 22-02-2054 | 24-04-2054 |
| मंगल | 24-04-2054 | 06-06-2054 |
| राहु | 06-06-2054 | 23-09-2054 |
| गुरु | 23-09-2054 | 30-12-2054 |
| शनि | 30-12-2054 | 24-04-2055 |
| बुध | 24-04-2055 | 06-08-2055 |
| केतु | 06-08-2055 | 18-09-2055 |
| शुक्र | 18-09-2055 | 17-01-2056 |

चन्द्र (3व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 17-01-2056 | 28-04-2056 |
| मंगल | 28-04-2056 | 08-07-2056 |
| राहु | 08-07-2056 | 06-01-2057 |
| गुरु | 06-01-2057 | 18-06-2057 |
| शनि | 18-06-2057 | 27-12-2057 |
| बुध | 27-12-2057 | 18-06-2058 |
| केतु | 18-06-2058 | 28-08-2058 |
| शुक्र | 28-08-2058 | 19-03-2059 |
| सूर्य | 19-03-2059 | 19-05-2059 |

मंगल (2व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 19-05-2059 | 07-07-2059 |
| राहु | 07-07-2059 | 12-11-2059 |
| गुरु | 12-11-2059 | 05-03-2060 |
| शनि | 05-03-2060 | 18-07-2060 |
| बुध | 18-07-2060 | 16-11-2060 |
| केतु | 16-11-2060 | 04-01-2061 |
| शुक्र | 04-01-2061 | 26-05-2061 |
| सूर्य | 26-05-2061 | 08-07-2061 |
| चन्द्र | 08-07-2061 | 17-09-2061 |

राहु (6व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | 17-09-2061 | 12-08-2062 |
| गुरु | 12-08-2062 | 31-05-2063 |
| शनि | 31-05-2063 | 12-05-2064 |
| बुध | 12-05-2064 | 18-03-2065 |
| केतु | 18-03-2065 | 24-07-2065 |
| शुक्र | 24-07-2065 | 24-07-2066 |
| सूर्य | 24-07-2066 | 11-11-2066 |
| चन्द्र | 11-11-2066 | 13-05-2067 |
| मंगल | 13-05-2067 | 17-09-2067 |

गुरु (5व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | 17-09-2067 | 03-06-2068 |
| शनि | 03-06-2068 | 08-04-2069 |
| बुध | 08-04-2069 | 09-01-2070 |
| केतु | 09-01-2070 | 02-05-2070 |
| शुक्र | 02-05-2070 | 23-03-2071 |
| सूर्य | 23-03-2071 | 28-06-2071 |
| चन्द्र | 28-06-2071 | 08-12-2071 |
| मंगल | 08-12-2071 | 30-03-2072 |
| राहु | 30-03-2072 | 16-01-2073 |

शनि (6व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 16-01-2073 | 18-01-2074 |
| बुध | 18-01-2074 | 11-12-2074 |
| केतु | 11-12-2074 | 25-04-2075 |
| शुक्र | 25-04-2075 | 15-05-2076 |
| सूर्य | 15-05-2076 | 07-09-2076 |
| चन्द्र | 07-09-2076 | 19-03-2077 |
| मंगल | 19-03-2077 | 01-08-2077 |
| राहु | 01-08-2077 | 14-07-2078 |
| गुरु | 14-07-2078 | 19-05-2079 |

बुध (5व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 19-05-2079 | 07-03-2080 |
| केतु | 07-03-2080 | 06-07-2080 |
| शुक्र | 06-07-2080 | 15-06-2081 |
| सूर्य | 15-06-2081 | 27-09-2081 |
| चन्द्र | 27-09-2081 | 18-03-2082 |
| मंगल | 18-03-2082 | 17-07-2082 |
| राहु | 17-07-2082 | 24-05-2083 |
| गुरु | 24-05-2083 | 24-02-2084 |
| शनि | 24-02-2084 | 16-01-2085 |

केतु (2व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| केतु | 16-01-2085 | 07-03-2085 |
| शुक्र | 07-03-2085 | 27-07-2085 |
| सूर्य | 27-07-2085 | 08-09-2085 |
| चन्द्र | 08-09-2085 | 18-11-2085 |
| मंगल | 18-11-2085 | 06-01-2086 |
| राहु | 06-01-2086 | 14-05-2086 |
| गुरु | 14-05-2086 | 05-09-2086 |
| शनि | 05-09-2086 | 18-01-2087 |
| बुध | 18-01-2087 | 19-05-2087 |

शुक्र (6व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | 19-05-2087 | 27-06-2088 |
| सूर्य | 27-06-2088 | 27-10-2088 |
| चन्द्र | 27-10-2088 | 18-05-2089 |
| मंगल | 18-05-2089 | 07-10-2089 |
| राहु | 07-10-2089 | 07-10-2090 |
| गुरु | 07-10-2090 | 28-08-2091 |
| शनि | 28-08-2091 | 17-09-2092 |
| बुध | 17-09-2092 | 27-08-2093 |
| केतु | 27-08-2093 | 16-01-2094 |



त्रिभागी 40 महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : सूर्य 1व 3म 16दि
 जन्मकालीन दशा : सू-ल-ल-ल-ल

सूर्य (2व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | 16-01-2094 | 22-02-2094 |
| चन्द्र | 22-02-2094 | 24-04-2094 |
| मंगल | 24-04-2094 | 06-06-2094 |
| राहु | 06-06-2094 | 23-09-2094 |
| गुरु | 23-09-2094 | 29-12-2094 |
| शनि | 29-12-2094 | 24-04-2095 |
| बुध | 24-04-2095 | 06-08-2095 |
| केतु | 06-08-2095 | 17-09-2095 |
| शुक्र | 17-09-2095 | 17-01-2096 |

चन्द्र (3व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 17-01-2096 | 27-04-2096 |
| मंगल | 27-04-2096 | 07-07-2096 |
| राहु | 07-07-2096 | 06-01-2097 |
| गुरु | 06-01-2097 | 17-06-2097 |
| शनि | 17-06-2097 | 27-12-2097 |
| बुध | 27-12-2097 | 18-06-2098 |
| केतु | 18-06-2098 | 28-08-2098 |
| शुक्र | 28-08-2098 | 19-03-2099 |
| सूर्य | 19-03-2099 | 18-05-2099 |

मंगल (2व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 18-05-2099 | 07-07-2099 |
| राहु | 07-07-2099 | 12-11-2099 |
| गुरु | 12-11-2099 | 06-03-2100 |
| शनि | 06-03-2100 | 19-07-2100 |
| बुध | 19-07-2100 | 16-11-2100 |
| केतु | 16-11-2100 | 05-01-2101 |
| शुक्र | 05-01-2101 | 27-05-2101 |
| सूर्य | 27-05-2101 | 09-07-2101 |
| चन्द्र | 09-07-2101 | 18-09-2101 |

राहु (6व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | 18-09-2101 | 12-08-2102 |
| गुरु | 12-08-2102 | 01-06-2103 |
| शनि | 01-06-2103 | 13-05-2104 |
| बुध | 13-05-2104 | 19-03-2105 |
| केतु | 19-03-2105 | 25-07-2105 |
| शुक्र | 25-07-2105 | 25-07-2106 |
| सूर्य | 25-07-2106 | 12-11-2106 |
| चन्द्र | 12-11-2106 | 13-05-2107 |
| मंगल | 13-05-2107 | 18-09-2107 |

गुरु (5व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | 18-09-2107 | 04-06-2108 |
| शनि | 04-06-2108 | 08-04-2109 |
| बुध | 08-04-2109 | 09-01-2110 |
| केतु | 09-01-2110 | 03-05-2110 |
| शुक्र | 03-05-2110 | 24-03-2111 |
| सूर्य | 24-03-2111 | 29-06-2111 |
| चन्द्र | 29-06-2111 | 08-12-2111 |
| मंगल | 08-12-2111 | 31-03-2112 |
| राहु | 31-03-2112 | 17-01-2113 |

शनि (6व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 17-01-2113 | 18-01-2114 |
| बुध | 18-01-2114 | 12-12-2114 |
| केतु | 12-12-2114 | 26-04-2115 |
| शुक्र | 26-04-2115 | 16-05-2116 |
| सूर्य | 16-05-2116 | 08-09-2116 |
| चन्द्र | 08-09-2116 | 20-03-2117 |
| मंगल | 20-03-2117 | 02-08-2117 |
| राहु | 02-08-2117 | 15-07-2118 |
| गुरु | 15-07-2118 | 19-05-2119 |

बुध (5व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 19-05-2119 | 08-03-2120 |
| केतु | 08-03-2120 | 06-07-2120 |
| शुक्र | 06-07-2120 | 16-06-2121 |
| सूर्य | 16-06-2121 | 28-09-2121 |
| चन्द्र | 28-09-2121 | 19-03-2122 |
| मंगल | 19-03-2122 | 18-07-2122 |
| राहु | 18-07-2122 | 24-05-2123 |
| गुरु | 24-05-2123 | 24-02-2124 |
| शनि | 24-02-2124 | 17-01-2125 |

केतु (2व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| केतु | 17-01-2125 | 08-03-2125 |
| शुक्र | 08-03-2125 | 28-07-2125 |
| सूर्य | 28-07-2125 | 08-09-2125 |
| चन्द्र | 08-09-2125 | 18-11-2125 |
| मंगल | 18-11-2125 | 07-01-2126 |
| राहु | 07-01-2126 | 15-05-2126 |
| गुरु | 15-05-2126 | 06-09-2126 |
| शनि | 06-09-2126 | 18-01-2127 |
| बुध | 18-01-2127 | 19-05-2127 |

शुक्र (6व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | 19-05-2127 | 28-06-2128 |
| सूर्य | 28-06-2128 | 28-10-2128 |
| चन्द्र | 28-10-2128 | 19-05-2129 |
| मंगल | 19-05-2129 | 08-10-2129 |
| राहु | 08-10-2129 | 08-10-2130 |
| गुरु | 08-10-2130 | 29-08-2131 |
| शनि | 29-08-2131 | 17-09-2132 |
| बुध | 17-09-2132 | 28-08-2133 |
| केतु | 28-08-2133 | 17-01-2134 |



षोडशोत्तरी महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : चन्द्र 10व 4म 3दि
 जन्मकालीन दशा : चं-ल-ल-ल-ल

चन्द्र (16व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|------------------|------------|------|
| चन्द्र | | |
| बुध | | |
| शुक्र 02-10-2014 | 18-02-2016 | |
| सूर्य 18-02-2016 | 26-08-2017 | |
| मंगल 26-08-2017 | 22-04-2019 | |
| गुरु 22-04-2019 | 05-02-2021 | |
| शनि 05-02-2021 | 11-01-2023 | |
| केतु 11-01-2023 | 05-02-2025 | |

बुध (17व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| बुध 05-02-2025 | 04-08-2027 | |
| शुक्र 04-08-2027 | 24-03-2030 | |
| सूर्य 24-03-2030 | 03-11-2031 | |
| मंगल 03-11-2031 | 07-08-2033 | |
| गुरु 07-08-2033 | 03-07-2035 | |
| शनि 03-07-2035 | 22-07-2037 | |
| केतु 22-07-2037 | 03-10-2039 | |
| चन्द्र 03-10-2039 | 05-02-2042 | |

शुक्र (18व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| शुक्र 05-02-2042 | 21-11-2044 | |
| सूर्य 21-11-2044 | 07-08-2046 | |
| मंगल 07-08-2046 | 17-06-2048 | |
| गुरु 17-06-2048 | 24-06-2050 | |
| शनि 24-06-2050 | 25-08-2052 | |
| केतु 25-08-2052 | 23-12-2054 | |
| चन्द्र 23-12-2054 | 17-06-2057 | |
| बुध 17-06-2057 | 05-02-2060 | |

सूर्य (11व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| सूर्य 05-02-2060 | 20-02-2061 | |
| मंगल 20-02-2061 | 12-04-2062 | |
| गुरु 12-04-2062 | 06-07-2063 | |
| शनि 06-07-2063 | 02-11-2064 | |
| केतु 02-11-2064 | 06-04-2066 | |
| चन्द्र 06-04-2066 | 12-10-2067 | |
| बुध 12-10-2067 | 23-05-2069 | |
| शुक्र 23-05-2069 | 05-02-2071 | |

मंगल (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| मंगल 05-02-2071 | 03-05-2072 | |
| गुरु 03-05-2072 | 07-09-2073 | |
| शनि 07-09-2073 | 18-02-2075 | |
| केतु 18-02-2075 | 06-09-2076 | |
| चन्द्र 06-09-2076 | 04-05-2078 | |
| बुध 04-05-2078 | 05-02-2080 | |
| शुक्र 05-02-2080 | 16-12-2081 | |
| सूर्य 16-12-2081 | 05-02-2083 | |

गुरु (13व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| गुरु 05-02-2083 | 21-07-2084 | |
| शनि 21-07-2084 | 14-02-2086 | |
| केतु 14-02-2086 | 21-10-2087 | |
| चन्द्र 21-10-2087 | 06-08-2089 | |
| बुध 06-08-2089 | 03-07-2091 | |
| शुक्र 03-07-2091 | 09-07-2093 | |
| सूर्य 09-07-2093 | 02-10-2094 | |
| मंगल 02-10-2094 | 05-02-2096 | |

शनि (14व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| शनि 05-02-2096 | 14-10-2097 | |
| केतु 14-10-2097 | 06-08-2099 | |
| चन्द्र 06-08-2099 | 13-07-2101 | |
| बुध 13-07-2101 | 01-08-2103 | |
| शुक्र 01-08-2103 | 03-10-2105 | |
| सूर्य 03-10-2105 | 31-01-2107 | |
| मंगल 31-01-2107 | 12-07-2108 | |
| गुरु 12-07-2108 | 06-02-2110 | |

केतु (15व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| केतु 06-02-2110 | 15-01-2112 | |
| चन्द्र 15-01-2112 | 09-02-2114 | |
| बुध 09-02-2114 | 22-04-2116 | |
| शुक्र 22-04-2116 | 20-08-2118 | |
| सूर्य 20-08-2118 | 21-01-2120 | |
| मंगल 21-01-2120 | 10-08-2121 | |
| गुरु 10-08-2121 | 16-04-2123 | |
| शनि 16-04-2123 | 05-02-2125 | |

चन्द्र (16व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| चन्द्र 05-02-2125 | 22-04-2127 | |
| बुध 22-04-2127 | 26-08-2129 | |
| शुक्र 26-08-2129 | 18-02-2132 | |
| सूर्य 18-02-2132 | 26-08-2133 | |
| मंगल 26-08-2133 | 22-04-2135 | |
| गुरु 22-04-2135 | 05-02-2137 | |
| शनि 05-02-2137 | 11-01-2139 | |
| केतु 11-01-2139 | 05-02-2141 | |



द्वादशोत्तरी महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : शनि 12व 3म 12दि
 जन्मकालीन दशा : श-ल-ल-ल-ल

शनि (19व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | | |
| चन्द्र | 02-10-2014 | 28-10-2014 |
| सूर्य | 28-10-2014 | 05-01-2016 |
| गुरु | 05-01-2016 | 16-07-2017 |
| केतु | 16-07-2017 | 28-05-2019 |
| बुध | 28-05-2019 | 11-08-2021 |
| राहु | 11-08-2021 | 26-02-2024 |
| मंगल | 26-02-2024 | 14-01-2027 |

चन्द्र (21व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 14-01-2027 | 23-12-2030 |
| सूर्य | 23-12-2030 | 15-04-2032 |
| गुरु | 15-04-2032 | 22-12-2033 |
| केतु | 22-12-2033 | 15-01-2036 |
| बुध | 15-01-2036 | 23-06-2038 |
| राहु | 23-06-2038 | 15-04-2041 |
| मंगल | 15-04-2041 | 22-06-2044 |
| शनि | 22-06-2044 | 15-01-2048 |

सूर्य (7व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | 15-01-2048 | 22-06-2048 |
| गुरु | 22-06-2048 | 14-01-2049 |
| केतु | 14-01-2049 | 22-09-2049 |
| बुध | 22-09-2049 | 16-07-2050 |
| राहु | 16-07-2050 | 23-06-2051 |
| मंगल | 23-06-2051 | 15-07-2052 |
| शनि | 15-07-2052 | 22-09-2053 |
| चन्द्र | 22-09-2053 | 14-01-2055 |

गुरु (9व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | 14-01-2055 | 05-10-2055 |
| केतु | 05-10-2055 | 23-08-2056 |
| बुध | 23-08-2056 | 09-09-2057 |
| राहु | 09-09-2057 | 23-11-2058 |
| मंगल | 23-11-2058 | 05-04-2060 |
| शनि | 05-04-2060 | 15-10-2061 |
| चन्द्र | 15-10-2061 | 23-06-2063 |
| सूर्य | 23-06-2063 | 14-01-2064 |

केतु (11व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| केतु | 14-01-2064 | 12-02-2065 |
| बुध | 12-02-2065 | 24-05-2066 |
| राहु | 24-05-2066 | 13-11-2067 |
| मंगल | 13-11-2067 | 15-07-2069 |
| शनि | 15-07-2069 | 28-05-2071 |
| चन्द्र | 28-05-2071 | 19-06-2073 |
| सूर्य | 19-06-2073 | 25-02-2074 |
| गुरु | 25-02-2074 | 14-01-2075 |

बुध (13व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 14-01-2075 | 18-07-2076 |
| राहु | 18-07-2076 | 15-04-2078 |
| मंगल | 15-04-2078 | 05-04-2080 |
| शनि | 05-04-2080 | 19-06-2082 |
| चन्द्र | 19-06-2082 | 26-11-2084 |
| सूर्य | 26-11-2084 | 18-09-2085 |
| गुरु | 18-09-2085 | 05-10-2086 |
| केतु | 05-10-2086 | 14-01-2088 |

राहु (15व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | 14-01-2088 | 17-01-2090 |
| मंगल | 17-01-2090 | 28-04-2092 |
| शनि | 28-04-2092 | 13-11-2094 |
| चन्द्र | 13-11-2094 | 05-09-2097 |
| सूर्य | 05-09-2097 | 14-08-2098 |
| गुरु | 14-08-2098 | 28-10-2099 |
| केतु | 28-10-2099 | 19-04-2101 |
| बुध | 19-04-2101 | 15-01-2103 |

मंगल (17व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 15-01-2103 | 14-08-2105 |
| शनि | 14-08-2105 | 03-07-2108 |
| चन्द्र | 03-07-2108 | 10-09-2111 |
| सूर्य | 10-09-2111 | 02-10-2112 |
| गुरु | 02-10-2112 | 13-02-2114 |
| केतु | 13-02-2114 | 16-10-2115 |
| बुध | 16-10-2115 | 05-10-2117 |
| राहु | 05-10-2117 | 15-01-2120 |

शनि (19व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 15-01-2120 | 06-04-2123 |
| चन्द्र | 06-04-2123 | 28-10-2126 |
| सूर्य | 28-10-2126 | 05-01-2128 |
| गुरु | 05-01-2128 | 16-07-2129 |
| केतु | 16-07-2129 | 28-05-2131 |
| बुध | 28-05-2131 | 11-08-2133 |
| राहु | 11-08-2133 | 26-02-2136 |
| मंगल | 26-02-2136 | 15-01-2139 |



द्विसप्ततिसमा महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : मंगल ५ व म २६दि
 जन्मकालीन दशा : मं-ल-ल-ल-ल

मंगल (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | | |
| बुध | | |
| गुरु | 02-10-2014 | 12-12-2014 |
| शुक्र | 12-12-2014 | 27-01-2016 |
| शनि | 27-01-2016 | 13-03-2017 |
| राहु | 13-03-2017 | 28-04-2018 |
| सूर्य | 28-04-2018 | 13-06-2019 |
| चन्द्र | 13-06-2019 | 28-07-2020 |

बुध (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 28-07-2020 | 12-09-2021 |
| गुरु | 12-09-2021 | 28-10-2022 |
| शुक्र | 28-10-2022 | 12-12-2023 |
| शनि | 12-12-2023 | 26-01-2025 |
| राहु | 26-01-2025 | 13-03-2026 |
| सूर्य | 13-03-2026 | 28-04-2027 |
| चन्द्र | 28-04-2027 | 12-06-2028 |
| मंगल | 12-06-2028 | 28-07-2029 |

गुरु (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | 28-07-2029 | 12-09-2030 |
| शुक्र | 12-09-2030 | 28-10-2031 |
| शनि | 28-10-2031 | 12-12-2032 |
| राहु | 12-12-2032 | 27-01-2034 |
| सूर्य | 27-01-2034 | 13-03-2035 |
| चन्द्र | 13-03-2035 | 27-04-2036 |
| मंगल | 27-04-2036 | 12-06-2037 |
| बुध | 12-06-2037 | 28-07-2038 |

शुक्र (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | 28-07-2038 | 12-09-2039 |
| शनि | 12-09-2039 | 27-10-2040 |
| राहु | 27-10-2040 | 12-12-2041 |
| सूर्य | 12-12-2041 | 27-01-2043 |
| चन्द्र | 27-01-2043 | 13-03-2044 |
| मंगल | 13-03-2044 | 28-04-2045 |
| बुध | 28-04-2045 | 12-06-2046 |
| गुरु | 12-06-2046 | 28-07-2047 |

शनि (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 28-07-2047 | 11-09-2048 |
| राहु | 11-09-2048 | 27-10-2049 |
| सूर्य | 27-10-2049 | 12-12-2050 |
| चन्द्र | 12-12-2050 | 27-01-2052 |
| मंगल | 27-01-2052 | 13-03-2053 |
| बुध | 13-03-2053 | 28-04-2054 |
| गुरु | 28-04-2054 | 13-06-2055 |
| शुक्र | 13-06-2055 | 27-07-2056 |

राहु (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | 27-07-2056 | 11-09-2057 |
| सूर्य | 11-09-2057 | 27-10-2058 |
| चन्द्र | 27-10-2058 | 12-12-2059 |
| मंगल | 12-12-2059 | 26-01-2061 |
| बुध | 26-01-2061 | 13-03-2062 |
| गुरु | 13-03-2062 | 28-04-2063 |
| शुक्र | 28-04-2063 | 12-06-2064 |
| शनि | 12-06-2064 | 28-07-2065 |

सूर्य (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | 28-07-2065 | 12-09-2066 |
| चन्द्र | 12-09-2066 | 27-10-2067 |
| मंगल | 27-10-2067 | 11-12-2068 |
| बुध | 11-12-2068 | 26-01-2070 |
| गुरु | 26-01-2070 | 13-03-2071 |
| शुक्र | 13-03-2071 | 27-04-2072 |
| शनि | 27-04-2072 | 12-06-2073 |
| राहु | 12-06-2073 | 28-07-2074 |

चन्द्र (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 28-07-2074 | 12-09-2075 |
| मंगल | 12-09-2075 | 27-10-2076 |
| बुध | 27-10-2076 | 12-12-2077 |
| गुरु | 12-12-2077 | 26-01-2079 |
| शुक्र | 26-01-2079 | 12-03-2080 |
| शनि | 12-03-2080 | 27-04-2081 |
| राहु | 27-04-2081 | 12-06-2082 |
| सूर्य | 12-06-2082 | 28-07-2083 |

मंगल (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 28-07-2083 | 11-09-2084 |
| बुध | 11-09-2084 | 27-10-2085 |
| गुरु | 27-10-2085 | 12-12-2086 |
| शुक्र | 12-12-2086 | 27-01-2088 |
| शनि | 27-01-2088 | 13-03-2089 |
| राहु | 13-03-2089 | 27-04-2090 |
| सूर्य | 27-04-2090 | 12-06-2091 |
| चन्द्र | 12-06-2091 | 27-07-2092 |



द्विसप्तति समा महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : मंगल ५व १५ २६दि
 जन्मकालीन दशा : मं-ल-ल-ल-ल

बुध (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | २७-०७-२०९२ | ११-०९-२०९३ |
| गुरु | ११-०९-२०९३ | २७-१०-२०९४ |
| शुक्र | २७-१०-२०९४ | १२-१२-२०९५ |
| शनि | १२-१२-२०९५ | २६-०१-२०९७ |
| राहु | २६-०१-२०९७ | १३-०३-२०९८ |
| सूर्य | १३-०३-२०९८ | २८-०४-२०९९ |
| चन्द्र | २८-०४-२०९९ | १२-०६-२१०० |
| मंगल | १२-०६-२१०० | २८-०७-२१०१ |

गुरु (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | २८-०७-२१०१ | १२-०९-२१०२ |
| शुक्र | १२-०९-२१०२ | २८-१०-२१०३ |
| शनि | २८-१०-२१०३ | १२-१२-२१०४ |
| राहु | १२-१२-२१०४ | २७-०१-२१०६ |
| सूर्य | २७-०१-२१०६ | १४-०३-२१०७ |
| चन्द्र | १४-०३-२१०७ | २८-०४-२१०८ |
| मंगल | २८-०४-२१०८ | १३-०६-२१०९ |
| बुध | १३-०६-२१०९ | २९-०७-२११० |

शुक्र (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | २९-०७-२११० | १२-०९-२१११ |
| शनि | १२-०९-२१११ | २७-१०-२११२ |
| राहु | २७-१०-२११२ | १२-१२-२११३ |
| सूर्य | १२-१२-२११३ | २७-०१-२११५ |
| चन्द्र | २७-०१-२११५ | १३-०३-२११६ |
| मंगल | १३-०३-२११६ | २८-०४-२११७ |
| बुध | २८-०४-२११७ | १३-०६-२११८ |
| गुरु | १३-०६-२११८ | २९-०७-२११९ |

शनि (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | २९-०७-२११९ | १२-०९-२१२० |
| राहु | १२-०९-२१२० | २८-१०-२१२१ |
| सूर्य | २८-१०-२१२१ | १२-१२-२१२२ |
| चन्द्र | १२-१२-२१२२ | २७-०१-२१२४ |
| मंगल | २७-०१-२१२४ | १३-०३-२१२५ |
| बुध | १३-०३-२१२५ | २८-०४-२१२६ |
| गुरु | २८-०४-२१२६ | १३-०६-२१२७ |
| शुक्र | १३-०६-२१२७ | २८-०७-२१२८ |

राहु (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | २८-०७-२१२८ | १२-०९-२१२९ |
| सूर्य | १२-०९-२१२९ | २८-१०-२१३० |
| चन्द्र | २८-१०-२१३० | १३-१२-२१३१ |
| मंगल | १३-१२-२१३१ | २७-०१-२१३३ |
| बुध | २७-०१-२१३३ | १३-०३-२१३४ |
| गुरु | १३-०३-२१३४ | २८-०४-२१३५ |
| शुक्र | २८-०४-२१३५ | १२-०६-२१३६ |
| शनि | १२-०६-२१३६ | २८-०७-२१३७ |

सूर्य (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | २८-०७-२१३७ | १२-०९-२१३८ |
| चन्द्र | १२-०९-२१३८ | २८-१०-२१३९ |
| मंगल | २८-१०-२१३९ | १२-१२-२१४० |
| बुध | १२-१२-२१४० | २७-०१-२१४२ |
| गुरु | २७-०१-२१४२ | १४-०३-२१४३ |
| शुक्र | १४-०३-२१४३ | २७-०४-२१४४ |
| शनि | २७-०४-२१४४ | १२-०६-२१४५ |
| राहु | १२-०६-२१४५ | २८-०७-२१४६ |

चन्द्र (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | २८-०७-२१४६ | १२-०९-२१४७ |
| मंगल | १२-०९-२१४७ | २७-१०-२१४८ |
| बुध | २७-१०-२१४८ | १२-१२-२१४९ |
| गुरु | १२-१२-२१४९ | २७-०१-२१५१ |
| शुक्र | २७-०१-२१५१ | १३-०३-२१५२ |
| शनि | १३-०३-२१५२ | २८-०४-२१५३ |
| राहु | २८-०४-२१५३ | १३-०६-२१५४ |
| सूर्य | १३-०६-२१५४ | २८-०७-२१५५ |

मंगल (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | २८-०७-२१५५ | ११-०९-२१५६ |
| बुध | ११-०९-२१५६ | २७-१०-२१५७ |
| गुरु | २७-१०-२१५७ | १२-१२-२१५८ |
| शुक्र | १२-१२-२१५८ | २७-०१-२१६० |
| शनि | २७-०१-२१६० | १३-०३-२१६१ |
| राहु | १३-०३-२१६१ | २८-०४-२१६२ |
| सूर्य | २८-०४-२१६२ | १३-०६-२१६३ |
| चन्द्र | १३-०६-२१६३ | २८-०७-२१६४ |

बुध (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | २८-०७-२१६४ | १२-०९-२१६५ |
| गुरु | १२-०९-२१६५ | २७-१०-२१६६ |
| शुक्र | २७-१०-२१६६ | १२-१२-२१६७ |
| शनि | १२-१२-२१६७ | २६-०१-२१६९ |
| राहु | २६-०१-२१६९ | १३-०३-२१७० |
| सूर्य | १३-०३-२१७० | २८-०४-२१७१ |
| चन्द्र | २८-०४-२१७१ | १२-०६-२१७२ |
| मंगल | १२-०६-२१७२ | २८-०७-२१७३ |



षष्ठिहायनी महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : शुक्र ०व ९म १७दि
 जन्मकालीन दशा : शु-ल-ल-ल-ल

शुक्र (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | | |
| शनि | | |
| राहु | | |
| गुरु | | |
| सूर्य | | |
| मंगल | | |
| चन्द्र | 02-10-2014 | 12-12-2014 |
| बुध | 12-12-2014 | 19-07-2015 |

शनि (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 19-07-2015 | 23-02-2016 |
| राहु | 23-02-2016 | 29-09-2016 |
| गुरु | 29-09-2016 | 30-09-2017 |
| सूर्य | 30-09-2017 | 30-09-2018 |
| मंगल | 30-09-2018 | 30-09-2019 |
| चन्द्र | 30-09-2019 | 06-05-2020 |
| बुध | 06-05-2020 | 11-12-2020 |
| शुक्र | 11-12-2020 | 18-07-2021 |

राहु (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | 18-07-2021 | 23-02-2022 |
| गुरु | 23-02-2022 | 23-02-2023 |
| सूर्य | 23-02-2023 | 23-02-2024 |
| मंगल | 23-02-2024 | 22-02-2025 |
| चन्द्र | 22-02-2025 | 29-09-2025 |
| बुध | 29-09-2025 | 07-05-2026 |
| शुक्र | 07-05-2026 | 12-12-2026 |
| शनि | 12-12-2026 | 19-07-2027 |

गुरु (१०व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | 19-07-2027 | 19-03-2029 |
| सूर्य | 19-03-2029 | 17-11-2030 |
| मंगल | 17-11-2030 | 18-07-2032 |
| चन्द्र | 18-07-2032 | 18-07-2033 |
| बुध | 18-07-2033 | 19-07-2034 |
| शुक्र | 19-07-2034 | 19-07-2035 |
| शनि | 19-07-2035 | 18-07-2036 |
| राहु | 18-07-2036 | 18-07-2037 |

सूर्य (१०व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | 18-07-2037 | 19-03-2039 |
| मंगल | 19-03-2039 | 17-11-2040 |
| चन्द्र | 17-11-2040 | 17-11-2041 |
| बुध | 17-11-2041 | 17-11-2042 |
| शुक्र | 17-11-2042 | 18-11-2043 |
| शनि | 18-11-2043 | 17-11-2044 |
| राहु | 17-11-2044 | 17-11-2045 |
| गुरु | 17-11-2045 | 19-07-2047 |

मंगल (१०व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 19-07-2047 | 18-03-2049 |
| चन्द्र | 18-03-2049 | 19-03-2050 |
| बुध | 19-03-2050 | 19-03-2051 |
| शुक्र | 19-03-2051 | 18-03-2052 |
| शनि | 18-03-2052 | 18-03-2053 |
| राहु | 18-03-2053 | 19-03-2054 |
| गुरु | 19-03-2054 | 17-11-2055 |
| सूर्य | 17-11-2055 | 18-07-2057 |

चन्द्र (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 18-07-2057 | 22-02-2058 |
| बुध | 22-02-2058 | 29-09-2058 |
| शुक्र | 29-09-2058 | 07-05-2059 |
| शनि | 07-05-2059 | 12-12-2059 |
| राहु | 12-12-2059 | 18-07-2060 |
| गुरु | 18-07-2060 | 18-07-2061 |
| सूर्य | 18-07-2061 | 18-07-2062 |
| मंगल | 18-07-2062 | 19-07-2063 |

बुध (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 19-07-2063 | 23-02-2064 |
| शुक्र | 23-02-2064 | 29-09-2064 |
| शनि | 29-09-2064 | 06-05-2065 |
| राहु | 06-05-2065 | 11-12-2065 |
| गुरु | 11-12-2065 | 11-12-2066 |
| सूर्य | 11-12-2066 | 12-12-2067 |
| मंगल | 12-12-2067 | 11-12-2068 |
| चन्द्र | 11-12-2068 | 18-07-2069 |

शुक्र (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | 18-07-2069 | 22-02-2070 |
| शनि | 22-02-2070 | 29-09-2070 |
| राहु | 29-09-2070 | 06-05-2071 |
| गुरु | 06-05-2071 | 06-05-2072 |
| सूर्य | 06-05-2072 | 06-05-2073 |
| मंगल | 06-05-2073 | 06-05-2074 |
| चन्द्र | 06-05-2074 | 11-12-2074 |
| बुध | 11-12-2074 | 19-07-2075 |



षष्ठिहायनी महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : शुक्र ०१ ९म १७दि
 जन्मकालीन दशा : शु-ल-ल-ल-ल

शनि (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | १९-०७-२०७५ | २३-०२-२०७६ |
| राहु | २३-०२-२०७६ | २९-०९-२०७६ |
| गुरु | २९-०९-२०७६ | २९-०९-२०७७ |
| सूर्य | २९-०९-२०७७ | २९-०९-२०७८ |
| मंगल | २९-०९-२०७८ | ३०-०९-२०७९ |
| चन्द्र | ३०-०९-२०७९ | ०६-०५-२०८० |
| बुध | ०६-०५-२०८० | ११-१२-२०८० |
| शुक्र | ११-१२-२०८० | १८-०७-२०८१ |

राहु (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | १८-०७-२०८१ | २२-०२-२०८२ |
| गुरु | २२-०२-२०८२ | २२-०२-२०८३ |
| सूर्य | २२-०२-२०८३ | २३-०२-२०८४ |
| मंगल | २३-०२-२०८४ | २२-०२-२०८५ |
| चन्द्र | २२-०२-२०८५ | २९-०९-२०८५ |
| बुध | २९-०९-२०८५ | ०६-०५-२०८६ |
| शुक्र | ०६-०५-२०८६ | ११-१२-२०८६ |
| शनि | ११-१२-२०८६ | १८-०७-२०८७ |

गुरु (१०व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | १८-०७-२०८७ | १८-०३-२०८९ |
| सूर्य | १८-०३-२०८९ | १७-११-२०९० |
| मंगल | १७-११-२०९० | १८-०७-२०९२ |
| चन्द्र | १८-०७-२०९२ | १८-०७-२०९३ |
| बुध | १८-०७-२०९३ | १८-०७-२०९४ |
| शुक्र | १८-०७-२०९४ | १८-०७-२०९५ |
| शनि | १८-०७-२०९५ | १८-०७-२०९६ |
| राहु | १८-०७-२०९६ | १८-०७-२०९७ |

सूर्य (१०व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | १८-०७-२०९७ | १९-०३-२०९९ |
| मंगल | १९-०३-२०९९ | १७-११-२१०० |
| चन्द्र | १७-११-२१०० | १८-११-२१०१ |
| बुध | १८-११-२१०१ | १८-११-२१०२ |
| शुक्र | १८-११-२१०२ | १८-११-२१०३ |
| शनि | १८-११-२१०३ | १७-११-२१०४ |
| राहु | १७-११-२१०४ | १८-११-२१०५ |
| गुरु | १८-११-२१०५ | १९-०७-२१०७ |

मंगल (१०व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | १९-०७-२१०७ | १९-०३-२१०९ |
| चन्द्र | १९-०३-२१०९ | १९-०३-२११० |
| बुध | १९-०३-२११० | १९-०३-२१११ |
| शुक्र | १९-०३-२१११ | १९-०३-२११२ |
| शनि | १९-०३-२११२ | १९-०३-२११३ |
| राहु | १९-०३-२११३ | १९-०३-२११४ |
| गुरु | १९-०३-२११४ | १८-११-२११५ |
| सूर्य | १८-११-२११५ | १९-०७-२११७ |

चन्द्र (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | १९-०७-२११७ | २३-०२-२११८ |
| बुध | २३-०२-२११८ | ३०-०९-२११८ |
| शुक्र | ३०-०९-२११८ | ०७-०५-२११९ |
| शनि | ०७-०५-२११९ | १२-१२-२११९ |
| राहु | १२-१२-२११९ | १८-०७-२१२० |
| गुरु | १८-०७-२१२० | १९-०७-२१२१ |
| सूर्य | १९-०७-२१२१ | १९-०७-२१२२ |
| मंगल | १९-०७-२१२२ | १९-०७-२१२३ |

बुध (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | १९-०७-२१२३ | २३-०२-२१२४ |
| शुक्र | २३-०२-२१२४ | २९-०९-२१२४ |
| शनि | २९-०९-२१२४ | ०७-०५-२१२५ |
| राहु | ०७-०५-२१२५ | १२-१२-२१२५ |
| गुरु | १२-१२-२१२५ | १२-१२-२१२६ |
| सूर्य | १२-१२-२१२६ | १२-१२-२१२७ |
| मंगल | १२-१२-२१२७ | ११-१२-२१२८ |
| चन्द्र | ११-१२-२१२८ | १९-०७-२१२९ |

शुक्र (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | १९-०७-२१२९ | २३-०२-२१३० |
| शनि | २३-०२-२१३० | ३०-०९-२१३० |
| राहु | ३०-०९-२१३० | ०७-०५-२१३१ |
| गुरु | ०७-०५-२१३१ | ०६-०५-२१३२ |
| सूर्य | ०६-०५-२१३२ | ०७-०५-२१३३ |
| मंगल | ०७-०५-२१३३ | ०७-०५-२१३४ |
| चन्द्र | ०७-०५-२१३४ | १२-१२-२१३४ |
| बुध | १२-१२-२१३४ | १९-०७-२१३५ |

शनि (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | १९-०७-२१३५ | २३-०२-२१३६ |
| राहु | २३-०२-२१३६ | २९-०९-२१३६ |
| गुरु | २९-०९-२१३६ | ३०-०९-२१३७ |
| सूर्य | ३०-०९-२१३७ | ३०-०९-२१३८ |
| मंगल | ३०-०९-२१३८ | ३०-०९-२१३९ |
| चन्द्र | ३०-०९-२१३९ | ०६-०५-२१४० |
| बुध | ०६-०५-२१४० | ११-१२-२१४० |
| शुक्र | ११-१२-२१४० | १८-०७-२१४१ |



षट्त्रिंशत्समा महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : गुरु १व ११म ४दि
 जन्मकालीन दशा : गु-ल-ल-ल-ल

गुरु (३व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | | |
| मंगल | | |
| बुध | | |
| शनि | 02-10-2014 | 12-03-2015 |
| शुक्र | 12-03-2015 | 11-10-2015 |
| राहु | 11-10-2015 | 10-06-2016 |
| चन्द्र | 10-06-2016 | 11-07-2016 |
| सूर्य | 11-07-2016 | 10-09-2016 |

मंगल (४व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 10-09-2016 | 19-02-2017 |
| बुध | 19-02-2017 | 10-09-2017 |
| शनि | 10-09-2017 | 12-05-2018 |
| शुक्र | 12-05-2018 | 20-02-2019 |
| राहु | 20-02-2019 | 10-01-2020 |
| चन्द्र | 10-01-2020 | 20-02-2020 |
| सूर्य | 20-02-2020 | 11-05-2020 |
| गुरु | 11-05-2020 | 10-09-2020 |

बुध (५व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 10-09-2020 | 21-05-2021 |
| शनि | 21-05-2021 | 22-03-2022 |
| शुक्र | 22-03-2022 | 12-03-2023 |
| राहु | 12-03-2023 | 21-04-2024 |
| चन्द्र | 21-04-2024 | 10-06-2024 |
| सूर्य | 10-06-2024 | 20-09-2024 |
| गुरु | 20-09-2024 | 19-02-2025 |
| मंगल | 19-02-2025 | 10-09-2025 |

शनि (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 10-09-2025 | 10-09-2026 |
| शुक्र | 10-09-2026 | 10-11-2027 |
| राहु | 10-11-2027 | 11-03-2029 |
| चन्द्र | 11-03-2029 | 11-05-2029 |
| सूर्य | 11-05-2029 | 10-09-2029 |
| गुरु | 10-09-2029 | 12-03-2030 |
| मंगल | 12-03-2030 | 10-11-2030 |
| बुध | 10-11-2030 | 10-09-2031 |

शुक्र (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | 10-09-2031 | 20-01-2033 |
| राहु | 20-01-2033 | 11-08-2034 |
| चन्द्र | 11-08-2034 | 21-10-2034 |
| सूर्य | 21-10-2034 | 12-03-2035 |
| गुरु | 12-03-2035 | 11-10-2035 |
| मंगल | 11-10-2035 | 21-07-2036 |
| बुध | 21-07-2036 | 11-07-2037 |
| शनि | 11-07-2037 | 10-09-2038 |

राहु (८व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | 10-09-2038 | 20-06-2040 |
| चन्द्र | 20-06-2040 | 10-09-2040 |
| सूर्य | 10-09-2040 | 19-02-2041 |
| गुरु | 19-02-2041 | 20-10-2041 |
| मंगल | 20-10-2041 | 10-09-2042 |
| बुध | 10-09-2042 | 21-10-2043 |
| शनि | 21-10-2043 | 19-02-2045 |
| शुक्र | 19-02-2045 | 10-09-2046 |

चन्द्र (१व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 10-09-2046 | 20-09-2046 |
| सूर्य | 20-09-2046 | 10-10-2046 |
| गुरु | 10-10-2046 | 10-11-2046 |
| मंगल | 10-11-2046 | 20-12-2046 |
| बुध | 20-12-2046 | 09-02-2047 |
| शनि | 09-02-2047 | 11-04-2047 |
| शुक्र | 11-04-2047 | 21-06-2047 |
| राहु | 21-06-2047 | 10-09-2047 |

सूर्य (२व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | 10-09-2047 | 21-10-2047 |
| गुरु | 21-10-2047 | 21-12-2047 |
| मंगल | 21-12-2047 | 11-03-2048 |
| बुध | 11-03-2048 | 20-06-2048 |
| शनि | 20-06-2048 | 20-10-2048 |
| शुक्र | 20-10-2048 | 11-03-2049 |
| राहु | 11-03-2049 | 20-08-2049 |
| चन्द्र | 20-08-2049 | 10-09-2049 |

गुरु (३व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | 10-09-2049 | 10-12-2049 |
| मंगल | 10-12-2049 | 11-04-2050 |
| बुध | 11-04-2050 | 10-09-2050 |
| शनि | 10-09-2050 | 12-03-2051 |
| शुक्र | 12-03-2051 | 11-10-2051 |
| राहु | 11-10-2051 | 10-06-2052 |
| चन्द्र | 10-06-2052 | 11-07-2052 |
| सूर्य | 11-07-2052 | 09-09-2052 |



षट्त्रिंशत्समा महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : गुरु १व ११म ८दि
 भोग्य दशा : गु-ल-ल-ल-ल

मंगल (4व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 09-09-2052 | 19-02-2053 |
| बुध | 19-02-2053 | 10-09-2053 |
| शनि | 10-09-2053 | 11-05-2054 |
| शुक्र | 11-05-2054 | 19-02-2055 |
| राहु | 19-02-2055 | 10-01-2056 |
| चन्द्र | 10-01-2056 | 20-02-2056 |
| सूर्य | 20-02-2056 | 11-05-2056 |
| गुरु | 11-05-2056 | 09-09-2056 |

बुध (5व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 09-09-2056 | 21-05-2057 |
| शनि | 21-05-2057 | 21-03-2058 |
| शुक्र | 21-03-2058 | 12-03-2059 |
| राहु | 12-03-2059 | 20-04-2060 |
| चन्द्र | 20-04-2060 | 10-06-2060 |
| सूर्य | 10-06-2060 | 20-09-2060 |
| गुरु | 20-09-2060 | 19-02-2061 |
| मंगल | 19-02-2061 | 10-09-2061 |

शनि (6व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 10-09-2061 | 10-09-2062 |
| शुक्र | 10-09-2062 | 10-11-2063 |
| राहु | 10-11-2063 | 11-03-2065 |
| चन्द्र | 11-03-2065 | 11-05-2065 |
| सूर्य | 11-05-2065 | 10-09-2065 |
| गुरु | 10-09-2065 | 11-03-2066 |
| मंगल | 11-03-2066 | 10-11-2066 |
| बुध | 10-11-2066 | 10-09-2067 |

शुक्र (7व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | 10-09-2067 | 19-01-2069 |
| राहु | 19-01-2069 | 10-08-2070 |
| चन्द्र | 10-08-2070 | 20-10-2070 |
| सूर्य | 20-10-2070 | 11-03-2071 |
| गुरु | 11-03-2071 | 11-10-2071 |
| मंगल | 11-10-2071 | 21-07-2072 |
| बुध | 21-07-2072 | 11-07-2073 |
| शनि | 11-07-2073 | 10-09-2074 |

राहु (8व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | 10-09-2074 | 20-06-2076 |
| चन्द्र | 20-06-2076 | 09-09-2076 |
| सूर्य | 09-09-2076 | 19-02-2077 |
| गुरु | 19-02-2077 | 20-10-2077 |
| मंगल | 20-10-2077 | 10-09-2078 |
| बुध | 10-09-2078 | 21-10-2079 |
| शनि | 21-10-2079 | 19-02-2081 |
| शुक्र | 19-02-2081 | 10-09-2082 |

चन्द्र (1व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 10-09-2082 | 20-09-2082 |
| सूर्य | 20-09-2082 | 10-10-2082 |
| गुरु | 10-10-2082 | 10-11-2082 |
| मंगल | 10-11-2082 | 20-12-2082 |
| बुध | 20-12-2082 | 09-02-2083 |
| शनि | 09-02-2083 | 11-04-2083 |
| शुक्र | 11-04-2083 | 21-06-2083 |
| राहु | 21-06-2083 | 10-09-2083 |

सूर्य (2व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | 10-09-2083 | 21-10-2083 |
| गुरु | 21-10-2083 | 20-12-2083 |
| मंगल | 20-12-2083 | 11-03-2084 |
| बुध | 11-03-2084 | 20-06-2084 |
| शनि | 20-06-2084 | 20-10-2084 |
| शुक्र | 20-10-2084 | 11-03-2085 |
| राहु | 11-03-2085 | 20-08-2085 |
| चन्द्र | 20-08-2085 | 09-09-2085 |

गुरु (3व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | 09-09-2085 | 10-12-2085 |
| मंगल | 10-12-2085 | 11-04-2086 |
| बुध | 11-04-2086 | 10-09-2086 |
| शनि | 10-09-2086 | 11-03-2087 |
| शुक्र | 11-03-2087 | 10-10-2087 |
| राहु | 10-10-2087 | 10-06-2088 |
| चन्द्र | 10-06-2088 | 10-07-2088 |
| सूर्य | 10-07-2088 | 09-09-2088 |

मंगल (4व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 09-09-2088 | 19-02-2089 |
| बुध | 19-02-2089 | 09-09-2089 |
| शनि | 09-09-2089 | 11-05-2090 |
| शुक्र | 11-05-2090 | 19-02-2091 |
| राहु | 19-02-2091 | 10-01-2092 |
| चन्द्र | 10-01-2092 | 19-02-2092 |
| सूर्य | 19-02-2092 | 10-05-2092 |
| गुरु | 10-05-2092 | 09-09-2092 |



षट्त्रिंशत्समा महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : गुरु १व ११उ ४क
जन्मकालीन दशा : गु-ल-ल-ल-ल

बुध (५व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | ०९-०९-२०९२ | २१-०५-२०९३ |
| शनि | २१-०५-२०९३ | २१-०३-२०९४ |
| शुक्र | २१-०३-२०९४ | ११-०३-२०९५ |
| राहु | ११-०३-२०९५ | २०-०४-२०९६ |
| चन्द्र | २०-०४-२०९६ | १०-०६-२०९६ |
| सूर्य | १०-०६-२०९६ | १९-०९-२०९६ |
| गुरु | १९-०९-२०९६ | १८-०२-२०९७ |
| मंगल | १८-०२-२०९७ | ०९-०९-२०९७ |

शनि (६व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | ०९-०९-२०९७ | १०-०९-२०९८ |
| शुक्र | १०-०९-२०९८ | १०-११-२०९९ |
| राहु | १०-११-२०९९ | १२-०३-२१०१ |
| चन्द्र | १२-०३-२१०१ | १२-०५-२१०१ |
| सूर्य | १२-०५-२१०१ | १०-०९-२१०१ |
| गुरु | १०-०९-२१०१ | १२-०३-२१०२ |
| मंगल | १२-०३-२१०२ | १०-११-२१०२ |
| बुध | १०-११-२१०२ | ११-०९-२१०३ |

शुक्र (७व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | ११-०९-२१०३ | २०-०१-२१०५ |
| राहु | २०-०१-२१०५ | ११-०८-२१०६ |
| चन्द्र | ११-०८-२१०६ | २१-१०-२१०६ |
| सूर्य | २१-१०-२१०६ | १२-०३-२१०७ |
| गुरु | १२-०३-२१०७ | ११-१०-२१०७ |
| मंगल | ११-१०-२१०७ | २१-०७-२१०८ |
| बुध | २१-०७-२१०८ | ११-०७-२१०९ |
| शनि | ११-०७-२१०९ | ११-०९-२१०९ |

राहु (८व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| राहु | ११-०९-२११० | २१-०६-२११२ |
| चन्द्र | २१-०६-२११२ | १०-०९-२११२ |
| सूर्य | १०-०९-२११२ | १९-०२-२११३ |
| गुरु | १९-०२-२११३ | २१-१०-२११३ |
| मंगल | २१-१०-२११३ | ११-०९-२११४ |
| बुध | ११-०९-२११४ | २१-१०-२११५ |
| शनि | २१-१०-२११५ | १९-०२-२११७ |
| शुक्र | १९-०२-२११७ | १०-०९-२११८ |

चन्द्र (१व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | १०-०९-२११८ | २१-०९-२११८ |
| सूर्य | २१-०९-२११८ | ११-१०-२११८ |
| गुरु | ११-१०-२११८ | १०-११-२११८ |
| मंगल | १०-११-२११८ | २१-१२-२११८ |
| बुध | २१-१२-२११८ | १०-०२-२११९ |
| शनि | १०-०२-२११९ | १२-०४-२११९ |
| शुक्र | १२-०४-२११९ | २२-०६-२११९ |
| राहु | २२-०६-२११९ | ११-०९-२११९ |

सूर्य (२व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | ११-०९-२११९ | २१-१०-२११९ |
| गुरु | २१-१०-२११९ | २१-१२-२११९ |
| मंगल | २१-१२-२११९ | ११-०३-२१२० |
| बुध | ११-०३-२१२० | २१-०६-२१२० |
| शनि | २१-०६-२१२० | २१-१०-२१२० |
| शुक्र | २१-१०-२१२० | १२-०३-२१२१ |
| राहु | १२-०३-२१२१ | २१-०८-२१२१ |
| चन्द्र | २१-०८-२१२१ | १०-०९-२१२१ |

गुरु (३व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | १०-०९-२१२१ | ११-१२-२१२१ |
| मंगल | ११-१२-२१२१ | ११-०४-२१२२ |
| बुध | ११-०४-२१२२ | १०-०९-२१२२ |
| शनि | १०-०९-२१२२ | १२-०३-२१२३ |
| शुक्र | १२-०३-२१२३ | ११-१०-२१२३ |
| राहु | ११-१०-२१२३ | ११-०६-२१२४ |
| चन्द्र | ११-०६-२१२४ | ११-०७-२१२४ |
| सूर्य | ११-०७-२१२४ | १०-०९-२१२४ |

मंगल (४व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | १०-०९-२१२४ | १९-०२-२१२५ |
| बुध | १९-०२-२१२५ | १०-०९-२१२५ |
| शनि | १०-०९-२१२५ | १२-०५-२१२६ |
| शुक्र | १२-०५-२१२६ | २०-०२-२१२७ |
| राहु | २०-०२-२१२७ | १०-०१-२१२८ |
| चन्द्र | १०-०१-२१२८ | २०-०२-२१२८ |
| सूर्य | २०-०२-२१२८ | ११-०५-२१२८ |
| गुरु | ११-०५-२१२८ | १०-०९-२१२८ |

बुध (५व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | १०-०९-२१२८ | २२-०५-२१२९ |
| शनि | २२-०५-२१२९ | २२-०३-२१३० |
| शुक्र | २२-०३-२१३० | १२-०३-२१३१ |
| राहु | १२-०३-२१३१ | २१-०४-२१३२ |
| चन्द्र | २१-०४-२१३२ | ११-०६-२१३२ |
| सूर्य | ११-०६-२१३२ | २०-०९-२१३२ |
| गुरु | २०-०९-२१३२ | १९-०२-२१३३ |
| मंगल | १९-०२-२१३३ | १०-०९-२१३३ |



पंचोत्तरी महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : शुक्र 10व 4म 3दि
जन्मकालीन दशा : शु-ल-ल-ल-ल

शुक्र (16व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | | |
| चन्द्र | | |
| गुरु | 02-10-2014 | 14-11-2016 |
| सूर्य | 14-11-2016 | 12-09-2018 |
| बुध | 12-09-2018 | 05-09-2020 |
| शनि | 05-09-2020 | 24-10-2022 |
| मंगल | 24-10-2022 | 05-02-2025 |

चन्द्र (17व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 05-02-2025 | 07-11-2027 |
| गुरु | 07-11-2027 | 07-10-2030 |
| सूर्य | 07-10-2030 | 15-09-2032 |
| बुध | 15-09-2032 | 24-10-2034 |
| शनि | 24-10-2034 | 29-01-2037 |
| मंगल | 29-01-2037 | 05-07-2039 |
| शुक्र | 05-07-2039 | 05-02-2042 |

गुरु (18व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | 05-02-2042 | 08-03-2045 |
| सूर्य | 08-03-2045 | 29-03-2047 |
| बुध | 29-03-2047 | 20-06-2049 |
| शनि | 20-06-2049 | 14-11-2051 |
| मंगल | 14-11-2051 | 10-06-2054 |
| शुक्र | 10-06-2054 | 08-03-2057 |
| चन्द्र | 08-03-2057 | 05-02-2060 |

सूर्य (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | 05-02-2060 | 20-06-2061 |
| बुध | 20-06-2061 | 15-12-2062 |
| शनि | 15-12-2062 | 21-07-2064 |
| मंगल | 21-07-2064 | 08-04-2066 |
| शुक्र | 08-04-2066 | 05-02-2068 |
| चन्द्र | 05-02-2068 | 15-01-2070 |
| गुरु | 15-01-2070 | 05-02-2072 |

बुध (13व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 05-02-2072 | 15-09-2073 |
| शनि | 15-09-2073 | 10-06-2075 |
| मंगल | 10-06-2075 | 19-04-2077 |
| शुक्र | 19-04-2077 | 12-04-2079 |
| चन्द्र | 12-04-2079 | 20-05-2081 |
| गुरु | 20-05-2081 | 12-08-2083 |
| सूर्य | 12-08-2083 | 04-02-2085 |

शनि (14व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 04-02-2085 | 18-12-2086 |
| मंगल | 18-12-2086 | 18-12-2088 |
| शुक्र | 18-12-2088 | 05-02-2091 |
| चन्द्र | 05-02-2091 | 13-05-2093 |
| गुरु | 13-05-2093 | 06-10-2095 |
| सूर्य | 06-10-2095 | 13-05-2097 |
| बुध | 13-05-2097 | 05-02-2099 |

मंगल (15व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 05-02-2099 | 30-03-2101 |
| शुक्र | 30-03-2101 | 12-07-2103 |
| चन्द्र | 12-07-2103 | 15-12-2105 |
| गुरु | 15-12-2105 | 12-07-2108 |
| सूर्य | 12-07-2108 | 30-03-2110 |
| बुध | 30-03-2110 | 06-02-2112 |
| शनि | 06-02-2112 | 06-02-2114 |

शुक्र (16व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | 06-02-2114 | 15-07-2116 |
| चन्द्र | 15-07-2116 | 16-02-2119 |
| गुरु | 16-02-2119 | 14-11-2121 |
| सूर्य | 14-11-2121 | 13-09-2123 |
| बुध | 13-09-2123 | 05-09-2125 |
| शनि | 05-09-2125 | 25-10-2127 |
| मंगल | 25-10-2127 | 05-02-2130 |

चन्द्र (17व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 05-02-2130 | 07-11-2132 |
| गुरु | 07-11-2132 | 07-10-2135 |
| सूर्य | 07-10-2135 | 16-09-2137 |
| बुध | 16-09-2137 | 24-10-2139 |
| शनि | 24-10-2139 | 29-01-2142 |
| मंगल | 29-01-2142 | 04-07-2144 |
| शुक्र | 04-07-2144 | 05-02-2147 |



शताब्दीका महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : सूर्य ३व २म २४दि
 जन्मकालीन दशा : सू-ल-ल-ल-ल

सूर्य (५व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | | |
| चन्द्र | | |
| शुक्र | | |
| बुध | | |
| गुरु | 02-10-2014 | 27-06-2015 |
| मंगल | 27-06-2015 | 26-06-2016 |
| शनि | 26-06-2016 | 26-12-2017 |

चन्द्र (५व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 26-12-2017 | 27-03-2018 |
| शुक्र | 27-03-2018 | 26-09-2018 |
| बुध | 26-09-2018 | 28-03-2019 |
| गुरु | 28-03-2019 | 27-03-2020 |
| मंगल | 27-03-2020 | 27-03-2021 |
| शनि | 27-03-2021 | 26-09-2022 |
| सूर्य | 26-09-2022 | 26-12-2022 |

शुक्र (१०व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शुक्र | 26-12-2022 | 27-12-2023 |
| बुध | 27-12-2023 | 26-12-2024 |
| गुरु | 26-12-2024 | 26-12-2026 |
| मंगल | 26-12-2026 | 26-12-2028 |
| शनि | 26-12-2028 | 26-12-2031 |
| सूर्य | 26-12-2031 | 26-06-2032 |
| चन्द्र | 26-06-2032 | 26-12-2032 |

बुध (१०व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 26-12-2032 | 26-12-2033 |
| गुरु | 26-12-2033 | 26-12-2035 |
| मंगल | 26-12-2035 | 26-12-2037 |
| शनि | 26-12-2037 | 26-12-2040 |
| सूर्य | 26-12-2040 | 26-06-2041 |
| चन्द्र | 26-06-2041 | 26-12-2041 |
| शुक्र | 26-12-2041 | 26-12-2042 |

गुरु (२०व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| गुरु | 26-12-2042 | 26-12-2046 |
| मंगल | 26-12-2046 | 26-12-2050 |
| शनि | 26-12-2050 | 26-12-2056 |
| सूर्य | 26-12-2056 | 26-12-2057 |
| चन्द्र | 26-12-2057 | 26-12-2058 |
| शुक्र | 26-12-2058 | 26-12-2060 |
| बुध | 26-12-2060 | 26-12-2062 |

मंगल (२०व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| मंगल | 26-12-2062 | 26-12-2066 |
| शनि | 26-12-2066 | 25-12-2072 |
| सूर्य | 25-12-2072 | 26-12-2073 |
| चन्द्र | 26-12-2073 | 26-12-2074 |
| शुक्र | 26-12-2074 | 25-12-2076 |
| बुध | 25-12-2076 | 26-12-2078 |
| गुरु | 26-12-2078 | 26-12-2082 |

शनि (३०व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| शनि | 26-12-2082 | 26-12-2091 |
| सूर्य | 26-12-2091 | 26-06-2093 |
| चन्द्र | 26-06-2093 | 26-12-2094 |
| शुक्र | 26-12-2094 | 25-12-2097 |
| बुध | 25-12-2097 | 26-12-2100 |
| गुरु | 26-12-2100 | 27-12-2106 |
| मंगल | 27-12-2106 | 26-12-2112 |

सूर्य (५व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | 26-12-2112 | 27-03-2113 |
| चन्द्र | 27-03-2113 | 27-06-2113 |
| शुक्र | 27-06-2113 | 26-12-2113 |
| बुध | 26-12-2113 | 27-06-2114 |
| गुरु | 27-06-2114 | 27-06-2115 |
| मंगल | 27-06-2115 | 26-06-2116 |
| शनि | 26-06-2116 | 26-12-2117 |

चन्द्र (५व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 26-12-2117 | 28-03-2118 |
| शुक्र | 28-03-2118 | 26-09-2118 |
| बुध | 26-09-2118 | 28-03-2119 |
| गुरु | 28-03-2119 | 27-03-2120 |
| मंगल | 27-03-2120 | 27-03-2121 |
| शनि | 27-03-2121 | 26-09-2122 |
| सूर्य | 26-09-2122 | 27-12-2122 |



चतुर्शीतिसमा महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : शनि ७व ९म ४दि
 जन्मकालीन दशा : श-ल-ल-ल-ल

शनि (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| शनि | | |
| सूर्य | | |
| चन्द्र 02-10-2014 | 28-08-2015 | |
| मंगल 28-08-2015 | 15-05-2017 | |
| बुध 15-05-2017 | 31-01-2019 | |
| गुरु 31-01-2019 | 18-10-2020 | |
| शुक्र 18-10-2020 | 06-07-2022 | |

सूर्य (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| सूर्य | 06-07-2022 | 23-03-2024 |
| चन्द्र | 23-03-2024 | 10-12-2025 |
| मंगल | 10-12-2025 | 28-08-2027 |
| बुध | 28-08-2027 | 15-05-2029 |
| गुरु | 15-05-2029 | 31-01-2031 |
| शुक्र | 31-01-2031 | 18-10-2032 |
| शनि | 18-10-2032 | 06-07-2034 |

चन्द्र (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| चन्द्र | 06-07-2034 | 23-03-2036 |
| मंगल | 23-03-2036 | 09-12-2037 |
| बुध | 09-12-2037 | 28-08-2039 |
| गुरु | 28-08-2039 | 15-05-2041 |
| शुक्र | 15-05-2041 | 31-01-2043 |
| शनि | 31-01-2043 | 18-10-2044 |
| सूर्य | 18-10-2044 | 06-07-2046 |

मंगल (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| मंगल 06-07-2046 | 23-03-2048 | |
| बुध 23-03-2048 | 09-12-2049 | |
| गुरु 09-12-2049 | 27-08-2051 | |
| शुक्र 27-08-2051 | 15-05-2053 | |
| शनि 15-05-2053 | 31-01-2055 | |
| सूर्य 31-01-2055 | 18-10-2056 | |
| चन्द्र 18-10-2056 | 06-07-2058 | |

बुध (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|--------|------------|------------|
| बुध | 06-07-2058 | 23-03-2060 |
| गुरु | 23-03-2060 | 09-12-2061 |
| शुक्र | 09-12-2061 | 27-08-2063 |
| शनि | 27-08-2063 | 15-05-2065 |
| सूर्य | 15-05-2065 | 31-01-2067 |
| चन्द्र | 31-01-2067 | 18-10-2068 |
| मंगल | 18-10-2068 | 06-07-2070 |

गुरु (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| गुरु 06-07-2070 | 23-03-2072 | |
| शुक्र 23-03-2072 | 09-12-2073 | |
| शनि 09-12-2073 | 27-08-2075 | |
| सूर्य 27-08-2075 | 14-05-2077 | |
| चन्द्र 14-05-2077 | 31-01-2079 | |
| मंगल 31-01-2079 | 18-10-2080 | |
| बुध 18-10-2080 | 06-07-2082 | |

शुक्र (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| शुक्र 06-07-2082 | 23-03-2084 | |
| शनि 23-03-2084 | 09-12-2085 | |
| सूर्य 09-12-2085 | 27-08-2087 | |
| चन्द्र 27-08-2087 | 14-05-2089 | |
| मंगल 14-05-2089 | 30-01-2091 | |
| बुध 30-01-2091 | 18-10-2092 | |
| गुरु 18-10-2092 | 06-07-2094 | |

शनि (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| शनि 06-07-2094 | 23-03-2096 | |
| सूर्य 23-03-2096 | 09-12-2097 | |
| चन्द्र 09-12-2097 | 27-08-2099 | |
| मंगल 27-08-2099 | 15-05-2101 | |
| बुध 15-05-2101 | 31-01-2103 | |
| गुरु 31-01-2103 | 18-10-2104 | |
| शुक्र 18-10-2104 | 07-07-2106 | |

सूर्य (12व)

| अन्तर | आरम्भ | अन्त |
|-------------------|------------|------|
| सूर्य 07-07-2106 | 24-03-2108 | |
| चन्द्र 24-03-2108 | 10-12-2109 | |
| मंगल 10-12-2109 | 28-08-2111 | |
| बुध 28-08-2111 | 15-05-2113 | |
| गुरु 15-05-2113 | 31-01-2115 | |
| शुक्र 31-01-2115 | 18-10-2116 | |
| शनि 18-10-2116 | 07-07-2118 | |



शनि की साढ़ेसाती का विचार

ज्योतिष तत्व प्रकाश के अनुसार -

**द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।
सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुःखैर्युतो भवेत्॥**

जन्म राशि (चन्द्र राशि) से गोचर में जब शनि द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थानों में भ्रमण करता है, तो साढ़े-सात वर्ष के समय को शनि की साढ़ेसाती कहते हैं।

आपकी जन्म राशि मकर है, अतः शनि जब धनु मकर व कुंभ राशि में भ्रमण करेगा तो शनि की साढ़ेसाती कहलायेगी।

एक साढ़ेसाती तीन दैया से मिलकर बनती है। क्योंकि शनि एक राशि में लगभग ढाई वर्षों तक चलता है।

प्रायः जीवन में तीन बार साढ़ेसाती आती है।

निम्नलिखित सारणी में प्रत्येक साढ़ेसाती के प्रारम्भ और समाप्ति का समय दर्शाया जा रहा है।

| साढ़ेसाती चक्र | शनि का गोचर | प्रारम्भ तिथि | समाप्ति तिथि | अंतराल वर्ष-मास-दिन | अष्टकवर्ग शनि | सर्व |
|--|-------------|---------------|--------------|---------------------|---------------|------|
| प्रथम चक्र की साढ़े साती | | | | | | |
| प्रथम दैया (जन्म राशि से द्वादश) | धनु | 26-01-2017 | 20-06-2017 | 0-4-24 | 4 | 32 |
| | धनु (व) | 26-10-2017 | 24-01-2020 | 2-2-28 | | |
| द्वितीय दैया (जन्म राशि पर) | | | | | | |
| द्वितीय दैया (जन्म राशि पर) | मकर | 24-01-2020 | 29-04-2022 | 2-3-5 | 1 | 20 |
| | मकर (व) | 12-07-2022 | 17-01-2023 | 0-6-5 | | |
| तृतीय दैया (जन्म राशि से द्वितीय) | | | | | | |
| तृतीय दैया (जन्म राशि से द्वितीय) | कुंभ | 29-04-2022 | 12-07-2022 | 0-2-13 | 3 | 33 |
| | कुंभ (व) | 17-01-2023 | 29-03-2025 | 2-2-12 | | |
| द्वितीय चक्र की साढ़ेसाती | | | | | | |
| प्रथम दैया (जन्म राशि से द्वादश) | धनु | 07-12-2046 | 06-03-2049 | 2-2-29 | 4 | 32 |
| | धनु (व) | 09-07-2049 | 04-12-2049 | 0-4-25 | | |
| द्वितीय दैया (जन्म राशि पर) | | | | | | |
| द्वितीय दैया (जन्म राशि पर) | मकर | 06-03-2049 | 09-07-2049 | 0-4-3 | 1 | 20 |
| | मकर (व) | 04-12-2049 | 24-02-2052 | 2-2-20 | | |
| तृतीय दैया (जन्म राशि से द्वितीय) | | | | | | |
| तृतीय दैया (जन्म राशि से द्वितीय) | कुंभ | 24-02-2052 | 14-05-2054 | 2-2-20 | 3 | 33 |
| | कुंभ (व) | 01-09-2054 | 05-02-2055 | 0-5-4 | | |
| तृतीय चक्र की साढ़ेसाती | | | | | | |
| प्रथम दैया (जन्म राशि से द्वादश) | धनु | 16-01-2076 | 10-07-2076 | 0-5-24 | 4 | 32 |
| | धनु (व) | 11-10-2076 | 14-01-2079 | 2-3-3 | | |
| द्वितीय दैया (जन्म राशि पर) | | | | | | |
| द्वितीय दैया (जन्म राशि पर) | मकर | 14-01-2079 | 11-04-2081 | 2-2-27 | 1 | 20 |
| | मकर (व) | 03-08-2081 | 06-01-2082 | 0-5-3 | | |
| तृतीय दैया (जन्म राशि से द्वितीय) | | | | | | |
| तृतीय दैया (जन्म राशि से द्वितीय) | कुंभ | 11-04-2081 | 03-08-2081 | 0-3-22 | 3 | 33 |
| | कुंभ (व) | 06-01-2082 | 19-03-2084 | 2-2-13 | | |

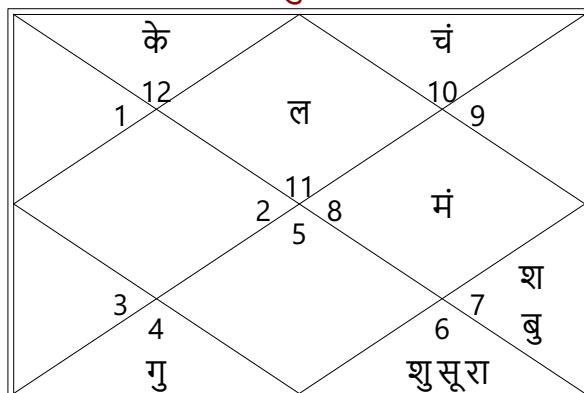


कृष्णमूर्ति पद्धति

2 अक्टूबर 2014 • 18:21 घंटे • Calgary, Alberta, Canada

| ग्रह | व/अ | राशि | अंश | नक्षत्र | चरण | रा.स्वा. | न.स्वा. | न.उप. | उप.उप. |
|----------|-----|---------|----------|--------------|-----|----------|---------|-------|--------|
| लग्न | | कुंभ | 19:20:08 | शतभिषा | 4 | श | रा | मं | रा |
| सूर्य | | कन्या | 14:46:46 | हस्त | 2 | बु | चं | गु | शु |
| चन्द्र | | मकर | 01:28:31 | उत्तराषाढ़ा | 2 | श | सू | गु | श |
| मंगल | | वृश्चिक | 19:07:42 | ज्येष्ठा | 1 | मं | बु | के | श |
| बुध | | तुला | 08:10:54 | स्वाति | 1 | शु | रा | रा | शु |
| गुरु | | कर्क | 22:18:14 | आश्लेषा | 2 | चं | बु | चं | चं |
| शुक्र | (अ) | कन्या | 09:57:16 | उत्तराफालुनी | 4 | बु | सू | शु | के |
| शनि | | तुला | 26:44:37 | विशाखा | 3 | शु | गु | शु | के |
| राहु | | कन्या | 25:19:35 | चित्रा | 1 | बु | मं | रा | रा |
| केतु | | मीन | 25:19:35 | रेवती | 3 | गु | बु | रा | शु |
| यूरेनस | (व) | मीन | 20:44:31 | रेवती | 2 | गु | बु | शु | गु |
| नेपच्यून | (व) | कुंभ | 11:20:31 | शतभिषा | 2 | श | रा | श | शु |
| प्लूटो | | धनु | 17:03:13 | पूर्वाषाढ़ा | 2 | गु | शु | चं | के |

जन्म कुण्डली



कस्प कुण्डली



भाव विवरण

| भाव कस्प | राशि | अंश | नक्षत्र | चरण | रा.स्वा. | न.स्वा. | न.उप. | उप.उप. |
|------------|---------|----------|-------------|-----|----------|---------|-------|--------|
| 1. प्रथम | कुंभ | 19:20:08 | शतभिषा | 4 | श | रा | मं | रा |
| 2. द्वितीय | मेष | 13:01:42 | अश्विनी | 4 | मं | केतु | बु | गु |
| 3. तृतीय | वृष | 10:16:34 | रोहिणी | 1 | शु | चं | चं | रा |
| 4. चतुर्थ | वृष | 29:25:27 | मृगशिरा | 2 | शु | मं | श | रा |
| 5. पंचम | मिथुन | 17:18:08 | आर्द्रा | 4 | बु | रा | शु | बु |
| 6. षष्ठ | कर्क | 09:15:50 | पुष्य | 2 | वं | श | शु | गु |
| 7. सप्तम | सिंह | 19:20:08 | पूर्वफालुनी | 2 | सू | शु | रा | केतु |
| 8. अष्टम | तुला | 13:01:42 | स्वाति | 2 | शु | रा | बु | शु |
| 9. नवम | वृश्चिक | 10:16:34 | अनुराधा | 3 | मं | बु | शु | केतु |
| 10. दशम | वृश्चिक | 29:25:27 | ज्येष्ठा | 4 | मं | बु | श | रा |
| 11. एकादश | धनु | 17:18:08 | पूर्वाषाढ़ा | 2 | गु | शु | चं | शु |
| 12. द्वादश | मकर | 09:15:50 | उत्तराषाढ़ा | 4 | श | सू | शु | सू |



कृष्णमूर्ति पद्धति

भावों के कारक ग्रह

| भाव | भाव स्थित ग्रहों के नक्षत्र में ग्रह | भाव स्थित ग्रह | भाव कस्प स्वामी के नक्षत्र में ग्रह | भाव कस्प स्वामी |
|------------|---|----------------|--|-----------------|
| 1. प्रथम | | के | | श |
| 2. द्वितीय | | | रा | मं |
| 3. तृतीय | | | | शु |
| 4. चतुर्थ | | | | शु |
| 5. पंचम | | | मं, गु, के | बु |
| 6. षष्ठि | श | गु | सू | चं |
| 7. सप्तम | चं, शु, मं, गु, के, बु | सू, बु, शु, रा | चं, शु | सू |
| 8. अष्टम | | श | | शु |
| 9. नवम | रा | मं | रा | मं |
| 10. दशम | | | रा | मं |
| 11. एकादश | सू | चं | श | गु |
| 12. द्वादश | | | | श |

ग्रहों द्वारा अभिसूचित भाव

| ग्रह | ग्रहों से अभिप्राय भाव | | | |
|--------|------------------------|-------------|-----------------|----------------|
| | अत्यधिक बली कारक | बली कारक | सामान्य कारक | निर्बल कारक |
| सूर्य | | 7 | 11 | 6 |
| चन्द्र | | 7 | 11 | 6 |
| मंगल | | 9 | 7 | 2 5 10 |
| बुध | 7 | | | 5 |
| गुरु | | | 6 7 | 5 11 |
| शुक्र | 7 | | | 3 4 8 |
| शनि | | | 6 8 | 1 11 12 |
| राहु | | 9 | 7 | 2 10 |
| केतु | | | 1 7 | 5 |

स्वामी ग्रह

| | | | | | |
|-------------------------|---|-------|---------------|---|---------------------|
| वारेश | : | गुरु | फॉरच्यूना | : | मिथुन 05:03:05 |
| लग्नेश | : | शनि | भोग्य दशा | : | सूर्य 3व.-10म.-1दि. |
| लग्न नक्षत्र स्वामी | : | राहु | के.पी. आयनांश | : | -23:58:05 |
| लग्न नक्षत्र उपस्वामी | : | मंगल | | | |
| चन्द्र राशि स्वामी | : | शनि | | | |
| चन्द्र नक्षत्र स्वामी | : | सूर्य | | | |
| चन्द्र नक्षत्र उपस्वामी | : | गुरु | | | |

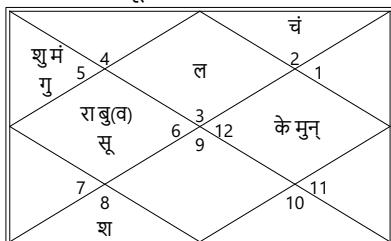
Aumarya



वर्षफल कुण्डलियां - 1

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:1

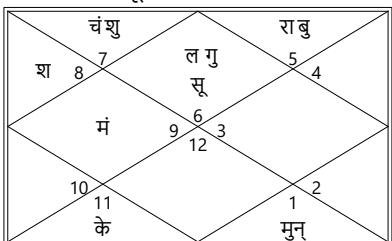
3 अक्टूबर 2015 00:37 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 29:54 | मंगल | 11:01 | शुक्र | 01:40 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 10:11 | शनि | 07:07 |
| चन्द्र | 25:59 | गुरु | 17:13 | राहु | 06:53 |
| वर्षश | बुध | मुन्हा | मीन 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:2

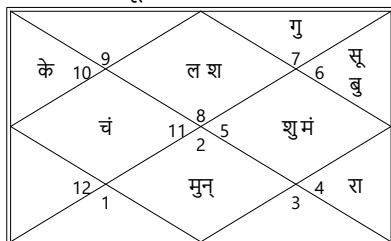
2 अक्टूबर 2016 06:47 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 05:35 | मंगल | 09:20 | शुक्र | 16:46 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 28:36 | शनि | 17:38 |
| चन्द्र | 02:28 | गुरु | 10:52 | राहु | 18:28 |
| वर्षश | शनि | मुन्हा | मेष 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:3

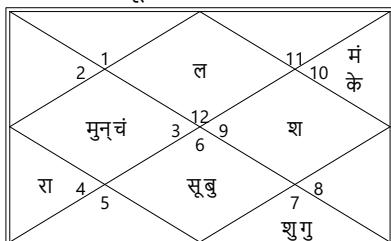
2 अक्टूबर 2017 12:50 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 09:45 | मंगल | 23:15 | शुक्र | 21:30 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 10:53 | शनि | 28:14 |
| चन्द्र | 08:15 | गुरु | 04:14 | राहु | 29:19 |
| वर्षश | बुध | मुन्हा | वृष 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:4

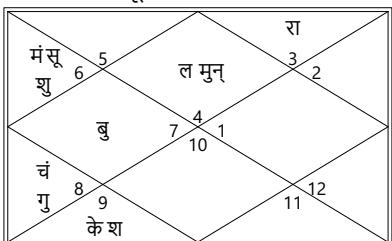
2 अक्टूबर 2018 19:06 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 15:32 | मंगल | 12:38 | शुक्र | 16:34 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 24:42 | शनि | 08:59 |
| चन्द्र | 24:00 | गुरु | 28:20 | राहु | 09:25 |
| वर्षश | बुध | मुन्हा | मिथुन 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:5

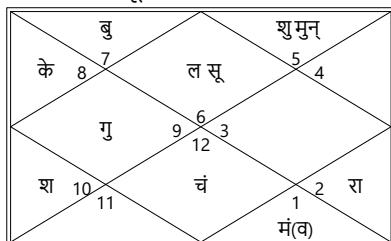
2 अक्टूबर 2019 01:14 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 06:37 | मंगल | 05:18 | शुक्र | 29:08 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 05:48 | शनि | 19:57 |
| चन्द्र | 16:59 | गुरु | 24:22 | राहु | 19:07 |
| वर्षश | मंगल | मुन्हा | कर्क 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:6

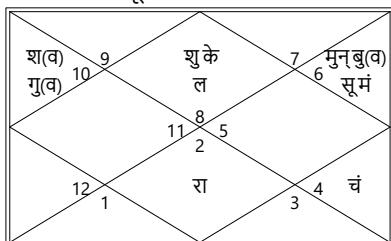
2 अक्टूबर 2020 07:22 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 11:37 | मंगल | 00:28 | शुक्र | 05:29 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 11:18 | शनि | 01:12 |
| चन्द्र | 23:04 | गुरु | 23:52 | राहु | 28:38 |
| वर्षश | शनि | मुन्हा | सिंह 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:7

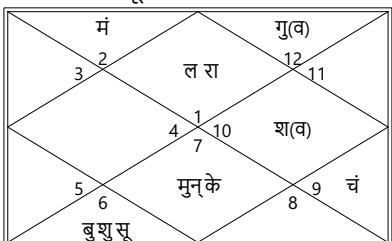
2 अक्टूबर 2021 13:31 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 17:36 | मंगल | 17:25 | शुक्र | 00:42 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 29:25 | शनि | 12:46 |
| चन्द्र | 28:35 | गुरु | 28:34 | राहु | 09:04 |
| वर्षश | बुध | मुन्हा | कन्या 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:8

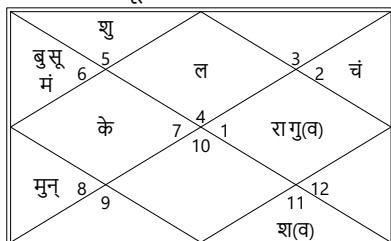
2 अक्टूबर 2022 19:32 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 00:16 | मंगल | 26:36 | शुक्र | 10:29 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 00:04 | शनि | 24:45 |
| चन्द्र | 16:22 | गुरु | 08:41 | राहु | 19:41 |
| वर्षश | शनि | मुन्हा | तुला 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:9

3 अक्टूबर 2023 01:49 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|------------------|-------|-------|
| लग्र | 12:51 | मंगल | 29:52 | शुक्र | 01:09 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 02:53 | शनि | 07:10 |
| चन्द्र | 07:21 | गुरु | 20:02 | राहु | 00:44 |
| वर्षश | मंगल | मुन्हा | वृश्चिक 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:10

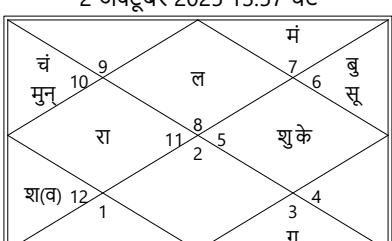
2 अक्टूबर 2024 07:58 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 18:05 | मंगल | 21:28 | शुक्र | 17:19 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 16:59 | शनि | 20:03 |
| चन्द्र | 13:29 | गुरु | 27:03 | राहु | 12:26 |
| वर्षश | बुध | मुन्हा | धनु 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:11

2 अक्टूबर 2025 13:57 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 22:38 | मंगल | 12:53 | शुक्र | 22:06 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 29:51 | शनि | 03:24 |
| चन्द्र | 18:50 | गुरु | 28:27 | राहु | 23:59 |
| वर्षश | बुध | मुन्हा | मकर 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:12

2 अक्टूबर 2026 20:12 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 19:54 | मंगल | 08:40 | शुक्र | 14:15 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 09:10 | शनि | 17:10 |
| चन्द्र | 09:29 | गुरु | 25:43 | राहु | 04:49 |
| वर्षश | गुरु | मुन्हा | कुम्भ 19:14:21 | | |

Aumarya



वर्षफल कुण्डलियां - 2

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:13

3 अक्टूबर 2027 02:21 घंटे



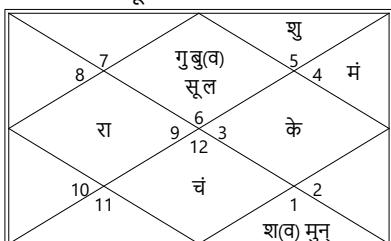
| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 18:40 | मंगल | 26:51 | शुक्र | 29:45 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 09:41 | शनि | 01:18 |
| चन्द्र | 27:44 | गुरु | 20:30 | राहु | 15:14 |
| वर्षश | मंगल | मुन्धा | मीन 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:14

2 अक्टूबर 2028 08:31 घंटे

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:14

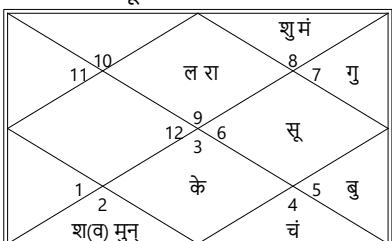
2 अक्टूबर 2028 08:31 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 23:56 | मंगल | 23:04 | शुक्र | 05:57 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 15:19 | शनि | 15:40 |
| चन्द्र | 03:52 | गुरु | 14:04 | राहु | 25:28 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | मेष 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:15

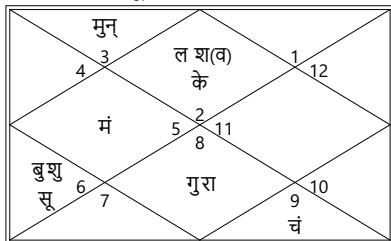
2 अक्टूबर 2029 14:47 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 03:05 | मंगल | 12:21 | शुक्र | 00:58 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 27:54 | शनि | 00:07 |
| चन्द्र | 09:19 | गुरु | 07:30 | राहु | 04:56 |
| वर्षश | गुरु | मुन्धा | वृष 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:16

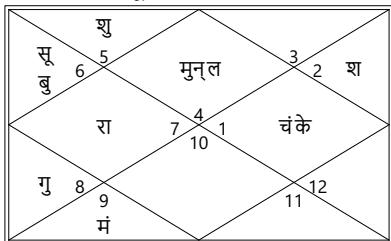
2 अक्टूबर 2030 20:50 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 05:07 | मंगल | 06:09 | शुक्र | 11:07 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 08:43 | शनि | 14:31 |
| चन्द्र | 01:57 | गुरु | 01:48 | राहु | 14:48 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | मिथुन 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:17

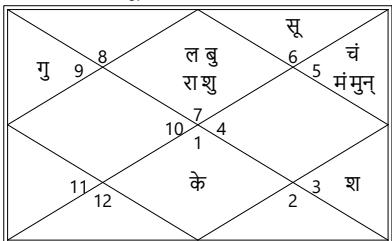
2 अक्टूबर 2031 03:06 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 26:32 | मंगल | 00:40 | शुक्र | 00:42 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 22:46 | शनि | 28:43 |
| चन्द्र | 18:10 | गुरु | 28:14 | राहु | 25:10 |
| वर्षश | शनि | मुन्धा | कर्क 19:14:23 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:18

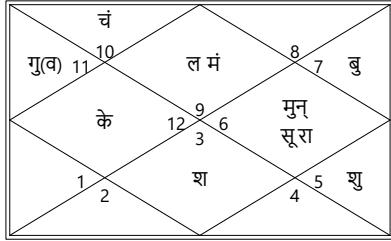
2 अक्टूबर 2032 09:16 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 01:47 | मंगल | 18:32 | शुक्र | 17:53 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 04:23 | शनि | 12:37 |
| चन्द्र | 24:30 | गुरु | 28:20 | राहु | 06:14 |
| वर्षश | शुक्र | मुन्धा | सिंह 19:14:23 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:19

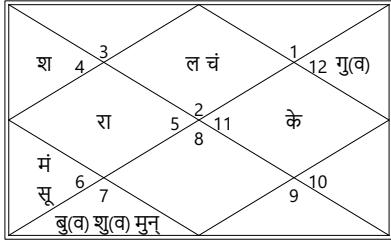
2 अक्टूबर 2033 15:13 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 09:07 | मंगल | 26:39 | शुक्र | 22:42 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 11:07 | शनि | 26:08 |
| चन्द्र | 00:12 | गुरु | 03:49 | राहु | 17:56 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | कन्या 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:20

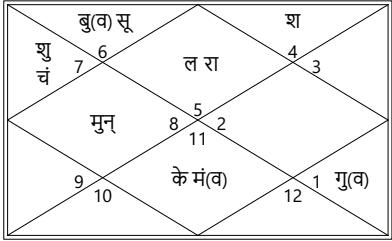
2 अक्टूबर 2034 21:27 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 17:06 | मंगल | 00:36 | शुक्र | 11:40 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 03:13 | शनि | 09:16 |
| चन्द्र | 24:29 | गुरु | 14:25 | राहु | 29:33 |
| वर्षश | शनि | मुन्धा | तुला 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:21

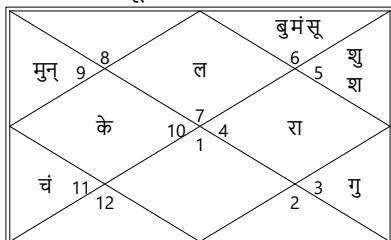
3 अक्टूबर 2035 03:36 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|------------------|-------|-------|
| लग्र | 01:49 | मंगल | 24:20 | शुक्र | 00:23 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 02:43 | शनि | 21:58 |
| चन्द्र | 08:13 | गुरु | 25:25 | राहु | 10:42 |
| वर्षश | मंगल | मुन्धा | वृश्चिक 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:22

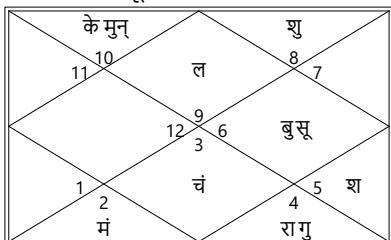
2 अक्टूबर 2036 09:42 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 06:21 | मंगल | 12:39 | शुक्र | 06:25 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 01:05 | शनि | 04:16 |
| चन्द्र | 14:28 | गुरु | 01:39 | राहु | 21:37 |
| वर्षश | शनि | मुन्धा | धनु 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:23

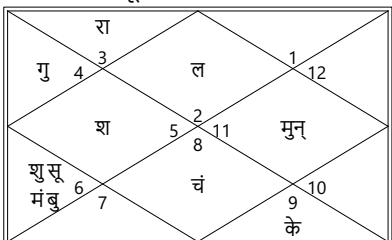
2 अक्टूबर 2037 15:55 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 19:53 | मंगल | 11:09 | शुक्र | 01:13 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 14:51 | शनि | 16:11 |
| चन्द्र | 21:31 | गुरु | 02:24 | राहु | 01:20 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | मकर 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:24

2 अक्टूबर 2038 21:56 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 25:19 | मंगल | 24:56 | शुक्र | 11:45 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 28:06 | शनि | 27:45 |
| चन्द्र | 16:35 | गुरु | 29:15 | राहु | 10:52 |
| वर्षश | शनि | मुन्धा | कुम्भ 19:14:20 | | |

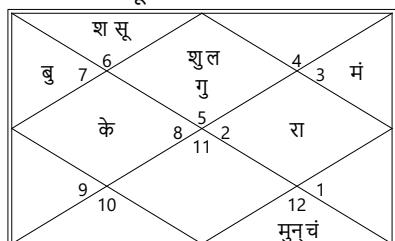
Aumarya



वर्षफल कुण्डलियां - 2

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:25

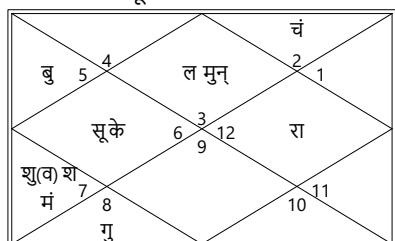
3 अक्टूबर 2039 04:11 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 07:49 | मंगल | 13:14 | शुक्र | 00:21 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 08:06 | शनि | 09:00 |
| चन्द्र | 28:52 | गुरु | 23:49 | राहु | 20:37 |
| वर्षश | गुरु | मुन्धा | मीन 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:28

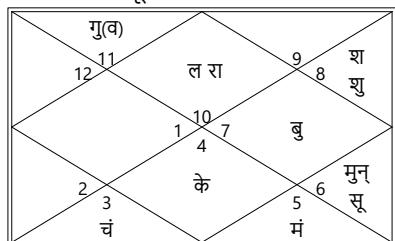
2 अक्टूबर 2042 22:41 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 06:19 | मंगल | 21:16 | शुक्र | 08:51 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 27:52 | शनि | 11:27 |
| चन्द्र | 08:09 | गुरु | 05:19 | राहु | 23:27 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | मिथुन 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:31

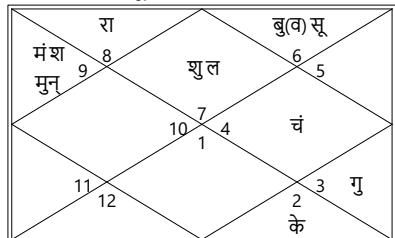
2 अक्टूबर 2045 17:10 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 15:25 | मंगल | 01:09 | शुक्र | 01:27 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 02:52 | शनि | 13:00 |
| चन्द्र | 05:23 | गुरु | 08:59 | राहु | 27:02 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | कन्या 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:34

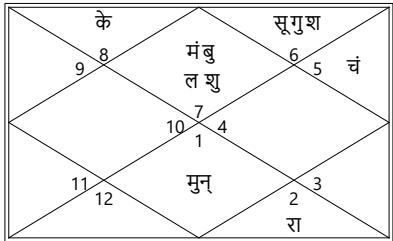
2 अक्टूबर 2048 11:41 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 27:14 | मंगल | 14:53 | शुक्र | 18:58 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 06:25 | शनि | 15:08 |
| चन्द्र | 14:37 | गुरु | 06:03 | राहु | 27:00 |
| वर्षश | शुक्र | मुन्धा | धनु 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:26

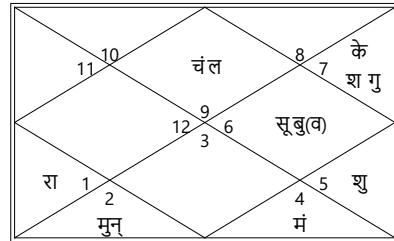
2 अक्टूबर 2040 10:25 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 13:53 | मंगल | 07:43 | शुक्र | 18:25 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 10:42 | शनि | 20:00 |
| चन्द्र | 04:47 | गुरु | 17:19 | राहु | 01:15 |
| वर्षश | शुक्र | मुन्धा | मेष 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:27

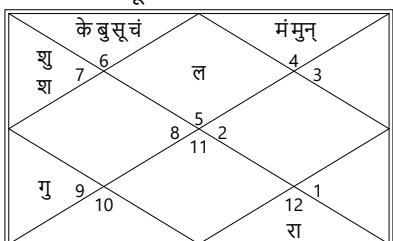
2 अक्टूबर 2041 16:24 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 28:47 | मंगल | 02:26 | शुक्र | 23:19 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 20:38 | शनि | 00:48 |
| चन्द्र | 12:58 | गुरु | 10:48 | राहु | 11:57 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | वृषभ 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:29

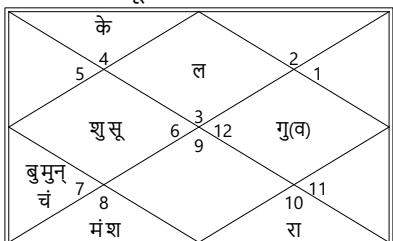
3 अक्टूबर 2043 04:53 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 15:17 | मंगल | 17:40 | शुक्र | 01:00 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 06:35 | शनि | 22:00 |
| चन्द्र | 19:19 | गुरु | 02:06 | राहु | 05:09 |
| वर्षश | शनि | मुन्धा | कर्क 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:32

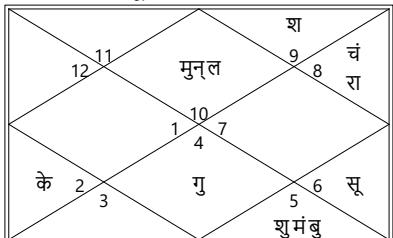
2 अक्टूबर 2046 23:14 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 13:21 | मंगल | 23:00 | शुक्र | 12:23 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 10:38 | शनि | 23:34 |
| चन्द्र | 29:31 | गुरु | 19:57 | राहु | 07:18 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | तुला 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:35

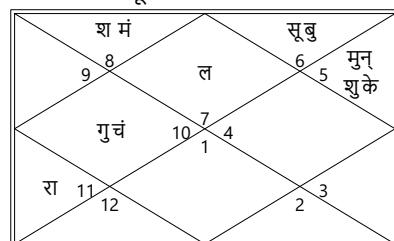
2 अक्टूबर 2049 17:36 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 26:41 | मंगल | 25:54 | शुक्र | 23:55 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 29:34 | शनि | 26:16 |
| चन्द्र | 27:22 | गुरु | 06:14 | राहु | 06:51 |
| वर्षश | शनि | मुन्धा | मकर 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:33

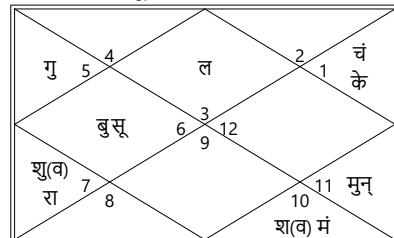
3 अक्टूबर 2047 05:27 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|------------------|-------|-------|
| लग्र | 21:12 | मंगल | 13:45 | शुक्र | 00:04 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 06:12 | शनि | 04:16 |
| चन्द्र | 09:56 | गुरु | 00:33 | राहु | 17:05 |
| वर्षश | शनि | मुन्धा | वृश्चिक 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:36

2 अक्टूबर 2050 23:50 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 20:41 | मंगल | 24:41 | शुक्र | 05:48 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 12:41 | शनि | 07:42 |
| चन्द्र | 20:28 | गुरु | 02:43 | राहु | 17:27 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | कुम्भ 19:14:20 | | |

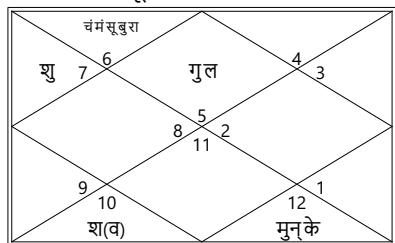
Aumarya



वर्षफल कुण्डलियां - 4

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:37

3 अक्टूबर 2051 06:02 घंटे



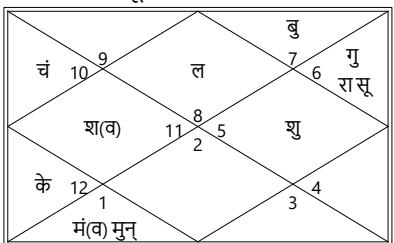
| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 27:24 | मंगल | 07:57 | शुक्र | 01:37 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 26:16 | शनि | 19:31 |
| चन्द्र | 00:45 | गुरु | 27:06 | राहु | 28:55 |
| वर्षश | गुरु | मुन्धा | मीन 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:38

3 अक्टूबर 2052 12:06 घंटे

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:38

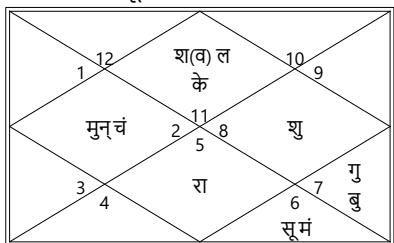
2 अक्टूबर 2052 12:06 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 01:36 | मंगल | 18:03 | शुक्र | 07:22 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 06:54 | शनि | 01:45 |
| चन्द्र | 04:36 | गुरु | 20:32 | राहु | 10:37 |
| वर्षश | शनि | मुन्धा | मेष 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:39

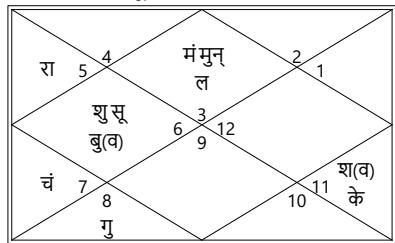
2 अक्टूबर 2053 18:22 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 20:52 | मंगल | 20:07 | शुक्र | 01:39 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 11:12 | शनि | 14:27 |
| चन्द्र | 20:07 | गुरु | 14:06 | राहु | 21:54 |
| वर्षश | शनि | मुन्धा | वृष 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:40

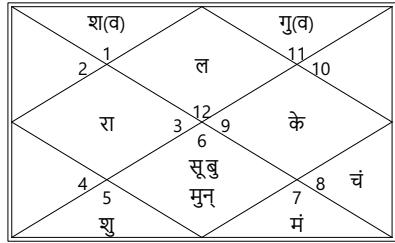
3 अक्टूबर 2054 00:27 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 27:52 | मंगल | 03:19 | शुक्र | 13:02 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 25:40 | शनि | 27:38 |
| चन्द्र | 11:03 | गुरु | 08:49 | राहु | 03:03 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | मिथुन 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:43

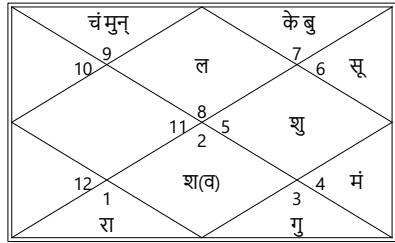
2 अक्टूबर 2057 18:48 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 05:54 | मंगल | 15:52 | शुक्र | 24:32 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 18:43 | शनि | 09:33 |
| चन्द्र | 12:31 | गुरु | 14:22 | राहु | 02:43 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | कन्या 19:14:19 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:46

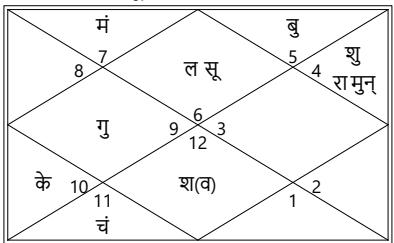
2 अक्टूबर 2060 13:19 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 15:03 | मंगल | 26:02 | शुक्र | 07:51 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 08:24 | शनि | 22:43 |
| चन्द्र | 15:00 | गुरु | 10:32 | राहु | 04:36 |
| वर्षश | शनि | मुन्धा | धनु 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:41

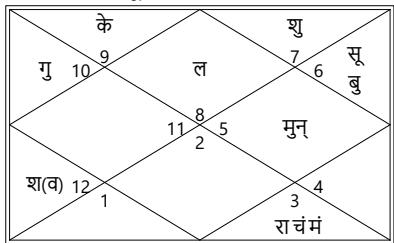
3 अक्टूबर 2055 06:39 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 03:51 | मंगल | 02:40 | शुक्र | 29:50 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 28:40 | शनि | 11:15 |
| चन्द्र | 21:11 | गुरु | 06:01 | राहु | 13:47 |
| वर्षश | शुक्र | मुन्धा | कर्क 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:42

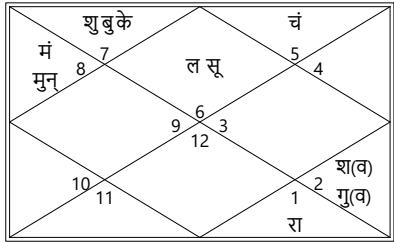
2 अक्टूबर 2056 12:52 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 10:06 | मंगल | 25:38 | शुक्र | 19:30 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 04:31 | शनि | 25:16 |
| चन्द्र | 24:46 | गुरु | 07:23 | राहु | 23:09 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | सिंह 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:45

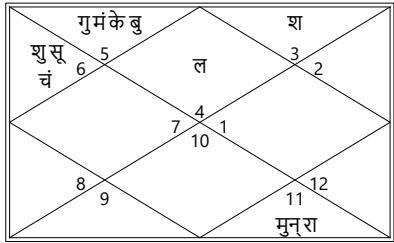
3 अक्टूबर 2059 07:17 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|------------------|-------|-------|
| लग्र | 10:38 | मंगल | 00:07 | शुक्र | 02:14 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 09:55 | शनि | 08:26 |
| चन्द्र | 11:54 | गुरु | 05:49 | राहु | 23:19 |
| वर्षश | मंगल | मुन्धा | वृष्टिक 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:48

3 अक्टूबर 2062 01:38 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 10:48 | मंगल | 08:55 | शुक्र | 13:40 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 28:27 | शनि | 20:26 |
| चन्द्र | 22:31 | गुरु | 06:09 | राहु | 27:35 |
| वर्षश | शनि | मुन्धा | कुम्भ 19:14:20 | | |

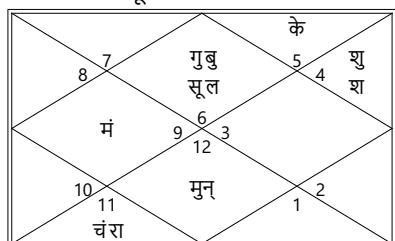
Aumarya



वर्षफल कुण्डलियां - 5

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:49

3 अक्टूबर 2063 07:49 घंटे



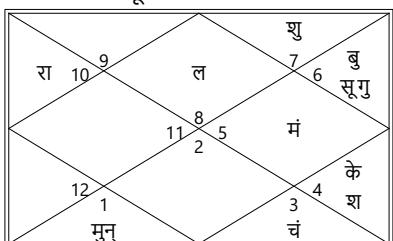
| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 16:18 | मंगल | 05:20 | शुक्र | 29:40 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 10:31 | शनि | 03:43 |
| चन्द्र | 02:08 | गुरु | 00:18 | राहु | 08:56 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | मीन 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:50

3 अक्टूबर 2064 14:06 घंटे

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:50

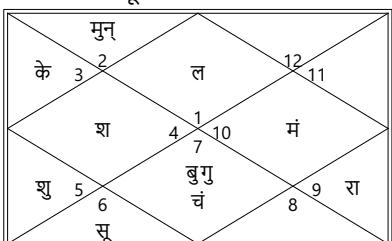
2 अक्टूबर 2064 14:06 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 24:20 | मंगल | 21:12 | शुक्र | 20:03 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 24:23 | शनि | 16:35 |
| चन्द्र | 06:01 | गुरु | 23:40 | राहु | 19:10 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | मेष 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:51

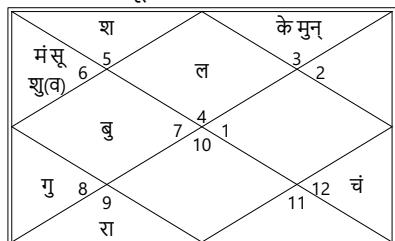
2 अक्टूबर 2065 20:05 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 17:25 | मंगल | 04:51 | शुक्र | 25:08 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 05:35 | शनि | 29:03 |
| चन्द्र | 27:01 | गुरु | 17:18 | राहु | 29:04 |
| वर्षश | गुरु | मुन्धा | वृष 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:52

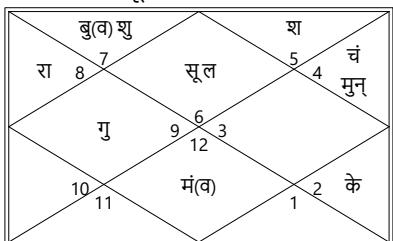
3 अक्टूबर 2066 02:17 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 17:47 | मंगल | 03:15 | शुक्र | 29:01 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 11:18 | शनि | 11:06 |
| चन्द्र | 13:31 | गुरु | 12:16 | राहु | 08:55 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | मिथुन 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:53

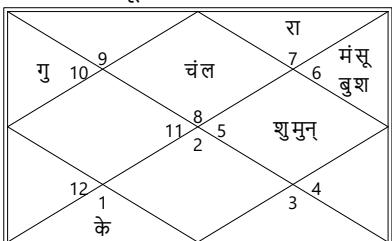
2 अक्टूबर 2067 08:32 घंटे



| | | | | | |
|--------|--------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 23:52 | मंगल | 14:39 | शुक्र | 02:51 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 00:07 | शनि | 22:48 |
| चन्द्र | 22:18 | गुरु | 09:58 | राहु | 19:02 |
| वर्षश | चन्द्र | मुन्धा | कर्क 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:54

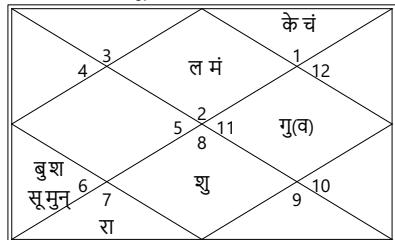
2 अक्टूबर 2068 14:31 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 29:37 | मंगल | 15:20 | शुक्र | 08:21 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 00:26 | शनि | 04:10 |
| चन्द्र | 26:47 | गुरु | 12:05 | राहु | 28:56 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | सिंह 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:55

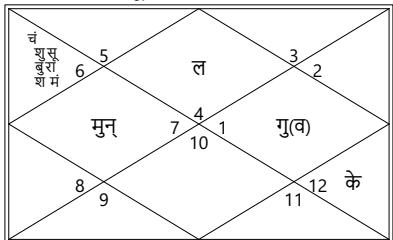
2 अक्टूबर 2069 20:43 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 02:56 | मंगल | 20:29 | शुक्र | 01:58 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 02:34 | शनि | 15:15 |
| चन्द्र | 18:42 | गुरु | 19:58 | राहु | 10:03 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | कन्या 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:56

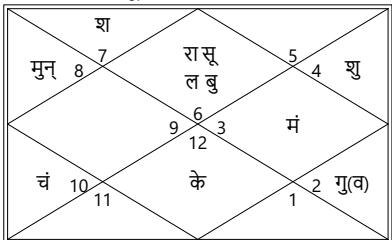
2 अक्टूबर 2070 02:51 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 23:39 | मंगल | 27:43 | शुक्र | 14:18 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 16:37 | शनि | 26:07 |
| चन्द्र | 04:36 | गुरु | 01:35 | राहु | 21:37 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | तुला 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:57

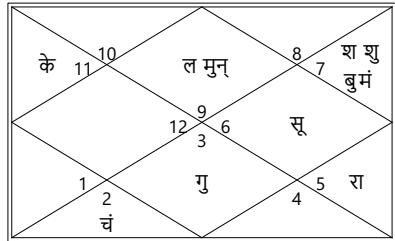
3 अक्टूबर 2071 09:00 घंटे



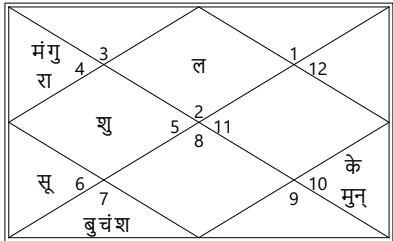
| | | | | | |
|--------|-------|--------|-----------------|-------|-------|
| लग्र | 28:44 | मंगल | 18:01 | शुक्र | 29:33 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 29:34 | शनि | 06:48 |
| चन्द्र | 12:19 | गुरु | 11:05 | राहु | 03:05 |
| वर्षश | बुध | मुन्धा | वृष्टि 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:58

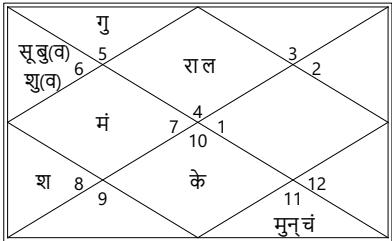
2 अक्टूबर 2072 15:15 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 09:40 | मंगल | 10:37 | शुक्र | 20:34 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 09:00 | शनि | 17:21 |
| चन्द्र | 18:28 | गुरु | 14:57 | राहु | 14:23 |
| वर्षश | गुरु | मुन्धा | धनु 19:14:21 | | |



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 12:58 | मंगल | 06:00 | शुक्र | 25:45 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 09:54 | शनि | 27:50 |
| चन्द्र | 09:57 | गुरु | 13:53 | राहु | 25:20 |
| वर्षश | शुक्र | मुन्धा | मकर 19:14:19 | | |



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 29:25 | मंगल | 24:22 | शुक्र | 25:21 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 16:13 | शनि | 08:19 |
| चन्द्र | 25:29 | गुरु | 09:36 | राहु | 05:34 |
| वर्षश | शनि | मुन्धा | कुम्भ 19:14:19 | | |

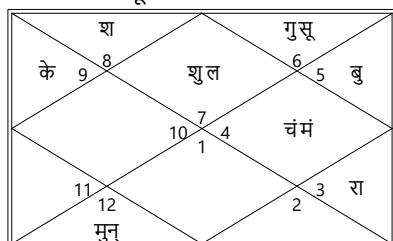
Aumarya



वर्षफल कुण्डलियां - 6

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:61

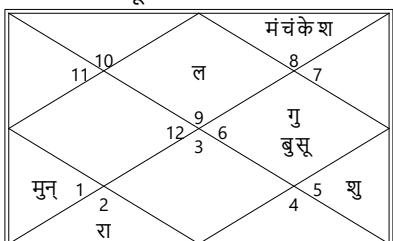
3 अक्टूबर 2075 09:42 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 06:10 | मंगल | 20:45 | शुक्र | 03:28 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 27:51 | शनि | 18:49 |
| चन्द्र | 02:07 | गुरु | 03:33 | राहु | 15:14 |
| वर्षश | बुध | मुन्हा | मीन 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:62

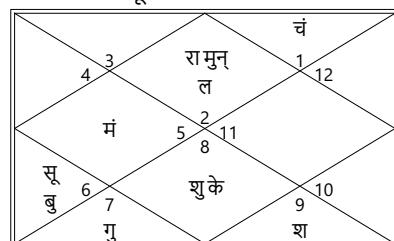
2 अक्टूबर 2076 15:45 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 17:16 | मंगल | 09:32 | शुक्र | 08:52 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 08:21 | शनि | 29:26 |
| चन्द्र | 10:05 | गुरु | 26:53 | राहु | 24:33 |
| वर्षश | बुध | मुन्हा | मेष 19:14:20 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:63

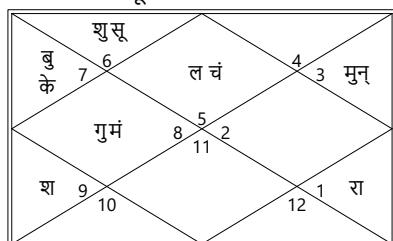
2 अक्टूबर 2077 22:00 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 26:16 | मंगल | 03:59 | शुक्र | 02:06 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 22:26 | शनि | 10:12 |
| चन्द्र | 01:31 | गुरु | 20:39 | राहु | 04:43 |
| वर्षश | मंगल | मुन्हा | वृष 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:64

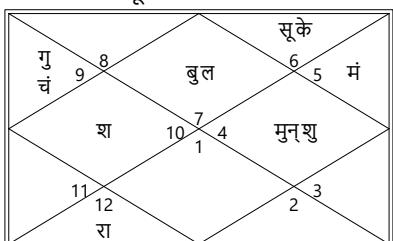
3 अक्टूबर 2078 04:10 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 07:33 | मंगल | 27:11 | शुक्र | 14:56 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 04:08 | शनि | 21:12 |
| चन्द्र | 16:57 | गुरु | 15:55 | राहु | 15:45 |
| वर्षश | बुध | मुन्हा | मिथुन 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:65

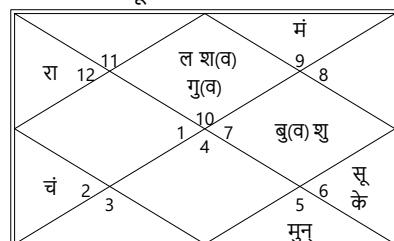
2 अक्टूबर 2079 10:17 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 12:13 | मंगल | 16:28 | शुक्र | 29:30 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 11:03 | शनि | 02:28 |
| चन्द्र | 21:54 | गुरु | 14:08 | राहु | 27:13 |
| वर्षश | शनि | मुन्हा | कर्क 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:66

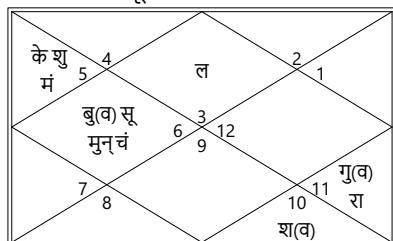
2 अक्टूबर 2080 16:31 घंटे



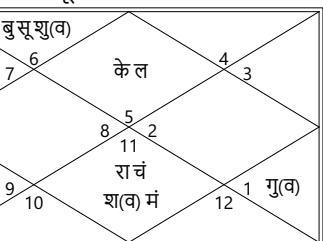
| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 01:04 | मंगल | 21:05 | शुक्र | 21:06 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 03:47 | शनि | 14:05 |
| चन्द्र | 01:58 | गुरु | 17:03 | राहु | 08:36 |
| वर्षश | शनि | मुन्हा | सिंह 19:14:22 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:67

2 अक्टूबर 2081 22:28 घंटे



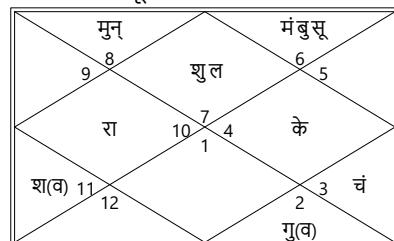
| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 03:16 | मंगल | 28:34 | शुक्र | 26:22 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 03:16 | शनि | 26:06 |
| चन्द्र | 22:11 | गुरु | 25:41 | राहु | 20:12 |
| वर्षश | बुध | मुन्हा | कन्या 19:14:19 | | |



| | | | | | |
|--------|-------|--------|---------------|-------|-------|
| लग्र | 12:18 | मंगल | 09:51 | शुक्र | 21:31 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 00:49 | शनि | 08:34 |
| चन्द्र | 07:48 | गुरु | 07:21 | राहु | 01:22 |
| वर्षश | शनि | मुन्हा | तुला 19:14:19 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:68

2 अक्टूबर 2082 04:37 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|------------------|-------|-------|
| लग्र | 18:52 | मंगल | 10:36 | शुक्र | 04:05 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 14:30 | शनि | 21:30 |
| चन्द्र | 11:55 | गुरु | 16:06 | राहु | 11:07 |
| वर्षश | शनि | मुन्हा | वृश्चिक 19:14:21 | | |

वर्ष कुण्डली - पूर्ण वर्ष:69

3 अक्टूबर 2083 10:55 घंटे



| | | | | | |
|--------|-------|--------|--------------|-------|-------|
| लग्र | 11:24 | मंगल | 22:50 | शुक्र | 02:11 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 07:55 | शनि | 18:43 |
| चन्द्र | 13:27 | गुरु | 17:32 | राहु | 00:46 |
| वर्षश | बुध | मुन्हा | मकर 19:14:19 | | |



| | | | | | |
|--------|-------|--------|----------------|-------|-------|
| लग्र | 18:58 | मंगल | 09:10 | शुक्र | 15:34 |
| सूर्य | 15:39 | बुध | 10:49 | शनि | 02:53 |
| चन्द्र | 28:46 | गुरु | 12:56 | राहु | 10:55 |
| वर्षश | शनि | मुन्हा | कुम्भ 19:14:20 | | |



जन्मकालिक पंचांगादि विवरण

वेद सर्वग्रन्थों में आद्य ग्रन्थ हैं। जगत के सब शास्त्रों की उत्पत्ति का आधार वेद ही हैं। वेद शब्द की उत्पत्ति विद् धातु से हुई है जिसका अर्थ है, ज्ञान। ज्योतिष शास्त्र द्वारा जीवात्मा के ज्ञान के साथ-साथ परमात्मा का ज्ञान भी सहज प्राप्त हो सकता है। इसीलिये ज्योतिष को वेद के चक्षु कहते हैं। त्रिकालज्ञ महषिर्यों ने हजारों वर्ष पूर्व अपने तपोबल व योगबल द्वारा ग्रहों के गुण, धर्म, रंग, रूप, स्वभाव आदि का चराचर जगत पर पढ़ने वाले शुभाशुभ परिणामों का वर्णन ज्योतिष फलित शास्त्रों में विस्तार पूर्वक किया है। प्रत्येक व्यक्ति के जन्म के स्थान, दिन व समय के अनुसार उस क्षण ब्रह्माण्ड में ग्रह-राशि-नक्षत्रों की स्थिति के चित्रण को 'जन्म कुण्डली' कहा जाता है। जन्म के समय पूर्व क्षितिज में जो राशि उदित होती है उसे 'लग्न' कहते हैं। चन्द्र जिस राशि में होता है उसे 'जन्म राशि' और जिस नक्षत्र में होता है उसे 'जन्म नक्षत्र' कहा जाता है। आपके जन्म के समय पंचांग के विभिन्न अंगों का विवरण नीचे दिया गया है।

अवकहडा चक्र

| | | |
|--------------------|---|-------------|
| लग्न | : | कुंभ |
| चन्द्र राशि | : | मकर |
| चन्द्र राशि स्वामी | : | शनि |
| जन्मकालीन नक्षत्र | : | उत्तराषाढ़ा |
| नक्षत्र चरण | : | 2 |
| नामाक्षर | : | भे |
| राशि पाया | : | लौह |
| नक्षत्र पाया | : | ताँबा |
| वर्ण | : | वैश्य |
| वश्य | : | चतुष्पाद |
| नाड़ी | : | अन्त्य |
| योनि | : | नकुल |
| गण | : | मनुष्य |

जन्मकालीन पंचांगादि

| | | |
|--------------------|---|------------|
| विक्रम संवत् | : | 2071 |
| मास | : | आश्विन |
| जन्मकालीन तिथि | : | शुक्ल नवमी |
| जन्मकालीन योग | : | अतिगण्ड |
| जन्मकालीन करण | : | कौलव |
| आधुनिक जन्म वार | : | गुरुवार |
| ज्योतिषिय जन्म वार | : | गुरुवार |

घात चक्र

| | | |
|-------------|---|---------|
| घात मास | : | वैशाख |
| घात तिथि | : | 4/9/14 |
| घात वार | : | मंगलवार |
| घात नक्षत्र | : | रोहिणी |
| घात योग | : | वैधृति |
| घात करण | : | शकुनि |
| घात प्रहर | : | 4 |
| घात चन्द्र | : | सिंह |



कुण्डली फल

ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान से मनुष्य को श्रेष्ठ लाभ यह है कि उसे पूर्वजन्म के शुभाशुभ कर्मों का ज्ञान, वर्तमान जन्म में शुभकर्म करने की आवश्यकता, मानवीय जन्म का उद्देश्य, ईश्वरीय व मानवीय शक्ति में अन्तर, कर्म और भोग की मर्यादा, प्रारब्ध और प्रयत्न की सीमा व दोनों का परस्पर सम्बन्ध, अनुकूल व प्रतिकूल समय का ज्ञान व संकट समय मन में धैर्य रख उस पर विजय प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त होती है। इस शक्ति से मन में सन्तोष, सन्तोष से चिन्ता का नाश, चिन्ता-नाश से धर्म की प्राप्ति, धर्म से धैर्य व शक्ति की प्राप्ति और शक्ति से ईश्वर के प्रति भक्ति व विश्वास क्रमशः प्राप्त करते हुए व संसारिक आपत्तियों को सहर्ष स्वीकार करने की क्षमता प्राप्त होती है।

प्रकृति एवं स्वभाव

- 1 - आप मानवीय गुणों से भरपूर, उदार हृदय, करुणा से ओत-प्रोत, लोगों के परम हितैषी तथा प्रगतिशील प्रकृति के होंगे।
- 2 - आप अपने उद्देश्य के प्रति पूर्ण ईमानदार तथा प्रतिबद्ध होंगे।
- 3 - आप मज़बूत इच्छा शक्ति वाले और हर बात में निश्चित मत रखने वाले होंगे।
- 4 - आप अपने नये क्रांतिकारी विचारों, परम्परा से अलग प्रवृत्तियों तथा आमजनों का भला करने की उक्त भावना के कारण पहचाने जायेंगे।
- 5 - आप के मन की थाह पा लेना बड़ा कठिन होगा, दीर्घकालीन संपर्कों के बावजूद मित्रगण भी इन्हें पूरी तरह नहीं समझ पायेंगे।
- 6 - आप दार्शनिक विचारों वाले, गंभीर प्रकृति का तथा कोमल हृदय के होंगे।
- 7 - आप बुद्धिमान और अच्छी स्मरणशक्ति के स्वामी होंगे। तीव्र तर्क बुद्धि युक्त होंगे तथा तर्क से ही मतभेद दूर करने में विश्वास करेंगे।
- 8 - आप में चतुराई से अपना काम निकाल लेने की योग्यता होगी।
- 9 - आप अपने कार्य में निवैयक्तिक होंगे। आपके कार्य करने की शैली विशिष्ट और अनूठी होगी।
- 10 - आप को एकांत, ध्यान एवं उपासना में रुचि होगी।
- 11 - आप किसी भी व्यक्ति से विनम्रतापूर्वक मिलेंगे तथा उसके गुणों की प्रशंसा करेंगे किंतु उस व्यक्ति के आँख से ओझाल होते ही उसका उपहास उड़ायेंगे।
- 12 - आप गोपनीयता को अधिक महत्व देंगे - मन में क्या भावनायें हैं, क्या सोचते हैं, क्या करते हैं, इसका आभास जल्दी किसी को नहीं लग पायेगा। अपनी योजनाओं को छिपाकर क्रियान्वित करना, आपकी विशेषता होगी।
- 13 - आप को जल्दी गुस्सा नहीं आयेगा मगर जब किसी समय आपको गुस्सा आयेगा तो आप रौद्र रूप धारण कर लेंगे।
- 14 - स्वभाव में परिवर्तन आवश्यक है - सक्रियता एवं शीघ्रता विकसित करें, एकांत वास से बचें, अतिचिंता, उदासी एवं निराशा से बचें, जिन्हें पसन्द नहीं करते उनके प्रति अति कठोर न बनें।



शास्त्रों के अनुसार फल

आप के नेत्र सुन्दर, क्षीण कटि, शरीर के नीचे का भाग अर्थात् कमर से पैर तक कृश, बलवान्, स्थूल मस्तक, गोल जंघा, कंठ व कान लंबे, केश काले, गर्दन में तिलादि का चिन्ह, चेहरा गोल, रंग साँवला तथा उँचा कद है। धैर्यवान्, चतुर, कृपालु, राजप्रिय, श्रेष्ठ भाग्य युक्त, अपने वचन के पालन में तत्पर, मातृभक्त, नित्य अपने परिवार का पोषण, दूसरों से सुख की प्राप्ति, धर्म-ध्वजी अर्थात् बाह्य आवरण धार्मिकता युक्त, गान विद्या का ज्ञान, शास्त्रों में निष्णात, सत्यभाषी, उन्नत, धर्मात्मा, कभी-कभी निर्दयी, विख्यात, अल्प क्रोधी, घृणा से हीन, अल्पोत्साही, निन्दक, सत्त-युक्त अर्थात् शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक शक्ति युक्त, भ्रमणप्रिय, पैदल चलने में रुचि, कार्य क्षेत्र में उच्च स्थिति प्राप्त करने के लिये सर्वदा प्रयासरत, पुत्रवान्, बहुत बम्बुओं से युक्त, अच्छी स्मरण शक्ति, भीष्म प्रतिज्ञ, काव्य में रुचि, ख्यातिमान, व्यवहार से शत्रु उत्पन्न करने वाले, मित्रजन दुर्भाव से मित्रता करते हैं। पनी में लीन, कामी, अच्छी स्त्री की प्राप्ति, किसी स्त्री पर आशिक किन्तु आत्मसम्मान का ध्यान रहता है।

शीत से भयभीत, वात रोग से पीड़ित, पेट व बांह में दर्द होता है।

आधुनिक मत से फल

आप अत्यधिक महत्वकांक्षी, उच्चाभिलाषी, उद्यमशील, सेवा-भावी होते हैं, जिसके कारण समाज में प्रशंसित होते हैं। आपमें दाशनिकता की झलक भी होती है साथ ही घोर पदार्थप्रियता भी। स्वभाव से धैर्यवान्, परिश्रमी तथा लगनशील हैं। अपने परिश्रम से ही उन्नति करते हैं। हर काम को पूरी सुचारूता से करने वाले, सोच-समझ के कदम उठाते हैं। आप के व्यक्तित्व में विरोधाभास भी देखने को मिलता है - कभी आप कट्टर आस्थावादी होते हैं तो कभी एकदम अनास्थावादी, कभी परंपरावादी होते हैं तो कभी बुद्धिपूजक अर्थात् केवल तर्क-सम्मत बात ही स्वीकार करते हैं। अपने आपको परिस्थिति के अनुसार बदल सकने में सक्षम हैं। आप अपनी भावनाओं को अपने अंदर छिपा कर रखेंगे, अपनी किसी भी योजना या दिल की बात की भनक दूसरों को नहीं लगाने देंगे। अचानक निर्णय लेकर सभी को चमकृत व आश्र्वर्यचकित कर देंगे। आप के प्रमुख अवगुण हैं - अहंमन्यता, निराशावादिता, अधीरता, आलस्य, अधिक बोलने की आदत। इन्हे समझकर दूर करने का प्रयास करना चाहिये।

शारीरिक लक्षण

- 1 - आपकी मुखाकृति अंडाकार होती है। गाल कुछ फूले हुए, दाँत लम्बे तथा चेहरा छोटा होता है।
- 2 - आप मध्यम लम्बे कद के होते हैं और अधिक आयु में पैट निकलने की प्रवृत्ति होती है।
- 3 - आँखों की आकृति वर्तुलाकार तथा कुछ धँसी हुयी होती है।
- 4 - होंठ कुछ मोटे तथा कूल्हे और नितम्ब का हिस्सा कुछ भारी होता है।



महत्त्वपूर्ण जानकारी

आपका मूल वाक्य है
मैं जानता हूँ।

सबसे बड़ा गुण है
प्रगतिशीलता।

सबसे बड़ी कमी है
विचार एवं व्यवहार में दोहरापन।

महत्वाकांक्षा है
सत्य का साक्षात्कार करना।

शुभ दिन
शनिवार तथा शुक्रवार।

शुभ रंग
हल्का नीला या बैंगनी शुभ हैं। नीला तथा हरा रंग ठीक नहीं हैं।

शुभ अंक
3,9,2,7 सर्वाधिक शुभ हैं।

शुभ रक्त
नीलम, पीला पुखराज।

शुभ उपरक्त
लाजावर्त।

अशुभ मास तारीखें

प्रतिवर्ष जुलाई का महीना, 9, 12, 22, 30 तारीखें और मंगलवार का दिन अशुभ है।

अशुभ तिथि
चतुर्थी, नवमी एवं चतुर्दशी तिथियाँ जातक के लिए अनिष्टकर होती हैं।

शुभ राशि

वृष, मिथुन, कन्या, तुला और कुम्भ राशि वाले मनुष्य मित्रता करते हैं। मेष, कर्क, सिंह तथा वृश्चिक राशि वाले मनुष्य शत्रुता करते हैं।

शुभ दिवस
शनिवार सर्वदा शुभ फलदायक होता है।

अरिष्ट समय

यवनाचार्य के मतानुसार श्रावण का मास, शुक्लपक्ष, दशमी तिथि, मंगलवार, ज्येष्ठा नक्षत्र अरिष्टकर होता है।



ग्रह फल

सूर्य



सूर्य अष्टम भाव में

शुभ फल : जातक का रूप मनोहर तथा स्वभाव चंचल होता है। जातक त्यागशील और ख्यातिमान् होता है। पण्डित और विद्वानों की सेवा करता है। जातक का धन लोग चुरा ले जाते हैं या मूर्खतावश स्वयं ही गंवा देता है। जातक मिथ्या भाषण करने वाला तथा भाग्यहीन होता है। व्यवहार सदैव कष्ट भोगता है। जातक लड़ने झगड़ने में विशेष चतुर होता है। जातक कभी भी सन्तुष्ट नहीं होता है। जातक को पुत्र सुख में कमी रहती है। जातक को नीचवृत्ति के लोगों की सेवा करनी पड़ती है। विदेश में वास करता है। जातक के शत्रुओं की संख्या में अधिकता होती है। सूर्य पित्तरोग, अण्डवृद्धि, कुष्ठ, प्रमेह जैसे रोग करता है तथा अपनी दशा में दूसरे ग्रहों के सहचार से मृत्यु तुल्य कष्ट दिया करता है। जातक को गुदा रोग अर्थात् बवासीर होता है। बाल्यावस्था में शारीरिक कष्ट बहुत होते हैं।

सूर्य अष्टम भाव में स्त्री राशि में होने के कारण उपर दिये शुभ फल अधिक अनुभव में आते हैं।

अशुभ फल : आठवें भवन का सूर्य जातक को चिन्तातुर, धैर्यहीन, निर्धन और व्यसनी बनाता है। जातक का धन लोग चुरा ले जाते हैं या मूर्खतावश स्वयं ही गंवा देता है। जातक मिथ्या भाषण करने वाला, भाग्यहीन तथा आचरणहीन होता है। व्यवहार अति चालाक होता है। सदैव कष्ट भोगता है। जातक लड़ने झगड़ने में विशेष चतुर होता है। जातक कभी भी सन्तुष्ट नहीं होता है। परदारारति भी जातक के चरित्र का अंग हो जाती है इसलिये स्वास्थ्य और सम्पत्ति का नाश इसके परिणाम के रूप में प्राप्त होता है। जातक को पुत्र सुख में कमी रहती है। चौपाये जानकर आदि की हानि होती है। जातक को नीचवृत्ति के लोगों की सेवा करनी पड़ती है। विदेश में वास करता है। जातक के शत्रुओं की संख्या में अधिकता होती है। सूर्य पित्तरोग, अण्डवृद्धि, कुष्ठ, प्रमेह जैसे रोग करता है तथा अपनी दशा में दूसरे ग्रहों के सहचार से मृत्यु तुल्य कष्ट दिया करता है। जातक को गुदा रोग अर्थात् बवासीर होता है। जातक की स्त्री पर-पुरुषगामिनी होती है। स्वयं की मृत्यु स्त्री की मृत्यु से पहले होती है। वृद्धावस्था में दरिद्रता योग होता है। बाल्यावस्था में शारीरिक कष्ट बहुत होते हैं।

अन्य राशियों में बहुत लम्बी बीमारी के अनन्तर कष्ट से मौत होती है।



ॐ

चन्द्र

ॐ

चन्द्र द्वादश भाव में

शुभ फल : बारहवें भाव में चन्द्रमा होने से जातक एकान्तप्रिय, मृदुभाषी होता है। बारहवें भाव का चन्द्र जातक के धन को शुभ कार्यों में, यज्ञादि कार्यों में व्यय कराता है। मंगलकार्यों में अर्थात् विवाह आदि शुभ कर्मों में अपने धन का खर्च करता है। इस तरह जातक सद्व्ययी होता है। राजयोगी, ज्ञानी, मांत्रिक या शास्त्रज्ञ हो सकता है। स्त्रियों का उपभोग अच्छा मिलता है।

चन्द्र वृश्चिक या मकर के अलावा अन्य राशियों में होने से जातक विजयी, सुखी तथा धनी होता है। विद्वान होता है।

बलवान् चन्द्र होने से खेती से लाभ होता है तथा आमरणंत सुख होता है।

चन्द्रमा पूर्ण (बली) होने से जातक का आचरण अच्छा होता है। जातक का शील-स्वभाव अच्छा होता है।

अशुभ फल : प्रायः द्वादशभावगत चन्द्रमा के फल अशुभ हैं। जातक का कृश और दुर्बल शरीर होता है। शरीर क्षीण और पतला होता है। मंदाग्नि रहती है और भूख कम होती है। अच्छा भोजन नहीं मिलता है। वह सच्चरित्रवान् नहीं होता है। शुभाचरणहीन होता है। सदा क्रोधावेश में रहता है। जातक दुःखी, आलसी तथा अपमानित होता है। पतित, क्षुद्र, तथा व्याकुल रहता है। लोग इससे द्वेष करते हैं। लोग इस पर विश्वास नहीं करते और इसे सदैव सदेह-दृष्टि से देखते हैं। कुपात्र के लिए धन का व्यय करता है। इस तरह असद्ययी होता है। अधिक व्यय करनेवाला होता है। धन का अपव्यय करता है। निर्धन होता है। चन्द्रमा द्वादशभाव में होने से जातक कृपण (कंजूस) होता है। धन का नाश होता है। जातक ऐसी अव्यावहारिक कल्पना करता है जिसका पूर्ण होना कठिन होता है। प्रायः जातक के मनोरथ पूर्ण नहीं होते। स्त्रियों के साथ जातक के सम्बन्ध चिरस्थायी नहीं रहते। स्त्रियों से विशेष प्रेम नहीं होता है। रति (स्त्रीसहवास और स्त्रीसंग) से खेद प्राप्त होता है। चन्द्रमा द्वादशस्थान में होने से पति पत्नी में अकारण ही कई बार वियोग होता है। बारहवें भाव में चन्द्रमा होने से जातक नेत्ररोगी, और नेत्रादि के विकार से पीड़ा रहती है। द्वादश चन्द्र होने से जातक एक आँख से काणा होता है। जातक कफरोगी होता है। पितृकुल, मातृकुल से व्याकुलता प्राप्त होती है। जातक का मन चाचा आदि मामा आदि से मलिन रहता है। अर्थात् पिता के भाई से और पितृव्य के पुत्र और स्त्री से प्रेम नहीं होता है अपितु परस्पर वैमनस्य रहता है। इसी तरह माता से और माता के पिता के कुल में उत्पन्न मामा आदि से भी मनमुटाव रहता है। द्वादशस्थान में चन्द्रमा होने से जातक पाप करने में अपनी अक्ल लड़ता है। अपने कुल में नीचवृत्ति होता है। सदैव नीच वृत्तिवाले मनुष्यों की संगति में रहनेवाला होता है। व्यसनी, शराब पीनेवाला अतएव रोगी होता है। जीवहिंसक और क्रूर होता है। चन्द्रमा द्वादश होने से जातक विदेश में निवास करता है। अपने मित्रों से जातक का व्यवहार और बर्ताव अच्छा नहीं होता है। मित्रहीन होता है। मित्र बहुत नहीं होते हैं। मित्र अच्छे नहीं होते हैं। शत्रुओं से भय भय रहता है। शत्रुओं की वृद्धि होती है। अपने शत्रुओं से पराजित होता है। जातक विशेषतः क्रोधावेश में रहता है अर्थात् बहुत क्रोधी होता है। लड़ाई-झगड़ा होता रहता है। क्रोध-कलह की बढ़ोत्री होती है। निन्दित कर्म करता है अतः लोग निन्दा करते हैं। यवनमत से 49 वें वर्ष में पानी से अपघात होता है।

चन्द्र वृश्चिक या मकर में होने से जातक बदमाश होता है। धनहीन होता है।

चन्द्र स्त्रीराशि में होने से जातक मरण तक अपना कर्ज चुका नहीं सकता है।

मकर का चन्द्रमा कभी-कभी बहुत धन देता है। किन्तु जातक भारी कृपण होता है।

उपर दिये गये अशुभफल चन्द्रमा के स्त्रीराशियों में होने से अधिक अनुभव में आते हैं।



मंगल



मंगल दसम भाव में

शुभ फल : दसवें स्थान का मंगल अत्यन्त शुभ माना जाता है। दसवें स्थान में मंगल बलवान् माना जाता है क्योंकि दसवां स्थान दक्षिण है और मंगल दक्षिण दिशा का स्वामी होता है। दसवें भाव में मंगल होने से जातक कुलदीपक होता है- "दशमेऽगारको यस्य सजातः कुलदीपकः।" दशमभावस्थ मंगल के प्रभाव में उत्पन्न होने से जातक अपने पराक्रम से, अपने भुजवलार्जित धन से, तथा अन्य स्थावर जंगम संपत्ति से, अपने कुल को उजागर अर्थात् प्रसिद्ध कर देता है। कुल का उद्धारक होता है। जातक तेजस्वी, नीरोग, मजबूत शरीर का होता है। जातक अपने प्रताप से सिंह के समान पूर्ण पराक्रमी तथा शूर होता है। जातक संतुष्ट-परोपकारी, उत्साहयुक्त तथा राजा के समान पराक्रमी होता है। जातक शुभकर्म कर्ता-कल्याणयुक्त, साहसी तथा स्वाभिमानी होता है। दशम में मंगल होने से जातक दाता, होशियार, किफायती, लोकपूजित होता है। जातक क्रियाशील, अजेय, संयमी, महानपुरुषों की सेवा करनेवाला तथा बहुतप्रतापी होता है। ध्यान-धारणा करता है तथा शीलवान्, गुरु का भक्त होता है। सर्वथा सामर्थवान् होता है। ब्राह्मणों का तथा बड़े बूढ़ों का भक्त होता है। मंगल कार्यकारी मंगल दशमभाव में होने से जातक के कुल में विवाह आदि मंगलकार्य होते रहते हैं। जातक के काम स्वतः सिद्ध-अर्थात् बहुत प्रयास के बिना भी-अपने थोड़े से उद्यमद्वारा सिद्ध हो जाते हैं। निरंतर सब कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। दशमस्थ मंगल के शुभ प्रभाव में जन्म होने से जातक स्वयं स्वपराक्रम से, स्वभूजबल से, उन्नत होते हैं जिन्हें अंगरेजी में 'सैल्फमेड' कहा जाता है। मंगल के प्रभाव से समाज में यश और सम्मान प्राप्त होता है। बड़े मुख्य आदमी भी जातक की प्रशंसा करते हैं। लोकप्रिय होता है। प्रचुर धन लाभ करता है, सुख के साधनों की कमी नहीं रहती, विलासितापूर्ण जीवन जीया करता है। भूमि-भृत्य-ग्राम और राजकुल से धन प्राप्त होता है। ऐश्वर्य तथा प्रताप में राजा के समान, सुन्दर भषण-मणि आदि विधि रत्नों को प्राप्त करनेवाला होता है। उत्तम-वाहनों से सुखी, वाहन का सुख प्राप्त होता है। जातक के पास नौकर चाकर बहुत होते हैं। जन्मभूमि से दूर रहनेवाला होता है। विशेष भाग्यवान् होता है। जातक श्रेष्ठपुत्रों वाला, पुत्र सुख युक्त होता है। वह व्यापार में प्रवीण होता है। 18 वें वर्ष में व्यापार में, या राजा की कृपा से, या साहस से धन प्राप्त करता है। किसी बैंक वा संस्था का चालक हो सकता है। जमीन पर उपजीविका करनेवाला होता है। अग्नि संबन्धी कार्यों से या शस्त्रों के काम से धन कमाता है। 26 वर्ष से कुछ भाग्योदय होता है। 36 वें वर्ष में स्थिरता प्राप्त होती है। वकीलों के लिए भी यह योग अच्छा है। फौजदारी मुकदमों में अच्छा यश मिलता है। नौकरी में बड़े अफसरों से झगड़े होते हैं। 'दशमेऽगार को नास्ति सजातः कि करिष्यति' जन्मकाल में मंगल दशमस्थान में यदि नहीं होता है तो मनुष्य का जीवन अत्यन्त साधारण बीतता है। हीनकुल में उत्पन्न होकर भी जातक दशमभावस्थ मंगल के शुभ प्रभाव से लोगों में अग्रणी तथा उनका नेता हो जाता है।

शुभफलों का अनुभव मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक तथा मीन में संभव है।

दशमस्थान का स्वामी बलवान् हो तो भाई दीर्घायु होता है।

लग्न में स्त्रीराशि हो तो स्वपुरुषार्थ से, भारी कष्ट के बाद उन्नति होती है।

डाक्टरों की कुण्डली में वृश्चिक राशि में दशम में, मंगल हो तो डाक्टर लोग सर्जरी में प्रसिद्धि पाते हैं।

अशुभफल : जातक कूर, दुष्ट, कुकर्मी, दुराचारी नीचसंगी होता है। जातक अभिमानी, उतावला स्वभाव, लोभी होता है। वृत्ति पाशवी होती है। बुद्धि चोर जैसी और आचरण बुरा होता है। धन होकर खर्च हो जाता है। कभी फायदा कभी नुकसान होता है। सुख और दुःख दोनों मिलते हैं-स्थिरता नहीं होती। सन्तानों की ओर से विशेष सुख नहीं मिलता। दशमस्थ भौम होने से जातक के पुत्र अच्छे नहीं होते। दशम में मंगल होने से मामा का तत्काल नाश होता है। जातक किसी का दरक युवती हो सकता है। युवती हो सकती है। समाज में कीर्ति नहीं प्राप्त होती।

पापग्रह के साथ में हो तो किसी भी कार्य में विघ्न उपस्थित करता है।



बुध



बुध नवम भाव में

शुभ फल : नवें स्थान में बुध के रहने से जातक को शुभ फल मिलता है। शास्त्रकारों ने नवमभावस्थित बुध के जो शुभ फल बताएँ हैं वे पुरुषराशियों में मिलेंगे। नवम भाव में बुध होने से जातक सदाचारी, घर्मात्मा, बुद्धिमान्, सज्जनों का संग करनेवाला, सत्यवादी, जितेंद्रिय, सहर्ष परोपकार करनेवाला होता है। धार्मिक, घर्मभीरू, दानी तथा उत्सुक मन वाला होता है। जातक शास्त्रज्ञ, ज्ञानी, आनंदी, घर्मनिष्ठ, सदा पुण्यकर्मकर्ता होता है। जातक चपल, विनयी, शोधक बुद्धि का, नई चीजों की रुचि रखनेवाला होता है। तपस्वी, ध्यानी, योगाभ्यासी, वेद-स्मृतिप्रतिपादित कर्मकर्ता होता है। वेदशास्त्रों का पंडित होता है। नौवें स्थान में स्थित बुध जातक को भाग्यवान् बनाता है, विविध सुखेपभोग करता है। तीर्थाटन और धार्मिक कार्यों जैसे यज्ञ आदि में रुचि रहती है। वैदिक अथवा तात्रिक दीक्षा को पानेवाला, और गंगास्नान करनेवाला होता है। जातक धार्मिक-कुण्ड-वगीचे आदि बनवानेवाला होता है। पराक्रमी होता है जिससे सदा शत्रुओं को पराजित करता है। प्रतापी और विजयी करता है। समाज में अथवा अपने परिवार में राजा के समान सम्माननीय बनाता है। नवमस्थ बुधप्रभावोत्पन्न जातक अपने कूल को अपने ज्ञान से, अपने घन से, अपने यश से उज्ज्वल तथा प्रसिद्ध कर देता है। नवम में बुध होने से जातक उपकार और विद्या से आदर पाता है। नवम बुध शुभराशि में होने से जातक घन-स्त्री-पुत्र से युक्त होता है। संतति, संपत्ति तथा सुख मिलता है। जातक विद्वान्, कवि, वक्ता, संगीतज्ञ, सम्पादक, लेखक, ज्योतिषी हो सकता है।

नवमेश बलवान् होने से पिता दीर्घायु होता है और पितृभक्त होता है। 32 वें वर्ष भाग्योदाय होता है।

नवम स्थान में बुध मिथुन, तुला या कुम्भराशि में होने से विवाह के अनन्तर भाग्योदय होता है। नौकरी या व्यवसाय में प्रगति होती है।

नवमस्थान में बुध मिथुन, तुला या कुम्भराशि में होने से संपादक, प्रकाशक या लेखक, स्कूल में शिक्षक का काम करना होता है।

अशुभ फल : जातक रोग से पीड़ित होता है। कभी मन विकृत भी हो जाता है। 29 वें वर्ष माता को कष्ट हो सकता है। बुध अशुभ होने से भाग्य मंद होता है। और अपनी बुद्धि का घमंड होता है।

अशुभ राशि में या पापग्रह के साथ होने से कुमारगामी, वेदनिंदक होता है।

बुध पापग्रहों के साथ, पापग्रहों की राशि में, या दृष्टि में होने से पिता को कष्ट होता है या मृत्यु होती है। गुरु से द्वेष करता है। बौद्धमतावलंबी हो जाता है।





२

बृहस्पति

२

बृहस्पति षष्ठी भाव में

शुभ फल : छठे भाव में गुरु बलवान होने से शारीरिक प्रकृति अच्छी अर्थात नीरोगी होती है। शरीर में चिन्ह होता है। जातक मधुरभाषी, सदाचारी, पराक्रमी, विवेकी, उदार होता है। सुकर्मरत, लोकमान्य, प्रतापी, विष्णुयात्री और यशस्वी होता है। जातक विद्वान, ज्योतिषी, तथा संसारी विषयों से विमुख और विरक्त होता है। जारण-मारण आदि मन्त्रों में कुशल होता है। जातक संगीत विद्या का प्रेमी होता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य के विषय में जातक प्रवीण होता है। छठे स्थान पर बैठा बृहस्पति जातक को स्त्री पक्ष का पूरा सुख देता है। सुन्दरी स्त्री से रति सुख मिलता है। गुरु भाई बहनों के लिए तथा मामा के लिए सुखकारी होता है। पुत्र और पुत्र के पुत्र (पौत्र) देखने का सुख मिलता है। राज-काज में, विवाद में विजय कराता है। जातक शत्रुहंता तथा अजातशत्रु होता है। अर्थात शत्रु नहीं होते। नौकर अच्छे मिलते हैं। वैद्य, डाक्टरों के लिए यह गुरु अच्छा होता है। स्वास्थ्यविभाग की नौकरी में जातक यशस्वी होता है। स्वतंत्र व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी के लिए यह गुरु अनुकूल होता है। भैंस-गाय-घोड़ा कुत्ते आदि चतुष्पदों (चारपाए जानवरों) का सुख मिलता है।

शास्त्रकारों के शुभफलों का अनुभव स्त्रीराशियों में होता है।

गुरु स्वगृह में या शुभग्रह की राशि में होने से शत्रुनाशक होता है।

अशुभफल : जातक कृश शरीर अर्थात् दुर्बल होता है। सामान्यतः षष्ठी भाव के गुरु होने से जातक के के बारे में लोग संदिग्ध और संशयात्मा रहते हैं। निष्ठुर, हिंसक, आलसी, घबड़ाने वाला, मर्ख तथा कामी होता है। जातक के काम में विघ्न आते हैं। जिस काम को हाथ में लेता है उसे समाप्त करने में शीघ्रता नहीं करता है अर्थात् आलस करता है। जन्मलग्न से छठे स्थान में बृहस्पति होने से जातक रोगार्त रहता है। नानाविधि रोगों से रुग्ण रहता है। जातक को नाक के रोग होते हैं। जातक की माता भी रोग पीड़ित रहती हैं। माता के बच्चे वर्गों में भी (मामा आदि में भी) कुशल नहीं रहता है। जातक के मामा को सुख नहीं होता है। शत्रु बहुत होते हैं। शत्रुओं से कष्ट होता है। 40 वें वर्ष शत्रुओं का भय होता है। छठागुरु भाइयों और मामा के लिए मारक होता है। छठागुरु अपमान, पराभव और व्याधि देता है। छठवें और बारहवें वर्ष ज्वर होता है। कामी, और शोक करने वाला होता है। जातक स्त्री के वश में रहता है। जातक की भूख कम होती है-पौरुष कम होता है। गुरु धनेश होकर छठे होने से पैतृकसंपत्ति नहीं मिलती।

गुरु अशुभ योग में होने से यकृत के विकार, मेदवृद्धि-तथा खाने-पीने की अनियमितता से अन्यरोग होते हैं।



♀

शुक्र

♀

शुक्र अष्टम भाव में

शुभ फल : अष्टमभावगत शुक्र होने से जातक देखने में सुन्दर, विशालनेत्र, अतीबली, निर्भय-गर्वला, प्रसन्नचित होता है। अष्टमस्थान में शुक्र होने से जातक विद्वान्, मनस्वी, धर्मात्मा, ज्योतिषी और सदाचारी होता है। शारीरिक, आर्थिक या स्त्रीविषयक सुखों में से कोई एक सुख प्रर्याप्त मात्रा में मिलता है। स्त्री-धनप्राप्त होता है या किसी आप्त स्त्री की मृत्यु से धनप्राप्त होता है। मृत्युपत्र से, साझीदारी से लाभ होता है। बीमे के व्यवहार में लाभ होता है। ट्रस्टी होकर अच्छा धन प्राप्त करते हैं। पत्नी स्वाभिमानिनी, धैर्यसंपन्न, श्रेष्ठ स्वभाव वाली, मधुरभाषणी तथा विश्वासयोग्य होती है। जातक की पत्नी जातक का हित चाहने वाली होती है। मृत्यु किसी तीर्थ क्षेत्र में होती है। 75 वर्ष के बाद इसका मरण होता है। मृत्यु शांति से होती है। दुर्घटनाओं का भय नहीं होता। अष्टमभाव में शुक्र होने से जातक राजसेवक, राजद्वारा सम्मानित, राजमान्य, विदेशवासी, पर्यटनशील होता है। नौकर-चाकरों और सवारी के सुख से पर्ण होता है। स्वजन बांधवों का सहयोग प्राप्त होता रहता है। आठवें स्थान में शुक्र होने से चौपायों से अर्थात् गाय, भैस, बकरी घोड़ा आदि से सुख होता है। कभी धन की वृद्धि और कभी ऋण की वृद्धि होती है। शत्रुओं पर कष्ट से विजय प्राप्त करता है। धन का लाभ कष्ट से होता है। जातक के कार्य सरलता से सम्पन्न नहीं होते हैं। जातक राजतुल्य, सर्वसौख्य युक्त, धनवान् और भूमिपति होता है। सर्वथा संतुष्ट होता है। मनुष्यों का प्यारा होता है। कभी-कभी स्त्री तथा पुत्र की चिता से युक्त होता है। अष्टम शुक्र होने से जातक पिता का ऋण चुकाता है तथा कुल की उन्नति करता है।

अष्टमभाव का शुक्र कन्या में होने से जंगली जानवर से मृत्यु होती है।

शुक्र बलवान् होने से विवाह से, सट्टे से, या वारिस के रूप में अच्छा धनप्राप्त होता है।

शुभग्रह की राशि में, या युति में शुक्र होने से जातक पूर्णायु, चिरजीवी-अर्थात् दीर्घायु होता है।

अशुभ फल : अष्टम शुक्र होने से जातक दुर्जन, निर्दयी, रोगी, क्रोधी, दुखी, गुप्तरोगी, शठ, घमंडी होता है। जातक रोगी-झगड़ालू व्यर्थ घूमनेवाला, निकम्मा होता है। अष्टम शुक्र होने से जातक कठोर वचन बोलनेवाला होता है। व्यर्थ का बाद करता है-अर्थात् जातक का बोलना गवाँ जैसा होता है। अष्टम में शुक्र होने से जातक वंश के लिए अनुचित कर्म करने वाला होता है। दरिद्रता और शत्रुओं से संतापित होता है। खर्चीले स्तर का निर्वाह करने के लिए ऋणप्रस्त रहता है। परस्तीरत होता है। अष्टमस्थ शुक्र के कारण जातक प्रमेह एवं गुप्तांग से संबंधित रोगों से पीड़ित होता है। मृत्यु वात-कफ से या क्षुधा से होती है।

शुक्र पीड़ित होने से पत्नी खर्चीली होती है।

शुक्र पापग्रह के साथ होने से अल्पायु होता है।

अष्टम शुक्र मेष और कन्या में होने से विवाह के अनंतर भाग्योदय का नाश होता है। आर्थिक संकटों का भूयस्त्व, व्यवसाय वा नौकरी में असफलता, ऋणग्रस्तता अनुभव में आते हैं।



ॐ

शनि

ॐ

शनि नवम भाव में

शुभ फल : प्राचीन लेखकों ने नवम भावस्थ शनि के फल मिश्रित रूप में बतलाए हैं। किसी ने शुभ और किसी ने अशुभ फल बतलाए हैं। नवम भाव में शनि होने से जातक भ्रमणशील, धर्मात्मा, साहसी, स्थिरचित और शुभ कर्मकर्ता होता है। मीठा बोलनेवाला, विचारशील, दानशील और दयालु होता है। रजोगुणप्रधान होता है। जातक का शील-अर्थात् आचरण और दूसरों के प्रति व्यवहार मृदुल तथा सर्वकर्षक और मनोरम होता है। जातक का स्वभाव निर्मल होता है। अर्थात् जातक कुटिल न होकर निर्मल और सरल चित्त होता है। जातक कोमल स्वभाव का होकर भी निर्णय लेने में कठोर होता है। नवमभाव में शनि स्थित होने से जातक की बुद्धि विषयवासना से विमुख और विरक्त होती है। आध्यात्मिक रुचिवाला होता है। योग प्रतिपादक ग्रंथों में रुचि रखता है, अर्थात् योगशास्त्र का अभ्यास करता है। तीर्थात्रा करने के लिए उद्यत और यत्नशील होता है। ज्योतिष, तत्त्व आदि गूढ़ शास्त्रों से रुचि रहती है। नवम भाव में शनि हो तो व्यक्ति प्रसिद्ध होता है। जातक के द्वारा इस प्रकार के कार्य होते हैं, जो मृत्यु के बाद भी याद रखे जाते हैं। नवम भाव में शनि होने से जातक भाग्यवान् होता है। म्लेच्छ जाति के लोगों का सहयोग भाग्योदय में हो सकता है। शनि के नवमभाव में होने से जातक अधिकार पाता है। पुरानी इमारतों की मरम्मत आदि करवाता है। 39वें वर्ष में तालाब-मन्दिर आदि साधारण जनता के हित के लिए बनवाता है। जातक का स्वभाव अभ्यासप्रिय, गम्भीर, दूसरों का तिरस्कार करने वाला होता है। जातक पुत्रवान्, धनवान् तथा सुखी होता है। जातक पुत्र, धन तथा सुख से युक्त होता है। शिक्षा पूरी होती है-बी0एस-सी, एम0एम-सी, आदि उपाधियाँ प्राप्त होती हैं। शिक्षक, वकील आदि के रूप में सफलता मिलती है। नवम स्थान के शनि से साधारण लोग 20 वें वर्ष से आजीविका का प्रारम्भ करते हैं। उच्चवर्ग के लोगों में आजीविका का प्रारम्भ 27 वें वर्ष से होता है। नवम शनि होने से बुजुर्गों की संपत्ति उत्तराधिकार से प्राप्त करता है और इसमें कुछ बढ़ोत्तरी भी होती है। शनि स्वतंत्र व्यवसाय या व्यापार के लिए भी कहीं पर अनुकूल होता है।

अन्य राशियों में शनि होने से छोटे भाई नहीं रहते।

नवमस्थ शनि उच्च में या स्वक्षेत्र में होने से जातक वैकुंठ से आकर धर्मपर्वक राज्य करके दोबारा वैकुण्ठ को जाता है। अर्थात् जातक के पूर्वजन्म तथा पुनर्जन्म दोनों अच्छे होते हैं।

शनि उच्च या स्वगृह में होने से जातक का पिता दीर्घायु होता है।

अशुभ फल : नवम स्थान में पीडित शनि होने से जातक द्वेषी, मदांध, दांभिक, कंजस, स्वार्थी, क्षुद्रबुद्धि, वाचाल, छद्मी, तथा मर्मधातक बोलने वाला होता है। जातक धर्म के विषय में दुराग्रही, पिता तथा देवता पर आस्था न रखनेवाला, तीर्थों में श्रद्धा न रखने वाला, तथा भाग्यहीन होता है। नवें स्थान में बैठा शनि रोगी, दुबला शरीर डरपोक, बनाता है। शरीर के अंगों में कहीं पर विकार और हीनता होती है। नवम शनि सुहृद्ग से सुखप्राप्ति में बाधक होता है। जातक दुष्ट बुद्धि वाला तथा सौजन्यरहित होता है। जातक मन्दबुद्धि अर्थात् मूर्ख होता है। दूसरों को संताप देनेवाला होता है। विवाह से सम्बन्धित रिश्तेदारों से हानि होती है। विदेश में घूमने से, कानूनी व्यवहारों में, लम्बे प्रवास से नुकसान होता है। ग्रन्थ प्रकाशन में असफलता मिलती है। शनि सौतेली माँ होने का योग करता है। शनि नवम होने से जातक भाग्यहीन, धनहीन, धर्महीन, पुत्रहीन भ्रातृहीन तथा पितृहीन होता है। शनि नवमभाव में होने से जातक शत्रुवशवर्ती, कूर और सदैव परस्त्रीगामी होता है। नवम में शनि होने से जातक की भाग्य की हानि होती है तथा मित्रों को कारावास होता है। नवमभाव में शनि होने से जातक पुत्र तथा नौकरों के लिए चिन्तित होता है।

नवम स्थान वृष, कन्या, तुला, मकर तथा कुभ राशियों में शनि होने से पूर्वार्जित संपत्ति नहीं होती, हो तो भी 34 वें वर्ष तक अपने ही हाथों से नष्ट होती है। दरिद्र होने का योग बनता है। स्थिरता नहीं होती, आदर नहीं होता। पिता की मृत्यु शीघ्र होती है। यदि पिता जीवित रहे तो परस्पर व्यक्तिगत वैमनस्य रहता है। भाई-बहिनों से अनबन होती है। परस्पर स्थिति अच्छी नहीं रहती-विभाजन होता है। विभाजन से स्थिति



अच्छी होती है।

विवाह के विषय में अनियमितता होती है। या तो विवाह करवाना पसन्द नहीं होता अथवा कोर्ट-रजिस्टर पद्धति से विवाह कर लेते हैं। यदि विदेश यात्रा हुई तो विदेशी युवति से विवाह कर लेते हैं।

अशुभ फलों का अनुभव वृष, कन्या, तुला, मकर तथा कुंभ में आता है।

अशुभ सम्बन्ध से चित्तभ्रम, भटकना, पागलपन आदि फल मिलते हैं।

अशुभ शनि होने से विदेश में बहुत कष्ट होता है।

शनि के साथ पापग्रह होने से, अथवा स्वयं निर्बल होने से पिता को अरिष्ट होता है।



॥

राहु

॥

राहु अष्टम भाव में

शुभ फल : अष्टमभाव में राहु होने से जातक शरीर से पुष्ट, पुष्टेहीं, नीरेग होता है। परदेस में रहने वाला होता है। जातक राजाओं तथा पाण्डितों से आदरणीय, माननीय और प्रशंसित होता है। कदाचित् राजा से प्रचुर धन का लाभ होता है और कभी धन का नाश भी होता है। जातक को व्याकुल अर्थात् विजित शत्रु से लाभ होता है। जातक धनाद्रूप होता है। अष्टमभाव में राहु हो तो मनुष्य राजा द्वारा सम्मानित होता है। अष्टम में राहु होने से जातक श्रेष्ठकर्म करता है। जातक को पुत्रसन्तति थोड़ी होती हैं। गाय आदि पशुओं की समुद्दिप्राप्त होती है। जातक बुढ़ापे में सुखी होता है। राहु मिथुन में राहु होने से महापराक्रमी और यशस्वी होता है। द्रव्यलाभ होने की संभावना होती है। राहु से स्त्रीघन, किसी सम्बन्धी के वसीयत का धन प्राप्त होता है। किन्तु इस धन की प्राप्ति में कई एक उलझने भी आती है। फायदा ताल्कालिक होता है। पत्नी की मृत्यु पति से पहले होती है। मृत्यु सावधनता में होती है। मृत्यु का ज्ञान कुछ काल पहले हो जाता है। 26 से 36 वें वर्ष तक भाग्योदय होता है।

स्त्रीराशि में राहु होने से जातक यदि रिश्वत ले लेता है तो रहस्योद्घाटन नहीं होता।

स्त्री राशि का राहु होने से धैर्यवती, धनसंग्रहकारिणी, विश्वासयोग्य पत्नी मिलती है।

अष्टम भाव राहु के शुभफलों का अनुभव स्त्रीराशियों में प्राप्त होता है।

इस भाव का राहु स्वगृह या उच्च में होने से शुभफल देता है।

अशुभ फल : राहु अष्टमभाव में होने से जातक दुर्बलदेह, भीरु, आलसी, उतावला, अतिधूर्त, दुःखी, निर्दय, भाग्यहीन और स्वभाव से कामी और वाचाल होता है। अष्टमस्थ राहु से जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, कुकृत्य कर्ता, अपवित्र काम करनेवाला, चोर, ढीठ, कातर, मायावी होता है। अष्टमराहु से जातक अल्पायु-वातरोगी और विकल होता है। जातक का भाग्योदय तो एकबार होता है किन्तु हानि बार-बार होती रहती है। कभी भाग्योदय तो कभी हानि होती है। अष्टमस्थ राहु से आयु का पहला भाग कष्टकारक होता है। अशुभसम्बन्ध से राहु बुढ़ापे में भी कष्टकारक होता है। पूर्वार्जित धन अर्थात् पैतृकधन (पिता के धन) से वंचित रहता है। पैतृक धन और पैतृक सम्पत्ति नहीं मिलती है। निर्धन और दरिद्र होता है। भाई-बच्चों से पीड़ित रहना इस व्यक्ति के जीवन की विडम्बना बन जाती है। जातक के कुटुम्ब के लोग छोड़ जाते हैं। राहु अष्टमभाव में होने से सज्जन लोग अपनी इच्छा से अकारण ही छोड़ देते हैं। अष्टम में राहु होने से जातक खर्चला, भाइयों से झगड़नेवाला, प्रवासी तथा स्त्रीसुखहीन होता है। अष्टमभाव में राहु होने से स्त्रीसुख, पुत्रसुख, मान और विद्यासुख नहीं मिलते। लोग जातक की निन्दा करते हैं। आठवें स्थान में राहु जातक को दीर्घ सूत्री, रक्त पित्त का रोगी, उदररोगी बनाता है। सदा बीमार रहना जातक की नियति है। अष्टम भाव में राहु से जातक को गुप्तरोग (गुदरोग) मस्से, भगंदर जैसे रोग होते हैं, प्रमेह और अंडकोष वृद्धि जैसी व्याधियां पीड़ित करती हैं। गुप्तरोग, प्रमेहरोग तथा वृषणवृद्धि रोग होते हैं। बहुत परिश्रम करने से जातक के पेट में वायुगोला या गुल्म आदि रोग होते हैं। ददुररोग (दाद-खुजली की बीमारी) से युक्त होता है। चोरी का इलजाम (अपवाद) लगता है। कष्ट और यातना होती है। जातक को धनप्राप्ति नहीं होती। अदम्य धनपिपासा से रिश्वत ली जाती है किन्तु रहस्योद्घाटन ही जाता है और बन्धन होता है। जातक पत्नी से पहले मृत्यु पाता है-मृत्यु समय सावधनता नहीं रहती-बेहोशी में मृत्यु होता है। भाग्योदय नहीं होता-स्वतन्त्र व्यवसाय में लाभ न होने से नौकरी करनी पड़ती है। राहु अष्टमभाव में होने से जातक बहुत देर बीमार रहकर 32 वें वर्ष में मरता है या 32 वें वर्ष में संकट आता है।

शुभग्रह के साथ होने से 45 वर्ष तक जीवित रहता है।

राहु शुभग्रह के साथ होने से 50 वें वर्ष में संकट होता है।



४

केतु

५

केतु द्वितीय भाव में

शुभ फल : दूसरे भाव का केतु रूपवान्, सुखी-सम्पन्न बनाता है। अत्यन्त सुख प्राप्त होता है। अमितसुख तथा धन का लाभ होता है।

धनभाव का केतु स्वगृह में या शुभग्रह की राशि में होने से जातक प्रिय तथा मधुरवचनवक्ता होता है।

अशुभ फल : केतु धनभाव में होने से जातक की मति नित्य व्यग्र रहती है। बुद्धि भ्रम से युक्त होती है। जातक दुष्ट, दुःखी तथा भाग्यहीन होता है। और तिरस्कार का पात्र होता है। धनभाव का केतु होने से जातक के मन को ताप होता है। सदा दुःखित रहता है। कार्यों में विघ्न होता है। यह केतु धर्मनाश करता है। जातक नीचों की संगति में रहता है। केतु के धनस्थ होने से जातक को विद्या और धन का अभाव रहता है। धनस्थान का केतु धनहानि करता है। केतु दूसरे भाव में होने से धन के विषय में राजपक्ष से व्यग्रता अर्थात् डर लगा रहता है। राजा से धन की हानि होती है। राजा से भय और कष्ट होता है। जातक पितृधन से वंचित होता है। मुख में रोग होता है। आदर-सल्कार का वचन भी जातक के मुख से नहीं निकलता है। सभा में जातक का भाषण सरस नहीं होता है प्रत्युत खराब होता है। बोलना बहुत तीखा होता है। जातक बुरी नजर से देखता है। धनस्थान का केतु धन-धान्य का नाश करता है। अन्न की नित्य चिन्ता रहती है। दूसरों के अन्न पर अवलम्बित रहता है। बास्थवजनों के साथ कलह होता है। कुटुम्बियों से झगड़े होते हैं। द्वितीय भाव के केतु से जातक का कुटुम्ब के लोगों से तथा मित्रों से विरोध होता है। जातक स्त्रीसुख से रहित होता है। धन स्थान में केतु से पुत्र की मृत्यु होती है। नुकसान के कारण धन्या बन्द होना, दीवालिया होना, बदनामी- ये फल मिलते हैं।



भावेश फल

लग्नेश - नवम स्थान में

लोमेश संहिता के अनुसार -

लग्नेशो नवमें पुंसां भाग्यवान जनवल्लभः।

विष्णुभक्तो पटुवर्गभी पुत्रदारधनैर्युतः॥

यवन जातक के अनुसार -

तनुपतिस्तनुते तपसायुतं सहजमित्रवदान्यविदेशकृत्।

सुखसुशीलनरैकयशोनिधिर्नपतिपूज्यतमो मनुजो नृणाम्॥

गर्ग संहिता के अनुसार -

मूर्तिपतिर्यदि नवमे तदा भवेत् प्रचुरबान्धवः सुकृतिः।

समचितश्च सुशीलः सुकृतिखातश्च तेजस्वी॥।

लग्नेश नवम में होने से जातक भाग्यवान, लोकप्रिय, ईश्वरभक्त, चतुर, बोलने में कुशल, तथा पुत्र, स्त्री-धन आदि से संपन्न होता है। तपस्वी, मित्र व बन्धुओं से युक्त, उदार, विदेश यात्रा करनेवाला, सुखी सदाचारी, कीर्तिमान, राजा (सरकार) द्वारा सम्मानित होता है। अच्छे काम करनेवाला, प्रसिद्ध, सदाचारी, तेजस्वी तथा मन में समता रखनेवाला होता है। जातक परोपकारी, दैवी बुद्धिवाला, भाग्यवान, कीर्तिमान तथ ईश्वरभक्ति, सत्संग, यात्रा व पुण्यकार्य करके अपनी मृत्यु के बाद भी लोगों में स्मरण किया जानेवाला होता है।

अनुभवः: लग्नेश शनि होने के कारण बहुत से शुभ फलों का अनुभव नहीं आता।

धनेश - षष्ठ स्थान में

लोमेश संहिता के अनुसार -

धनेशो रिपुगे शत्रोर्धनप्राप्तिभवेद् धूरवम्।

शत्रुतो नाशवित्स्य गुदे चास्य भवेदुरजा॥।

यवन जातक के अनुसार -

धनाधिपे षष्ठगृहे रिपूनः सदा नरः संचयकाकश्च।

बलाभिभूतैः खचरैः शुभैश्च पापैर्दरिद्रः सरिपुः खलः सयात्॥।

गर्ग संहिता के अनुसार -

षष्ठगते द्रविणपती धनसंग्रहतत्परं कृतज्जं च।

भूस्वामिल च खचरे पापे वनवजितः सदा पुरुष॥।

धनेष्ठ षष्ठ में होने से जातक को शत्रु से धन प्राप्त होता है, शत्रु के धन का नाश होता है, गुदस्थान में रोग, गुप्त रोग होता है। धन इकट्ठा करने में तत्पर, कृतज्ञ, जमीन का स्वामी होता है। धनेश बलवान तथा शुभग्रह से युक्त हो तो शत्रु नहीं होते तथा धन का संग्रह करता है, धनेश पापग्रह से युक्त हो (रवि, मंगल तथा शनि) तो दरिद्रता, दुष्टता तथा शत्रुओं से पीड़ा होती है। जातक धनहीन होता है। शत्रु इसका धन छीनेगे, धन कमाने में बहुत अड़चने आयेंगी। नौकर धन बरबाद करेंगे मूल धन कम होगा।

अनुभवः: धनेश गुरु होने के कारण उपर्युक्त जातक के शत्रु नहीं होते तथा धन का संग्रह करता है।



तृतीयेश - दशम स्थान में

लोमेश संहिता के अनुसार -

तृतीयेशो सुखे कर्मे पंचमे वा सुखं सदा।
अतिकूरा भवेद् भार्या धनाद्यो मतिमान् भवेत्॥०

यवन जातक के अनुसार -

सहजपे दशमे च नृपात् सुखं पितृजनैः कुलवृद्धजनाश्रयः।
बहुसुभाग्ययुतो नयनोत्सवो भवति मित्रयुतोऽतितरां शुचिः॥

गर्ग संहिता के अनुसार -

दुश्मिक्येशो दशमे नृपपूज्यो मातृबन्धुपरिभवतः।
उत्तमबन्धुसुमान्यो विनिश्चितो जायते मनुजः॥

तृतीयेश दशम में होने से जातक सदा सुखी, धनवान व बुद्धिमान होता है, पत्नी कूर होती है। राजा व पिता आदि से सुख मिलता है, यह घर के वृद्ध लोगों को सहारा देता है, भाग्यवान, मित्रों से युक्त शुद्ध तथा सुन्दर होता है। राजा द्वारा सम्मानित, माता तथा बन्धु पर भक्ति रखनेवाला, अच्छे सम्बन्धियों द्वारा सम्मानित होता है। अपने पराक्रम से प्रगति करता है, बड़े-बड़े व्यवसाय शुरू करता है, सम्मान तथा राजदरबार में प्रमुख पद प्राप्त करता है। धनवान तथा पराक्रमी होता है।

चतुर्थेश - अष्टम स्थान में

लोमेश संहिता के अनुसार -

सुखेशो व्ययरन्धस्ये सुखहीनो भवेत्रः।
पितृसौख्यं भवेदल्प दीर्घायुर्जायते धूरवम्॥

यवन जातक के अनुसार -

मृतिगते सरुजोम्बुपतौ नरः सुखयुतः पितृमातृसुखाल्पकः।
भवति वाहननाशकरः शुभे खलखगेतिसमागमनाशकः॥

चतुर्थेश अष्टम में होने से जातक को सुख नहीं मिलता, पिता का सुख कम मिलता है, यह दीर्घायु होता है। माता-पिता का सुख कम मिलता है, वाहनों का सुख नष्ट होता है, रोगी होता है, चतुर्थेश पापग्रह हो तो स्त्री या मित्रों से विद्योग होता है। कूरर, रोगी, दरिद्र, दुराचारी आत्मघात करनेवाला होता है। भूमि में गड़ा धन मिल सकता ता है, आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है, माता व सम्बन्धियों का सुख कम मिलता है, स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता।

अनुभवः चतुर्थेश शुक्र होने के कारण आर्थिक स्थिति अच्छी होगी, दुखी होगा, पत्नी व्यभिचारिणी होगी।



पंचमेश - नवम स्थान में

लोमेश संहिता के अनुसार -

सुतेशो नवमें कर्म पुत्रो भूपसमो भवेत्।
अथवा ग्रन्थकर्ता च विख्यातो कुलदीपकः॥

यवन जातक के अनुसार -

सुकृतभावगतस्तनयाधिपः समवितर्कं विभाजनवल्लभः।
सकलशास्त्रकलाकुशलो भवेत् नृपतिदत्तरथाश्वयुतो नरः॥

गर्ग जातक के अनुसार -

सुकृतस्थः तनयपतिः सुबोधविद्याद्यपगीतरतम्।
नृपपूजितस्वरूपं नाटकरसिकं नरं कुरुते॥

पंचमेश नवम में होने से जातक ग्रन्थकर्ता, प्रसिद्ध, कुल के लिए भूषण होता है, जातक का पुत्र राजा जैसा भाग्यवान होता है। तर्कशास्त्र का ज्ञाता, समस्त शास्त्रों व कलाओं में कुशल हो कर राजा से रथ घोड़े (वाहन) प्राप्त करता है। अच्छा ज्ञानी, विद्वान, संगीत व नाटक में रुचि लेनेवाला तथा राजा द्वारा सम्मानित होता है। शिक्षक, तत्वज्ञ होता है, धर्म के विषय में विशिष्ट मत होते हैं, धन अच्छा मिलता है।

अनुभवः पंचमेश बुध होने के कारण ऊपर वर्णित शुभ फल अनुभव होते हैं।

षष्ठेश - व्यय स्थान में

लोमेश संहिता के अनुसार -

षष्ठेशोऽष्टमरिःफस्ये रोगी शत्रुर्मनीषिणाम्।
परजायाभिगामि च जीवहिंसासुतत्परः॥

यवन जातक के अनुसार -

व्ययगते च चतुष्पदवाजिनां रिपुपतौ धनधान्यसुखक्षयः।
गमनबुद्धिनिरन्तरमेष यद्दिननिशं च धनाय कृतोद्यमः॥

गर्ग जातक के अनुसार -

षष्ठपतौ द्वादशगे चतुष्पदधनधान्ययुतः।
चपलो मदाभ्ये लक्ष्याल्हादपरे नरो भवति॥

षष्ठेश व्यय स्थान में होने से जातक रोगी, विद्वानों का शत्रु, परस्ती से सम्बन्ध रखनेवाला तथा प्राणियों की हिंसा करनेवाला होता है। पशु व धन की हानि होती है, आने जाने में धनहानि होती है, देवभक्त होता है। चौपाये पशु, घोड़े आदि तथा धनधान्य व सुख का नाश होता है, हमेशा धूमने की इच्छा रहती है। रात दिन धन कमाने का प्रयत्न करता है। जातक चंचल, घमंड से अंध, धन और चैन में मग्न, चौपाये पशु तथा धनधान्य से युक्त होता है। जातक को राजा (सरकार) से दण्ड मिलता है, बहुत संकट आते हैं, बहुत धनहानि होती है।

अनुभवः षष्ठेश चन्द्र होने के कारण ऊपर वर्णित शुभ फल अनुभव होते हैं।



सप्तमेश - अष्टम स्थान में

लोमेश संहिता के अनुसार -

जायेशो चाष्टमें षष्ठे सरोषा कामिनी भवेत्।
क्रोधयुक्तो भवेद्वापि न सुखं लभते क्वचित्॥

यवन जातक के अनुसार -

निधनगे तु कलत्रपतौ परः कलहकृद् गृहिणी सुखवजितः।
दायिता निजया न समागमो यदि भवेदथवा मृतभार्यकः॥

मानसागरी के अनुसार -

सप्तमपतिदक्निर्धनगतो गणिकासुरतः करग्रहरहितः।
नित्यं चिन्तायुक्तो मनुजः किल जायते दुःखी॥

सप्तमेश अष्टम स्थान में होने से जातक की पत्नी क्रोधी होती है, या स्वयं क्रोधी होता है, कहीं भी सुख नहीं मिलता। जातक वेश्या में आसक्त, अविवाहित हमेशा चिन्तित व दुखी होता है। इगड़ालू होता है, पत्नी का सुख नहीं मिलता, अपनी पत्नी की मृत्यु होती है या उससे समागम नहीं होता। घर में उदास रह कर वेश्या में आसक्त होता है, पत्नी की सेवा नहीं करता। जातक के विवाह में बहुत खर्च होता है। स्त्री के सम्बन्ध से दुःखी होता है।

अष्टमेश - नवम स्थान में

लोमेश संहिता के अनुसार -

अष्टमेशो तपःस्थाने महापापी च नात्तिकः।
सुताद्रयात्वथवा वन्ध्या परभार्याधने रुचिः॥

यवन जातक के अनुसार -

सुकृतगेऽष्टमभावपतौ जनो भवति पापरतः खलु हिंसकः।
खलु सुहन्मुख पूज्य इतस्ततो भवति मित्रगणेन विवर्जितः॥

गर्ग जातक व मानसागरी के अनुसार -

मृतिनाथे नवमस्थे निःसंगो जीवधातकः पापी।
निर्बुद्धु निःस्त्रेही पूज्ये विमुखो भवेद् व्यंगः॥

अष्टमेश नवम स्थान में होने से जातक पापी, नास्तिक, परस्त्री तथा परधन में रुचि रखनेवाला होता है, इसकी पत्नी वन्ध्या या पुत्रयुक्त होती है। हिंसक, मित्ररहित, यहां वहां आदर पानेवाला होता है। निःसंग, जीवों का धात करनेवाला, मित्र व बन्धुओं से रहित, आदरणीय लोगों के विरुद्ध रहनेवाला होता है इसके चेहरे में कोई व्यंग रहता है। जातक को किसी के मृत्युपत्र के अनुसार इस्टेट की व्यवस्था देखनी पड़ती है, लोग जातक के पास धरोहर रखते हैं, जातक के कहने पर पैसा देते हैं।

अनुभव : अष्टमेश बुध होने के कारण ऊपर वर्णित शुभ फल अनुभव होते हैं।



नवमेश - अष्टम स्थान में

लोमेश संहिता के अनुसार -

भाग्येशो निधनस्थे तु जनो भाग्यविवर्जितः।

न जातु ज्यायसो भातुः सुखं जन्मनि तस्य वै॥

यवन जातक के अनुसार -

भवति दुष्टतनुर्जनवचको मृतिगते सुकृताधिपतौ सदा।

खलजनः सुकृतैरहितः शठो विटसखा च तथैव नपुंसकः॥

गर्ग जातक व मानसागरी के अनुसार -

दुष्टो जन्तुविघाती गृहबन्धुविवर्जितः सुकृतरहितः।

नवमेशो मृत्युगते कूररः षण्डस्तु विज्ञेयः॥

भाग्येश अष्टमस्थ हो तो जातक भाग्यहीन तथा बड़े भाई के सुख का जीवनभर अभाव वाला होता है। दूषित शरीरवाला, लोगों को धोखा देनेवाला, दुष्ट, पुण्यहीन, बदमाश, नीच लोगों का मित्र तथा नपुंसक होता है। प्राणियों का घात करने वाला, घर तथा बन्धुओं से रहित, कूर होता है।

अनुभव : नवमेश शुक्र होने के कारण ऊपर वर्णित शुभ फल अनुभव होते हैं।

दशमेश - दशम स्थान में

लोमेश संहिता के अनुसार -

दशमेशो सुखें कर्म ज्ञानवान् सहविक्रमी।

गृह्यदेवार्चनरतो धर्मात्मा सत्यसंयुतः॥

यवन जातक के अनुसार -

जननिसौख्यकरः शुभदः मातृकुलेषु रतः सुधीः।

अतिपटुः प्रबलो दशमाधिष्ठे स्वगृहगे नृपमानधनान्वितः॥

गर्ग जातक व मानसागरी के अनुसार -

गगनपतिर्गगनगतो जनयति जननी सुखप्रदं पुरुषम्।

जननीकुलविपुलसुखं प्रकटघटीनां पटीयांसम्॥

दशमेश दशम में हो तो वह मनुष्य ज्ञानी, पराक्रमी, धर्मात्मा, सत्यपरायण, गुप्त रूप से किसी देवता की पूजा करनेवाला होता है। माता को सुख देता है, शुभ कार्य करता है, माता के घराने पर प्रेम करता है, बुद्धिमान, कुशल, बलवान, तथा राजा से सम्मान व धन पानेवाला होता है। माता के कुल से अधिक सुखी, प्रत्यक्ष घटनाओं में चतुर होता है। जातक बड़े पद का अधिकारी होता है, सम्मान पाता है, लोगों में प्रसिद्ध व राजमान्य होता है।

अनुभव : दशमेश मंगल होने के कारण ऊपर वर्णित अशुभ फल अनुभव होते हैं।



लाभेश - षष्ठ स्थान में

लोमेश संहिता के अनुसार -

**लाभेशो षष्ठभवने नानारोगसमन्वितः।
सर्वसुखं भवेत् तस्य प्रवासी परसेवकः॥**

यवन जातक के अनुसार -

**रिपुयुतोपि हि दीर्घगदी कृशश्तुरता चतुरैः सह सम्मतः।
रिपुगते भवपे च विदेशगां परणमेव च तस्करजं भयम्॥**

गर्ग जातक व मानसागरी के अनुसार -

**लाभाधिपे षष्ठगते सुवैरं सुदीर्घरोगं चतुरंगसंग्रहम्।
मृति समाप्नोति च चौरहस्तात् कूररेच देशान्तरसंगतो नरः॥**

लाभेश षष्ठ स्थान में होने से जातक अनेक प्रकार के रोगों से पीड़ित, सुखी, प्रवासी, दूसरे की सेवा करनेवाला होता है। शत्रुओं से युक्त, लम्बे रोगों से पीड़ित, दुबला, चतुर, चतुर लोगों से सम्मानित, विदेश जानेवाला, तथा वहीं मृत्यु पानेवाला या चोरों से पीड़ित होता है। बहुत शत्रुता, वह चार प्रकार की सेना का संग्रह करता है। पापग्रह (रवि, मंगल तथा शनि) हो तो विदेश में चोरों के कारण मृत्यु होती है। जातक को मिला हुआ लाभ भी नष्ट होगा, दरिद्रता रहेगी, मित्र भी शत्रु जैसे होंगे, मामा की मदद मिलेगी।

व्ययेश - नवम स्थान में

लोमेश संहिता के अनुसार -

**भ्रातृद्वेषी गुरुद्वेषी प्रियद्वेषी भवेन्नरः।
व्ययेशो सहजे धर्मे स्वशरीरस्य पोषकः॥**

यवन जातक के अनुसार -

**सुकृतकृत् व्यये नवमाश्रिते वृषभगोमहिषीद्रविणः सुधीः।
भवति तीर्थविचक्षणपुण्ययुक्त खलखगेऽपि च पापरतो नरः॥**

गर्ग जातक व मानसागरी के अनुसार -

यवनजातक जैसा वर्णन है।

व्ययेश नवम में होने से जातक केवल अपने शरीर का पोषण करता है, बाकी सब प्रियजन, भाई, गुरु का द्वेष करता है। अच्छे काम करता है, गाय, बैल, भैंस यह धन इस के पास होता है, बुद्धि अच्छी होती है, तीर्थ यात्रा कर पुण्य प्राप्त करता है, किन्तु व्ययेश पापग्रह हो तो पापकार्यों में बुद्धि प्रवृत्त रहती है। परोपकार व कीर्ति प्राप्त करने में धन खर्च होगा, सब सम्पत्ति धर्मकार्यों में खर्च होगी।



मंगली-दोष विचार

1. अगस्त्य संहिता के अनुसार -

धने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
भार्या भर्तु विनाशाय भर्तुश्च स्त्री विनाशनम्॥

2. मानसागरी के अनुसार -

धने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्या भर्तुविनाशाय भर्तुः कन्या विनश्यति॥

3. बृहत् ज्योतिषसार के अनुसार -

लग्रे व्यये चतुर्थे च सप्तमे वा अष्टमे कुजः।
भर्तरं नाशयेद् भार्या भर्ताभार्या विनाशयेत्॥

4. भावदीपिका के अनुसार -

लग्रे व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्रीणां भर्तु विनाशः स्पात् पुंसां भार्या विनश्यति॥

5. बृहत् पाराशर होरा के अनुसार -

लग्रे व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे।
शुभ द्वग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम्॥

उपरोक्त श्लोकों का भावार्थ यह है कि जन्म लग्र से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश स्थान में मंगल स्थित होने पर मंगल दोष या कुज दोष होता है।

कुछ आचार्यों के अनुसार लग्र के अतिरिक्त चन्द्र लग्र, शुक्र या सप्तमेश से इन्हीं स्थानों में मंगल स्थित होने पर भी मंगली दोष होता है।

शास्त्रोक्ति है -

लग्रेन्दु शुक्राद् दुःस्थाने यद्यस्ति क्षिति संभवः।
तद्वशापाक समये दोषमाहर्मनीषिणः॥

यदि मंगल लग्र, चंद्रमा या शुक्र से दुःस्थान में स्थित हो तो उसकी दशा में अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

सामान्यतः मंगल दोष को लग्र व चन्द्र से देखा जाता है।

Aumarya की कुण्डली में मंगल लग्र से दशम भाव में स्थित है और चन्द्र लग्र से ग्यारह भाव में स्थित है। अतः **Aumarya** जन्म लग्र व चन्द्र लग्र दोनों से मांगलिक नहीं हैं।



मंगली दोष का फल

मंगली दोष वैवाहिक जीवन को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता है - विवाह में विप्लव, विलम्ब, व्यवधान या धोखा, विवाहोपरान्त दम्पति में से किसी एक अथवा दोनों को शारीरिक, मानसिक अथवा आर्थिक कष्ट, पारस्परिक मन-मुटाव, आरोप-प्रत्यारोप तथा विवाह-विच्छेद। अगर दोष अत्यधिक प्रबल हुआ तो दोनों अथवा किसी एक की मृत्यु हो सकती है।

फिर भी मंगली दोष से भयभीत या आतंकित नहीं होना चाहिये। प्रयास यह करना चाहिये कि मंगली का विवाह मंगली से ही हो क्योंकि मंगल-दोष साम्य होने से वह प्रभावहीन हो जाता है तथा दोनों सुखी रहते हैं।

दम्पत्योर्जन्मकाले व्ययधनहिबुके सप्तमे लग्नरस्ते। लग्नाच्चन्द्राच्च शुक्रादपि भवति यदा भूमिपुत्रो द्वयोर्वै॥
तत्साम्यात्पुत्रमित्रप्रचुरधनपतां दंपती दीर्घ-काला। जीवेतामेकहा न भवति मश्तिरिति प्राहुरत्रात्रिमुख्याः॥

अर्थात् यदि वर और कन्या के जन्मांग में मंगल द्वितीय, द्वादश, चतुर्थ, सप्तम अथवा अष्टम भाव में लग, चंद्रमा अथवा शुक्र से सम्भाव में स्थित हो तो समता का मंगल दोष होने के कारण वह प्रभावहीन हो जाता है। परस्पर सुख, धनधार्य, संतानि, स्वास्थ्य एवं मित्रादि की उपलब्धि रहती है।

कुज दोष वत्ति देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्यो सुखवर्धनम्॥
मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगल दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य-सुख बढ़ता है।

मंगली दोष परिहार के उपाय

मंगली दोष की शान्ति के लिये प्रमुख उपाय हैं -

* मंगलवार का व्रत रखें। दिन में नमक के बिना तरल भोज्य पदार्थ (चाय, काफी, दूध, लस्सी, फलों के रस) लें। सायंकाल थाली में रोली से त्रिकोण बनाएँ तथा पंचोपचार (लाल चंदन, लाल पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य) से पूजन करें। तत्पश्चात् सूर्यास्त से पूर्व ही गेहूँ की रोटी, घी, गुड़ ग्रहण करें।

* मंगल दोष अधिक प्रबल हो तो मंगल चंडिका स्तोत्र का 108 दिन तक नित्यप्रति 21 बार जप करें। प्रातः काल पूर्वाभिमुख होकर बैठें व पंचमुखी दीप प्रज्वलित करके अपने इष्ट तथा मंगल ग्रह का पंचोपचार से पूजन करें, फिर निम्नलिखित जप करें -

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके ।
हारिके विपदां राशो हर्षमंगलकारिके ॥
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके ।
शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ॥
मंगले मंगलाहें च सर्वमंगलमंगले ।
सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ॥



साढ़ेसाती फल

प्राचीन काल से सामान्य भारतीय जनमानस में यह धारणा प्रचलित है कि शनि की साढ़ेसाती बहुधा मानसिक, शारीरिक और आर्थिक दृष्टि से दुखदायी एवं कष्टप्रद होती है। शनि की साढ़ेसाती सुनते ही लोग चिन्तित और भयभीत हो जाते हैं। साढ़ेसाती में असन्तोष, निराशा, आलस्य, मानसिक तनाव, विवाद, रोग-रिपु-ऋण से कष्ट, चोरों व अप्ति से हानि और घर-परिवार में बड़ों-बुजुर्गों की मृत्यु जैसे अशुभ फल होते हैं। शास्त्र शनि की साढ़ेसाती का फल इस प्रकार बतलाते हैं-

कल्याणं खलु यच्छति रविसुतो राशौ चतुर्थै में व्याधि बन्धुविरोधदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्॥

राशौ द्वादशशीर्षजन्महृदये पादौ द्वितीये शनिनानाक्लेशकरोऽपि दुर्जनभयं पुत्रान् पश्चन् पीडनम्॥

हानिःस्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् रामारिध्यविनाशनं प्रकुरुत तुर्याष्टमै वाथवा॥

अर्थात् चन्द्र राशि से चौथे या आठवें स्थान में शनि आने पर रोग, भाइयों से लड़ाई विदेश में प्रवास, कष्ट, चिन्ता ये फल मिलते हैं। चन्द्र राशि से बारहवें, पहले या दूसरे स्थान में गोचर के शनि से (साढ़ेसाती में) सिर, हृदय, पैर में पीड़ा होती है, दुष्टों से भय होता है, पुत्रों और पशुओं को कष्ट होता है।

अनुभव में पाया गया है कि सम्पूर्ण साढ़े-सात साल पीड़ा दायक नहीं होते। बल्कि साढ़ेसाती के समय में कई लोगों को अत्यधिक शुभ फल जैसे विवाह, सन्तान का जन्म, नौकरी-व्यवसाय में उन्नति, चुनाव में विजय, विदेश यात्रा, इत्यादि भी मिलते हैं।

प्रथम चक्र की साढ़े साती का फल

(26-01-2017 से 29-03-2025 तक)

शनि के साढ़ेसाती का प्रथम चक्र अत्यन्त प्रबल होता है इस अवधि में आपको शारीरिक कष्ट, अवरोध एवं अनेक प्रकार से क्षति उठानी पड़ सकती है। माता-पिता को भी शनि पीड़ित करता है।

द्वितीय चक्र की साढ़े साती का फल

(07-12-2046 से 05-02-2055 तक)

द्वितीय आवृत्ति में शनि अपेक्षाकृत मध्यम प्रभाव डालता है। इस अवधि में आपकी अपने श्रम व संघर्ष से उत्तेजित होगी। मानसिक अशान्ति अवश्य बनी रह सकती है किन्तु भौतिक उन्नति निश्चित होगी। माता-पिता या अन्य बुजुर्गों का वियोग सहन करना पड़ सकता है।

तृतीय चक्र की साढ़ेसाती का फल

(16-01-2076 से 19-03-2084 तक)

तृतीय आवृत्ति में शनि अनेक कठोर फल देता है। इस अवधि में मारक का प्रभाव अधिक होने के कारण आपको प्रबल शारीरिक कष्ट हो सकता है। इस आक्रमण से सौभाग्यशाली ही सुरक्षित रह पाते हैं।



साढ़ेसाती की प्रथम, द्वितीय व तृतीय फैया का फल

यह सामान्यतः पाया गया है कि साढ़ेसाती की तीन फैया में से एक शुभ, एक मध्यम तथा एक अशुभ फलदायी होती है। इसका निर्णय शनि के अष्टक वर्ग तथा सर्वाष्टक वर्ग में प्राप्त शुभ रेखाओं की संख्या के आधार पर किया जाता है। यदि शनि अष्टक वर्ग में चार रेखायें तथा सर्वाष्टक वर्ग में 28 रेखायें हैं तो शनि मिश्रित फलदायी होता है। इससे कम है तो अशुभ तथा अधिक होने पर शुभ फल प्राप्त होते हैं। यदि जन्म कुण्डली में शनि बलवान् (उच्च, स्वक्षेत्रीय आदि) या योगकारक हो या चन्द्रराशि का स्वामी हो तो जातक के लिए शनि का दुष्प्रभाव औरों की अपेक्षा बहुत कम होता है।

साढ़ेसाती की प्रथम फैया का फल

प्रथम चक्र 26-01-2017 से 20-06-2017 तक व 26-10-2017 से 24-01-2020 तक

द्वितीय चक्र 07-12-2046 से 06-03-2049 तक व 09-07-2049 से 04-12-2049 तक

तृतीय चक्र 16-01-2076 से 10-07-2076 तक व 11-10-2076 से 14-01-2079 तक

इस अवधि में शनि चन्द्र राशि से बाहरवे भ्रमण करता है तथा दूसरे, छठे, नवे भावों पर पूर्ण दृष्टि होती है। प्रथम फैया में शनि का निवास सिर पर रहता है। मानसिक-शारीरिक सुख में कमी आती है। नेत्रों की व्याधि, चश्मे आदि का प्रयोग सम्भव है। अचानक आर्थिक हानि होती है। अवांक्षित अतिरिक्त व्यय, अपव्यय होता है। जातक आर्थिक रूप से व्यथित रहता है आय की अपेक्षा व्यय अधिक होता है। कुटुम्ब से वियोग हो सकता है। परिवार में अशान्ति रहती है। पिता को कष्ट होता है। पिता से तनाव होता है। भाय पतन का भय रहता है। कार्यों में परेशानियाँ एवं विलम्ब होता है। प्रयासों के सुफल नहीं मिलते। लोगों से सहयोग नहीं मिलता। राजकीय लोगों से पीड़ा सम्भव है। आध्यात्मिकता में रुचि जाग्रत होती है। दुर्घटनाओं का भय होता है। व्यर्थ भ्रमण होता है। दूर की यात्रा करनी पड़ती है, जिसमें कष्ट उठाना पड़ता है। यह शनि पंचम से अष्टम होता है, अतः सन्तान के लिए भी यह समय कष्टप्रद होता है।

साढ़ेसाती की द्वितीय फैया का फल

प्रथम चक्र 24-01-2020 से 29-04-2022 तक व 12-07-2022 से 17-01-2023 तक

द्वितीय चक्र 06-03-2049 से 09-07-2049 तक व 04-12-2049 से 24-02-2052 तक

तृतीय चक्र 14-01-2079 से 11-04-2081 तक व 03-08-2081 से 06-01-2082 तक

इस अवधि में शनि चन्द्र राशि पर भ्रमण करता है तथा तीसरे, सातवें, दसवें भावों पर पूर्ण दृष्टि होती है। शनि इस फैया में उदर भाग में रहता है। अतः शरीर के सम्पूर्ण मध्य भाग में रोग व्याधि सम्भव होती है। शारीरिक तेज प्रभावित होता है। बुद्धि काम नहीं करती, गलत निर्णय होते हैं। भाईयों से तथा व्यापार में सांदीर से विवाद होता है। पत्नी को शारीरिक कष्ट अथवा पत्नी से गड़ा होता है। आर्थिक चिन्ताएँ निरन्तर रहती हैं। मानसिक स्तर पर प्रबल उद्देलन रहता है। व्यर्थ का भय व्यथित करता है। कोई कार्य मनोनुकूल नहीं होता, अपूर्ण कार्य दुःखी करते हैं, व्यवधान प्रबल रहते हैं। पारिवारिक तथा व्यवसायिक जीवन अस्त-व्यस्त रहता है। किसी सम्बन्धी को मारक कष्ट होता है। दूर स्थानों की यात्राएँ, शत्रुओं से कष्ट, आत्मिय जनों से अलगाव व्याधि, सम्पत्ति क्षति व सामाजिक पतन, मित्रों का अभाव एवं कार्यों में अवरोध इस चरण के फल हैं।

साढ़ेसाती की तृतीय फैया का फल

प्रथम चक्र 29-04-2022 से 29-04-2022 तक व 17-01-2023 से 29-03-2025 तक

द्वितीय चक्र 24-02-2052 से 14-05-2054 तक व 01-09-2054 से 05-02-2055 तक

तृतीय चक्र 11-04-2081 से 03-08-2081 तक व 06-01-2082 से 19-03-2084 तक

इस अवधि में शनि चन्द्र राशि से दूसरे भ्रमण करता है तथा चौथे, आठवें, यारहवें भावों पर पूर्ण दृष्टि होती है। उत्तरती साढ़ेसाती में शनि पैरों पर रहता है, अतः इस अवधि में पैरों में कष्ट होता है। शारीरिक दृष्टि से निर्बलता आती है। दैहिक रूप से जड़ता का अनुभव होता है, शरीर में आलस्य रहता है। आनन्द बाधित होता है। व्यर्थ के विवाद उत्पन्न होते हैं। आत्मियों से अकारण संघर्ष होता है उन्हें गम्भीर व्याधि अथवा किसी को मरण तुल्य कष्ट होता है। सुखों का नाश होता है, पदाधिकार पर संकट आता है। व्यय अत्यधिक होता है। पैसा आता है किन्तु उसी गति से व्यय भी होता है। निम्न श्रेणी के लोगों से कष्ट मिलता है। अष्टम पर दृष्टि होने से आयु प्रभावित होती है। चतुर्थ पर दृष्टि होने से गृह सुख, मातृसुख, वाहन सुख आदि तथा भौतिक सुख-सुविधाओं में बाधा आती है।



लघु कल्पाणी दैया व कंटक शनि का फल

शनि की चतुर्थ स्थान की दैया (कंटक शनि) का फल

प्रथम चक्र से तक व से तक

द्वितीय चक्र 02-06-2027 से 20-10-2027 तक व 23-02-2028 से 08-08-2029 तक

तृतीय चक्र 07-04-2057 से 27-05-2059 तक व से तक

चन्द्र राशि से शनि चतुर्थ स्थान में भ्रमण करता है तो छठे, दसवें एवं चन्द्र लग्न पर पूर्ण दृष्टि रहती है। स्थान परिवर्तन या स्थानान्तरण होता है। आवासीय सूख की क्षति होती है। हृदय सम्बन्धी कष्ट या अनियमित रक्तचाप सम्प्रव होता है। सम्बन्धियों से वियोग होता है। पारिवारिक सूख में कमी आती है। जनता एवं राज्य दोनों द्वारा विरोध होता है। शनि की पूर्ण दृष्टि छठे भाव पर रहती है। अतः शत्रुओं एवं रोगों से कष्ट होता है। शनि की पूर्ण दृष्टि दशम पर रहती है। अतः कार्य क्षेत्र में अवरोध आता है। शनि की दशम दृष्टि चन्द्र लग्न पर रहती है। अतः मन में घबड़ाहट रहती है।

शनि के सप्तम स्थान की दैया (कंटक शनि) का फल

प्रथम चक्र से तक व से तक

द्वितीय चक्र 12-07-2034 से 27-08-2036 तक व से तक

तृतीय चक्र 24-08-2063 से 05-02-2064 तक व 09-05-2064 से 12-10-2065 तक

जन्म राशि से शनि सप्तम स्थान में भ्रमण करता है तो नवम, चन्द्र लग्न एवं चतुर्थ पर पूर्ण दृष्टि रहती है। पत्नी को शारीरिक कष्ट होता है अथवा पत्नी या व्यापार के भागीदारी से गम्भीर मतभेद होते हैं। जातक मूत्र-जनन तन्त्र सम्बन्धी रोगों से कष्ट पाता है। मानसिक चिन्ताएं बढ़ती हैं। नवम पर दृष्टि होने से भाग्य में गतिरोध आता है, पिता को कष्ट होता है, मान सम्मान पर अंच आती है तथा कार्यक्षेत्र में उथल पूथल होती है। चतुर्थ पर दृष्टि होने से माता का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। वाहन सम्बन्धी कष्ट होते हैं। घर छोड़ना पड़ता है, दीर्घ प्रवास होता है, यात्रायें होती हैं और यात्रा में कष्ट होता है।

शनि के अष्टम स्थान की दैया का फल

प्रथम चक्र से तक व से तक

द्वितीय चक्र 27-08-2036 से 22-10-2038 तक व 05-04-2039 से 12-07-2039 तक

तृतीय चक्र 12-10-2065 से 03-02-2066 तक व 03-07-2066 से 30-08-2068 तक

जन्म राशि से शनि अष्टम स्थान में भ्रमण करता है तो दसवें, दूसरे एवं पंचम भाव पर पूर्ण दृष्टि रहती है। आयु बल प्रभावित होता है। दीर्घावधि की बीमारी या दुर्घटना की संभावना रहती है। अपमानित होने का भय रहता है। राजकीय लोगों से पीड़ा का भय रहता है। कार्यक्षेत्र में परिवर्तन का योग बनता है। कार्य व्यापार पर आघात लगता है। धन सम्पत्ति की हानि होती है। सन्तान को कष्ट होता है या सन्तान वियोग की संभावना बनती है।

शनि के दशम स्थान की दैया (कंटक शनि) का फल

प्रथम चक्र से तक व से 02-11-2014 तक

द्वितीय चक्र 27-01-2041 से 06-02-2041 तक व 26-09-2041 से 11-12-2043 तक

तृतीय चक्र 04-11-2070 से 05-02-2073 तक व 31-03-2073 से 23-10-2073 तक

शनि राशि से दसवें भ्रमण करता है तो बारहवें, चतुर्थ एवं सप्तम भावों को भी अपनी पूर्ण दृष्टि से प्रभावित करता है। कार्यक्षेत्र में अवरोध आता है। आजीविका क्षेत्र में उत्थान पतन या व्यतिक्रम होता है। किसी ऐसे कार्य (व्यापार) में प्रवृत्ति हो जिसमें असफलता हो या ऐसा दुष्कर्म बन जाए जिसके कारण अप्रतिष्ठा हो, सम्मान भंग हो। अनावश्यक आर्थिक व्यय के प्रसंग आते हैं। पत्नी से मतभेद या अलगाव संभव है। घर सम्पत्ति के बारे में चिन्ता उत्पन्न होती है।



शनि की साड़ेसाती तथा ढैया के उपाय

शनि की साड़ेसाती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय करें -

1. मन्त्र

(क) महामृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जप (नित्य 10 माला, 125 दिन) करें -

ॐ त्रयम्बकम् यजामहे सुगच्छि पुष्टिवर्द्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

(ख) शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जप करें -

ॐ शत्रोदेवीरभिष्ठ्य आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्त्वन्तु नः । ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

(ग) पौराणिक शनि मंत्र -

ॐ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् । छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

2. स्तोत्र

- शनि के निम्नलिखित स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बध्नुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः । सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः ॥
तानि शनि-नामानि जपेदश्वत्यसन्निधौ । शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद् भविष्यति ॥

साड़ेसाती पीडानाशक स्तोत्र - पिप्पलाद उवाच -

नमस्ते कोणसंस्थ्य पिङ्गलाय नमोस्तुते । नमस्ते बधूरूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते ॥

नमस्ते रौद्ररद्धाय नमस्ते चान्तकाय च । नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ॥

नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तुते । प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ॥

3. रत्न / धातु

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव की सतह की कील का बना छल्ला मध्यमा में धारण करें।

आपकी कुण्डली में शनि लग्नेशाव राशीश है।

न्यूनतम 4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में अंगूठी बनवा कर मध्यमा में धारण करने से लाभ होगा।

4. क्रत

शनिवार का व्रत रखें। व्रत के दिन शनिदेव की पूजा (कवच, स्तोत्र, मन्त्र जप) करें। शनिवार व्रतकथा पढ़ना भी लाभकारी रहता है। व्रत में दूध, लस्सी तथा फलों के रस ग्रहण करें, सांयकाल हनुमान जी या भैरव जी का दर्शन करें। काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकते हैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण करें।

5. औषधि

प्रति शनिवार सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा और लोध मिले हुए जल से स्नान करें।

6. दान

शनि की प्रसन्नता के लिये उड़द, तेल, इन्द्रनील (नीलम), तिल, कुलथी, भैंस, लोह, दक्षिणा और श्याम वस्त्र दान करें।

7. अन्य उपाय

(क) शनिवार को सांयकाल पीपल वृक्ष के चारों ओर 7 बार कच्चा सूत लपेटें, इस समय शनि के किसी मंत्र का जपे करते रहें। फिर पीपल के नीचे सरसों के तेल का दीपक प्रज्वलित करें, तथा ज्ञात-अज्ञात अपराधों के लिए क्षमा माँगें। (ख) शनिवार को अपने हाथ की नाप का 19 हाथ काला धागा माला बनाकर पहनें। (ग) टोटका - शनिवार के दिन उड़द, तिल, तेल, गुड़ मिलाकर लड्डू बना लें और जहाँ हल न चला हो वहां गाड़ दें। (घ) शनि की शान्ति के लिए बिछू की जड़ शनिवार को काले डोरे में लपेट कर धारण करें।



रत्न परामर्श

रत्न घारण करने से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संभावित परिवर्तन किए जा सकते हैं। यह एक प्रचीन विद्या है। मणि माला नामक ग्रन्थ में रत्नों के बारे में कहा गया है -

**माणिक्यं तरणे: सुजात्यममलं मुक्ताफलं शीतगोमहियस्य च विद्वुमो निगदितः सौम्यस्य गारुत्मतं ।
देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्ण्यसय वत्रं शनेर्नालं निर्मलमन्ययोश्च गदिते गोमेदवैदूर्यकं ॥**

"ग्रहों के विपरीत होने पर उन्हें शान्त करने के लिए रत्न पहने जाते हैं। सूर्य के विपरीत होने पर निर्दोष माणिक, चन्द्र के विपरीत होने पर उत्तम मोती, मंगल के लिए मूँगा, बुध के लिए पत्रा, बृहस्पति के लिए पुखराज, शुक्र के लिए हीरा, शनि को शान्त करने के लिए नीलम, राहु के लिए गोमेद एंव केतु के विपरीत होने पर लसुनिया घारण करना चाहिए।"- मणि माला भाग 2, 79

धन्यं यशस्यमायुष्यं श्रीमद् व्यसनसूदनं । हर्षणं काम्यमोजस्यं रत्नाभरणधारणं ॥

ग्रहदृष्टिहरं पुष्टिकरं दुःखप्रणाशनं । पापदौर्भाग्यशमनं रत्नाभरणधारणं ॥

"रत्न जडित आभूषण को घारण करने पर सम्मान, यश, लम्बी आयु, धन, सुख और धन में वृद्धि होती है तथा सभी प्रकार की अभिलाषाओं की पूर्ति होती है। ऐसा करने से ग्रह के विपरीत प्रभाव कम होते हैं, शरीर पुष्ट होता है तथा दुःख, पाप एंव दुर्भाग्य का नाश होता है।" - मणि माला, भाग 2, 121-122

जीवन रत्न

लग्नेश का रत्न धारण करना सदा शुभफल देने वाला होता है। यह स्वास्थ्य, प्राणशक्ति, कार्य में सिद्धि तथा कुशलता प्रदान करता है। यह जीवन के बाकी क्षेत्रों में भी सहायता प्रदान करता है। आपका लग्नेश शनि है अतः शनि का रत्न धारण करना आपके लिए शुभकारी होगा। शनि के लिए रत्न हैं - नीलम, नीला स्पाइनल, राजवर्त्त मणि, नीलमणि, बिल्लौर।

"नीलम कड़वा एंव उष्ण होता है तथा यह कफ, पित्त एंव वायु तीनों का नाश करता है तथा घारण करने पर शनि के दोष का निवारण करता है।" - मणि माला, भाग 2, 68

"जो व्यक्ति स्वच्छ नीलम घारण करता है, नारायण उससे खुश रहते हैं, उसकी उम्र, परिवार प्रतिष्ठा, यश तथा ऐश्वर्य में वृद्धि होती है।" - मणि माला, भाग 1, 419

"जिस व्यक्ति के पास दोषाहित, स्वच्छ नीलम रहता है उसे यश, उम्र तथा स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।" - मणि माला, भाग 2, 418

"नीलमणि राजा की विशेष कृपा दिलाती है, विरोधियों के क्रोध को शान्त करती है, जादू होने से मुक्त कराती है तथा घारण करने वाले को कारागार से मुक्ति दिलाती है।" - संत जेरोम

"राजवर्त्त मणि कोमल, स्निग्ध, शीतल तथा पित्त का नाश करने वाली होती है, तथा घारण करने पर सौभाग्य की वृद्धि करने वाली होती है।" - मणि माला, भाग 2, 69

धारण करने की विधि - शनि के लिए रत्न को स्वर्ण में जडित किया जाना चाहिए पर इसे लोहे में भी जड़ाया जा सकता है। रत्न जडित अंगूठी को मध्यमा में शनिवार के दिन सूर्योदय से दो घन्टे 40 मिनट पहले धारण करें। शनि के रत्न को शुद्ध तथा प्रबल करने के लिए मंत्र - ॐ शं शनैश्वराय नमः।



पुण्य रत्न

पंचमेश का रत्न पुण्य प्रदान करता है तथा यह सृजनात्मक शक्ति तथा सन्तान के लिए भी शुभकारी है। आपका पंचमेश बुध है, अतः बुध का रत्न आपके लिए लाभकारी होगा। बुध के लिए रत्न है - पत्रा, पेरिडाट, जेड।

"पत्रा शीतल, विष का नाश करने वाला, मधुर, अतिसार, अजीर्ण तथा पित्त का नाश करने वाला, शूल और गुल्म रोगों का नाश करने वाला तथा धारण करने पर भूत-पिशाच के भय से मुक्ति दिलाता है।" - मणि माला, भाग 2, 70

"ऐसे सारे गुणों से युक्त पत्रा मनुष्य के सब पापों का नाश करता है।" - मणि माला, भाग 1, 375

"पण्डितों के अनुसार, पत्रा घनघान्य बढ़ाने वाला, युद्ध में विजय दिलाने वाला, विष जन्य रोगों का उपचार करने वाला तथा अथवैवेद में उल्लेखित कर्मों को करने में सफलता दिलाने वाला होता है।" - मणि माला, भाग 1, 376

धारण करने की विधि - बुध के रत्न को स्वर्ण में जड़ित किया जाना चाहिए। रत्न जड़ित अंगूठी को कनिष्ठा में बुधवार के दिन सूर्योदय के दो घन्टे पश्चात् धारण करें।

बुध के रत्न को शुद्ध तथा प्रबल करने के लिए मंत्र - ॐ बुं बुधाय नमः।

भाग्य रत्न

नवमेश के लिए रत्न भाग्य प्रदान करता है। आपका नवमेश शुक्र है, अतः शुक्र का रत्न आपके लिए लाभकारी होगा। शुक्र के लिए रत्न है - हीरा, सफेद जिरकॉन, सफेद टोपाज, स्फटिक।

"हीरा सभी छः रसों का मिश्रण है, सभी प्रकार के रोगों का नाश करता है तथा अजीर्ण का नाश करता है, सभी प्रकार का सुख देता है, शरीर को दृढ़ता देता है तथा रासायनिक कार्यों में बहुत उपयोगी है।" - मणि माला, भाग 2, 67

"जो व्यक्ति अपने पास एक नुकीला, साफ तथा निर्दोष हीरा संभाल कर रखता है, वह जिंदगी भर सम्पन्न, पुत्रवान् भाग्यवान्, धनधान्य, गौ और पशु का मालिक रहेगा।" - मणि माला, भाग 1, 102

"जो व्यक्ति भीष्मरत्न 1/4 स्फटिक 1/2 सोने में जड़ कर गले अथवा हाथ में पहने वह सदा सफलता प्राप्त करता है।" - मणि माला, भाग 1, 447

धारण करने की विधि - शुक्र के लिए रत्न प्लेटिनम, सफेद स्वर्ण अथवा चांदी में जड़ित किया जाना चाहिए। रत्न जड़ित अंगूठी को मध्यमा अथवा कनिष्ठा में शुक्रवार के दिन सूर्योदय के समय पहनें। शुक्र के रत्न को शुद्ध तथा प्रबल करने के लिए मंत्र - ॐ शुं शुक्राय नमः।

सामान्य निर्देश

साधारणतया सदा उच्च कोटि के रत्न धारण किए जाने चाहिए। उप रत्न व कम शक्ति के रत्न कम मंहगे होते हुए भी अच्छे फल देते हैं मगर फलदायक होने के लिए इनका बड़ा आकार का होना आवश्यक है। रत्न को प्रभावकारी करने के लिए, धारण करने से पहले उसे कच्चे दूध और शुद्ध जल से धोना चाहिए। इसके पश्चात इसे हाथ में लेकर ध्यान केन्द्रित करते हुए दिए गए मंत्र का 108 बार जाप करें। पुरुषों को रत्न दाएं हाथ पर तथा स्त्रियों का बाएं हाथ पर धारण करना चाहिए। रत्न को अंगूठी में अथवा बाजू में पहनना चाहिए। इन्हें गले में भी पहना जा सकता है पर इससे लगातार शरीर से सम्पर्क नहीं रहता। रत्न का शरीर से सम्पर्क अति आवश्यक है।



कुण्डली में शुभ योग

रुचक - महापुरुष योग

यदि मंगल अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर लग्र से केन्द्र में हो तो 'रुचक' योग होता है।

फल : 'रुचक' योग में उत्पन्न जातक बलान्वित शरीर, लक्ष्मी, शास्त्री (शास्त्र निष्ठात), मंत्रों के जप और अभिचार में कुशल, राजा या राजा के समान, लावण्य युक्त, शरीर ईश्वर लालिमायुक्त, कोमल तनु, शत्रुओं पर विजय प्राप्ति करने वाला, त्यागी, धनी, 70 वर्ष की आयु प्राप्त करने वाला, सुखी, सेना और घोड़ों का स्वामी होता है। योगजनक ग्रह: मंगल।

गजकेसरी योग

परिभाषा : चन्द्रमा से केन्द्रस्थान (1/4/7/10) में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है।

फल : फल : 'गजकेसरी' में उत्पन्न जातक तेजस्वी, धन धान्य से युक्त, मेधावी, गुणी, राजप्रिय होता है। जातक केसरी (शेर) की तरह अपने शत्रुवर्गों को नष्ट कर देता है। ऐसा व्यक्ति सभाओं में प्रौढ़ (जिसका वाणी पर आधिपत्य हो, किसी विषय पर गम्भीरता पूर्वक और अधिकार से बोलना प्रौढ़ भाषण कहलाता है) भाषण करने वाला, राजस वृत्ति का होता है। ऐसा व्यक्ति दीर्घायु हो। बहुत तीव्र बुद्धि हो, महान् यश प्राप्त करे और अपने स्वाभाविक तेज से ही औरों को जीत लें। योगजनक ग्रह: चन्द्रमा व गुरु।

कल्पद्रुम योग

केमद्रुम योग उपस्थित हो किन्तु लग्र से केन्द्र में ग्रह हों तो कल्पद्रुम योग बनता है।

फल : केमद्रुम योग के अशुभ फल नहीं होते तथा जातक को सभी सुख प्राप्त होते हैं।

केमद्रुम भंग योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है।

फल : किन्तु चन्द्रमा से केन्द्र में ग्रह होने से केमद्रुम योग भंग हो जाता है। यह योग केमद्रुम योग के अशुभ फलों को भंग कर देता है।

केमद्रुम भंग योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है किन्तु यदि चन्द्रमा किसी शुभ ग्रह के साथ हो या बृहस्पति से दृष्ट हो तो केमद्रुम योग भंग हो जाता है।

फल : फलण् यह योग केमद्रुम योग के अशुभ फलों को भंग कर देता है।

वेशि योग

सूर्य से द्वितीय स्थानगत चन्द्रमा के अतिरिक्त ग्रहों के रहने से वेशि योग बनता है।

फल : फल : (1) वेशियोगोत्पन्न जातक सत्यवादी, सतत आलसी, समदर्शी, सुखी, स्वल्पधनी तथा लम्बा



शरीर वाला होता है। समद्वक् सत्यवाङ्मत्त्वे दीर्घकायोलसस्तथा। सुखभागल्पवित्तोपि वेशियोगसमुद्रवः ॥ (बृहत्पाराशर) (2) जातक सत्यवादी, आलसी, दयालु, गुणवान् तथा दृष्टि दोष युक्त, लम्बे कठ का, सन्तुलित दृष्टिकोण युक्त तथा अच्छी स्मरण शक्ति और सामान्य धनवान् होता है। (3) जातक मन्द दृष्टि, स्थिर वाणी, अधिक परिश्रमी नम्र व लम्बा देह होता है। ऐसा यवन स्वामी अर्थात् यवनाचार्य ने कहा है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 2) योगजनक ग्रह : सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि।

वेशि योग (बुध)

सूर्य से द्वितीय स्थान में बुध हो।

फल : यदि वेशि योग कर्ता बुध हो तो जातक बहुत कार्य करने वाला, निर्धन, कोमल, नम्र और लज्जा करने वाला होता है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 4)

वेशि योग (शनि)

सूर्य से द्वितीय स्थान में शनि हो।

फल : जातक दूसरे की स्त्री में आसक्त, उग्रस्वभाव, बड़ी आकृति वाला, शठ (मूर्ख, धूर्त), घृणी (ग्लानि करने वाला) और धनी होता है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 5)

काहल योग

यदि नवमेश तथा चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में स्थित हों तथा लग्नेश बलवान् हो तो 'काहल' योग बनता है।

फल : जातक ओजस्वी, साहसी, राज्य संपदा से युक्त तथा छोटी सेना अथवा किसी गाँव का प्रमुख होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 9, 10) योगजनक ग्रह: सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि।

शंख योग

पंचमेश और षष्ठेश यदि एक दूसरे से केन्द्र में हों और लग्नेश बलवान् हो तो 'शंख' योग बनता है।

फल : शंखयोगोत्पन्न जातक दयालु, पुण्यवान्, विद्वान्, पुत्र, धन, स्त्री से युक्त, दीर्घायु, तथा शुभ आचरण वाला होता है। मानवतावादी, सत्कर्म में रुचि, धार्मिक, विद्वान् तथा आनंदप्रिय, पत्रीण्संतान और भूमि से युक्त दीर्घायु होता है। दूसरों के प्रति व्यवहार मधुर और सौम्य होता है तथा पारिवारिक दृष्टि से सफल होता है। योगजनक ग्रह: सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि।

नीचभंग राजयोग

नीच ग्रह जिस राशि में उच्च का होता है, उसका स्वामी चन्द्र से केन्द्र में हो तो नीचभंग राजयोग होता है।

फल : नीच ग्रह की नीचता (निर्बलता) निरस्त हो जाती है तथा वह ग्रह शुभ फल व राजयोग देता है।

नीचभंग राजयोग

नीचस्थ ग्रह अपने राशि के स्वामी से स्थान परिवर्तन करे तो नीचभंग राजयोग होता है।

फल : नीच ग्रह की नीचता (निर्बलता) निरस्त हो जाती है तथा वह ग्रह शुभ फल व राजयोग देता है।



अखण्ड साम्राज्य योग

लग्न से द्वितीय नवम् एकादश में से किसी एक भाव का स्वामी चन्द्रमा से केन्द्र में हो तथा लग्न से द्वितीय, पंचम, नवम् में से किसी एक भाव का स्वामी बृहस्पति हो तो अखण्ड साम्राज्य योग बनता है।

फल : जातक विस्तृत राज्य का स्वामी होता है। ज्योतिषार्णव नवनीतम् (अध्याय 5, श्लोक 30)

केन्द्र त्रिकोण राज योग

लग्नेश का सम्बन्ध केन्द्र (4, 7, 10) या त्रिकोण (5, 9) भावों के स्वामियों से हो तो 'राजयोग' बनता है।

फल : ग्रहों के योग चार प्रकार से बनते हैं - 1. जब दो ग्रह परस्पर देखते हों। 2. जब एक ग्रह दूसरे को देखता हो। 3. जब दो ग्रहों में राशि परिवर्तन हो। 4. जब दो ग्रह एक ही राशि में हों। राजसी स्वभाव, सम्मान तथा सभी प्रकार के वैभव से युक्त होता है। योगजनक ग्रह: के स्वामीण्सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, चन्द्रमा।

राज योग

सप्तमेश तथा नवमेश में परस्पर सम्बन्ध हो तो राजयोग बनता है।

फल : सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

हर्ष योग

यदि छठे घर का मालिक दुःस्थान (6, 8 या 12) में स्थित हो तो हर्ष योग होता है।

फल : जातक भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाला, सुखी, भोगी, शत्रुओं को पराजित करने वाला और पाप भीरु होता है। विष्वात और प्रधान व्यक्तियों का आवाहन होता है। और उसे धन, पुत्र, मित्र का पूर्ण सुख मिलता है। हर्ष योग वाले व्यक्ति यशस्वी होते हैं और उनके चेहरे पर शोभा रहती है।

राजयोग

चन्द्र अथवा लग्न से केन्द्र में स्वक्षेत्री या उच्च ग्रह के साथ यदि दुर्बल ग्रह की युति हो तो राजयोग होता है। (सर्वर्थ चिन्तामणि 9/13)

फल : जातक राजा होता है अथवा राजा के समान उच्च पद प्राप्त करता है।

राजयोग

ग्रह यदि दुर्बल राशि में हो परन्तु नवमांश में उच्च के हों तो राजयोग होता है। (सर्वर्थ चिन्तामणि 9/15)

फल : जातक राजकीय प्रतिष्ठा वाला होता है अथवा शासक के समान प्रभावशाली, शक्तिशाली, समृद्धिशाली होता है।

राजयोग

नवमांश राशि के स्वामी यदि चन्द्र के आधिपत्य में हो और केन्द्र अथवा लग्न अथवा बुध से त्रिकोण में हो



फल : जातक सेनापति अथवा शासक के समान होता है।

राजयोग

एकादश नवम् अथवा द्वितीय में से किसी भाव का स्वामी यदि चन्द्र से केन्द्र में हो तथा बृहस्पति द्वितीय, पंचम अथवा एकादश भाव के स्वामी हो तो राजयोग होता है। (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

फल : जातक महापुरुष अथवा सम्मानित शासक होता है।

राजयोग

बृहस्पति, बुध और शुक्र या चन्द्र नवम् स्थान पर हों मित्र ग्रहों से युत हों अथवा वृष्टि हों और कूर दृष्टि से मुक्त हों तो राजयोग होता है। (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

फल : जातक महापुरुष अथवा सम्मानित शासक होता है।

धन योग

लग्र के स्वामी का यदि द्वितीय या पंचम या नवम् या एकादश भाव के स्वामी से सम्बन्ध हो तो धन योग होता है। (डॉ- के- एस- चरक)

फल : जातक धनवान होगा।

स्वर्वीर्य धन योग

द्वितीयेश लग्रेश से केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो या स्वाभाविक शुभ ग्रह (मित्र ग्रह) द्वितीयेश उच्च का हो या उच्च के ग्रह के साथ हो तो यह योग होता है। (सर्वर्थ चिन्तामणि 3)

फल : जातक स्वयं के पराक्रम से अर्थ अर्जित करता है।

कर्मजीव योग

लग्र, सूर्य या चन्द्र से यदि मंगल दशम स्थान पर हो तो यह कर्मजीव योग होता है। (बृहत जातक)

फल : जातक का व्यवसाय तथा सामाजिक प्रतिष्ठा खनिज तत्वों, अग्नि या ताप (पटाखे, रसोई, इंजन चालक), शस्त्र, रोमांचकारी कार्यों और बाहुबल से मिलती है। जातक को शत्रु द्वारा भी धन प्राप्त हो सकता है। (मंगल)

कर्मजीव योग

लग्र, चन्द्र या सूर्य से दशम स्थान का स्वामी यदि मंगल हो तो कर्मजीव योग होता है। (बृहत जातक)

फल : ग्रहों की स्थिति मंगल से सम्बन्धित व्यवसायों खनिज तत्वों, अग्नि तत्वों (पटाखे, रसोई, इंजन चालक, अग्नि और ताप से सम्बन्धित कार्य) शस्त्रों, रोमांचकारी कार्यों और बाहुबल कार्यों में सहायक होती है।

कर्मजीव योग

लग्र या चन्द्र से दशम स्थान पर बुध हो तो कर्मजीव योग होता है। (बृहत जातक)



फल : जातक का व्यवसाय और सामाजिक प्रतिष्ठा लेखन, गणित, काव्य एवं ललित कला द्वारा होती है। जातक लेखक, चित्रकार, मूर्तिकार, नक्काश, वास्तुकार, अभियान्त्रिक या इत्र बनाने वाला हो सकता है। जातक को अपने मित्र से धनार्जन हो सकता है। (बुध)

कर्मजीव योग

लग्र, सूर्य या चन्द्र से दशम स्थान के स्वामी बुध हों तो यह योग होता है। (बृहत् जातक) (अन्य कर्मजीव योग से यह योग कम अंश का है)

फल : यह योग बुध से सम्बन्धित व्यवसाय जैसे मैकेनिक, चित्रकार, मूर्तिकार, नक्काश, वास्तुकार एवं इत्र निर्माता आदि के लिए सहायक होता है।

कर्मजीव योग

नवमांश का स्वामी बृहस्पति दशमेश हो तो यह योग होता है। (बृहत् जातक 10/3)

फल : जातक को सम्पदा और उपजीविका शिक्षित वर्ग के सम्पर्क से, ज्ञान से, कानून, धर्म, मन्दिरों, दानण्डुण्ण एवं साधना, तीर्थ यात्रा, आध्यात्मिक अनुसरण आदि से प्राप्त होती है। जातक को धनार्जन अगली पीढ़ी से, बच्चों से हो सकती है।

कर्मजीव योग

लग्र, चन्द्र या सूर्य से दशमेश से बृहस्पति युत हो या दृष्ट हो तो यह योग होता है। (बृहत् जातक) (अन्य कर्मजीव योग से यह कम अंश का है)

फल : यह ग्रह स्थिति जातक को बृहस्पति से जुड़े व्यवसाय में सहायक होती है, जैसे शिक्षित वर्ग के सम्पर्क से, ज्ञान, धर्म, मंदिर, दान, साधना, तीर्थ यात्रा तथ आध्यात्म से जुड़े व्यवसाय।

कर्मजीव योग

लग्र से, चन्द्र से या सूर्य से दशम स्थान का स्वामी शुक्र हो तब यह योग होता है। (बृहत् जातक) (अन्य कर्मजीव योग की तुलना में यह कम अंश का होता है)

फल : ग्रहों की स्थिति शुक्र से जुड़े व्यवसायों में सहायक होती है। जैसे रत्न व्यवसाय, चांदी, गाय, भैंस और मूल्यवान वस्तु या आनन्दित करने वाला कार्य या सौंदर्य से जुड़ा व्यवसाय।

कर्मजीव योग

लग्र से दसवें भाव में शनि उपस्थित हो या सूर्य या चन्द्र से दसवें भाव में शनि हो तो कर्मजीव योग होता है। (बृहत् जातक)

फल : व्यक्ति का व्यवसाय या सामाजिक स्तर परिश्रम सम्बन्धित होता है - जैसे भार वहन करना या निम्न स्तर का व्यापार करना जो कि पारिवारिक परंपराओं के खिलाफ हो। (शनि)

कर्मजीव योग

लग्र, सूर्य या चन्द्र से दशमेश की यदि शनि से युति हो अथवा दृष्ट हो तो कर्मजीव योग होता है। (बृहत्



फल : जातक को यह ग्रह स्थिति शनि से जुड़े व्यवसाय से जोड़ती है - जैसे परिश्रमी कार्य, भर वहन करना अथवा निम्न स्तर के व्यापार जो परिवार के मान के विरुद्ध हों।

गरुड़ योग

नवमांश राशि के स्वामी का चन्द्रमा उच्च का होकर अधिष्ठित हो। जन्म समय दिन का हो जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष दिखाई देता हो तो गरुड़ योग होता है। (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

फल : जातक बराबर वालों से सम्मान प्राप्त करता है, सत्य भाषी, बलवान् जिससे शत्रु भय खाते हैं, होता है तथा उम्र के चौतीसवें वर्ष में जहर द्वारा संकटग्रस्त हो सकता है।

भ्रातृवृद्धि योग

तृतीयेश या मंगल या तृतीय स्थान शुभ ग्रहों से दुष्ट हो या युत हो और शक्तिशाली हो तो यह योग होता है। (सर्वर्थ चिन्तामणि 4/16)

फल : जातक भाईयों या आश्रितों द्वारा अच्छा भाग्य बनेगा जो कि बेहद सम्पन्न होगे।

मातृदीर्घायुर योग

नवमांश का स्वामी राशि का स्वामी चतुर्थेश के साथ बली होकर लग्न या चन्द्र चन्द्र से केन्द्र में हो तो मातृदीर्घायुर योग होता है। (सर्वर्थ चिन्तामणि 4/132)

फल : जातक की माता दीर्घजीवी होगी।

वाहन योग

लग्नेश चतुर्थ भाव या नवम भाव हो या एकादश भाव में हो तो वाहन योग होता है। (सर्वर्थ चिन्तामणि 4/162)

फल : जातक का स्वयं का वाहन होगा तथा अन्य भौतिक सुविधाओं प्राप्त होगी।

औरसपुत्र योग

बृहस्पति, लग्न, सूर्य अथवा चन्द्रमा को देखें तो औरसपुत्र योग होता है। (सारावली 35/26)

फल : जातक को वैद्य पत्नी द्वारा स्वयं की वैद्य संतान होगी।

एकपुत्र योग

पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो यह योग होता है। (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

फल : जातक के केवल एक पुत्र होगा। (या कन्या)

त्रिकालग्र योग

बृहस्पति मृदुमांश में हो अपनी नवमांश राशि में हो या गोपुरांश हो जबकि शुभ ग्रह से दुष्ट हो तो यह योग होता है। (सर्वर्थ चिन्तामणि 5/53)



फल : जातक भूत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों कालों का ज्ञाता होता है।

महापरिवर्तन योग

चतुर्थेश, पंचमेश या सप्तमेश या नवमेश या दशमेश या एकादशमेश से अपना भाव बदलते हैं तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : यह योग सम्पदा, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख दिलवाता है साथ ही जो भाव इससे जुड़ते हैं उनका लाभदायक प्रतिफल जातक को मिलता है।

महापरिवर्तन योग

पंचमेश, सप्तमेश या नवमेश दशमेश या एकादशमेश से भाव बदलते हैं तो महापरिवर्तन योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : यह योग सम्पदा, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख दिलवाता है तथा इसमें जिस भाव का योगदान होता है उसके अनुसार अनुकूल अच्छे परिणाम मिलते हैं।

पूर्णायु योग

लग्नेश और अष्टमेश दोनों चर राशि में हों या एक द्विस्वभाव राशि में, दूसरा स्थिर राशि में हों तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : यह योग जातक की दीर्घायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है।

पूर्णायु योग

षष्ठमेश या द्वादशेश षष्ठम भाव में हों या द्वादश भाव में या अष्टम भाव में या लग्न में हों तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : यह योग जातक की पूर्णायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है।



कुण्डली में सम योग

आश्रय योग - मुसलयोग

यदि लग्र स्थिर राशि में हो तथा कई ग्रह स्थिर राशि में हों तो मुसलयोग होता है।

फल : मुसल योगोत्पन्न जातक मानी, ज्ञानी, धनसम्पत्तियुक्त, राजप्रिय, विख्यात, अनेक पुत्रवान् तथा स्थिर बुद्धि वाला होता है। जातक विश्वसनीय, निश्चित, दृढ़, और स्थायित्व युक्त होता है। जो भी हो जातक दुराग्रही (जिद्दी), शीघ्र निर्णय लेने में असमर्थ, और परिवर्तन स्वीकार करने में कठिनाई महसूस करता है। बृहत्पाराशार होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 7, 20)

संख्या - पाश योग

सब ग्रह जब पाँच स्थानों में होते हैं, तब 'पाश' योग बनता है।

फल : पाशयोगोत्पन्न जातक जेल जानेवाला, कार्य में दक्ष, प्रपञ्ची, बहुत भाषण करनेवाला, शीलरहित, अनेक सेवक वाला तथा विशाल परिवार वाला होता है। बृहत्पाराशार होराशास्त्रम्, (अध्याय 36, श्लोक 18, 46) मतान्तर से दूसरों से हमेशा प्रशंसित, धनोपार्जन में सर्वदा ध्यान देने वाला, अत्यंत चतुर, बातुनी, पुत्रवान, जनता का कल्याण करने की इच्छा होती है।

गजकेसरी योग

चन्द्रमा से सप्तम में गुरु हो।

फल : जातक का स्वास्थ्य उत्तम होता है, दीर्घायु होता है, परिवार के सदस्यों द्वारा मान्य होता है, तथा मितव्ययी होता है। मानसागरी के अनुसार जातक नपुंसक, पीलिया रोग से पीड़ित, तथा वैवाहिक सुख प्राप्त करता है।

सम योग

सूर्य से पणकर स्थान (2, 5, 8, 11) में चन्द्रमा हो तो सम योग होता है।

फल : यदि सम योग में उत्पन्न हो तो द्रव्य, सवारी, यश, सुख, सम्पत्ति, ज्ञान, बुद्धि, निपुणता, विद्या, उदारता और सुख योग, इनका मध्यम फल प्राप्त हो। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 14, 18)

वैशि योग (अशुभ)

सूर्य से द्वितीय स्थान में चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई अशुभ ग्रह हो।

फल : जातक सुवक्ता, धनवान तथा अपने शत्रुओं को नष्ट करनेवाला होता है।

सदा संचार योग

लग्र का स्वामी अथवा राशि का स्वामी चर राशि में लग्रेश के आधिपत्य में हो तब सदा संचार योग होता है। (सर्वर्थ चिन्तामणि 2/91)

फल : जातक सदा भ्रमणशील रहेगा।



मध्यायु योग

लग्र और चन्द्र दोनों द्विस्वभाव राशि में या एक चर राशि में और दूसरा स्थिर राशि में हों तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : यह योग जातक की मध्यायु 70 वर्ष तक को दर्शाता है।

मूकबधिरांध योग

चन्द्र द्वादश भाव में हो तो यह योग होता है। (शंभु होरा प्रकाश 14)

फल : जातक अपने बाँँ नेत्र में विकार का अनुभव करेगा।

सूर्य शुक्र योग

सूर्य तथा शुक्र की युति किसी भाव में होने पर सूर्य-शुक्र योग होता है। (डॉ. के. एस. चरक)

फल : जातक बुद्धिमान, शस्त्र, संचालन में निपुण, आदर्शवादी, स्त्री द्वारा कमाने वाला (अपने द्वारा नहीं), नाट्य, अभिनय तथा संगीत द्वारा लाभान्वित तथा कारावास भोगने वाला, वृद्धावस्था में दृष्टि से कमजोर होता है।

बुध शनि योग

बुध तथा शनि यदि किसी भाव में युत हो तो यह योग होता है। (डॉ. के. एस. चरक)

फल : जातक का शारीरिक गठन अनाकर्षक होता है। वह ज्ञानी, धनी, बहुत से लोगों का पालन करने वाला, झगड़ालू, चंचल मन का, विभिन्न कलाओं में दक्ष, अपने से बड़े की आज्ञा की अवहेलना करने वाला तथा धोखेबाज होता है।



कुण्डली में अशुभ योग

केमद्रुम योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है।

फल : जिस मनुष्य का केमद्रुम योग में जन्म होता है तो वह राजा के वंश में उत्पन्न होने पर भी स्त्री अन्न पान (दूध आदि) गृह (घर), वस्त्र व मित्रों से हीन, (अर्थात् स्त्री अन्नादि का अभाव) दरिद्रता दुःख रोग व दीनता के विकार से युत, मजदूरी करने वाला, दुष्ट प्रकृति वाला व सबसे विरुद्ध व्यवहार करने वाला होता है।। केमद्रुम योग में जन्म लेने वाला मनुष्य आर्थिक रूप से विपन्न, मानसिक व आर्थिक रूप से अस्थिर, स्वतंत्र व्यापार में एक बार पूँजी ड्रबने का भय, कंजूस और ऋण लेने की प्रवृत्ति तथा कुण्डली के शुभ योगों के फल प्राप्ति में बाधा होती है।

निःस्वयोग

दूसरे घर का मालिक 6, 8, 12 इन तीनों स्थानों में से कहीं हो तो "निःस्वयोग" होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 59)

फल : "निःस्व" का अर्थ है जिसके पास अपना कुछ न हो अर्थात् दरिद्री। जातक के दांत और नेत्र खराब होते हैं। अच्छे वचन नहीं बोलता। कुटुम्ब भी विफल होता है। जिसके कुटुम्ब में बहुत से आदमी हों वह सफल कुटुम्ब जिसके घर में स्त्री, पुत्र कन्या आदि न हों मान लीजिये कि केवल मात्र स्त्री है तो वह विफल कुटुम्ब हुआ। निःस्व योग वाला मनुष्य अच्छी संगति में नहीं रहता। ऐसा व्यक्ति बुद्धि, पुत्र, विद्या और वैभव से हीन होता है। उसके धन को शत्रु लोग हर लेते हैं।

कुहूयोग

चतुर्थश 6, 8, 12 इन स्थानों में से किसी में हो तो कुहूयोग होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 61)

फल : जातक को माता, सवारी, मित्र, आभूषण तथा बस्तुओं का सुख प्राप्त नहीं होता। चौथा घर सुख स्थान कहलाता है और इस घर के बिंगड़ जाने से मनुष्य सुखहीन होता है। ऐसे व्यक्ति को कहीं आश्रय नहीं मिलता, कोई न कोई संकट ऐसा उपस्थित हो जाता है कि अपना स्थान छोड़ना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति कुस्ती (खराब औरत) में अभिरत होता है। अनुभव है कि शनि यदि चौथे घर में हो और चौथे घर का मालिक भी बिंगड़ा हो तो बुढ़ापा बहुत दरिद्रता में बीतता है।

दुष्कृति योग

सप्तमेश द्वास्थान में पड़ा हो तो दुष्कृति योग होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 64)

फल : जातक को सप्तम स्थान सम्बन्धी सभी कष्ट प्राप्त होते हैं अपनी पत्नी का वियोग (चाहे वह मर जाय चाहे उससे अलग रहना पड़े या रोगिणी हो), दूसरे की स्त्री से रति हो, इसकी इच्छा रहे (हृदय जलता रहे सुख की प्राप्ति न हो) कष्टमय मंजिल (सफर) करनी पड़े। जातक के बस्तु लोग उसे धिक्करे, इस कारण उसे शोक प्राप्त हो। राजा या सरकार से पीड़ा मिले। सप्तम स्थान से जननेन्द्रिय का विचार किया जाता है। सप्तम भाव और सप्तमेश दोनों बिंगड़े हों तो प्रमेह (सुजाक, आतशक आदि) इन्द्रिय सम्बन्धी एक या अधिक रोग हों।

निर्भाग्य योग



नवें भवन का स्वामी लग्र से 6, 8 या 12 वें भाव में हो तो 'निर्भय' योग होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 66)

फल : जातक बहुत दुःख उठाने वाला, पुराने कपड़े पहनने वाला दुर्गति को प्राप्त होता है। नवम भाव धर्म भाव है यह बिगड़ने से मनुष्य साधुओं की और गुरुओं की निन्दा करता है। ऐसे व्यक्ति को जो कुछ पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है (घर, खेत, जमीन, जायदाद) वह सब नष्ट हो जाती है।

दरिद्रयोग

एकादशेश त्रिक में हो तो 'दरिद्रयोग' होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 68)

फल : जातक कर्जदार, अत्यन्त दरिद्री कान की बीमारी से तकलीफ पाने वाला, अच्छे भाइयों से हीन, दुष्कार्य करने वाला, अप्रशस्त वचन बोलने वाला, दूसरे का नौकर और दुःख उठाने वाला होता है।

देहकष्ट योग

लग्रेश यदि पापग्रह के साथ हो या अष्टम भाव में हो तो यह योग होता है। (सर्वर्थ चिन्तामणि 2/109)

फल : जातक को शारीरिक सुख के अभाव में जीवन यापन करना होगा।

विषप्रयोग योग

द्वितीय भाव में पापग्रह हो अथवा पापग्रह से दृष्ट हो और द्वितीयेश क्रूर नवमांश में पापग्रह द्वारा दृष्ट हो तो विषप्रयोग योग होता है। (सर्वर्थ चिन्तामणि 3/143)

फल : जातक को दूसरों से विषपान सम्बन्धी संकट उत्पन्न हो सकता है। (दूसरों द्वारा उसे जहर दिया जा सकता है)

बंधुभीष्यकता योग

यदि चतुर्थश पापग्रहों से जुड़ा हो या नीच षष्ठिमांश में हो या शत्रु राशि में या दुर्बल राशि में हो तो यह योग होता है। (सर्वर्थ चिन्तामणि 4/68)

फल : जातक अपने निकटवर्ती परिजनों के कारण संकटग्रस्त होगा तथा गलतफहमी का शिकार हो उनके द्वारा त्याग दिया जाएगा।

मातृशां योग

चन्द्रमा यदि पापग्रहों के बीच पीडित (फँस) जा, या पापग्रहों से युत हो या दृष्ट हो तो यह योग होता है। (सर्वर्थ चिन्तामणि 4/133)

फल : जातक की माँ का निधन शीघ्र हो जाता है।

भाग चुम्बन योग

लग्रेश राशि अथवा नवमांश में दुर्बल हो तो यह योग होता है। (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

फल : जातक हस्तमैथुन में अत्यधिक आसक्त रहेगा।



अरिष्ट योग

लग्नेश यदि षष्ठमेश, अष्टमेश या द्वादशेश के साथ हो या एक द्वूसरे से वृष्ट हो तो यह योग होता है। (यदि द्वितीयेश और सप्तमेश का दखल हो तो इसका प्रभाव और अधिक गम्भीर हो जाता है) (डॉ- के- एस- चरक)

फल : जातक का स्वास्थ्य खराब रहेगा। (ग्रह जो यह योग बनाते हैं वे इस सम्बन्ध में विशिष्ट जानकारी दे सकते हैं)

अरिष्ट योग

अष्टमेश द्वादशेश से युत हो या आपस में एक द्वूसरे से वृष्ट हो तो यह योग होता है। (द्वितीयेश और सप्तमेश का दखल हो तो प्रभाव और अधिक गम्भीर हो जाता है) (डॉ- के- एस- चरक)

फल : जातक का स्वास्थ्य खराब रहेगा। (वे ग्रह जो यह योग बनाते हैं उनसे इस सम्बन्ध में विशिष्ट जानकारी मिल सकती है)

अरिष्ट कुष्ठ रोग योग

बृहस्पति षष्ठम स्थान पर हो शनि और चन्द्र से युत हो तो यह योग होता है। (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

फल : जातक को कुष्ठ रोग होगा।

अरिष्ट मतिभ्रम योग

षष्ठमेश पापग्रहों से वृष्ट या युत हो षष्ठम भाव में पापग्रह स्थित हों या षष्ठम भाव पापग्रह से वृष्ट हो बुध व चन्द्र दुःस्थान पर हो या पापग्रहों से वृष्ट हों तो यह योग होता है। (मेजर एस. जी. खूट)

फल : जातक मानसिक असंतुलन से ग्रस्त रहेगा।

दरिद्र योग

लग्नेश यदि दुःस्थान के स्वामी से युत हो शनि के साथ हो और किसी शुभ ग्रह से वृष्ट न हो तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : जातक गरीबी, कृपणता और खराब सेहत का शिकार हो सकता है।

दरिद्र योग

जिन भावों में दुःस्थान के स्वामी बैठें हों, उनके स्वामी (उन भावों के स्वामी) भी स्वयं दुःस्थान में बैठे हों और पापग्रहों से वृष्ट हों या युत हो तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : जातक गरीबी, कंजूसी और खराब स्वास्थ्य से पीड़ित रहता है।

दरिद्र योग

शुभ ग्रह पाप भावों में स्थित हों और पाप ग्रह शुभ भावों में स्थित हों तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल



दरिद्र योग

एकादश भाव का स्वामी दुःस्थान (षष्ठम्, अष्टम या द्वादश भाव) में हों तो दरिद्र योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : जातक अत्यधिक क्रण लेता है, गरीबी से पीड़ित होता है, श्रवणेन्द्रिय में विकार से ग्रस्त होता है, तुच्छ मानसिकता का होता है और पापकर्मों व अवैधानिक कृत्यों में लिप्त रहता है।

दैन्य परिवर्तन योग

अष्टमेश, लग्नेश या द्वितीयेश या तृतीयेश या चतुर्थेश या पंचमेश या सप्तमेश या नवमेश या दशमेश या एकादशमेश या द्वादशेश से भाव विनिमय करता है तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : ग्रहों का यह योग दुष्ट स्वभाव, विरोधियों से उत्पन्न संकट और खराब सेहत प्रदान करता है।

बालारिष्ट योग

चन्द्र यदि दुःस्थान (षष्ठम्, अष्टम या द्वादश भाव) में स्थित हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : नवजात शिशु शीघ्र मृत्यु से असुरक्षित होता है (यह भी ध्यान में रखनी चाहिए कि यह एक पृथक विचार है, अरिष्ट भंग योग भी इस योग को निरस्त करने हेतु देखना चाहिए)।

अल्पायु योग

लग्न और होरा लग्न दोनों स्थिर राशि के हों या चर राशि में दूसरी द्विस्वभाव राशि में हो तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष की आयु प्रदान करता है।

अल्पायु योग

पंचम भाव, अष्टम भाव और अष्टमेश पीड़ित हो तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : यह योग अल्प आयु या जातक की 32 वर्ष तक आयु का संकेत देता है।

अल्पायु योग

केन्द्र में शुभ ग्रह न हो और अष्टम भाव में हों तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष तक की आयु का संकेत देता है।

अल्पायु योग

तृतीयेश और मंगल अस्त, पाप ग्रहों से पीड़ित हों तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

फल : यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष तक की आयु का संकेत देता है।



मूकबधिरांध योग

सूर्य दुःस्थान में शुक्र या लग्नेरा से युत हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

फल : जातक जन्मांध हो सकता है ।

हिल्लजा नेत्र दोष योग

मंगल यदि पाप राशि में हो या केन्द्र में पाप राशि से वृष्ट हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/67)

फल : जातक को अंधा होने का संकट उत्पन्न हो सकता है ।



जीवन फलादेश



आपका व्यक्तित्व रोचक है। आपमें अनेक अच्छे गुण हैं। आप सम्मोहक हैं। आपका व्यक्तित्व बहिर्मुखी है। आपकी विनोदी वृति है। आप सकारात्मक हैं।

आप सहानुभूति रखने वाले हैं। आप सामान्यतः सेवा का जीवन जीते हैं। यह सेवा जो कि संस्था की, या विदेशियों की या आध्यात्मिक गुरु की हो सकती है। आपकी कूटनीति आपको जीवन में ऊँचाई पर ले जाएगी।

आप में जीवन के प्रति पूर्ण विकसित समझ है। आप जो भी चाहते हैं, कर लेते हैं, क्योंकि आप में पर्याप्त अनुशासन है। आप हठी हैं। अपने धर्म एवं शिक्षकों के प्रति आप निष्ठावान हैं। आप में धैर्य है। आप विश्वसनीय एवं निष्ठावान हैं। आप मौन रहने वाले व्यक्ति हैं। यदि अपके मार्ग में कोई बाधा आती है तो आप उसका शालीनता से निराकरण करते हैं। आप सावधान, सतर्क एवं विचार शील व्यक्ति हैं। राजनीतिक रूप से आपकी सोच बहुत परम्परावादी है।

आप सन्तुलित हैं। आप न्यायी व्यक्ति हैं। आप नैतिकता को सर्वोपरि मानते हैं। आप साहित्य तथा नियम दोनों को साथ लेकर चलते हैं। आप प्रबल नैतिक मूल्यों वाले व्यक्ति हैं। आपकी बुद्धिमता की वजह से आपका प्रभाव अधिक है। आप उद्देश्यपूर्ण मितव्यी, कर्तव्यनिष्ठ तथा समझदार हैं।

आप आत्म विश्वासी हैं। जहां तक व्यावहारिकता का प्रश्न है, आप आत्म विश्वासी हैं। आप सुदृढ़ व्यक्ति हैं। आप उस कार्य की ओर आकर्षित होते हैं जो निर्भीकता एवं ऊर्जा युक्त है। आपके पास छिपी हुई शक्ति है। आप बहुदर हैं। आप निडर हैं। आप श्रम साध्य एवं एकाग्र चित्त हैं। आप दृढ़ता से, बिना हिचकिचाहट के, कोई भी ऐसा कार्य सफलतापूर्वक करते हैं, जिससे आपको प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तथा आपका लक्ष्य पूरा हाता है। आप कठिनाईयों के चलते भी निराश होने की अपेक्षा, दृढ़ता से सफलता प्राप्ति हेतु बढ़ते हैं। जब आप से कहा जाता है, तब आप अपना कौशल बढ़ाने के लिए तत्पर रहते हैं।

आप कठोर हैं। आप अक्सर वाद-विवाद या हाजिर जबाबी के रण क्षेत्र में आ खड़े होते हैं। यद्यपि आपका उद्देश्य दूसरों को आत्मिक स्तर पर बदलना होता है, पर आप उन्हें धार्मिक कार्यों के लिए अग्रसर करते हैं।

आप किसी विचारधारा विशेष के प्रति निष्ठावान नहीं हैं और इस बात की संभावना है कि आप धर्म परिवर्तन कर लें। आपके जीवन जीने का तरीका अनूठा है।

आपमें शेखी बघारने की आदत है। आप अक्सर संतुष्ट और शांत रहते हैं। आप स्वयं के स्वार्थ को सर्वोपरि मानते हैं। चूंकि आपकी राय या दृष्टिकोण दृढ़ होता है, अतः आप योजना बना सकते हैं या बातों को परिस्थितिनुसार मोड़ दे सकते हैं।

आप अपना वास्तविक रूप किसी को नहीं दिखते हैं। आपकी इच्छाएं आपसे कुछ गुप्त क्रियाकलाप करवा सकती हैं। आपमें किसी निश्चित स्तर तक जीवन शक्ति का अभाव हो सकता है एवं आप आलस्य तथा मन्दता



के प्रति उद्यत हो सकते हैं।

आपका स्वभाव सरलता से असंतुलित हो सकता है। संबंधों में असुरक्षा की अनुभूति, आधिकारिक एवं ईर्ष्यालू भावनाओं का कारण बन सकती है।

आप सताये जाने या दबाये जाने के भय से युक्त एक भयभीत व असुरक्षित व्यक्ति हैं। आपमें आत्म - विश्वास की कमी हो सकती है।

जब परिस्थितियाँ खराब हों तो आप अपने मार्ग से पूर्णतः हट सकते हैं।

आपको सम्मान प्राप्त करन में कठिनाइ आ सकती हैं एवं आप जीवन में थोड़ा अपमान भी अनुभव कर सकते हैं।

आपको सन्तान से प्रसन्नता मिलेगी। आपकी शान्ति बहुधा घटने वाली परन्तु अल्पकालीन समस्याओं से बाधित होती है।



आप लम्बे होंगे। आपकी लाम्बाई पूरी है। आप मध्यम से लम्बे डील-डौल के हैं। सम्पर्क: आपका वनज आवश्यकता से अधिक है। आपके केश गहरे भूरे या काले हो सकते हैं। आपका शरीर रोयेंदर है। आपका चहरा सुन्दर है। आपका चहरा भरा हुआ है। आपका मुखमण्डल श्यामल है। आपकी मुस्कान विशेष है तथा उसमें एक अत्यधिक सम्मोहित करने वाला आकर्षण है।

आपका स्वरूप उत्तम तथा प्रभाव डालने वाला होना चाहिए। आपके चारों ओर एक चमकती हुई रौशनी है।

आपकी आवाज भिन्न तथा स्मरणीय है। आपका मृदुता से किन्तु पायः बिना प्रभाव के बोलते हैं।

आप स्वयं को इस तरह अभिव्यक्त कर सकते हैं जो आपके तथा वातावरण के लिए लाभप्रद हो। आनंदकी मौखिक अभिव्यक्ति आधारभूत है, एवं मन्त्रों के उच्चारण या भाषण की विशिष्टता या भाषा की विशेषता के रूप में हो सकती है।

आप स्वयं के वास्तविक जीवन में प्रयोग किये बिना धार्मिक उपदेशों को अच्छी तरह प्रवचित करते हैं।

आपका भाषण अत्यधिक रूप से अनोखा हो सकता है। आपका भाषण बिखरा हुआ, निराकार, अधूरा, धुंधला या अस्पष्ट हो सकता है।

आप क्लूरता पूर्वक बोलते हैं।

आप जो भी कहते हैं लोगों को बहुस्तरीय रूप से प्रभावित करेगा व अनापेक्षित परिणाम देगा।



आप आपको सही नहीं प्रतीत होने वाली सारी सूचनाएँ छोड़ देते हैं।

आप विश्लेष्णात्मक हैं व व्यवस्थित पहुंच रखते हैं। आपमें बिना बुद्धिमानीपूर्ण विश्लेष्णात्मक चीजों के प्रति भी गहरी समझ है। आपमें जीवन के प्रति गहरी दृष्टि है तथा दूसरों में छुपी चीजों को पहचान लेते हैं। यदि आप अपने स्वभाविक संकीर्णता को त्याद दें तो आप दूरदर्शी हो सकते हैं। आप धूतं प्रवृत्ति के हो सकते हैं तथा आपकी सफलता दुनियां में हो रहे घटनाओं व आपकी आन्तरिक मनोवृत्ति के सामन्जस्य पर निर्भर करती हैं।

आप दार्शनिक व ब्रह्मज्ञान के चतुर प्रश्नकर्ता हैं। आप एक प्रकार के गम्भीर व दार्शनिक व्यक्ति हैं। आपके लिए आदर्श प्रथम स्थान पर आते हैं व आप उन्हें ईमानदारी से निभाते हैं।

आपके सोचने का तरीका दूसरों को आसानी से पता नहीं चलता। आप चाहते हुए भी स्वयं के बारे में दूसरों को नहीं समझा सकते। आप उन क्षेत्रों में जाना पसन्द करते हैं, जिन्हें लोग निषेध समझते हैं जैसे सैक्स व मृत्यु। आप घरेलू क्लेश से परेशान रहते हैं।

आप कई बार खुद को मानसिक रूप से चिन्तित व दुविधा में पाते हैं पर इसे दिखाते नहीं हैं। आप के समक्ष कई बार किस धर्म व दर्शन को अपनाना चाहिये सम्बन्धी दुविधा आती है। आप बुद्धि से ज्यादा बातों के विवरण पर यकीन रखते हैं। अपनी राय या भावनाएँ व्यक्त करने में आप कुछ गोपनीय हैं।

आप अपने विचारों में अधिक से अधिक उग्र हैं तथा कर्म व नियमों के मार्ग से भटक जाते हैं।

आप पारिवारिक मूल्यों, परम्परा व धर्म को मानते हैं तथा उन्हें बचाना अपना दायित्व समझते हैं। आप की आत्मा पवित्र है। आप छिपे रहस्यों पर से पर्दा उठाने व खोज में अनन्द का अनुभव करते हैं। भावनात्मक रूप से आप संवेदनशील हैं। आप संवेदनशील, व्यक्तिगत रूप से परेशान व अस्थिर हैं। आपकी भावनाएँ अत्यन्त कोमल हैं और आपको कई भावनात्मक समस्याएँ हो सकती हैं।

कई बार आप चिन्तातुर, अवसादग्रस्त व एकाकी महसूस करते हैं। आपका चिन्ताशील स्वभाव आपको अवसादग्रस्त बनाता है। सम्बन्धियों द्वारा नैतिक आधार के अभाव के कारण आप उपेक्षित महसूस करेंगे। आपकी भावनाएँ काफी गहरी तथा कभी-कभी परेशानी वाली होती हैं। कई बार आपको अपने चिढ़-चिढ़ेपन की वजह और कारण नहीं पता होती है। आप असुरक्षा और दुर्बलता का अनुभव करेंगे अगर आप धर्म या आध्यात्मिक पथ को बगैर गहराई और लम्बे सोच विचार को अपनाते हैं।

एक अनुशासनात्मक दिनचर्या आपको विचलित करने के लिए पर्याप्त है। आप अति संवेदनशील हैं जिससे आपको अनेकों बार परेशानियों का सामना करना पड़ा है। लगातार मिल रही चुनौतियों व परिवर्तन के कारण आप अपनी भावनात्मक आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। इष्ट मित्र या घनिष्ठ सम्बन्धों को बनाने में आपका आन्तरिक विरोधाभास परेशानी पैदा करता है।

भावनाओं के साथ खिलवाड़ आपको विध्वन्सकारी कार्यों में लगा सकता है।

आप बुद्धिमान हैं तथा औसत व्यक्तियों से ज्यादा गहराई तक सोचते हैं।

आप अत्यधिक चतुर हैं।



आप अपने शोध में अत्यन्त धैर्यवान हैं व अपने चाहे परिणाम को प्राप्त कर सकते हैं।

आप अनेकों परिस्थितियों में अच्छे निर्णय ले सकते हैं। आप जीवन के अर्थ व लक्ष्य को तलाश करना चाहते हैं।



आप एक तार्किक विचारक हैं तथा लगातार किसी न किसी शोध कार्य से जुड़े हैं। आप आसानी से शिक्षा ग्रहण करते हैं व इसके लिए ऊर्जावान हैं। आप अध्ययनशील हैं व छिपे ज्ञान में पारंगत हैं।

आप उच्च शिक्षाधारी हैं या हो सकते हैं। आप किसी विश्वविद्यालय से जूँड़ सकते हैं। आप उच्च शिक्षा देने व लेने में यकीन रखते हैं साथ ही साथ आप दर्शनशास्त्र में भी रुचि रखते हैं। आप आपने गुरु के संदेश को तोड़ मरोड़ देते हैं अथवा उनके सुधारों को अनसुना कर देते हैं।

आपका कुछ विशेष विषयों में रुझान है जैसे लेखन, भाषा व गणित। आप शोध व ज्ञान में श्रेष्ठ स्तर पर हैं। आप धार्मिक या शैक्षिक संस्थानों को बहुत अधिक अनुशासनात्मक व स्वतंत्रता का बाधक समझते हैं। आपकी शिक्षा कानून, जीवन शास्त्र, आध्यात्म या मन्त्रों के ज्ञान में हो सकती है। आप ज्योतिष तभी स्वीकार कर सकते हैं जब आप इसके प्राचीन रूप को व इसके सुव्यवस्थित तरीके को समझेंगे। आप शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए दान भी दे सकते हैं।

आप उच्च शिक्षा में नहीं जाना चाहते हैं। आपकी शिक्षा अपूर्ण रह सकती है। आप को शैक्षिक कार्य में विषमताओं का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि आप पारम्परिक तरीकों के बजाय स्वनिर्मित तरीकों से कार्य करते हैं।

आप ज्ञानी हैं। जिन्दगी में ज्ञान संग्रहित करना आपका ध्येय है। आपको बौद्धिक ज्ञान भरपूर है तथा आप बहुत सी बातों के बारे में अच्छा व्याख्यान देने में निपुण होंगे। आपमें ज्ञान प्राप्त करने की प्रचंड प्यास है जो आपको अपने मित्रों तथा लोगों से वंचित करता है, जब वे आपकी सोच को बाँटते हैं।

आप सीखने में आनन्द लेते हैं आप अपने होने के कारणों को समझना चाहते हैं अतः दर्शनशास्त्र में शिक्षित हो सकते हैं। आप प्रखर तकनीक व योजनाओं से आगे बढ़ना सीखेंगे।



जब किसी कार्य में आप अपनी बुद्धि लगाते हैं तो अति दक्ष सिद्ध होते हैं।

आप विद्वाँ के बावजूद विजेता सिद्ध होते हैं। आपको सामान्यतः लोगों को परेशान करने वाली बिमारियों व कुण्ठाओं का ज्ञान है। आप प्रभावशाली व बुद्धिशाली तरीके से कार्य करते हैं व अल्पकालीन समस्याओं को त्वरित प्रतिक्रिया द्वारा हल करने में श्रेष्ठ हैं। आप शब्दों के कुशल जादूगर हैं। आपका वाणी तथा शिक्षण कौशल उल्कृष्ट हैं।



आप में, विशेषकर धर्म, शिक्षा, प्रकाशन व कानून के क्षेत्र में सशक्त प्रशासनिक योग्यताएं हैं। आप में सही गलत की विवरणात्मक समझ की योग्यता है। आप दूसरों के सहयोग से कार्य पूर्ण कराने में चतुर हैं।

आप में वह अन्तर्दृष्टि (जैसे आपकी मृत्यु का समय) है जो कुछ ही लोगों को मिलती है। आप जिम्मेदार व व्यवहारिक हैं, तथा व्यवहार कुशल व्यवसाय की तथा प्रशासनिक योग्यताएं रखते हैं। आप अवसरों से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

आप में नाट्य, नृत्य, कला, फ़िल्म व धर्मग्रन्थों का गुढ़ ज्ञान है।

आप कोई भी व्यक्ति जो तनाव में हो या किसी समस्या से ग्रसित हो, को स्नेहपूर्ण मदद देंगे। आपमें उपचार कौशल है व आप मालिश, योगाभ्यास या चिकित्सा में दक्ष हैं।

आपके लिये सभी परिस्थितियों में अपने आत्मसम्मान को बनाये रखना चुनौती से पूर्ण होगा। आपके सभी आत्मीय रिश्तों का असन्तुलन आपको परस्पर स्नेही अनुभवों से वंचित रखता है। समस्या पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित करना या गहराई से सोचने के कारण आप जीवन के सम्पूर्ण आनन्द नहीं उठा पाते हैं।

आप में कलात्मक योग्यताएँ हैं। आपमें अपने जीवन की कठीनाईयाँ व बैर दूर करने के लिए एक स्वाभाविक प्रतिभा है। आपमें अपने प्रतिद्वन्द्वियों व शत्रुओं से लाभ प्राप्त करने की प्रतिभा है।

आप रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान या सुगन्ध चिकित्सा में योग्य हैं।

आप शारीरिक स्वास्थ्य में रुद्धान रखते हैं। आप उन कार्यों में श्रेष्ठ हैं जो आपके व दूसरों के शारीरिक, आध्यात्मिक एंव मानसिक उत्थान से जुड़े हैं। आपकी अथाह ऊर्जा शारीरिक कार्य को सही मार्ग पर लगाने में सहायक होगी। आप मजबूत हैं।



शत्रु के प्रति आप उदार व माफ करने का स्वभाव रखते हैं। आप व्यवस्थित, प्रक्रियारत व उद्देश्यपरक हैं। आप अपना कार्य पूर्ण होने तक आराम से नहीं बैठते।

आप ऋण वसूलने में क्रोधित नहीं होते। आप भगवान में विश्वास करते हैं तथा अपने विश्वास के साथ सही संबंध बनाये रखते हैं। दूसरों की तरफ अहसानमंद होने की प्रवृत्ति बनायें।

आप अपनी कठिन सेवाओं से उन परेशानियों और दुःखों को अंततः मिटा देते हैं जिनसे दूसरों को हानि पहुँचती हैं। आप जरुरत मंदों की मदद करने की इच्छा रखते हैं और दया दिखाते हैं। आप परोपकारी व्यक्ति होने चाहियें। आप दूसरों को उनकी मुश्किलों में मदद करके, उनके स्वास्थ्य की रक्षा या उनकी असमंजसपूर्ण परिस्थितियों में उन्हें रास्ता दिखाकर उनसे जुड़ सकते हैं। आप उद्यमशील और सेवाभावी हैं। आप हमेशा दूसरों का भला चाहते हैं।

आक गलत चीजों का बचाव करेंगे और यह मानने से इंकार करेंगे कि आप गलत हैं। आप आसानी से न तो माफ करते हैं और न हीं भूलते हैं। आप बड़ों और और अध्यापकों का सम्मान नहीं कर पाएँगे। आपको कुछ कृत्यों से अध्यापकों को पीड़ा हो सकती है। आप कभी-कभी समाज के अनुभवी व्यक्तियों की सलाह पर ध्यान नहीं देते हैं। आपकी दूसरों को आहत करने



में पहल करना आदत नहीं हैं।

आपने जीवन में कभी कुछ विधंसात्मक किया होगा जिसका प्रभाव आपके बाद के अनुभवों पर पड़ सकता है। आप कभी-2 आशय न होन पर भी अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं।



आप स्वयं के लिए एक आरामदायक, कलात्मक और सुंदर जीवन शैली चाहते हैं। आपको बाहर आना-जाना पसंद है। आपका किसी विदेशी के साथ संबंध बन सकता है। आप सांझा उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अपने पिता या महत्वपूर्ण शिक्षकों के साथ तत्काल कार्य करना पसंद करते हैं।

आपको प्रशिक्षण स्वतः ही अच्छा लगता है।

किसी के जीवन उद्देश्यों या अन्य दार्शनिक विषयों के बारे में लिखना या बोलना आपकी रुचि है। आप विरासत का आनंद उठा सकते हैं। आपकी रुचि विदेशी लोगों और विदेशों के प्रति है। आपकी रुचि विदेशों, उनकी संस्कृति और परम्पराओं में है। आपकी रुचि गैर परम्परागत ज्ञान जैसे वैकल्पिक चिकित्सा, ज्योतिष और अन्य गुप्त विद्याओं में है। आप जीवन के आश्वयों को खोजना पसंद करते हैं किन्तु उन्हें दार्शनिक या धार्मिक रूप देकर व्यवसाय करना आपके लिए समस्याजनक है। आप उन्हें स्वयं तक रखना चाहते हैं। आपकी रुचि गुप्त और रहस्यमयी कलाओं में हो सकती है। आप गुप्त विद्याओं में और दैवीय ज्ञान में रुचि रखते हैं। आपको रहस्यपूर्ण बातों की जानकारी आदि पसंद है। आप रहस्यमयी बातों के प्रति रुचि से नए ज्ञान का अनुसंधान कर सकते हैं। आप जीवन का समामान्य रीति से पूरी तरह जानना चाहते हैं। आपको दूसरों की मदद करना पसंद है। आप नियंत्रण करना जानते हैं और दूसरों का नेतृत्व करते हैं। आप अपने कार्य को बेहतरीन तरीके से करना चाहते हैं और जानते हैं कि लगन से किये गये कार्य का प्रतिफल मिलता है।

आपको दूसरों से अहम टकराने से बचने के लिए एकान्त पसंद है। आपको सपने देखना पसंद है।

आप कला, संस्कृति और संगीत संबंधी उपलब्धियों के प्रशंसक हैं और इनमें आप स्वयं को सहज महसूस करते हैं।

आप धार्मिक और आध्यात्मिक मामलों में सहज और मुखर हैं। आपको आध्यात्मिक व्यक्ति और धार्मिक क्रियाकलाप पसंद है। आपको ध्यान पसंद है। आप मृत्यु पश्चात के जीवन के बारे में विचार करते हैं और आध्यात्मिक बातों में आपको समय बिताना अच्छा लगता है। आप कभी-2 मन में शान्ति का अनुभव करेंगे। आपका झुकाव अदुभूत और अलौकिक वस्तुओं की ओर हो सकता है। आप पुर्नजन्म में विश्वास रखते हैं और स्वयं के विगत जीवन कालों में झाँकने का प्रयास कर सकते हैं। आपकी विशेष रुचि आत्मोत्थान और ज्ञान में है। आपकी हार्दिक इच्छा है कि आपकी आर्थिक स्थिति और अच्छी हो।

आपको पशुओं विशेषकर बड़े पशुओं से प्रेम है। आपके दिल में पशुओं के प्रति दयाभाव है। आपके पालतू पशु समस्याप्रद है।

आपको उच्चतर ज्ञान, दर्शन और धर्म की बाते कम पसंद हैं। जब आप कार्य कर रहे होते हैं तो आपको अपने आस-पास शोर पसंद नहीं आता है।

आपके द्वारा लिया जाने वाला भोजन अक्सर पौष्टिक नहीं होता है। आपके भोजन में विविधता रहती है या आप उपवास कर सकते हैं। आप मादक पदार्थों और मादक पेयों के आदी हो सकते हैं।



आप ऐसे भोजन और अभ्यासों में रत रहते हैं जो स्वास्थ्यप्रद और आयुवर्धक होते हैं। आपके शरीर को अत्यधिक ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। आपकी जीवन शक्ति में कभी-कभी गिरावट आ जाती है जो आपके स्वास्थ्य पर भी असर डालती है। आप शारीरिक श्रम कम ही करते हैं।

आपके गर्दन के आस-पास के क्षेत्र में चोट, विकार या जीव-विष के रिसाव की संभावना है। आप मानसिक समस्या, यात्रा के दौरान दुर्घटना, फेफड़े, कूलहे के रोग जिसमें कूलहे, जांघ और पैर में दर्द सम्मिलित है से पीड़ित हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य नरम हो सकता है और ऐसा भावनात्मक समस्याओं के कारण हो सकता है। आपकी पाचन शक्ति कुछ कमजोर है। आपके उदर के निचले भाग में कोई स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। आपको एलर्जी, मोटापे और लिवर की समस्या हो सकती है। किसी प्रकार की तेज गर्मी के कारण आपको नेत्र संबंधी समस्या हो सकती है। आपके दाँत पीले और धब्बेदार हो सकते हैं। आपके यौन विकास में व्यवधानकारी कारक हो सकते हैं। आप जननांगों या छाती से संबंधित व्याधियों से ग्रस्त हो सकते हैं। आप जननतंत्र संबंधित किसी असामान्य समस्या का अनुभव कर सकते हैं जो अंत में समाप्त हो जायेगी। आपके प्रजनन तंत्र में कुछ अव्यवस्था हो सकती है और यिकिट्सकीय हस्तक्षेप या शल्य-क्रिया भी संभव है। आपके कमर के नीचे का दर्द पीड़ादायक हो सकता है। आपको समय-समय पर पैरों में समस्याएँ हो सकती हैं। आपके लिए दिन का समय सशक्त है। आप ठंडे पानी से न्यान करके अत्यधिक ऊर्जावान हो जायेंगे। आप आध्यात्मिक आरोग्यकारी रीतियों के पक्षधर हो सकते हैं।

अस्थिर और क्षुब्ध मनः स्थिति के कारण आपके साथ दुर्घटनाएँ हो सकती हैं। आपको समुद्र पसंद है परन्तु आप पानी में या पानी के पास की दुर्घटनाओं की संभावना से सावधान रहें।



आपके लिए पिता की तुलना में माता को सूचित करना अधिक सरल है यद्यपि, यह आपकी पसंद नहीं हो सकती है।

आपकी माता ऐसी है जो घटनाओं को स्थायी, सुखद रूप से संरक्षित रखती है और परिवार को जोड़ कर रखती है। वह धरातल से जुड़ी हुई और रुढ़िवादी महिला है जो अपने निकट संबंधियों से आदर प्राप्त करती है। वह स्वयं की मर्जी से कार्य करना पसंद करती है। रुढ़िवादी, ध्यान रखने वाली और क्रियाशील आपकी माता जानती है कि किस प्रकार सर्वोत्तम जीवन गुजारा जा सकता है। वह अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने वाली एक क्रियाशील संचयी है। उसकी उच्च प्राथमिकता, इच्छा से अधिक स्वेच्छापूर्वक जीवन को प्रतिदान करना है। वह वित्तीय कार्यों में अग्रणी रहना पसंद करती है और उसके वित्तों में सम्मिलित दूसरों के साथ धैर्यवान होना उसके लिए कठिन है। आपकी माता को बनाव-सिंगार पसंद है। आपकी माताजी स्वभाव से दृढ़ हैं। आपकी माताजी अपने कार्य के प्रति समर्पित धर्ष और पक्के इरादे को आगे बढ़ाती हैं। आपकी माता में गहरी और आधारभूत इच्छाएँ हैं। आपकी माता को भोजन अतिप्रिय है।

आपकी माता स्वाभावित जिद के कारण अपनी योजनाओं को सफलता पूर्वक संरक्षित रख सकती है। आपकी माता काफी शांत और अंतर्मुखी है। आपकी माता का जीवन संक्षिप्त हो सकता है या वह घर छोड़कर जा सकती है। आपकी माता तुच्छ बातों पर चिन्तन करती है और इससे अपने कुछ महत्वपूर्ण कार्य में विलंब कर सकती है। आपकी माता चाहे संपत्ती, वस्तुओं या लोगों को अर्जित, संक्षिप्त और परिष्कृत करना पसंद कर सकती है। कभी-कभी ऐसा समय भी आता है जब आपकी माता



के दिमाग पर शारीरिक आवश्यकताएं हावी हो जाती है तब वह आत्म खोज और यहां तक कि सामान्य अतिस्त्राव की पकड़ में स्वयं को दानवीय महसूस कर सकती है। आपकी माता एक बेहतरीन व्यक्तित्व की स्वामिनी होने के कारण विदेशियों से भी सुरुचिपूर्ण संबंध बना सकती है। आपकी माता को विवादों से निपटना पड़ सकता है। आप अपनी माता की सहायता करते हैं। आपकी माता का परिवार आपकी सहायता करता है और उसके अच्छे कार्य की वे लोग प्रशंसा करते हैं। आपकी माता ने जीवन में कष्ट उठाए हैं और आपके और आपकी माता के बीच संबंध पूर्ण नहीं हैं। आपकी माता आपको समृच्छित प्रोत्साहन और सहायता प्रदान नहीं करती है। आपके मामले में आपकी माता जितना दखल देना चाहती थी इतना देने से वे सदैव प्रविरत रहीं।

आपके पिता संगीतमय और कला की ओर उन्मुख है। वे जीवन्त और बेहतरीन वार्ताकार हैं वे विरोधियों के बीच सेतू का कार्य करने में दक्ष हैं। उनका रुझान ज्योतिष की ओर है वे जीवन की योजना में दर्शन को स्थान देते हैं। वे कर्तव्यनिष्ठ हैं। और सृजनात्मक और आनन्दमय जीवन जीना पसंद करते हैं। उनका सानिध्य पाना बहुत आसान है। आपके पिता यद्यपि कभी-कभी प्रतिस्पर्धात्मक और जिद्दी हो जाते हैं तथापि जिस किसी से वे मिलते हैं सदैव उसके मित्र बने रहते हैं। वे न्यायपूर्ण, सहदय और अधिकांशतः ईमानदार हैं उन्हें समय व्यतीत करने के लिए मित्रों का संग चाहिये। उनके मित्र कभी दुव्यवहार भी करते हैं तो वे उसे माफ कर देते हैं इसी कारण मित्रों में उनकी मांग बनी रहती है उन्हें कारगर में कोई भी दोषपूर्ण साधन अपनाने से बचना चाहिये। आपके पिता यदि परिस्थितियां नियंत्रण से बाहर हो जाएं तो झगड़ने के बजाय वहां से हटना बेहतर समझते हैं। आपके पिता सामान्यतया अपने पारिवारिक जीवन में हास्यपूर्ण और आरामदायक हैं। आपके पिता विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित होते हैं तथा अपने आपको उलझन में डाल सकते हैं सिर्फ इसलिये क्योंकि वे अपनी खुशी के बारे में अधिक सोचते हैं। आपके पिता अपनी अभिलाषाओं को पूरा करने की हिम्मत रखते हैं। आपके पिता परिवार अथवा समुदाय, राजनीति अथवा साजिशें पिता के विश्वास के मूल तत्व हैं। आपके पिता अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये प्रयास करते हैं और वह तब तक नहीं रुकते जब तक कि वे उसे पूरा न कर लें। आपके पिता का मस्तिष्क सृजनात्मक है तथा उनमें एक के बाद एक अनेक विचार आते रहते हैं।

आपके पिता अपनी आय से थोड़ा बहुत असन्तुष्ट हो सकते हैं। आपके पिता जमीन से जुड़े हुये अथवा अपने हाथों से काम करने वाले हो सकते हैं।

आपके पिता अथवा परामर्शदाता उच्च स्तर के हो सकते हैं तथा उन्हें शासक वर्ग का सहयोग होगा। आपके पिता दूसरों की कृपा दृष्टि बनाये रखने के लिए कार्य करते हैं। आपके पिता तर्क-वितर्क व वाद-विवाद से जितना सम्भव हो बचने की कोशिश करते हैं। आपके पिता साझेदारी में बहुत अधिक रौब जमाने वाले हो सकते हैं। आपके पिता के लिये हीनभावना से उबर पाना कठिन होगा। आपके पिता घर से दूर जा सकते हैं।

आपके पिता या अध्यापक किसी अपमान-जनक कार्य में फँस सकते हैं। आपके पिता में अपने जीवन साथी के प्रति सहानुभूति की कमी हो सकती है जबकि वे उन से सहानुभूति व प्रशंसा की अपेक्षा रखते हैं।

आप और आपके पिता के बीच एक अच्छा संप्रेषण व मधुर एवं खुले हुए सम्बन्ध है। आप अपके पिता के उत्तराधिकारी होंगे तथा अन्ततः उनका आशीर्वाद प्राप्त होगा। आपके पिता यद्यपि परामर्शदाता अथवा अध्यापक आपके व्यक्तिगत निजी जीवन में हस्तक्षेप नहीं करते लेकिन वे आपके लिये अच्छाई का स्तोत्र हैं। प्रारम्भ में आपके पिता के साथ आपके सम्बन्ध कठोर व रुखे हो सकते हैं परन्तु वे बाद के वर्षों में गहरे व विश्वसनीय संबंधों में विकसित हो जायेंगे। आप अपने पिता से अलग हो सकते हैं। आप अपने पिता से जीवन के प्रारम्भ में बिछड़ सकते हैं या आप उनसे दूर जा सकते हैं या फिर वैचारिक मतभेद के कारण उनसे दूर हो सकते हैं। आप अपने पिता के घर से या उनके सम्पर्क से कुछ अनियंत्रित कारणों की वजह से दूर जा सकते हैं ये कारण या तो मनोवैज्ञानिक बदलाव की वजह से या फिर आपके किसी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ती हेतु जाने की वजह से हो सकते हैं।

आप का अच्छा पारिवारिक जीवन है तथा आप अपने परिवार के सदस्यों पर नियंत्रण की आवश्यकता महसूस करते हैं।

आपने अपने किसी रिश्तेदार को नौकरी दिलवाई होगी। आप अपने परिवार व रिश्तेदारों से दूर जा सकते हैं तथा असामान्य परिस्थितियों में उलझ सकते हैं। आपके घरेलू व पारिवारिक जीवन में कुछ परेशानियां व विचित्र घटनाएं हो सकती हैं। आपके



परिवार के साथ बिताये हुये प्रारम्भ के समय में कुछ अन्तराल हुये होंगे। आप पारिवारिक जीवन में बाधाओं के प्रति संवेदनशील हैं। आपका अपने रिश्तेदारों से संबंध बहुत प्रगाढ़ नहीं है और इसी के कारण आपकी उनसे कुछ दूरी हो सकती है। आप अपने परिवार के सदस्यों के प्रति कुछ चिढ़चिढ़ हो सकते हैं जिससे आपकी पत्नी प्रभावित हो सकती है।

अगर आपके कोई बड़ा भाई या बहिन है तो उसके साथ आपके रिश्तों में कुछ कड़वाहट हो सकती है। आपको अपने भाई-बहिनों से बहुत अधिक सम्मान प्राप्त नहीं होगा।



आप में अपने रिश्ते को छुपाने की प्रवृत्ति हो सकती है या आप अपने मित्रों से अकेले में मिलना चाहते हैं। आप में गोपनीय रिश्ते बनाने की प्रवृत्ति हो सकती है। आपको रोमांस आत्मा का विकास कर सकता है।

आपके रिश्ते लगातार अनेक चुनौतियों बाधाओं तथा बदलावों से गुजर सकते हैं। आप में पुरुषत्व की कमी तथा सैक्स के प्रति उदासीनता हो सकती है।

आपके जीवन की समस्याएं प्रेम, सैक्स व विवाह से सम्बन्धित हो सकती हैं। आप यद्यपि अपने वैवाहिक सम्बन्धों को बनाये रखने के लिये प्रतिबद्ध हैं लेकिन आप ऐसे कार्य करते हैं जो कि आपके सम्बन्धों को कमज़ोर करते हैं। आपके विवाहेतर सम्बन्ध हो सकते हैं। आपका अपने जीवनसाथी अथवा पक्के मित्रों से अलगाव हो सकता है। आपके प्रेम या सैक्स से सम्बन्धित कोई कष्टप्रद अनुभव हो सकते हैं। आपका जीवनसाथी आपकी इच्छाओं का पालन नहीं करता। आपके जिम्मेदारी लेने के स्वभाव को घर पर सभी महसूस करते हैं तथा आप अपने पति/पत्नी के कार्यों का ढंग से संचालन कर लेते हैं।

आपके विवाह से अगर भौतिक नहीं तो आध्यात्मिक लाभ होगा। आप अपने वैवाहिक रिश्तों से आर्थिक लाभ उठायेंगे तथा आपका वैवाहिक जीवन समृद्ध होगा।

आपके जीवनसाथी को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है विशेष रूप से आर्थिक क्षेत्र में व रिश्तों को लेकर।

आपकी पत्नी प्रशंसा प्रिय है उनमें प्यार का उच्च भाव है वे एक कलाकार सलाहकार व अच्छी अध्यापक है उन्हें ध्यान योग में रुचि है यद्यपि वे आत्मनिर्भर हैं परन्तु उनका बार बार नौकरी बदलना उनके लिए परेशानी खड़ी कर सकता है।

आपकी पत्नी में आगे बढ़ने व विकास करने की तीव्र इच्छा है। आपकी पत्नी समाज के भले में रुचि लेती है लेकिन वे समाज के उन पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में अत्यधिक सचेत हैं। आपकी पत्नी वफादार व स्नेही मददगार व सुरक्षा करने वाले अपनी प्रवृत्ति को दान की भावना से निर्धारित करते हैं। आपकी पत्नी की रचनात्मक प्रक्रिया उनकी शक्ति व सौन्दर्य का प्रदर्शन है। आपकी पत्नी के विचार दृढ़ सकारात्मक व दिखावे वाली है। आपकी पत्नी व्यर्थ बातों में अपनी ऊर्जा नष्ट नहीं करती, यद्यपि आवश्यक होने पर वह विस्तार से समझा सकती है। आपकी पत्नी को अपने महत्व का भान है, इसलिए इसे बढ़चढ़ा कर बताती है। आपकी पत्नी एक आदर्श माता हैं, यद्यपि वे बच्चों पर अपना अधिकार मानती हैं।

आप बुद्धिजीवी होने के कारण एक शिक्षित जीवन-साथी को वरीयता देते हैं। आपकी पत्नी में आयोजन की श्रेष्ठ कला है



जिससे वह अनेक कठिन एवं जटिल योजनाओं को जीवित कर देती है। वह दुःखात्मक घटनाओं को भी लाभ में परिणत कर देती है। आपके जीवन-साथी की शारीरिक-स्वास्थ में रुचि होने की संभावना है।

आपकी पत्नी सदा एक उच्च प्रेम की तीव्र कामना करती है। आपकी पत्नी के प्रयत्न यद्यपि भौतिक जगत में उन्नति को ही लक्ष्य करते हैं, वह सदा आध्यात्मिक मार्ग से जुड़े रहने की अभिलाषा करती हैं।

आपकी पत्नी को अन्यों द्वारा प्रसारित आदेश पालन करने की विवशता अत्यंत दुःखी कर देती है अतिशय विवशतापूर्ण परिस्थियों में आपकी पत्नी ऐसे अनुग्रह स्वीकार करने की बजाय, जो उन्हें किसी के आदेश-पालन पर विवश करें, दरिद्रता एवं असुविधा का चयन कर सकती हैं। आपकी पत्नी समाज-कल्याण के हेतु अपने निस्वार्थ चिंतन के प्रदर्शन को छेदन करने वालों के प्रति क्रुद्ध हो सकती हैं। आपका जीवन-साथी क्रोध-ग्रस्त हो सकता है। आप अपने जीवन-साथी के लिए कठिनाईयाँ खड़ी कर सकते हैं, जैसे, उसे मुकदमेबाज़ी एवं अन्य समस्याओं में डालना। आपकी पत्नी की जीवन-शैली सरल एवं अच्छे स्तर की है। आपके जीवन-साथी की तुलना में निम्न-स्तरीय पृष्ठ-भूमि से होने की संभावना है।



आपके अनेक मित्र हैं। आपके वश के परे की परिस्थितियाँ आपको अपने मित्रों से अलग कर सकती हैं। आपके मित्र शत्रुओं में बदल जाएँ ऐसी घटनाएँ भी संभव हैं।

आप अपने मित्रों की समस्याओं के तकनीकी हल प्रदान कर सहायता कर सकते हैं। आपके अनेक मित्र हैं, आप अन्यों की सहायता करने में रुचि लेते हैं एवं धर्म की और रुझान रखते हैं। आपके लिए सच्चे मित्र प्राप्त करना कठिन हो सकता है। आपके मित्र ऐसे उपद्रवों से गुज़र सकते हैं जो आपको प्रभावित करें। आपकी अभद्र भाषा के लिए मित्र आपको फटकार सकते हैं।

आप प्रतिद्वन्द्वियों एवं शत्रुओं से स्पर्धा के द्वारा उत्पीड़ित अनुभव कर सकते हैं। आपके विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी अथवा आपके व्यवसाय को अपना शिकार बनाने के इच्छुक औद्योगिक-गुप्तचर हो सकते हैं। आपके गुप्त प्रतिद्वन्द्वी अथवा शत्रु हों ऐसा संभव है जो आपकी जानकारी के बिना आपके विरुद्ध कार्य करें। आपके अधिकांशतः अप्रकट संघर्ष हो सकते हैं एवं हो सकता है कि आपके प्रतिद्वन्द्वी भी प्रत्यक्ष न हों। आपके शत्रु अथवा प्रतिद्वन्द्वी चोरों अथवा स्वास्थ्य समस्याओं के शिकार हो सकते हैं। आप शत्रुओं के अवरोधों के कारण एवं समस्या सुलझाने के उपाय प्रयोग करके, ऐसी योजना विकसित करें जिससे आप अपने प्रमुख प्रतिद्वन्द्वियों एवं विरोधियों का लाभ उठा सकते हैं। आपका अपने शत्रुओं पर आर्थिक रूप से सदा दबाव रहता है। आपके शत्रु आपका लाभ उठा सकते हैं। आपके प्रतिद्वन्द्वी अथवा विरोधी आपसे पहले ही अवसर हथिया लें अथवा आर्थिक वृद्धि के लिए आपकी कोई योजना चुरा लें, ऐसा संभव है।

आपके शरीर में कुछ ऐसी भिन्नता है जो आपके प्रति लोगों की प्रतिक्रिया का आंशिक रूप में कारण है। आप विशिष्टिकृत क्षेत्रों में अन्यों के द्वारा सम्मानित हैं। आपके स्वतंत्र विनोदी स्वभाव के कारण लोग आपको प्रेम करते हैं। आप जहाँ कहीं भी जाते हैं, लोग आपके आगे झुक जाते हैं। आपकी उपलब्धियों से मित्र एवं संबंधीगण प्रभावित हैं। आप भाग्यशाली एवं भलि प्रकार से सम्मानित हैं। उद्देश्य का प्रबल ज्ञान मन में रखते हुए, आपको सम्मान प्राप्त हो सकता है। आप अपने अच्छे आचरण एवं स्वस्थ प्रवृत्तियों के लिए जाने जाएंगे।

विपरीत समयावधियों में आपको लोकनिंदा प्रभावित कर सकती है।



आप उच्च पदस्थ लोगों से सम्मान एवं समर्थन प्राप्त करते हैं जो बढ़ता जाता है। किसी विद्वत्तापूर्ण अथवा शैक्षणिक क्षेत्र में ख्याति आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकती है क्योंकि आपका ध्येय प्रबल रूप से संसाधनों के क्रमिक संचय चेतना से जुड़ा है। आप अपने समूह अथवा समुदाय की दिशा को एक नया मोड़ देते हैं। सामाजिक आदान-प्रदान आपके मन को उत्साहित करता है एवं आप को सुखानुभूति प्रदान करता है। आपको प्रायः भाषण के लिए आमंत्रित किया जाता है एवं आप श्रोताओं के बीच सफल रहते हैं। आपके बुद्धिजीवियों एवं विद्वानों से अच्छे संबंध हैं। संभवतः आप लोगों को प्रभावित नहीं कर पायें, क्योंकि आप अत्यंत सनकी अथवा अनाकर्षक हो सकते हैं।

जब भी आप किसी असहाय परिस्थिति में फंस जाएंगे आपको प्रायः सहायता मिलेगी। आपका लोगों के साथ संपर्क समस्या-रहित होता है। आपको अपने प्रियजनों से वियोग का सामना करना पड़ सकता है। आपके लिए लोगों से जुड़ना एवं संपर्कों का जाल जिससे आपके लिए नये अवसर खुल सकते हैं, बुनना, कठिन हो सकता है। जिन्होंने आपको आघात पहुँचाया वे भी कठिनाईयों से गुज़रते हैं।



आप प्रयासरत, प्रजातात्त्विक, गम्भीर, पवित्र व आत्मनियन्त्रित हैं। जिस भी चीज में आपका विश्वास है आप उसी की तरक्की चाहते हैं - यदि क्षत्रिय हैं तो आप साधु बन जायेंगे। आपका कार्य करने का तरीका महत्वाकाँक्षी व सशक्त है, परन्तु आपका व्यक्तित्व न तो इसका समर्थन करता है न ही इसे पहचानता है। दृढ़ प्रयास व कठोर परिश्रम आपको आर्थिक रूप से सफल बनाएंगे। आपने अपनी प्रतिष्ठा को जन्मजात माना है यह आपको बड़ा लाभ व अपनी महत्वाकाँक्षा को पूर्ण करने में सहायता देगी। आप अपनी कार्य कुशलता के लिए सब ओर जाने जाते हैं। आप स्वनिर्मित हैं तथा अपना नाम व पेशे को बनाने में आपने कड़ा परिश्रम किया है। आप अपने पेशे में परिश्रम को पूर्ण ईमानदारी से कर सफलता प्राप्त करेंगे। आप अपने पेशे के लिए कड़ा परिश्रम करते हैं परन्तु मध्य मार्ग में ही आप अपनी जीवन वृत्ति से उखड़ जाते हैं।

आप अपने पेशे में सफलता के लिए अपने प्रयासों में व्यवहारिक, ऊर्जावान व साहसिक हैं। आप एक अच्छे कार्यकर्ता हैं। आपकी व्यवसाय में तरक्की थोड़ी मन्द गति से होगी। आप अपनी जीविका के सभी पहलुओं में कुशल हैं और अपनी सफलता को बढ़ाने के लिए नए आयाम खोजने से तनिक भी नहीं हिचकिचाते। आप एक अच्छे शोध कर्ता हैं, व सत्य को गहनता से खोज लते हैं। आपका कार्य क्षेत्र स्वतंत्रता, सेवा व सहजता/शांति से ही जुड़ा होगा।

आप बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठानों में रुचि रखते हैं।

आप व आपके भागीदार के मध्य सांस्कृतिक दूरी है। भागीदार अपनी व्यक्तिगत जीवन के बारे में खुले नहीं होंगे।

आप एक स्वतंत्र ठेकेदार की तरह कार्य करेंगे।

आप स्वतंत्र व्यवसाय के बजाय किसी बड़ी कम्पनी के कर्मचारी के रूप में ज्यादा प्राप्त करेंगे। आप अपने मालिक से अच्छे रिश्ते रखेंगे व वाहन, घर, वेतन या अन्य सुविधाओं में उनसे लाभान्वित होंगे। आपके मालिक व शिक्षक विदेशी हो सकते हैं। आपके मालिक किसी अन्य स्थान या देश के हो सकते हैं। आपके मालिक की अधिक माँग के कारण आपको कुण्ठा महसूस होगी।

कर्मचारी व नौकर आपकी दिनचर्या से जुड़े हैं। आपके पास कर्मचारी या कई अधीनस्थ होंगे।



आप अपने कार्य की आवश्यकताओं को भली प्रकार बता सकते हैं। आप अपने कार्य में व्यक्तिगत नहीं है। आप पर सहयोग व भरोसेमन्द कार्य के लिये निर्भर किया जा सकता है। आप दुनियादारी व गुणों में सही-गलत की भावना से ओत-प्रोत हैं। आपकी पसंद का व्यवसाय, भाषण देना, शिक्षा एवं वित्त सम्बन्धी हो सकता है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि आपके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका सामाजिक प्रतिष्ठा एवं प्रतिष्ठित पद की रहगी, और आप इसके लिए शासन चलाने वाली शक्ति के साथ प्रभावशाली सम्बन्ध प्राप्त करेंगे। शक्तिशाली व्यक्तियों द्वारा आप प्रशंसनीय हैं। आपका अपने परिवार एवं समाज में महत्वपूर्ण एवं प्रमुख व्यक्तित्व है। आप सफलता एवं प्रसिद्धि पाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। आप उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आप अपने गहन ज्ञान के कारण अन्ततः सफल होंगे और दूसरे भी आपके ज्ञान को उपयोगी पायेंगे।

आपको अपनी इच्छाओं व आकांक्षाओं को पूर्ण करते समय कठिन समय से गुजरना पड़ सकता है, क्योंकि आप के मार्ग में कष्टप्रद बाधाएं और रुकावटें आती हैं। आपके लिए प्रतिष्ठित पद तक उन्नति करना कठिन है और यदि आप करते हैं तो वहां से पतन की आशंका भी है। आपको बिना सहायता के काम करना पड़ सकता है और अपना लक्ष्य प्राप्त करने में आप असमर्थ हो सकते हैं। आप शक्ति और प्रभाव तक ऊँचा उठ सकते हैं और अनेक लोगों में सम्मानित हो सकते हैं। आपकी विदेशी मामलों में रुचि है और अन्तर्राष्ट्रीय संपर्कों का लाभ उठायेंगे।

आप अपने अधीनस्थ काम करने वालों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। आपको अपने व्यवसायिक क्षेत्र में मान्यता प्राप्त होगी और अनेक लोगों द्वारा सम्मानित किया जाएगा। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में आप उन लोगों को जो आपके लिए काम नहीं करते हैं, यह आभास दे सकते हैं, कि आप उनकी आवश्यकताओं के विषय में इतने चिंतित नहीं हैं। आप अपने कैरियर में उपलब्धियों की पूर्ण मान्यता कठिनाई से प्राप्त करेंगे। आप अपने काम के लिए अपर्याप्त सम्मान प्राप्त करेंगे भले ही वह कितना ही गहन और रोचक हो। संभव है, आप अपने पद और कैरियर की वृद्धि के लिए, गुप्त साधन अपनाने के प्रलोभन में प्रवृत हो जाएं। आप जिन संगठनों से संबद्ध हैं, उन्हें मुकदमेबाजी और अन्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यह आपकी और उनकी प्रगति को विलम्बित करेगी।



आप धन-प्राप्ति के लिए बड़े कष्ट सहने के लिए तैयार हैं। आपकी प्रतिष्ठा और सम्मान आप को धनी व्यक्ति बनाना सुनिश्चित करती है। आपका पारिवारिक व्यवसाय महत्वपूर्ण है और आपकी जीविका के साधनों में से एक हो सकता है।

आप चतुर होने के कारण सुदृढ़ जीविका कमाएंगे। आप अपने परिवार के लिए एक अच्छा उदाहरण बनेंगे और अपने जीवन में लगातार धन प्राप्त करेंगे।

आप मितव्ययता और अपव्यय में संतुलन रखते हुए धैर्यपूर्वक बचत करते हैं। यद्यपि आप बहुत धनोपार्जन कर सकते हैं किन्तु बहुत सरलता से बड़े ऋण चक्र में फंस जाएंगे। आपके वित्तीय आयोजना में रणनीतिक दृष्टि से ऋण महत्वपूर्ण हैं।

अच्छी आय के संकेत है यद्यपि कठिन परिश्रम और समय अन्तराल की आवश्यकता हो सकती है।

आपके धन का कुछ भाग जमीन - जायदाद के रूप में है।



समस्या निदान/सेवा भी आपके लिए आय का माध्यम हो सकती है। आप राजकीय या कॉर्पोरेट सेवाओं से धन प्राप्त कर सकते हैं। जवाहरात, भोजन सौन्दर्य प्रसाधन और शिक्षा से आय सृजन हो सकती है। विधि, चिकित्सा, प्रशासन रक्षा सेवाओं, सेल्फ-केयर क्लीनिक आदि से आय सृजन हो सकती है। आपकी आय का संबंध चिकित्सा, विधि और सशस्त्र सेवाओं से है। आप खेलों से संबंधित गतिविधियों से अर्जन कर सकते हैं।

आप धनोपार्जन हेतु कठिन परिश्रम करने के लिए साहसी और केंद्रित हैं। आप अपनी अनौपचारिकता में स्वच्छ हवा का एक झौंका हो सकते हैं किन्तु बिना धन संपत्ति एवं सहयोग के कारण नीरस, सांसारिक कार्यों के शाब्दिक या लाक्षणिक दुष्क्र में फंस सकते हैं।

आप के पास कम्प्युटर और अन्य तकनीक सहित आधुनिकतम उपकरण हैं।

आप ज़मीन-ज़ायदाद या अन्य संपत्ति का स्वामित्व प्राप्त करेंगे जो आपको सुखप्रद जीवन प्रदान करेगा। आप भवन निर्माण से लाभ अर्जित कर सकते हैं। आप पवित्र स्थानों से संबंधित भवन या भूमि का पुनर्निर्माण व पुनरुद्धार कर सकते हैं।

आप वित्तीय रूप से प्रचुर लाभ प्राप्त करेंगे किन्तु अत्यधिक व्यय के कारण उस लाभ को खो देंगे। आप अच्छी वस्तुओं पर व्यय करने हेतु प्रवृत्त होते हैं किन्तु अतिव्यय के प्रति सावधान रहें।

चोरी की आशंका है। जुआ खेलने से आप कुण्ठाग्रस्त हो सकते हैं। प्रत्येक लाभ के साथ हानि और हानि के साथ लाभ निहित है।



आपका आध्यात्मिक मार्ग आपके लिए महत्वपूर्ण है। आप मंत्र विद्या का अभ्यास प्रारंभ कर सकते हैं। आप समय द्वारा परीक्षित, परम्परागत आस्था व विश्वास प्रणाली की ओर आकर्षित होंगे।

यह संभव है कि आप मोक्ष अथवा ज्ञान प्राप्ति की ओर प्रवृत्त होते हैं। गूढ़ अथवा आध्यात्मिक क्षमताएं बेहतर धन को प्राप्त करने में सहायक हो सकती हैं। आप आध्यात्मिक उपचार में विश्वास कर सकते हैं। आप ध्यान द्वारा निर्देशित होने पर सदैव उचित मार्ग पर गमन करेंगे।

आपकी रुचि गहन आध्यात्मिक ज्ञान में है। आप संतो के गुणों से युक्त हैं एवं यह संभव है कि आप साधारण व्यक्तियों से अधिक धर्मग्रंथों एवं धर्म के विषय में ज्ञान संपन्न हैं। आपके आध्यात्मिक उत्तरि का मार्ग है - कर्मयोग, सेवा का मार्ग। आप एक गंभीर चिन्तक व विचारक हैं एवं जीवन में मार्गदर्शन हेतु पवित्र एवं व्यवहारिक, दार्शनिक सिद्धान्तों का अनुगमन करते हैं।

आप सर्वोच्च को पूरी तरह समर्पित करने की वृष्टि से पूर्णतः आध्यात्मिक अथवा भक्तिमय नहीं है। आप आध्यात्मिक विषयों में कुछ आत्म संदेह कर सकते हैं। आप संदेही, रहस्यवाद तथा आध्यात्म के प्रति संशयवादी हो सकते हैं विशेषतः यदि ये विदेशी संस्कृतियों पर आधारित हैं।

आप सर्वरक्षक देवता की आराधना करते हैं। आप एकान्त में एवं गुप्त रूप से आराधना करते हैं। आप धर्म एवं शिक्षा के क्षेत्रों में अत्यन्त रुद्धिवादी हैं।

आप के जीवन में गंभीर संदेह और अनास्तिकता के अंतराल आ सकते हैं। आप धार्मिक मूल्यों के प्रति प्रशंसक नहीं हैं। आप



नये धार्मिक निर्देशों और आध्यात्मिक सिद्धान्तों को स्वीकार करने में संकोच करते हैं। आपके लिए इसका अन्वेषण एवं विश्लेषण करने की आवश्यकता है जबकि वास्तविक व्यवहार में यह आपको भ्रमित करता है। आप ईश्वर के सिद्धान्त/विचार के संबंध में व्यक्तिगत एवं स्वतंत्र स्तर पर असुविधा का अनुभव करते हैं। आप धर्म एवं आध्यात्म के विषय में उदार हो सकते हैं और रुढ़िवादी तथा विशुद्धिवादी व्यक्तियों के प्रति आघात कर सकते हैं। आप यदि धर्म निष्ठ होते हैं तो आप इसका सीमित एवं मयादित स्वरूप में पालन करेंगे।



आप बहुत और विस्तृत यात्रा कर सकते हैं। आपको विस्तृत यात्राएँ करनी पड़ सकती हैं। आप छोटी-2 यात्राएँ कर सकते हैं। आप अध्ययन हेतु विदेश जा सकते हैं। आप ज्ञानार्जन और संवाद प्रवीणता के लिए यात्राएँ करते हैं। आपको यात्रा रोमांस का अवसर प्रदान करती है। आपके लिए सुदूर यात्राएँ समस्याप्रद हो सकती हैं। आपकी मृत्यु संभवतः विदेश में होगी।



आपका जीवन नया मोड़ ले सकता है।

आप भय व खतरों से मुक्त जीवन के लिए कोई भी तरीका अपना सकते हैं। आपके जीवन में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे जो आपको अच्छे नहीं लगेंगे लेकिन जिनका एक निश्चित उद्देश्य होगा। आप अपने वातावरण में चीजों का एक अलग ढंग से मूल्यांकन करते हैं। आप दूसरों को एक नई दिशा दिखलाएंगे। आपको संभवतः प्रारम्भिक जीवन में अपने घर व माता पिता से दूर जाना पड़े।

आपका जीवन कभी-कभी संघर्ष की भाँति महसूस होता है। आपकी जीवन शक्ति संवेदनशील है तथा जीवन में आपको एक बार ऐसे समय से गुजरना पड़ सकता है जहां आपके जीवन का संगठन खतरे में हो। आपके आत्मबोध में जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं।

आपका जन्म जब हुआ तब भाग्य आपके साथ था। आप एक भाग्यशाली व्यक्ति हैं। आपका सर्वोत्तम भाग्य बनने व अभिव्यक्त होने में समय लगता है।

आपके भाग्योदय में कुछ कठिनाई हो सकती है। आपके भाग्य के कमजोर होने के कारण आप पीछे रह जाते हैं तथा आपकी उपलब्धियाँ अपेक्षा से कम रह जाती हैं। आपके भाग्य का स्थायित्व आने से पहले आपको बहुत से उतार चढ़ावों का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्य कई बार आपके लिए हानिकारक हो सकते हैं।

प्रारम्भ में आपको प्रत्येक चीज के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ेगा, परन्तु बाद में आप महसूस करेंगे कि दैव्य कृपा आपके साथ है जिसका सहयोग आपको मिलता है। सौभाग्य आपके पक्ष में है, तथा आपके सदकर्मों का फल आपके साथ है। आप धन के मामले में भाग्यशाली हैं। आपके लिये कमजोर भाग्य व वित्त की कमी, संघर्ष व तनाव ला सकते हैं। आप यात्राओं व विदेशी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त करेंगे। भाग्य आसानी से आपका साथ नहीं देता, परन्तु आप उस हद तक प्रयास करेंगे जहां आपको



भाग्य की जरूरत ही नहीं रहेगी। आप सामान्यतः भाग्यशाली हैं, विशेष रूप से संचार, सम्बन्ध व अल्पावधि की क्रियाओं को लेकर। आप कभी-कभी सफलता व यश का आनन्द लेगें एवं भाग्य आपके पक्ष में होगा। आप संभवत समृद्ध होंगे तथा अक्सर यात्रा करेंगे एवं संभवतः विदेश में रहेंगे। जीवन आपके लिए भाग्यशाली रहा है तथा आप रोजगार, शिक्षा व आर्थिक क्षेत्र में सफल रहे हैं। आप भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार से सुखी एवं समृद्ध होंगें। आप सिद्धान्तों, सद्कार्यों, इमानदारी एवं पारिवारिक खुशी को लेकर भाग्यशाली हैं।

कुछ घटनाएं आपकी नाराजगी व चिढ़ का कारण बन सकती हैं। आपको विदेशी भूमि पर अपनी कथनी व करनी के बारे में सावधान रहना चाहिये।

आपको क्रैडिट कार्ड के मामले में बहुत सावधान रहना चाहिये। आपको वित्तीय नुकसान हो सकता है इसलिये आपको अपने निवेश पर बीमा करवाना चाहिये। अभाव ग्रस्त एवं जरूरतमंद लोगों की निःस्वार्थ सेवा करना आपको भौंवर जाल से बचाने के लिये आपकी कल्पना से अधिक फल प्रदान करेगा।

आपको तीव्रता तथा क्रियाशीलता को विकसित करने की कोशिश करनी चाहिये तथा अत्यधिक एकाकीपन से बचना चाहिये। आपको ध्यान रखना चाहिये कि आपकी क्रोध एवं कुंठा की भावना से दूरों को चोट ना पहुंचे।



गोचर फल

जन्म चंद्रमा से मंगल का द्वितीय भाव से गोचर (23 फरवरी 2026 11:50:08 से 2 अप्रैल 2026 15:29:21)

इस अवधि में मंगल चंद्रमा से आपके दूसरे भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह हानि उठाने का समय है। अपने धन व मूल्यवान वस्तुओं की सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करें क्योंकि इस काल में चोरी की संभावना है। कार्यस्थल पर कुछ अप्रिय घटनाओं के कारण निराशा का दौर रहेगा। विवाद से दूर रहें। किसी के भी सामने बोलने से पहले अपने शब्दों को ताल लें। यदि आपने सावधानी नहीं बरती तो यह बुरा समय आपमें से कुछ को पदच्युत भी कर सकता है।

पुराने शत्रुओं से सतर्क रहें व नए न बनने दें। आपमें दूसरों के लिए ईर्ष्या जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियाँ उभर सकती हैं। अपने अधिकारी व सरकार के क्रोध के प्रति सचेत रहें। इस विशेष समय में आप कुछ दुष्ट लोगों से मित्रता करके अपने परिवार व प्रियजनों से झगड़ा मोल ले सकते हैं।

जन्म चंद्रमा से शुक्र का तृतीय भाव से गोचर (2 मार्च 2026 00:56:50 से 26 मार्च 2026 05:09:04)

इस अवधि में शुक्र चंद्रमा से आपके तृतीय भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह आपके लिए सुख व संतोष का सूचक है। आप अपनी विवितीय स्थिति में लगातार वृद्धि की आशा व वित्तीय सुरक्षा की भी आशा कर सकते हैं।

व्यवसाय की दृष्टि से यह समय अच्छा होने की संभावना है व आप पदोन्नति की आशा कर सकते हैं। आपको अधिक अधिकार प्राप्त हो सकते हैं। आपको आपके प्रयासों का लाभ भी मिल सकता है।

सामाजिक दृष्टि से भी समय सुखद है और आपके अपनी चिन्ताओं व भय पर विजय पा लेने की आशा हैं। आपके सहयोगी व परिचारों का रवैया सहयोगपूर्ण व सहायतापूर्ण रहेगा। इस विशेष समय में मित्रों का दायरा बढ़ने की व शत्रुओं पर विजय पाने की संभावना है।

अपने स्वयं के परिवार से आपका तालमेल अच्छा रहेगा और आपके भाई - बहनों का समय भी आपके साथ आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा। आप इस समय अच्छे वस्त्र पहनेंगे व बहुत बढ़िया भोजन ग्रहण कर सकते हैं। आपकी धर्म में रुचि बढ़ेगी व एक मांगलिक कार्य आपको आल्हादित कर सकता है।

स्वास्थ्य के अच्छे रहने की संभावना है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह के सम्बन्ध में सूच सकते हैं क्योंकि यह समय आदर्श साथी खोजना का है। आपमें से कुछ परिवार में नए सदस्य के आगेचर की आशा कर सकते हैं।

फिर भी संभव है यह समय इतना अच्छा न हो। आपमें से कुछ को व्यापार में वित्तीय हानि होने का खतरा है। शत्रु भी इस समय समस्याएँ पैदा कर सकते हैं। हर प्रकार के विवाद व गलतफहमियों से दूर रहें।

जन्म चंद्रमा से सूर्य का तृतीय भाव से गोचर (15 मार्च 2026 01:02:48 से 14 अप्रैल 2026 09:32:23)

इस अवधि में सूर्य चंद्रमा से आपके तृतीय भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह समय आपके व्यवसाय एवम् व्यक्तिगत जीवन में सुख व सफलता का है। व्यवसाय में आपकी उन्नति के सुअवसर हैं। आपको आपके अच्छे कार्य व उपलब्धियों हेतु राजकीय पुरस्कार प्राप्त हो सकता है।

समाज में आपको और भी अधिक सम्माननीय स्थान प्राप्त हो सकता है। परिवार के सदस्य, मित्र व परिचित व्यक्ति आपको सहज स्वार्थरहित स्नेह देंगे तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी।

व्यक्तिगत जीवन में आप स्वयं को मानसिक व शारीरिक रूप से इतना स्वस्थ अनुभव करेंगे जैसा पहले कभी नहीं किया होगा। इस दौरान धन लाभ भी होगा। जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोण सकारात्मक व उत्साहपूर्ण होगा। बच्चे जीवन में विशेष आनन्द का स्तोत होंगे। कुल मिलाकर सुखमय समय का वरदान मिला है।

जन्म चंद्रमा से शुक्र का चतुर्थ भाव से गोचर (26 मार्च 2026 05:09:04 से 19 अप्रैल 2026 15:46:39)

इस अवधि में शुक्र चंद्रमा से आपके चतुर्थ भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह अधिकतर वित्तीय वृद्धि का द्योतक है। आप समृद्धि बढ़ने की आशा कर सकते हैं। यदि आप कृषि व्यवसाय में हैं तो यह कृषि संसाधनों, उत्पादों आदि पा लाभ मिलने के लिए अच्छा समय हो सकता है।



घर में आपका बहुमूल्य समय पती/पति व बच्चों के साथ महत्त्वपूर्ण विषयों पर बातचीत करने में व्यतीत होने की संभावना है। साथ ही आप बढ़िया भोजन, उत्तम शानदार वस्त्र व सुगंधियों का आनन्द उठाएँगे।

सामाजिक जीवन घटनाओं से परिपूर्ण रहेगा। आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी व नए मित्र बनने की संभावना है। आपके नए - पुराने मित्रों का साथ सुखद होगा और आप घर से दूर आमोद - प्रमोद में कुछ आनन्दमय समय बिताने के बारे में सोच सकते हैं। इसमें विपरीत लिंग वालों के साथ का आनन्द उठाने की भी संभावना है।

स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और आप अपने भीतर शक्ति महसूस करेंगे। इस विशेष समय में ऐशोआराम के उपकरण खरीदने के विषय में आप सोच सकते हैं।

जन्म चंद्रमा से मंगल का तृतीय भाव से गोचर (2 अप्रैल 2026 15:29:21 से 11 मई 2026 12:38:24)

इस अवधि में मंगल चंद्रमा से आपके तृतीय भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह शुभ समय का प्रतीक है, विशेष रूप से धन लाभ हेतु। इस काल में आप अपने व्यापार व व्यवसाय से अच्छा धन कमाएँगे। इस समय आपके मूल्यवान आभूषण क्रय करने की भी संभावना है।

कार्य सरलतापूर्वक सम्पन्न होंगे व महत्त्वपूर्ण मामलों में सफलता की संभावना है। नए प्रयासों में भी आपको सफलता मिलेगी। यदि आप सेवारत हैं तो अधिक अधिकार व प्रतिष्ठा वाले पद पर पदोन्नत हो सकते हैं। सफलता के फलस्वरूप आपके आत्मविश्वास व इच्छाशक्ति को अत्यंत बल मिलेगा।

स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और आप शक्ति व स्वास्थ्य से दमकते रहेंगे। आपका उत्साह चरम सीमा पर होगा और पूर्व की समस्त भ्रांतियों और बाधाओं से आपको मुक्ति मिल सकती है। यह समय अत्यंक सुखाद भोजन के सेवन के अवसर प्रदान कर सकता है।

शत्रुओं की पराजय होगी और आपको मानसिक शान्ति मिलेगी।

विदेश यात्रा से बचें क्योंकि इस समय वांछित परिणाम प्राप्त होने की संभावना नहीं है।

जन्म चंद्रमा से बुध का तृतीय भाव से गोचर (11 अप्रैल 2026 01:15:51 से 30 अप्रैल 2026 06:52:20)

इस अवधि में बुध चंद्रमा से आपके तृतीय भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह आप व आपके अधिकारियों के बीच विषम स्थिति का सूचक है। आपको अपने से वरिष्ठ अधिकारी व अफसर से व्यवहार करते समय अतिरिक्त सावधानी बरतनी पड़ सकती है। किसी भी ऐसे तर्क से जो विवादपूर्ण है अथवा गलतफहमी को जन्म दे, दूर रहें।

जाने-पहचाने शत्रुओं से दूर रहें तथा अनजानों के प्रति सावधान रहें। फिर भी यह दौर आपको कुछ न व सुयोग्य मित्र भी दे सकता है जिनकी मित्रता जीवन की एक मूल्य निधि होगी। वित्त को सावधानीपूर्वक खर्च करें क्योंकि धन पर इस समय विशेष ध्यान की आवश्यकता है। धन हाथ से न निकल जाय इसके प्रति विशेष सावधानी बरतें।

बुध की इस यात्रा में आप विषाद, पुराने तथ्यों को पुनः एकत्रित करने की परेशानी, मानसिक तनाव व प्रयासों में आई अप्रत्याशित रुकावट से कष्ट भोग सकते हैं।

जन्म चंद्रमा से सूर्य का चतुर्थ भाव से गोचर (14 अप्रैल 2026 09:32:23 से 15 मई 2026 06:21:46)

इस अवधि में सूर्य चंद्रमा से आपके चतुर्थ भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह समय आपके वर्तमान सामाजिक स्तर व कार्यालय में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने में कठिनाई का है क्योंकि इसमें गिरावट के संकेत हैं। अपने से वरिष्ठ अधिकारी शुभचिन्तकों व परामर्शदाताओं से विवाद से बचें।

वैवाहिक जीवन में तनाव व दाम्पत्य सुख में यथेष्ट कमी आ सकती है। गृह शान्ति के लिए परिवार के सदस्यों से किसी भी प्रकार के झगड़े से बचें।

यह संकट अवसाद व चिन्ताओं का समय सिद्ध हो सकता है। स्वास्थ्य के प्रति विशेष सर्वक रहें तथा रोग से बचाव व नशे से दूर रहना आवश्यक है।

इस काल में यात्रा बाधा दौड़ हो सकती है। अतः उसके अपेक्षित परिणाम नहीं निकल सकते।

जन्म चंद्रमा से शुक्र का पंचम भाव से गोचर (19 अप्रैल 2026 15:46:39 से 14 मई 2026 10:53:32)



इस अवधि में शुक्र चन्द्रमा से आपके पाँचवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह अधिकांश समय आमोद - प्रमोद में व्यतीत होने का सूचक है। वित्तीय रूप में भी यह अच्छा समय है क्योंकि आप अपने धन में वृद्धि कर सकेंगे।

यदि आप राजकीय विभाग द्वारा आयोजित किसी परीक्षा में परीक्षार्थी हैं तो बहुत करके आपको सफलता मिलेगी।

यदि सेवारत हैं तो पदोन्नति की संभावना है। आप सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि की भी आशा रख सकते हैं। आपके मित्रों, आपके बड़ों व अध्यापकों की भी आप पर कृपा वृष्टि रहेगी व आपके प्रति अच्छे रहेंगे।

सम्बन्धों के मधुरता से निर्वाह होने की आशा है और अपने प्रिय के साथ अत्यधिक उत्तेजना व जोशीला परिणय रहने की आशा है। आप दाम्पत्य जीवन के सुख अथवा किसी विशेष विपरीत लिंग वाले से शारीरिक सम्पर्क की आशा कर सकते हैं। आप परिवार के किसी नए सदस्य से मिल सकते हैं। यहाँ तक कि नए व्यक्ति को परिवार में ला सकते हैं।

इस समय स्वास्थ्य बढ़िया रहेगा। इस अवधि में आप अच्छे भोजन का आनन्द उठाएँगे, धन लाभ होगा और जिन वस्तुओं की आपने कामना की थी वे मिलेंगी।

जन्म चंद्रमा से बुध का चतुर्थ भाव से गोचर (30 अप्रैल 2026 06:52:20 से 15 मई 2026 00:31:50)

इस अवधि में बुध चन्द्रमा से आपके चतुर्थ भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह जीवन के हर क्षेत्र में उत्तेजना का सूचक है। व्यक्तिगत रूप से आप अपने जीवन से पूर्णतया संतुष्ट होंगे और हर कार्य, हर उद्यम में लाभ होगा। समाज में आपका स्तर बढ़ेगा व आप सम्मान प्राप्त करेंगे।

वित्तीय रूप से भी यह अच्छा दौर है और धन व जायदाद के रूप में सम्पत्ति प्राप्त होने का द्योतक है। आपको अपने पाति/पत्नी व विपरीत लिंग वालों से लाभ होने की संभावना है।

घर में यह समय किसी नए सदस्य के आने का सूचक है। आपकी माता आप पर गर्व करे, इसकी भी पूरी संभावना है। आपकी उपस्थिति मात्र से परिवार के सदस्यों को सफलता मिल सकती है।

आपकी उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त व सज्जन व सुसंस्कृत नए व्यक्तियों से मित्रता होने की संभावना है।

जन्म चंद्रमा से मंगल का चतुर्थ भाव से गोचर (11 मई 2026 12:38:24 से 20 जून 2026 23:59:19)

इस अवधि में मंगल चन्द्रमा से आपके चतुर्थ भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह आपके जीवन के कुछ भागों में कठनाई उत्पन्न करेगा। आपमें से अधिकांश को पुराने शत्रुओं को नियन्त्रित रखने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। कुछ नए शत्रुओं से भिड़ने की भी संभावना है जो आपके परिवार व मित्रों की परिधि में ही होंगे। आपमें से कुछ की दुष्टजनों से मित्रता हो सकती है जिनके कारण बाद में कष्ट झोलने पड़ सकते हैं। अपने व्यवहार पर नजर रखें क्योंकि इस काल में यह कूर हो सकता है।

फिर भी आपमें से कुछ का शत्रुओं से किसी प्रकार का समझौता हो जाएगा।

स्वास्थ्य के प्रति अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि इस समय आपको ज्वर होने अथवा छाती में बेचैनी होने की संभावना है। आपमें से कुछ रक्त व पेट के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

मानसिक रूप से आप चिन्तित रह सकते हैं तथा विषाद के दौर से गुजर सकते हैं।

इस काल में रिश्ते आपसे विशेष अपेक्षा रखेंगे। अधिक दुःख से बचने के लिए अपने परिवार व अन्य सम्बन्धियों से शान्तिपूर्ण व्यवहार रखें। अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा व सम्मान को किसी प्रकार की ठेस न लगाने दें।

इस समय भूमि व अन्य जायदाद सम्बन्धी मामलों से दूर ही रहें।

जन्म चंद्रमा से शुक्र का षष्ठ भाव से गोचर (14 मई 2026 10:53:32 से 8 जून 2026 17:42:45)

इस अवधि में शुक्र चन्द्रमा से आपके छठे भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह गोचर आपके लिए कुछ कठिन समय ला सकता है। आपके प्रयासों में अनेक परेशानियाँ आ सकती हैं। शत्रुओं के बढ़ने की संभावना है और आपका अपने व्यावसायिक साझेदार से झगड़ा हो सकता है। यह भी संभव है कि आपको अपनी इच्छा के विरुद्ध शत्रुओं से समझौता करना पड़े।



इस दौरान पत्नी व बच्चों से किसी भी प्रकार के विवाद से बचें। आपको यह भी सलाह दी जाती है कि लम्बी यात्रा से बचें क्योंकि दुर्घटना की संभावना है।

स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि आप रोग, मानसिक बेचैनी, भय तथा असमय यौन इच्छा से ग्रसित हो सकते हैं।

समाज में प्रतिष्ठा व कार्यालय में सम्मान बनाए रखने का इस समय भरसक प्रयास करें नहीं तो आपको अपमान, व्यर्थ के विवाद व मुकदमेबाजी झेलना पड़ सकता है।

जन्म चंद्रमा से बुध का पंचम भाव से गोचर (15 मई 2026 00:31:50 से 29 मई 2026 11:11:41)

इस अवधि में बुध चंद्रमा से आपके पाँचवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह आपके व्यक्तिगत जीवन में कष्ट का सूचक है। इस विशेष अवधि में आप अपनी पत्नी, बच्चों व परिवार के अन्य सदस्यों से विवादों के टकराव से बचें। यह ऐसा समय नहीं है कि मित्रों में भी आप हठ कों अथवा अपनी राय दूसरों पर थोपें। अपने प्रियजनों से व्यवहार करते समय अतिरिक्त सतर्कता बरतें।

स्वास्थ्य इस समय चिन्ता का कारण बन सकता है। खाने पर ध्यान दें क्योंकि आप ज्वर अथवा लू लगने से बीमार हो सकते हैं। ऐसे किसी क्रियाकलाप में भाग न लें जिसमें जीवन के प्रति खतरा हो।

मानसिक रूप से आप उत्तेजित व शक्तिहीन महसूस कर सकते हैं।

इस समय आप बेचैनी व बदन-दर्द से पीड़ित हो सकते हैं।

कामकाज में कष्टदायक कठिन परिस्थिति आ सकती है। यदि आप विद्यार्थी हैं तो वह निश्चयपूर्वक एकाग्रता से पढ़ाई पर ध्यान दें, मन को भटकने न दें।

जन्म चंद्रमा से सूर्य का पंचम भाव से गोचर (15 मई 2026 06:21:46 से 15 जून 2026 12:52:44)

इस अवधि में सूर्य चंद्रमा से आपके पाँचवें भाव में होता हुआ गोचर करेगा। इसका प्रभाव आपके जीवन पर भी पड़ेगा। यह समय विशेष रूप से आर्थिक चुनौतियों व मानसिक शान्ति में विघ्न पड़ने का सूचक है। अपने व्यवसाय व कार्यालय में भी आपको विशेष सावधानी बरतनी होगी जिससे आपके अधिकारीगण आपके कार्य से अप्रसन्न न हों। कार्यालय में अपने से ऊँचे पदाधिकारी व मालिक से विवाद से बचें। कुछ सरकारी मसले आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकते हैं। इस काल में कुछ नए लोगों से शरुता भी हो सकती है।

संभव है कि आप स्वयं को अस्वस्थ अथवा अकर्मण्य अनुभव करें। अतः स्वास्थ्य की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। आपके स्वभाव में भी अस्थिरता आ सकती है।

संतान से सम्बन्धित समस्याएँ चिन्ता का विषय बन सकती है। ऐसे किसी भी विवाद से बचें जो आप व आपके पुत्र के बीच मतभेद का कारण बने। आपके परिवार का स्वास्थ भी हो सकता है। उतना अच्छा न रहे जितना होना चाहिए। मानसिक चिन्ता, भय व बैचैनी आपके ऊपर हावी होकर कुप्रभाव डाल सकते हैं।

जन्म चंद्रमा से बुध भाव से गोचर (29 मई 2026 11:11:41 से 22 जून 2026 15:30:21)

इस अवधि में बुध चंद्रमा से आपके छठे भाव में होते हुए गोचर करेगा। इस दौरान सकारात्मक व नकारात्मक गतिविधियों का मिश्रण रहेगा। यह विशेष समय व्यक्तिगत जीवन में सफलता, स्थिरता व उन्नति का सूचक है। आपकी योजना व परियोजनाएँ सफलतापूर्वक सम्पन्न होंगी व उनसे लाभ भी प्राप्त होगा।

कार्यक्षेत्र में आपके और भी अच्छा काम करने की संभावना है। आप समस्त कार्यों में उन्नति की आशा कर सकते हैं।

इस समय में समाज में आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर बढ़ने की भी संभावना है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही मानसिक शान्ति व संतोष अनुभव करने की पूर्ण संभावना है।

किन्तु फिर भी, आपमें से कुछ के लिए बुध की यह गति शत्रु पक्ष से चिंताएँ व कठिनाइयाँ ला सकती हैं।

अपने वित्त का पूरा ध्यान रखें। अपने अधिकारियों से किसी भी प्रकार के विवाद से बचें।

स्वास्थ्य को जोखिम में डालने वाली हर गतिविधि से बचें। शरीर का ताप इन दिनों कष्ट का कारण बन सकता है।

**जन्म चंद्रमा से गुरु का सप्तम भाव से गोचर (2 जून 2026 01:49:46 से 31 अक्टूबर 2026 12:02:02)**

इस अवधि में ब्रह्मस्पति चन्द्रमा से आपके सातवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह जीवन में सुखद समय लाएगा। आप इन दिनों शारीरिक व भौतिक सुखों का आनन्द ले सकते हैं जैसे उत्तम सुस्वादु भौजन, जायदाद पाना, फलतू समय में आमोद-प्रमोद या किसी अधिकारी द्वारा विशेष सम्मान दिया जाना।

सामाजिक जीवन में भी आप अच्छे समय की आशा कर सकते हैं। आप ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों से मिल सकते हैं या मित्रता कर सकते हैं जो आपके लिए लाभप्रद सिद्ध हों। व्यक्तिगत रूप में भी आप एक चुस्त-दुरुस्त वक्ता व उत्कृष्ट बुद्धिमता के द्वारा पहचान बना सकते हैं। इस समय आप घर से बाहर रहकर कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न कर सकते हैं।

स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपकी सचरित्रता व शारीरिक भव्यता की ओर सबका ध्यान जाएगा।

इस समय आरामदायक घर प्राप्त करने का है एवम् इच्छापूर्ति होने की संभावना है। एकल व्यक्ति विवाह के विषय में व विवाहित परिवार बढ़ाने के बारे में सोच सकते हैं। यदि आप विवाहित हैं तो दाम्पत्य जीवन का परमानन्द प्राप्त होने की संभावना है।

जन्म चंद्रमा से शुक्र का सप्तम भाव से गोचर (8 जून 2026 17:42:45 से 4 जुलाई 2026 19:13:41)

इस अवधि में शुक्र चन्द्रमा से आपके सातवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह स्त्रियों के कारण उत्पन्न हुई परेशानियों के समय का द्योतक है। स्त्रियों के साथ किसी भी मुकदमेबाजी से दूर रहें व पत्नी के साथ मधुर सम्बन्ध बनाएं रखें। यह ऐसी महिलाओं के लिए विशेष रूप से अस्वस्थता का समय है जिनकी जन्मपत्री में शुक्र सातवें भाव में है। आपकी पत्नी अनेक स्त्री रोगों, शारीरिक पीड़ा, मानसिक तनाव आदि से ग्रसित हो सकती हैं।

धन की वृष्टि से भी समय अच्छा नहीं है। वित्तीय नुकसान न हो अतःस्त्रियों के सम्पर्क से बचें।

आपको यह अधीक्षा भी होसकता है कि कुछ दुष्ट मित्र आपका अनिष्ट करने की चेष्टा कर रहे हैं। व्यर्थ की महिलामंडली के साथ उलझाव संताप का कारण बन सकता है। यह भी संभावना है कि किसी महिला से सम्बन्धित झगड़े में पड़कर आप नए शत्रु बना लें।

इस समय आपके मानसिक तनाव, अवसाद व क्रोध से ग्रसित होने की संभावना है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें क्योंकि आप यौन रोग, मूत्र-नलिका में विकार अथवा दूसरे छोटे-मोटे रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

व्यावसायिक रूप में भी यह समय सुचारू रूप से कार्य - संचालन का नहीं है। दुष्ट सहकर्मियों से दूर रहें क्योंकि वे उन्नति के मार्ग में रोड़े अटका सकते हैं। आपको अपने उच्च पदाधिकारी द्वारा सम्मान प्राप्त हो सकता है।

जन्म चंद्रमा से सूर्य का षष्ठ भाव से गोचर (15 जून 2026 12:52:44 से 16 जुलाई 2026 23:39:06)

इस अवधि में सूर्य चन्द्रमा से आपके छठे भाव में होते हुआ गोचर करेगा। यह समय आपके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलताओं का है। आप धन प्राप्ति से बैंक खाते में वृद्धि, समाज में उच्च स्थान व जीवन शैली में सकारात्मक परिवर्तन की आशा कर सकते हैं। यह समय आपकी चित्तवृत्ति हेतु सर्वश्रेष्ठ है। आपकी पदोन्नति हो सकती है व सबसे ऊँचे पदाधिकारी द्वारा आपका सम्मान किया जा सकता है। आपके प्रयासों की सराहना व अपने वरिष्ठ अफसरों से अनुकूल सम्बन्ध इस काल की विशेषता है। शत्रु आपके जीवन से खदेड़ दिए जाएंगे।

जहाँ तक स्वास्थ्य का प्रश्न है, आप रोग, अवसाद, अकर्मण्यता व चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे। आपके परिवार का स्वास्थ्य भी इस काल में उत्तम रहेगा।

जन्म चंद्रमा से मंगल का पंचम भाव से गोचर (20 जून 2026 23:59:19 से 2 अगस्त 2026 22:51:12)

इस अवधि में मंगल चन्द्रमा से आपके पाँचवें भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह जीवन में क्षुब्धता व अस्त-व्यस्तता का प्रतीक है। अपने व्यय जितना सम्भव हो, कम करना बुद्धिमत्तापूर्ण होगा क्योंकि इस काल में धन और व्यय का नियंत्रण आपके हाथ से निकल सकते हैं।

बच्चों का विशेष ध्यान रखें क्योंकि वे रोग-ग्रस्त हो सकते हैं। अपने और अपने पुत्र के बीच अनबन न होने दें क्योंकि यह कष्टकारक हो सकती है।

शत्रुओं से सावधानीपूर्वक भली भाँति निपटें और नए शत्रु न बन जाएँ, इसके प्रति विशेष सतर्कता बरतें। शत्रु इस विशेष अवधि में आपके और अधिक संताप का कारण बन सकते हैं।



स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आप उत्साहीन, कमजोरी व हरारत अनुभव कर सकते हैं। आपमें से कुछ किसी ऐसे रोग से ग्रस्त हो सकते हैं जिसकी पूरी जाँच करानी पड़ेगी। अपनी भोजन सम्बन्धी आदतों पर भी ध्यान दें।

आपमें से कुछ के व्यवहार में परिवर्तन आ सकता है। आपमें से कुछ क्रोधी, आशंकित व अपने प्रियजनों के प्रति उदासीन हो सकते हैं जो आपकी सामान्य प्रकृति के विरुद्ध है। आपमें से कुछ अपनी शान व प्रसिद्धि भी गँवा सकते हैं। व्यर्थ की आवश्यकताओं का उभरकर आना व कुछ अनैतिक कार्यों का प्रलोभन आपमें से कुछ को परेशानी में डाल सकता है। आप इस दौरान परिवार के सदस्यों से झगड़ा करने से बचें।

जन्म चंद्रमा से बुध का सप्तम भाव से गोचर (22 जून 2026 15:30:21 से 7 जुलाई 2026 10:46:15)

इस अवधि में बुध चंद्रमा से आपके सातवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह शारीरिक व मानसिक दृष्टि दोनों से ही कठिन समय है। यह रोग का सूचक है। आपको इस समय शरीर में दर्द व कजमोरी झेलनी पड़ सकती है।

मानसिक रूप से आप चिंतित व अशान्त अनुभव कर सकते हैं। यह समय मानसिक उलझन व परिवार के साथ गलतफहमियाँ भी दर्शाता है। अपनी पत्नी/पति बच्चों से बात करते समय विवाद अथवा परस्पर संचार में कमी न आने दें। ध्यान रखें कि ऐसी स्थिति न आ जाय जो आपको अपमानित होना पड़े या नीचा देखना पड़े।

अपने प्रयासों में बाधाएँ आपको और अधिक क्षुब्ध कर सकती हैं। यदि आपकी यात्रा की कोई योजना है तो सम्भव है वह कष्टकर हो व वांछित फल न दे पाए।

जन्म चंद्रमा से शुक्र का अष्टम भाव से गोचर (4 जुलाई 2026 19:13:41 से 1 अगस्त 2026 09:28:03)

इस अवधि में शुक्र चंद्रमा से आपके आठवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह अच्छे समय का प्रतीक है। इस विशेष समय में आप भौतिक सुख-साधनों की आशा कर सकते हैं तथा पूर्व में आई विपत्तियों पर विजय पा सकते हैं। आप भूमि जायदाद व मकान लेने के विषय में विचार कर सकते हैं।

यदि आप अविवाहित युवक या युवती हैं तो अच्छी वधु/ वर मिलने की आशा है जो सौभाग्य भी लाएगी / लाएगा। इस अवधि में शुक्र चंद्रमा से आपके प्रथम भाव में होता हुआ गुजरेगा। अतः आप मनोहारी व सुन्दर महिलाओं का साथ पाने की आशा रख सकते हैं।

स्वास्थ्य इस दौरान अच्छा रहेगा।

यदि आप विद्यार्थी हैं तो और अधिक उन्नति करेंगे। आपकी प्रखरता की ओर सबका ध्यान जाएगा अतः सामाजिक वृत्त में आपका मान व प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

व्यवसाय हेतु अच्छा समय है। व्यापार व व्यवसाय शुभ - चिन्तकों व मित्रों की सहायता से फूलेगा। किसी राजकीय पदाधिकारी से मिलने की संभावना है।

जन्म चंद्रमा से बुध का षष्ठ भाव से गोचर (7 जुलाई 2026 10:46:15 से 5 अगस्त 2026 19:54:01)

इस अवधि में बुध चंद्रमा से आपके छठे भाव में होते हुए गोचर करेगा। इस दौरान सकारात्मक व नकारात्मक गतिविधियों का मिश्रण रहेगा। यह विशेष समय व्यक्तिगत जीवन में सफलता, स्थिरता व उन्नति का सूचक है। आपकी योजना व परियोजनाएँ सफलतापूर्वक सम्पन्न होंगी व उनसे लाभ भी प्राप्त होगा।

कार्यक्षेत्र में आपके और भी अच्छा काम करने की संभावना है। आप समस्त कार्यों में उन्नति की आशा कर सकते हैं।

इस समय में समाज में आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर बढ़ने की भी संभावना है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही मानसिक शान्ति व संतोष अनुभव करने की पूर्ण संभावना है।

किन्तु फिर भी, आपमें से कुछ के लिए बुध की यह गति शत्रु पक्ष से चिंताएँ व कठिनाइयाँ ला सकती हैं।

अपने वित्त का पूरा ध्यान रखें। अपने अधिकारियों से किसी भी प्रकार के विवाद से बचें।

स्वास्थ्य को जोखिम में डालने वाली हर गतिविधि से बचें। शरीर का ताप इन दिनों कष्ट का कारण बन सकता है।

**जन्म चंद्रमा से सूर्य का सप्तम भाव से गोचर (16 जुलाई 2026 23:39:06 से 17 अगस्त 2026 07:58:29)**

इस अवधि में सूर्य चंद्रमा से आपके सातवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह कष्टप्रद यात्रा, स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ताएँ तथा व्यापार में मंदी का सूचक है। कार्यालय में अपने से वरिष्ठ व्यक्तियों तथा उच्चाधिकारियों से किसी भी प्रकार के झगड़े से बचें। कार्यालय अथवा दैनिक जीवन में कोई नए शत्रु न बने इसके प्रति विशेष सावधान रहें।

व्यापार में इस काल में गतिरोध आ सकता है या धक्का लग सकता है। आपको अपने प्रयास बीच में ही छोड़ने के लिए विवश किया जा सकता है। उस उद्देश्य अथवा लक्ष्य प्राप्ति में इस अवधि में बाधाएँ आ सकती हैं जिसे पाना आपका सपना था।

अपने जीवनसाथी के शारीरिक कष्ट, विषाद व मानसिक व्यथा आपकी चिन्ता का कारण बन सकते हैं। आपको स्वयं भी स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है क्योंकि आप पेट में गड़बड़ी, भोजन से प्रत्युर्जता (एलर्जी) विषाक्त भोजन से उत्पन्न बीमारियाँ अथवा रक्त की बीमारियों का शिकार हो सकते हैं। बच्चों का स्वास्थ्य भी चिन्ता का कारण हो सकता है। इसके अतिरिक्त आप इस अवधि में थकान महसूस कर सकते हैं।

जन्म चंद्रमा से शुक्र का नवम भाव से गोचर (1 अगस्त 2026 09:28:03 से 2 सितम्बर 2026 13:44:14)

इस अवधि में शुक्र चंद्रमा से आपके नवम भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह आपकी मंजूषा में नए वस्तु संचित करने का सूचक है। इसके अतिरिक्त यह शारीरिक व भौतिक सुख व आनन्द का परिचायक है।

वित्तीय लाभ व मूल्यवान आभूषणों का उपभोग भी इस समय की विशेषता है। व्यापार अबाध गति से चलेगा व संतोषजनक लाभ होगा।

यह समय शिक्षा में सफलता भी इंगित करता है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

घर परिवार में आपको भाई - बहनों का सहयोग व स्नेह पहले से भी अधिक मिलेगा। आपके घर कुछ मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे और यदि अविवाहित हैं तो विवाह करने का निर्णय ले सकते हैं। आपको आपका मनपसन्द जीवन साथी मिलेगा जो सौभाग्य लेकर आएगा।

यह समय सामाजिक गतिविधियों के संचालन का है अतः आपके नए मित्र बनाने की संभावना है। आपको आध्यात्म की राह दिखाने वाला पथ - प्रदर्शक भी मिल सकता है। कला में आपकी अभिरुचि इस दौरान बढ़ेगी। आपके सदुगणों सत्कृत्यों की ओर स्वतः ही सबका ध्यान आकृष्ट होगा। अतः आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में चार चाँद लगेंगे।

इस समय मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी व शत्रुओं की पराजय होंगी। यदि आप किसी प्रकार के तर्क - वितर्क में लिप्त हैं तो आपके ही जीतने की हीं संभावना है। आप इस दौरान लम्बी यात्रा पर जाने का मानस बना सकते हैं।

जन्म चंद्रमा से मंगल का षष्ठ भाव से गोचर (2 अगस्त 2026 22:51:12 से 18 सितम्बर 2026 16:35:19)

इस अवधि में मंगल चंद्रमा की ओर से आपके छठे भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह शुभ समय का सूचक है। आप पाएँगे कि इस काल में आप धन, स्वर्ण, मँगा, ताँबा प्राप्त करेंगे, धातु व अन्य व्यापार में आपको अप्रत्याशित लाभ होगा। यदि आप कहीं सेवारत हैं तो आप जिस पदोन्नति व सम्मान की इतनी प्रतीक्षा कर रहे हैं, वह आपको अपने कार्यालय में प्राप्त होगा। आपमें से अधिकांश को अपने कार्य में सफलता मिलेगी।

हर ओर आर्थिक दशा में सुधार से आप सुरक्षा, शान्ति व सुख अनुभव कर सकते हैं। आपको इन दिनों पूर्ण मानसिक शान्ति मिलेगी व आपको लगेगा कि आप भयमुक्त हैं।

यह शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का भी समय है। यदि आपके ऊपर कोई कानूनी मुकदमा चल रहा है तो फैसला आपके पक्ष में हो सकता है। आपके अधिकांश शत्रु पीछे हट जाएँगे और विजय आपकी होगी। समाज में आपको सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आपमें से कुछ इस समय दान-पुण्य के कार्य भी करेंगे।

इस काल में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। सारे पुराने रोगों व पीड़ाओं से मुक्ति मिलेगी।

जन्म चंद्रमा से बुध का सप्तम भाव से गोचर (5 अगस्त 2026 19:54:01 से 22 अगस्त 2026 19:31:37)

इस अवधि में बुध चंद्रमा से आपके सातवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह शारीरिक व मानसिक दृष्टि दोनों से ही कठिन समय है। यह रोग का सूचक है। आपको इस समय शरीर में दर्द व कंजमोरी झेलनी पड़ सकती है।



मानसिक रूप से आप चिंतित व अशान्त अनुभव कर सकते हैं। यह समय मानसिक उलझन व परिवार के साथ गलतफहमियाँ भी दर्शाता है। अपनी पत्नी/पति बच्चों से बात करते समय विवाद अथवा परस्पर संचार में कमी न आने दें। ध्यान रखें कि ऐसी स्थिति न आ जाय जो आपको अपमानित होना पड़े या नीचा देखना पड़े।

अपने प्रयासों में बाधाएँ आपको और अधिक क्षुब्ध कर सकती हैं। यदि आपकी यात्रा की कोई योजना है तो सम्भव है वह कष्टकर हो व वांछित फल न दे पाए।

जन्म चंद्रमा से सूर्य का अष्टम भाव से गोचर (17 अगस्त 2026 07:58:29 से 17 सितम्बर 2026 07:52:41)

इस अवधि में सूर्य चंद्रमा से आपके आठवें भाव में होता हुआ गोचर करेगा। कुल मिलाकर यह समय हानि व शारीरिक व्याधियों का है। व्यर्थ के खर्चों से विशेष रूप से दूर रहें व आर्थिक मामलों में सावधान रहें।

यह अवधि कार्यालय में अप्रिय घटनाओं की है। अने कार्यालय अध्यक्ष व वरिष्ठ पदाधिकारियों से किसी भी प्रकार के मनामालिन्य से बचें तभी सुरक्षित रह पाएंगे।

घर में पति/पत्नी से विवाद, झगड़े का रूप ले सकता है। पारिवारिक सामंजस्य व सुख के लिए परिवार के सदस्यों व शत्रुओं से किसी भी प्रकार का झगड़ा न हो, इसके प्रति विशेष सचेत रहें।

अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें क्योंकि आप पेट की गड़बड़ी, रक्त चाप, बवासीर जैसी बीमारियों से पीड़ित हो सकते हैं। आप व्यर्थ के भय, चिन्ता व बैचेनी से आक्रान्त हो सकते हैं। अपने अथवा अपने परिवार के सदस्यों के जीवन को किसी खतरे में न डालें। किसी रिश्तेदार की समस्याएँ अचानक उभरकर सामने आ सकती हैं व विन्ता का कारण बन सकती हैं।

जन्म चंद्रमा से बुध का अष्टम भाव से गोचर (22 अगस्त 2026 19:31:37 से 7 सितम्बर 2026 13:32:41)

इस अवधि में बुध चंद्रमा से आपके आठवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह अधिकतर धन व सफलता का प्रतीक है। यह आपके समस्त कार्यों व परियोजनाओं में सफलता दिलाएगा। यह वित्तीय पक्ष में स्थिरता व लाभ का समय है। आपका समाज में स्तर ऊँचा होगा। लोग आपको अधिक सम्मान देंगे व आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी।

इस दौरान जीवन शैली आरामदायक रहेगी। संतान से सुख मिलने की संभावना है। परिवार में शिशु जन्म सुख में वृद्धि कर सकता है। इस विशेष काल में आपकी संतान का संतुष्ट व सुखी रहने का योग है।

आपमें चैतन्यता व बुद्धिमानी बढ़ेगी। आप अपनी प्रतिभा व अन्तर ज्ञान का सही निर्णय लेने में उपयोग करेंगे।

शत्रु परास्त होंगे व आपके तेज के सामने फीके पड़ जाएँगे। आप इस बार सब ओर से सहायता की आशा कर सकते हैं।

परन्तु इस सबके बीच आपको स्वास्थ्य की ओर अतिरिक्त ध्यान देना होगा क्योंकि आप बीमार पड़ सकते हैं। खाने-पीने का ध्यान रखें, प्रसन्नचित रहें तथा व्यर्थ के भय व उदासी को पास न फटकने दें।

जन्म चंद्रमा से शुक्र का दशम भाव से गोचर (2 सितम्बर 2026 13:44:14 से 6 नवम्बर 2026 01:04:17)

इस अवधि में शुक्र चंद्रमा से आपके दसवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह समय मानसिक संताप, अशान्ति व बैचेनी लेकर आया है। इस दौरान शारीरिक कष्ट भोगना पड़ेगा।

धन के विषय में विशेष सतर्क रहें तथा ऋण लेने से बचें क्योंकि इस पूरे समय आपकी ऋण में ढूबे रहने की संभावना है।

शत्रुओं से सावधान रहें तथा अनावश्यक व्यर्थ के विवाद से दूर रहें क्योंकि इससे कलह बढ़ सकता है व शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। समाज में बदनामी व तिरस्कार न हो, इसके प्रति सचेत रहें।

अपने सगे सम्बन्धियों व महिलाओं के प्रति व्यवहार में विशेष सतर्कता बरतें क्योंकि मूर्खतापूर्ण गलतफहमी शत्रुओं की संख्या बढ़ा सकती है। अपने वैवाहिक जीवन में स्वस्थ संतुलन बनाए रखने हेतु अपनी पत्नी/पति से विवाद से दूर ही रहें।

आपको अपने उच्चाधिकारी अथवा सरकारजनित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अपने समस्त कार्यों को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने हेतु आपको अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ सकता है।



जन्म चंद्रमा से बुध का नवम भाव से गोचर (7 सितम्बर 2026 13:32:41 से 26 सितम्बर 2026 12:38:19)

इस अवधि में बुध चंद्रमा से आपके नवे भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह रोग व पीड़ा का सूचक है। यह काल विशेष आपके कार्यक्षेत्र में बाधा व रुकावट ला सकता है। कार्यालय में अपना पद व प्रतिष्ठा बनाए रखें। यह भी निश्चित कर लें कि आप कोई ऐसा कार्य न कर बैठें जो बाद में पछताना पड़े।

कोई भी नया काम आरम्भ करने से पहले देख लें कि उसमें क्या बाधाएँ आ सकती हैं। अनेक कारणों से मानसिक रूप से आप झल्लाहट, अत्यधिक भार व अस्थिरता का अनुभव कर सकते हैं।

शत्रुओं से सावधान रहें क्योंकि इस दौरान वे आपको अधिक हानि पहुँचा सकते हैं। परिवार व सम्बन्धियों से विवाद में न पड़ें क्योंकि यह झगड़े का रूप ले सकता है।

इस दौरान अपने चिड़चिड़े स्वभाव के कारण आप धर्म अथवा साधारण धारणाओं में कमियाँ या गलतियाँ ढूँढ़ सकते हैं। इस समय कार्य सम्पन्न करने हेतु आपको अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ सकता है। परन्तु कार्य रुचिकर न लगना आपको परिश्रम करने से रोक सकता है।

लम्बी यात्रा से बचें क्योंकि इसके कष्टकर होने की संभावना है व वांछित फल भी नहीं मिलेगा। भोजन में अच्छी आदतों को अपनाएँ साथ ही जीवन में सकारात्मक रवैया अपनावें।

जन्म चंद्रमा से सूर्य का नवम भाव से गोचर (17 सितम्बर 2026 07:52:41 से 17 अक्टूबर 2026 19:51:25)

इस अवधि में सूर्य चंद्रमा से आपके नवे भाव में होता हुआ गोचर करेगा। इसका आपके जीवन पर विशेष महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। इस काल में आप पर किसी कुचाल के कारण दोषारोपण हो सकता है, स्थान बदल सकता है तथा मानसिक शान्ति का अभाव रह सकता है।

आपको विशेष ध्यान देना होगा कि आपके अधिकारी आपके कार्य से निराश न हों। हो सकता है कि आपको अपमान अथवा मानभंग झेलना पड़े और आप पर मिथ्या आरोप लगने की भी संभावना है। स्वयं को पेचीदा अथवा उलझाने वाली परिस्थिति से दूर रखें।

आर्थिक रूप से यह समय कठिनाई से परिपूर्ण है। पैसा वसूल करने में कठिनाई आ सकती है। व्यर्थ के खर्चों से विशेष रूप से बचें। आपके और आपके गुरु के मध्य गलतफहमी या विवाद हो सकता है। आपमें और आपके परिवार के सदस्यों तथा मित्रों के बीच मतभेद या विचारों का टकराव झगड़े व असंतोष का कारण बन सकता है।

इस बीच शारीरिक व मानसिक व्याधियों की संभावना के कारण आपको स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान देना होगा। आप इन दिनों अधिक थकावट व निराशा/अवसाद महसूस कर सकते हैं।

जन्म चंद्रमा से मंगल का सप्तम भाव से गोचर (18 सितम्बर 2026 16:35:19 से 12 नवम्बर 2026 20:18:16)

इस अवधि में मंगल चंद्रमा की ओर से आपके सातवें भाव में होता हुआ गोचर करेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धों की दृष्टि से यह कठिन समय है।

आपके स्वयं की पति/पत्नी की अथवा किसी नजदीकी व प्रियजन के स्वास्थ्य की समस्या अत्यधिक मानसिक चिन्ता का कारण बन सकती है। आप थकान महसूस कर सकते हैं तथा नेत्र सम्बन्धी कष्ट, पेट के दर्द या छाती की तकलीफ का शिकार हो सकते हैं। आपको अपने जीवनसंगी के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना पड़ सकता है। आप व आपकी पति/पति को कोई गहरी मानसिक चिन्ता सता सकती है।

आपमें से अधिकांश की किसी सज्जन, व्यक्ति से शत्रुता होने की संभावना है। आप व आपके पति/पत्नी के बीच व्यर्थ अनुमानित अलग सोच के कारण गलतफहमी न हो जाय, इसका ध्यान रखें व इससे बचें। यदि बुद्धि चारुर्य से कुशलतापूर्वक इससे नहीं निपटा गया तो ये आप दोनों के बीच एक बड़े झगड़े का रूप ले सकता है। अपने मित्रों व प्रियस्वजनों से समझौता कर लें। आपके सम्बन्धी आपकी मनोव्यथा का कारण बन सकते हैं। अपने व्यवहार को नियंत्रित रखें क्योंकि अपनी सतान तथा भाई-बहनों के प्रति आप क्रोध कर सकते हैं व अपशब्दों का प्रयोग कर सकते हैं।

धन सम्बन्धी मामलों के प्रति भी सचेत रहें। व्यर्थ की प्रतियोगिता के चक्कर में आप व्यर्थ गँवा सकते हैं। रंगरेलियों पर व्यय न करके अच्छे भोजन व वस्त्रों पर ध्यान दें।

जन्म चंद्रमा से बुध का दशम भाव से गोचर (26 सितम्बर 2026 12:38:19 से 2 दिसम्बर 2026 17:27:16)



इस अवधि में बुध चन्द्रमा से आपके दसवें भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह सुख के समय व संतोष का सूचक है। आप प्रसन्न रहेंगे व समस्त प्रयासों में सफलता मिलेगी। व्यावसायिक पक्ष में आप अच्छे समय की आशा कर सकते हैं। आप स्वयं को सौंपे हुए कार्य सफलतापूर्वक नियत समय में सम्पन्न कर सकेंगे।

यह समय घर पर भी सुख का द्योतक है। आप किसी दिलचस्प व्यक्ति से मिलने की आशा कर सकते हैं। आपमें से कुछ विपरीत लिंग वाले के साथ भावनापूर्ण व्यतीत कर सकते हैं। इस व्यक्ति विशेष से लाभ की भी आशा है।

वित्तीय दृष्टि से भी यह अच्छा समय है। आपके प्रयासों की सफलता से आपको आर्थिक लाभ मिलेगा व आप और भी लाभ की आशा कर सकते हैं।

इस अवधि में समाज में आपका स्थान ऊँचा होने की भी संभावना है। आपको सम्मान मिल सकता है व समाज में प्रतिष्ठा में वृद्धि हो सकती है। समाज में आप अधिक सक्रिय रहेंगे व समाज सुधार कार्य में भाग लेंगे।

यह समय मानसिक तनाव मुक्ति एवम् शान्ति का सूचक है। शत्रु सरलता से परास्त होंगे व जीवन में शान्ति प्राप्त होने की संभावना है।

जन्म चंद्रमा से सूर्य का दशम भाव से गोचर (17 अक्टूबर 2026 19:51:25 से 16 नवम्बर 2026 19:42:56)

इस अवधि में सूर्य चन्द्रमा से आपके दसवें भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह समय शुभ है। यह लाभ, पदोन्नति, प्रगति तथा प्रयासों में सफलता का सूचक है।

आप कार्यालय में पदोन्नति की आशा कर सकते हैं। उच्च अधिकारियों की कृपा दृष्टि, सत्ता की ओर से सम्मान तथा और भी अधिक सुअवसरों की आशा की जा सकती है।

यह अवधि आप द्वारा किए जा रहे कार्यों की सफलता है व अटके हुए मामलों को पराकाष्ठा तक पहुँचाने की है।

समाज में आपको और भी सम्माननीय स्थान मिल सकता है। आपका सामाजिक दाएरा बढ़ेगा, अर्थात् और लोगों से, विशेष रूप से आप यदि पुरुष हैं तो महिलाओं से और महिला हैं तो पुरुषों से सकारात्मक लाभप्रद आदान-प्रदान बढ़ेगा। आप इस दौरान सर्वोच्च सत्ता से भी सम्मान प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। जहाँ की आशा भी न हो, ऐसी जगह से आपको अचानक लाभ प्राप्त हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और हर ओर सुख ही सुख बिखरा पाएंगे।

जन्म चंद्रमा से गुरु का अष्टम भाव से गोचर (31 अक्टूबर 2026 12:02:02 से 25 जनवरी 2027 01:31:44)

इस अवधि में बृहस्पति चन्द्रमा से आपके आठवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह समय अधिकतर निराशाएँ लेकर आया है। स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पड़ेगी क्योंकि इन दिनों आप कुछ ऐसे रोगों से ग्रसित हो सकते हैं जिनमें जीवन को खतरा हो। साथ ही आप थकान व उत्साहहीनता भी महसूस कर सकते हैं।

सफलतापूर्वक काम सम्पन्न करने में अत्यधिक परिश्रम की आवश्यकता पड़ सकती है। एकाग्रचित्त होकर काम करें व्यर्थ विवादों में न पड़ें अपने पद व प्रतिष्ठा को बिल्कुल ढील न दें क्योंकि इस समय अपमानजनक रूप से यह हाथ से फिसल सकते हैं। आपको राजकीय आक्रोश का सामना, मुकदमेबाजी में लिप्त होना यहाँ तक कि कारागार जाने जैसी स्थितियों तक का सामना करना पड़ सकता है।

वित्तीय मामलों पर विशेष नजर रखें, चोरों व व्यर्थ के खर्चों से सावधान रहें।

यदि आप यात्रा की योजना बना रहे हैं तो उसे फिलहाल टाल दें। यात्रा कष्टदायक हो सकती है और संभव है कि वांछित परिणाम प्राप्त न हों।

परिवारजन व मित्रों से विवाद से दूर रहें क्योंकि इससे शत्रुता पनप सकती है। इन दिनों आपका व्यवहार चिड़चिड़ा, दयाहीन व बिना सोच-समझा हो सकता है। स्वभाव को शान्त रखें।

जन्म चंद्रमा से शुक्र का नवम भाव से गोचर (6 नवम्बर 2026 01:04:17 से 22 नवम्बर 2026 17:20:45)

इस अवधि में शुक्र चन्द्रमा से आपके नवम भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह आपकी मंजूषा में नए वस्त्र संचित करने का सूचक है। इसके अतिरिक्त यह शारीरिक व भौतिक सुख व आनन्द का परिचायक है।



वित्तीय लाभ व मूल्यवान आभूषणों का उपभोग भी इस समय की विशेषता है। व्यापार अबाध गति से चलेगा व संतोषजनक लाभ होगा।

यह समय शिक्षा में सफलता भी इंगित करता है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

घर परिवार में आपको भाई - बहनों का सहयोग व स्नेह पहले से भी अधिक मिलेगा। आपके घर कुछ मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे और यदि अविवाहित हैं तो विवाह करने का निर्णय ले सकते हैं। आपको आपका मनपसन्द जीवन साथी मिलेगा जो सौभाग्य लेकर आएगा।

यह समय सामाजिक गतिविधियों के संचालन का है अतः आपके नए मित्र बनाने की संभावना है। आपको आध्यात्म की राह दिखाने वाला पथ - प्रदर्शक भी मिल सकता है। कला में आपकी अभिरुचि इस दौरान बढ़ेगी। आपके सद्गुणों सत्कृत्यों की ओर स्वतः ही सबका ध्यान आकृष्ट होगा। अतः आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में चार चाँद लगेंगे।

इस समय मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी व शत्रुओं की पराजय होगी। यदि आप किसी प्रकार के तर्क - वितर्क में लिप्त हैं तो आपके ही जीतने की ही संभावना है। आप इस दौरान लम्बी यात्रा पर जाने का मानस बना सकते हैं।

जन्म चंद्रमा से मंगल का अष्टम भाव से गोचर (12 नवम्बर 2026 20:18:16 से 10 मार्च 2027 00:13:26)

इस अवधि में मंगल चन्द्रमा की ओर से आपके आठवें भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह अधिकतर शारीरिक खतरों का सूचक है। अपने जीवन, स्वास्थ्य व देह-सौष्ठव के प्रति अत्यधिक सतर्कता इस समय विशेष की माँग है। रोगों से दूर रहें साथ ही अच्छे स्वास्थ्य के लिए किसी भी प्रकार के नशे व बुरी लत से दूर रहें। आपमें से कुछ को रक्त सम्बन्धी रोग जैसे एनीमिया (रक्त की कमी), रक्त स्ताव अथवा रक्त की न्यूनता से उत्पन्न बीमारियाँ हो सकती हैं। इस समय शस्त्र व छद्मवेशी शत्रु से दूर रहें। जीवन को खतरे में डालने वाला कोई भी कार्य न करें।

आर्थिक मामलों पर नजर रखना आवश्यक है। यदि सावधानी नहीं बरती जो आपमें से अधिकांश को आय में भारी गिरावट का सामना करना पड़ सकता है। जो भी ऋण लेने से बचें व स्वयं को ऋण-मुक्त रखने की चेष्टा करें।

यदि अपने कार्य/व्यवसाय में सफल होना चाहते हैं तो अतिरिक्त प्रयास करें। अपने पद व प्रतिष्ठा पर पकड़ मजबूत रखें क्योंकि यह कठिनाईपूर्ण घटिया स्थिति भी गुजर ही जाएगी।

आपमें से अधिकांश को विदेश यात्रा पर जाना पड़ सकता है। यहाँ तक कि काफी समय के लिए परिवार से दूर रहकर उनका विछोह झेलना पड़ सकता है।

जन्म चंद्रमा से सूर्य का एकादश भाव से गोचर (16 नवम्बर 2026 19:42:56 से 16 दिसम्बर 2026 10:24:46)

इस अवधि में सूर्य चन्द्रमा से आपके ग्यारहवें भाव में होता हुआ गोचर करेगा। इसका अर्थ है धन लाभ, आर्थिक व सामाजिक स्थिति में सुधार व उन्नति।

अपने अफसर से पदोन्नति माँगने का यह अनुकूल समय है। यह अवधि कार्यालय में आपकी उन्नति, पदाधिकारियों के विशेष अप्रत्याशित अनुग्रह तथा राज्य से सम्मान तक प्राप्त होने की है।

इस समय आप व्यापार में लाभ, धन प्राप्ति और यहाँ तक कि मित्रों से भी लाभ प्राप्त करने की आशा की जा सकती है।

समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ सकती है तथा पड़ोस में सम्मान में वृद्धि हो सकती है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जो परिवार के लिए अनन्ददायक होगा।

इस काल के दौरान आपके घर कोई आध्यात्मिक निर्माणात्मक कार्य सम्पन्न होगा जो घर - परिवार के आनन्द में वृद्धि करेगा। आमोद-प्रमोद, अच्छा स्वादिष्ट भोजन व मिष्ठान आदि का भी वितरण होगा। कुल मिलाकर यह समय आपके व परिवार के लिए शान्तिपूर्ण व सुखद है।

जन्म चंद्रमा से शुक्र का दशम भाव से गोचर (22 नवम्बर 2026 17:20:45 से 1 जनवरी 2027 23:22:36)

इस अवधि में शुक्र चन्द्रमा से आपके दसवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह समय मानसिक संताप, अशान्ति व बेचैनी लेकर आया है। इस दौरान शारीरिक कष्ट भोगना पड़ेगा।



धन के विषय में विशेष सतर्क रहें तथा ऋण लेने से बचें क्योंकि इस पूरे समय आपकी ऋण में झूंबे रहने की संभावना है।

शत्रुओं से सावधान रहें तथा अनावश्यक व्यर्थ के विवाद से दूर रहें क्योंकि इससे कलह बढ़ सकता है व शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। समाज में बदनामी व तिरस्कार न हो, इसके प्रति सचेत रहें।

अपने सगे सम्बन्धियों व महिलाओं के प्रति व्यवहार में विशेष सतर्कता बरतें क्योंकि मूर्खतापूर्ण गलतफहमी शत्रुओं की संख्या बढ़ा सकती है। अपने वैवाहिक जीवन में स्वस्थ संतुलन बनाए रखने हेतु अपनी पत्नी/पति से विवाद से दूर ही रहें।

आपको अपने उच्चाधिकारी अथवा सरकारजनित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अपने समस्त कार्यों को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने हेतु आपको अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ सकता है।

जन्म चंद्रमा से केतु का सप्तम भाव से गोचर (25 नवम्बर 2026 17:45:35 से 24 मई 2028 15:06:31)

इस अवधि में केतु चंद्रमा से आपके सातवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह आपके लिए व्यक्तिगत यातनाएँ लेकर आया है। आपके स्वास्थ्य को सर्वाधिक देखभाल की आवश्यकता है क्योंकि अझाप अनेक रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं जिनका मूलरूप से सम्बन्ध पेट से है। आप उत्साहीनता व थकान महसूस कर सकते हैं।

मानसिक रूप से भी आप व्यथित व बीमार महसूस कर सकते हैं। व्यय पर ध्यान दें क्योंकि व्यर्थ के मदों पर धन खर्च करने की संभावना है। कुछ भी हो, उधार न लें। यदि कृषि व्यवसाय में हैं तो उत्पादों पर नजर रखें क्योंकि चोरी का भय है। फिर भी, आपमें से कुछ के व्यापार व वित्तीय स्थिति में अचानक प्रगति हो सकती है।

अपना आचरण सही रखें व पति / पत्नी से विवाद में न पड़ें। यदि झगड़ा हुआ तो जीवनसाथी आपको छोड़कर जा सकता है। सम्बन्धियों से सौहाद्रपूर्ण व्यवहार रखें, यदि ध्यान न रखा तो वे आपके शत्रु बन सकते हैं।

झगड़ों व मुकदमेबाजी से बचें। अपनी मान प्रतिष्ठा व ध्यान रखें क्योंकि इसे चोट पहुँचा कर आपकी बदनामी हो सकती है। यात्रा का भी योग है।

जन्म चंद्रमा से राहु का प्रथम भाव से गोचर (25 नवम्बर 2026 17:45:35 से 24 मई 2028 15:06:31)

इस अवधि में राहु चंद्रमा से आपके प्रथम भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह आपके जीवन पर अधिकतर अनेक नकारात्मक (विपरीत) प्रभाव डालेगा। राहु की यह स्थिति वित्तीय स्तरों की हानि व धन की व्यर्थ की बर्बादी की द्योतक है।

आपको शत्रुओं से होने वाले कष्टों के प्रति अतिरिक्त सावधानी बरतनी पड़ेगी। इसके अतिरिक्त आपका अपमान होने की भी सम्भावना है जिससे आपको नीचा देखना पड़े व कार्यक्षेत्र में कुछ नई अप्रत्याशित समस्याएँ उभरकर आ सकती हैं। मन में खोट रखने वाले व्यक्ति से सावधान रहें व काला जादू जैसे संदिग्ध क्रिया-कलापों के चक्कर में न पड़ें।

स्वास्थ्य की ओर निरन्तर ध्यान देने की आवश्यकता है। कोई अनजानी व्याधि उभर सकती है जो ठीक होने में सामान्य से अधिक समय ले सकती है। आपको माता - पिता के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना होगा।

शारीरिक कष्ट के मानसिक चिन्ता बन जाने की संभावना है। निरन्तर चिन्तित रहने के कारण आप गहरी मानसिक व्यथा से पीड़ित हो सकते हैं। आप इस विशेष समय में स्नायिक तनाव, मानसिक क्लेश व बेचैनी से ग्रस्त हो सकते हैं।

जन्म चंद्रमा से बुध का एकादश भाव से गोचर (2 दिसम्बर 2026 17:27:16 से 22 दिसम्बर 2026 07:39:26)

इस अवधि में बुध चंद्रमा से आपके ग्यारहवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह धन लाभ व उपलब्धियों का सूचक है। यह समय आपके लिए धन लाभ लेकर आ सकता है। आप विभिन्न स्तरों से और अधिक आर्थिक लाभ की आशा कर सकते हैं। आपके व्यक्तिगत प्रयास, व्यापार व निवेश आपके लिए और अधिक मुनाफा और अधिक धन लाभ ला सकते हैं। यदि आप सेवारत हैं या व्यवसायी हैं तो इस विशेष समय में आपके और अधिक सफल होने को संभावना है। आप इस दौरान अपने कार्यक्षेत्र में अधिक समृद्ध होंगे।

स्वास्थ्य अच्छा रहना चाहिए। आप स्वयं में पूर्ण शान्ति अनुभव करेंगे। आप बातचीत व व्यवहार में और भी अधिक विनम्र हो सकते हैं।

घर पर भी आप सुख की आशा कर सकते हैं। आपके बच्चे व जीवनसाथी प्रसन्न व विनीत रहेंगे। कोई अच्छा समाचार प्राप्त होने की संभावना है। आप भौतिक सुविधाओं से घिरे रहेंगे।



सामाजिक दृष्टि से भी यह अच्छा दौर है। समाज आपको और अधिक आदर-सम्मान देगा। आपकी वाक्पटुता व मनोहारी प्रकृति के कारण लोग आपके पास खिंचे चले आँएं।

जन्म चंद्रमा से सूर्य का द्वादश भाव से गोचर (16 दिसम्बर 2026 10:24:46 से 14 जनवरी 2027 21:10:08)

इस अवधि में सूर्य चंद्रमा से आपके बारहवें भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह काल विशेष रूप से आर्थिक चुनौतियों से परिपूर्ण है। अतः कोई भी वित्त सम्बन्धी निर्णय सोच-समझकर सावधानी पूर्वक लें।

यदि आप कहीं कार्यरत हैं तो आप और आपके अधिकारी के बीच कुछ परेशानियाँ आ सकती हैं। अधिकारी आपके कार्य की सराहना नहीं करेंगे और संभव है कि आपको दिए गए उत्तरदायित्व में कटौती करें या आपका वेतन कम कर दें। यदि आपको अपने प्रयासों व परिश्रम की पर्याप्त सराहना न हो, इच्छित परिणाम न निकलें तो भी निराश न हों।

यदि आप व्यापारी हैं तो व्यापार में धक्का लग सकता है। लेन-देन में विशेष सावधानी बरतें।

यह समय सामाजिक दृष्टि से भी कठिनाईपूर्ण है। किसी विवाद में न पड़ें क्योंकि मित्र व वरिष्ठ व्यक्तियों से झगड़े की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

आपको लम्बी यात्रा पर जाना पड़ सकता है परन्तु उसके मनचाहे परिणाम नहीं निकलेंगे। ऐसे कार्यकलापों से बचें जिनमें जीवन के लिए खतरा हो, सुरक्षा को अपना मूल-मंत्र बनाएं। अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें क्योंकि ज्वर, पेट की गड़बड़ी अथवा नेत्र रोग हो सकता है। इस समय असंतोष आपके घर की शांति व सामंजस्य पर प्रभाव डाल सकता है।

जन्म चंद्रमा से बुध का द्वादश भाव से गोचर (22 दिसम्बर 2026 07:39:26 से 10 जनवरी 2027 00:37:07)

इस अवधि में बुध चंद्रमा से आपके बारहवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह आपके लिए व्यय का द्योतक है। सुविधापूर्ण जीवन के लिए आपको अनुमानित से अधिक खर्च करना पड़ सकता है। मुकदमेबाजी से दूर रहें क्योंकि यह धन के अपव्यय का कारण बन सकता है। इसके अलावा आपको अपने द्वारा सम्पादित कार्यों को पूर्ण करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ सकता है।

शत्रुओं से सावधान रहें और अपमानजनक स्थिति से बचने के लिए उनसे दूर ही रहें। समाज में अपना मान व प्रतिष्ठा बचाए रखने का प्रयास करें।

कई कारणों से आप मानसिक रूप से त्रस्त हो सकते हैं। इस समय आपको बेचैनी व चिन्ताओं की आशंका हो सकती है। इस दौर में असंतोष व निराशा के आप पर हावी होने की भी संभावना है।

आपका खाने से व दाम्पत्य सुखों से मन हटने की भी संभावना है। इन दिनों आप स्वयं को बीमार व कष्ट में महसूस कर सकते हैं।

जन्म चंद्रमा से शुक्र का एकादश भाव से गोचर (1 जनवरी 2027 23:22:36 से 29 जनवरी 2027 18:41:36)

इस अवधि में शुक्र चंद्रमा से आपके ग्यारहवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह मूल रूप से वित्तीय सुरक्षा व ऋण से मुक्ति का द्योतक है। आप अपनी अन्य आर्थिक समस्याओं के समाधान की भी आशा कर सकते हैं।

यह समय आपके प्रयासों में सफलता प्राप्त करने का है। आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी व प्रतिष्ठा निरन्तर ऊपर की ओर उठेगी।

आपका ध्यान भौतिक सुख, भोग - विलास के साधन व वस्तुएँ, वस्त, रत्न व अन्य आकर्षक उपकरणों की ओर रहने की संभावना है। आप स्वयं का घर लेने के विषय में भी सोच सकते हैं।

सामाजिक रूप से यह समय सुखद रहेगा। मान - सम्मान में वृद्धि होगी तथा मित्रों का सहयोग मिलता रहेगा।

विपरीत लिंग वालों के साथ सुखद समय व्यतीत होने की आशा कर सकते हैं। यदि विवाहित है तो दाम्पत्य जीवन में परमानन्द प्राप्त होने की आशा रख सकते हैं।

जन्म चंद्रमा से बुध का प्रथम भाव से गोचर (10 जनवरी 2027 00:37:07 से 28 जनवरी 2027 03:33:48)

इस अवधि में बुध चंद्रमा से आपके प्रथम भाव में होता हुआ गोचर करेगा। इसका जीवन में विपरीत परिणाम हो सकता है। इसमें अधिकतर ऐसी स्थिति आती है जब आपको किसी की इच्छा के विरुद्ध अनचाही सेवा करनी पड़े। इस दौरान आप उत्पीड़न के शिकार हो सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में घसीटे जाने से बचे जहाँ मन को दग्ध करने वाले और कोड़ों की तरह बसने वाले दयाहीन शब्द हृदय को



छलनी कर दें। स्वयं को आगे न लाना व अपना कार्य करते रहना ही स समय उत्तम है।

अपव्यय के प्रति सचेत रहें क्योंकि यह पैसे की कमी का कारण बन सकता है। ध्यानपूर्वक खर्च करें।

आपकी ऐसे कुपात्रों से मित्रता की भी संभावना है जो हानि पहुँचा सकते हैं। अपने निकट वाले व प्रियजनों से व्यवहार करते समय शब्दों का ध्यान रखें। आपमें संवेदनशीलता का अभाव आपके अपने दाए़े में व्यर्थ ही शत्रुता का कारण बन सकता है। मुकदमों व दुर्जनों की संगत से बचें। ऐसा कुछ न करें जिससे आपका महत्व व गरिमा कम हो। सौभाग्य की निरन्तर आवश्यकता रहती है, उसे बचाए रखें। अपनी शिक्षा व अनुभव का लाभ उठाते हुए जीवन में व्यवधान न आने दें।

लचीलेपन को अपनाए़ क्योंकि आपकी योजना, परियोजना अथवा विचारों में अनेक ओर के दबाव से भय की आशंका को देखते हुए कुछ अन्तिम समय पर परिवर्तन करने पड़ सकते हैं। यदि आप विदेश में रहते हैं तो कुछ बाधाए़ आ सकती हैं। घर में भी अनुष्ठान सम्पन्न करने में बाधाए़ आ सकती हैं। स्वयं का व परिवार का ध्यान रखें क्योंकि इस दौरान छल-कपट का खतरा हो सकता है। संभव हो तो यात्रा न करें क्योंकि न तो आनन्द आएगा न अभीष्ट परिणाम निकलेंगे।

जन्म चंद्रमा से सूर्य का प्रथम भाव से गोचर (14 जनवरी 2027 21:10:08 से 13 फरवरी 2027 10:08:48)

इस अवधि में सूर्य चन्द्रमा से आपके प्रथम भाव में होता हुआ गोचर करेगा। इसका आपके कार्य एवम् आपके व्यक्तिगत जीवन पर स्पष्ट प्रभाव पड़ेगा। इसमें स्थायी अथवा अस्थाई स्थान परिवर्तन, कार्य करने के स्थान पर कठिनाइयाँ तथा अपने वरिष्ठ अफसरों अथवा मालिक की अप्रसन्नता झेलना विशिष्ट हैं। अपने कार्य करने के स्थान या कार्यालय में बदनामी से बचने को आपको विशेष सावधानी बरतनी होगी।

अपने नियत कार्य पूर्ण करने अथवा उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु आपको सामान्य से अधिक प्रयास करना होगा। आपको लम्बी यात्राओं पर जाना पड़ सकता है परन्तु आवश्यक नहीं है कि आपका मनचाहा परिणाम प्राप्त हो।

इस समय के दौरान आप थकान महसूस कर सकते हैं। आपको उदर रोग, पाचन क्रिया सम्बन्धी रोग, नेत्र तथा हृदय से सम्बन्धित समस्याए़ हो सकती हैं। अतः स्वास्थ्य के प्रति विशेष सतर्क रहने व ध्यान देने की आवश्यकता है। इस काल के दौरान आप कोई भी खतरा मोल न लें।

जहाँ तक घर का सम्बन्ध है, परिवार में अनबन तथा मित्रों से मन-मुटाव वाली परिस्थितियाँ गृह-कलह अथवा क्लेश का कारण बन सकती हैं। जीवन साथी से असहमति अथवा विवाद आपके वैवाहिक सम्बन्धों को प्रभावित कर सकता है। कुल मिलाकर घर की शान्ति एवम् परस्पर सामन्जस्य हेतु यह समय चुनौतीपूर्ण है।

जन्म चंद्रमा से गुरु का सप्तम भाव से गोचर (25 जनवरी 2027 01:31:44 से 26 जून 2027 05:18:39)

इस अवधि में बृहस्पति चन्द्रमा से आपके सातवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह जीवन में सुखद समय लाएगा। आप इन दिनों शारीरिक व भौतिक सुखों का आनन्द ले सकते हैं जैसे उत्तम सुखादु भोजन, जायदाद पाना, फालतू समय में आमोद-प्रमोद या किसी अधिकारी द्वारा विशेष सम्मान दिया जाना।

सामाजिक जीवन में भी आप अच्छे समय की आशा कर सकते हैं। आप ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों से मिल सकते हैं या मित्रता कर सकते हैं जो आपके लिए लाभप्रद सिद्ध हों। व्यक्तिगत रूप में भी आप एक चुस्त-दुरुस्त वक्ता व उत्कृष्ट बुद्धिमता के द्वारा पहचान बना सकते हैं। इस समय आप घर से बाहर रहकर कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न कर सकते हैं।

स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपकी सचरित्रता व शारीरिक भव्यता की ओर सबका ध्यान जाएगा।

इस समय आरामदायक घर प्राप्त करने का है एवम् इच्छापूर्ति होने की संभावना है। एकल व्यक्ति विवाह के विषय में व विवाहित परिवार बढ़ाने के बारे में सोच सकते हैं। यदि आप विवाहित हैं तो दाम्पत्य जीवन का परमानन्द प्राप्त होने की संभावना है।

जन्म चंद्रमा से बुध का द्वितीय भाव से गोचर (28 जनवरी 2027 03:33:48 से 24 फरवरी 2027 04:40:13)

इस अवधि में बुध चन्द्रमा से आपके द्वितीय भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह आर्थिक लाभ व आय में वृद्धि का द्योतक है। विशेष रूप से उनके लिए जो रक्त व्यवसाय से जुड़े हैं।

इस समय सफलतापूर्वक कुछ नया सीखने से व ज्ञान अर्जित करने से आपको आनन्द का अनुभव होगा।



इस काल में अच्छे व्यक्तियों का साथ मिलेगा और सुस्वादु बढ़िया भोजन करने के अवसर प्राप्त होंगे।

यह सब कुछ होते हुए भी कुछ लोगों के लिए यह विशेष समय कष्ट, समाज में बदनामी व शत्रुओं द्वारा हानि पहुँचाने का हो सकता है। इस काल में आप किसी सम्बन्धी व प्रिय मित्र को भी खो सकते हैं।

जन्म चंद्रमा से शुक्र का द्वादश भाव से गोचर (29 जनवरी 2027 18:41:36 से 24 फरवरी 2027 15:16:02)

इस अवधि में शुक्र चंद्रमा से आपके बारहवें भाव में होते हुए गोचर करेगा। यह जीवन में प्रिय व अप्रिय दोनों प्रकार की घटनाओं के मिश्रण का सूचक है। एक ओर जहाँ इस दौरान वित्तीय लाभ हो सकता है वहीं दूसरी ओर धन व वस्त्रों की अप्रत्याशित हानि भी हो सकती है। यह अवधि विदेश यात्रा पर पैसे की बढ़ादी व अनावश्यक व्यय की भी द्योतक है।

इस समय आप बढ़िया वस्त्र पहनेंगे जिनमें से कुछ खो भी सकते हैं। घर में चोरी के प्रति विशेष सतर्कता बरतें।

यह समय दाम्पत्य सुख भोगने का भी है। यदि आप अविवाहित हैं तो विपरीत लिंग वाले व्यक्ति के साथ सुख भोग सकते हैं।

मित्र आपके प्रति सहयोग व सहायता का रवैया अपनाएँगे व उनका व्यवहार अच्छा होगा।

नुकीले तेज धार वाले शस्त्रों व संदेहात्मक व्यतियों से दूर रहें। यदि आप किसी भी प्रकार से कृषि उद्योग से जुड़े हुए हैं तो विशेष ध्यान रखें क्योंकि इस समय आपको हानि हो सकती है।

जन्म चंद्रमा से सूर्य का द्वितीय भाव से गोचर (13 फरवरी 2027 10:08:48 से 15 मार्च 2027 06:59:48)

इस अवधि में सूर्य चंद्रमा से आपके द्वितीय भाव में होता हुआ गोचर करेगा। यह समय आपके लिए धन सम्बन्धी चुनौतियों का है। इस दौरान आपको पूर्वभास हो जाएगा कि व्यापार में अपेक्षित लाभ न होकर धन का हास हो रहा है। यदि आप कृषि सम्बन्धी कार्य करते हैं तो उसमें भी कुछ हानि हो सकती है।

इस समय अनेक प्रकार के प्रिय व निकट रहने वाले आक्रान्त करते रहेंगे। आप अपने प्रिय व निकट रहने वाले व्यक्तियों के प्रति चिड़चिड़ेन का व्यवहार करेंगे। आपके कार्य घटिया व नीचतापूर्ण हो सकते हैं। आप पाएंगे कि सदा आसानी से किए जाने वाले साधारण क्रियाकलापों को करने में भी आपको कठिनाई अनुभव हो रही है।

नेत्रों के प्रति विशेष सावधानी बरतें। यह समय नेत्र सम्बन्धी समस्याओं का है। इन दिनों आप सिर दर्द से भी परेशान रह सकते हैं।



दशा फल

चन्द्र महादशा: 19 अगस्त 2018 से 19 अगस्त 2028 तक

चन्द्र महादशा फल

स्वाभाविक फल

सामान्य रूप से चन्द्र की महादशा में निम्नलिखित फल होते हैं -

- मन्त्र, वेद में रूचि और देवता, गुरुजनों में श्रद्धा बढ़ेगी।
- राजा की प्रसन्नता तथा कृपा से पद-प्राप्ति तथा अन्य लाभ होंगे।
- युवती स्त्रियां, धन, जमीन, पुष्टि, गन्ध और आभूषण आदि अर्थात् सुख के पदार्थों का लाभ होगा।
- अनेक प्रकार की कलाओं में कुशलता प्राप्त होगी।
- समाज में यश, कीर्ति की वृद्धि होगी।
- विनम्रता, परोपकारिता आदि सदुगणों की वृद्धि होगी।
- चित्त में चंचलता रहेगी। यत्र-तत्र भ्रमण करने की इच्छा उत्पन्न होगी।
- कन्या संतति का जन्म संभव है।
- जल संबंधी कार्यों से, खेती-बागवानी से लाभ होगा।

- चन्द्रमा निर्बल होने से कफ और वात की अधिकता से शारीरिक कष्ट प्राप्त होगा।
- आलस्य की वृद्धि, निद्रा से व्याकुलता, सिरदर्द और मानसिक अस्थिरता से कष्ट रहेगा।
- अर्थ हानि, और सज्जनों से विरोध हो सकता है।
- स्वजनों से कलह तथा वाद-विवाद संभव है।
- अच्छे कार्यों में चित्त नहीं लगता है।

विशेष फल

चन्द्र के उच्च, नीच आदि स्थान में स्थित होने के कारण, नवमांशादि के भेदाभेद के कारण एवं अन्यान्य ग्रहों से युत या दृष्ट रहने से अवस्थाओं के अनुसार फल में निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं -

- चन्द्रमा की महादशा में राजा से मित्रता, धन की प्राप्ति होगी।
- नौकरी, कार्य में सफलता मिलेगी।
- जलज-पदार्थों की प्राप्ति और चित्र-चिचित्र वस्त्र आदि का लाभ होगा।
- चन्द्रमा की महादशा में परोपकार करेंगे और प्रसिद्धि मिलेगी।
- इच्छा की पूर्ति होगी।
- राजकीय लोगों से सम्मान और जलज पदार्थों की प्राप्ति से चित्त आद्वलादित होगा।
- चन्द्रमा की महादशा में कर्मों में असफलता, कुत्सित अन्न का भोजन मिलेगा।
- क्रोध की अधिकता रहेगी।
- माता अथवा मातृ पक्ष के किसी स्वजन की मृत्यु होगी।
- चन्द्रमा की महादशा में विद्या की उन्नति, कीर्ति लाभ, सुख, विजय की प्राप्ति, अर्थलाभ, नौकर और सन्तानों की वृद्धि होगी।
- चन्द्रमा की महादशा में धन हानि तथा द्रव्य चिन्ता रहेगी।
- झांगड़े के कारण अन्त में उपार्जित धन का नाश हो सकता है।
- स्वजन विरोध, शत्रु भय, संकट तथा अपयश की प्राप्ति संभव है।
- स्थान परिवर्तन अर्थात् अपने स्थान से हटना पड़ सकता है।



- असह्य दुःख होगा।
- चन्द्रमा की महादशा में स्त्री, पुत्र आदि का सुख और धन की वृद्धि होगी।
- वात प्रकोप के द्वारा शरीर में दुर्बलता रहेगी।
- विभिन्न स्थानों में आवागमन लगा रहेगा।
- मानसिक अस्थिरता तथा गुप्त चिन्ता बनी रहेगी।

चन्द्र-केतु : 18 नवम्बर 2025 से 19 जून 2026 तक

चन्द्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा का फल

चन्द्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा में -

- धन-जन की हानि संभव है।
- स्त्री को रोग, कुटुम्ब का नाश और पेट के रोग से पीड़ा हो सकती है।
- मन में उद्ग्रेग, चंचलता तथा अचानक संकट आ सकता है।
- अनारोग्य महाभय संभव है।
- शान्ति के लिए सर्वसम्प्रदायक मृत्युजंय की उपासना करें, जिससे क्लेश की निवृत्ति होगी।

चन्द्र-केतु-राहु : 15 फरवरी 2026 से 19 मार्च 2026 तक

केतु की अन्तर्दशा में राहु की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- केतु की अन्तर्दशा में राहु प्रत्यन्तर में स्त्रियों से भय, शत्रुओं का प्रादुर्भाव, तथा क्षुद्रजनों से भी भय हो सकता है।

चन्द्र-केतु-गुरु : 19 मार्च 2026 से 16 अप्रैल 2026 तक

केतु की अन्तर्दशा में बृहस्पति की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- केतु की अन्तर्दशा में गुरु प्रत्यन्तर में धनक्षय, महोत्पात, वस्तु तथा मित्रों का विनाश, सर्वत्र क्लेश संभव है।

चन्द्र-केतु-शनि : 16 अप्रैल 2026 से 20 मई 2026 तक

केतु की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- केतु की अन्तर्दशा में शनि प्रत्यन्तर में शारीरिक पीड़ा, मित्रों का बध, तथा अत्यल्पलाभ संभव है।

चन्द्र-केतु-बुध : 20 मई 2026 से 19 जून 2026 तक



केतु की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- केतु की अन्तर्दशा में बुध प्रत्यन्तर में बुद्धिनाश, महान् उद्वेग, विद्याक्षय, महाभय तथा सतत कार्यसिद्धि में विकलता संभव है।

चन्द्र-शुक्र : 19 जून 2026 से 18 फरवरी 2028 तक

चन्द्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का फल

चन्द्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा में -

- धन-धार्य का लाभ तथा स्त्री द्वारा धन की प्राप्ति हो सकती है।
- श्रेष्ठ स्त्री सुख, स्त्रियों के साथ हास-विलास तथा भौतिक सुखों की वृद्धि होगी।
- व्यवसाय में अनुकूलता, जल सम्बन्धी वस्तु तथा वस्त्र आभूषणों का सुख प्राप्त होगा।
- माता के रोग से पीड़ा (अर्थात् माता जिस रोग से पीड़ित हों वही रोग माता के द्वारा जातक को भी) संभव है।
- युत या वृष्ट होने से अन्तर्दशाकाल में भूमि, पुत्र, मित्रादि एवं स्त्री का विनाश, पशुहानि तथा राजद्वार में विरोध संभव है।

चन्द्र-शुक्र-शुक्र : 19 जून 2026 से 29 सितम्बर 2026 तक

शुक्र की अन्तर्दशा में शुक्र की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- शुक्र की अन्तर्दशा में शुक्र प्रत्यन्तर में श्वेत घोड़ा, श्वेत वस्त्र, मोती, सुवर्ण, माणिक आदि का सौख्य तथा सुन्दर स्त्री की प्राप्ति हो सकती है।

चन्द्र-शुक्र-सूर्य : 29 सितम्बर 2026 से 29 अक्टूबर 2026 तक

शुक्र की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- शुक्र की अन्तर्दशा में सूर्य प्रत्यन्तर में वातज्वर, शिरोवेदना, राजा तथा शत्रु के द्वारा क्लेश, और थोड़ा सा लाभ भी होगा।

चन्द्र-शुक्र-चन्द्र : 29 अक्टूबर 2026 से 19 दिसम्बर 2026 तक

शुक्र की अन्तर्दशा में चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- शुक्र की अन्तर्दशा में चन्द्र प्रत्यन्तर में कन्या की उत्पत्ति, राजा से लाभ, वस्त्र आभूषणों की प्राप्ति, राज्याधिकार संभव है।

चन्द्र-शुक्र-मंगल : 19 दिसम्बर 2026 से 23 जनवरी 2027 तक



शुक्र की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- शुक्र की अन्तर्दशा में मंगल प्रत्यन्तर में रक्त पित्त सम्बन्धी रोग, झगड़ा, मारपीट तथा महाक्लेश होगा।

चन्द्र-शुक्र-राहु : 23 जनवरी 2027 से 25 अप्रैल 2027 तक

शुक्र की अन्तर्दशा में राहु की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- शुक्र की अन्तर्दशा में राहु प्रत्यन्तर में स्त्रियों के साथ झगड़ा, अकस्मात् भयागम, राजा तथा शत्रु से कष्ट संभव है।

चन्द्र-शुक्र-गुरु : 25 अप्रैल 2027 से 15 जुलाई 2027 तक

शुक्र की अन्तर्दशा में बृहस्पति की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- शुक्र की अन्तर्दशा में गुरु प्रत्यन्तर में प्रचुरद्रव्य राज्य, वस्त्र, मोती, भूषण, हाथी, घोड़ा तथा स्थान की प्राप्ति होती है।

चन्द्र-शुक्र-शनि : 15 जुलाई 2027 से 19 अक्टूबर 2027 तक

शुक्र की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- शुक्र की अन्तर्दशा में शनि प्रत्यन्तर में गदहा, ऊँट, बकरा, की प्राप्ति, लोह, उड्ढ, तिल का लाभ, तथा शरीर में थोड़ा कष्ट भी होता है।

चन्द्र-शुक्र-बुध : 19 अक्टूबर 2027 से 14 जनवरी 2028 तक

शुक्र की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- शुक्र की अन्तर्दशा में बुध प्रत्यन्तर में धन ज्ञान का लाभ, राजा के यहां अधिकारप्राप्ति, निष्केप से भी धनलाभ संभव है।

चन्द्र-शुक्र-केतु : 14 जनवरी 2028 से 18 फरवरी 2028 तक

शुक्र की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- शुक्र की अन्तर्दशा में केतु प्रत्यन्तर में भयंकर अपमृत्यु एक देश से दूसरे देश का भ्रमण, बीच-बीच में कभी कुछ लाभ भी हो सकता है।

चन्द्र-सूर्य : 18 फरवरी 2028 से 19 अगस्त 2028 तक



चन्द्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा का फल

चन्द्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा में -

- राजा से गौरव एवं धन की प्राप्ति, राज-तुल्य अधिकार की प्राप्ति हो सकती है।
- कार्य व्यवसाय से धन का लाभ तथा प्रभाव एवं प्रताप में वृद्धि होगी।
- शत्रुओं का क्षय, विवाद में विजय, उन्नति तथा रोग से छुटकारा प्राप्त होगा।

चन्द्र-सूर्य-सूर्य : 18 फरवरी 2028 से 27 फरवरी 2028 तक

सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- उद्वेग, धनक्षय, स्त्रीपीड़ा, शिरोवेदना, ब्राह्मण के साथ विवाद आदि असत्कल संभव है।

चन्द्र-सूर्य-चन्द्र : 27 फरवरी 2028 से 13 मार्च 2028 तक

सूर्य की अन्तर्दशा में चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- सूर्य की अन्तर्दशा में चन्द्र प्रत्यन्तर में मानसिक उद्वेग, झगड़ा, धनक्षय, मनोव्यथा, मणि-मुक्तादि रलों का विनाश आदि संभव है।

चन्द्र-सूर्य-मंगल : 13 मार्च 2028 से 24 मार्च 2028 तक

सूर्य की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- सूर्यान्तर्दशा में भौम-प्रत्यन्तर में राजा तथा शत्रु से भय, बन्धन, महासंकट, शत्रु तथा अग्नि से पीड़ा आदि संभव है।

चन्द्र-सूर्य-राहु : 24 मार्च 2028 से 20 अप्रैल 2028 तक

सूर्य की अन्तर्दशा में राहु की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- सूर्य की अन्तर्दशा में राहु-प्रत्यन्तर में श्लेष्मप्रयुक्त रोग, शत्रुभय, धनक्षय, महाभय, राजभंग तथा मानसिक त्रास संभव है।

चन्द्र-सूर्य-गुरु : 20 अप्रैल 2028 से 15 मई 2028 तक

सूर्य की अन्तर्दशा में बृहस्पति की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- सूर्य की अन्तर्दशा में गुरु-प्रत्यन्तर में शत्रुक्षय, विजय, अभिवृद्धि, वस्त्र सुवर्ण आदि भूषण, तथा रथ आदि वाहनों की प्राप्ति का योग बनेगा।



चन्द्र-सूर्य-शनि : 15 मई 2028 से 13 जून 2028 तक

सूर्य की अन्तर्दर्शा में शनि की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- सूर्य की अन्तर्दर्शा में शनि-प्रत्यन्तर में धनक्षय, पशुओं को कष्ट, मानसिक उद्बेग, महारोग, सभी क्षेत्रों में अशुभ फल संभव है।

चन्द्र-सूर्य-बुध : 13 जून 2028 से 9 जुलाई 2028 तक

सूर्य की अन्तर्दर्शा में बुध की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- सूर्य की अन्तर्दर्शा में बुध-प्रत्यन्तर में विद्याप्राप्ति, बन्धु बान्धवों से मिलन, भोज्यलाभ, धनागम, धर्मलाभ तथा राजसम्मान प्राप्त होगा।

चन्द्र-सूर्य-केतु : 9 जुलाई 2028 से 19 जुलाई 2028 तक

सूर्य की अन्तर्दर्शा में केतु की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- सूर्य की अन्तर्दर्शा में केतु-प्रत्यन्तर में प्राणभय, महाक्षति, राजभय, कलह तथा शत्रु से महाविवाद संभव है।

चन्द्र-सूर्य-शुक्र : 19 जुलाई 2028 से 19 अगस्त 2028 तक

सूर्य की अन्तर्दर्शा में शुक्र की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- सूर्यान्तरदर्शा में शुक्र-प्रत्यन्तर में मध्यम रूप का समय, थोड़ा लाभ, अल्प सुखसम्पत्ति प्राप्त होगा।

मंगल महादशा: 19 अगस्त 2028 से 19 अगस्त 2035 तक

मंगल महादशा फल

स्वाभाविक फल

सामान्य रूप से मंगल की महादशा में निम्नलिखित फल होते हैं -

- मंगल की महादशा में भूमि की प्राप्ति, धन का आगमन, और मन की शान्ति मिलेगी।
- राज्य से, शस्त्र से, समकालीन राजाओं के झांगड़े से, औषधियों से, चतुराई से, अनेकानेक कूर क्रियाओं द्वारा, चतुष्पादों की वृद्धि से तथा अनेक उद्यमों से धन की प्राप्ति होगी।
- मंगल की महादशा में राजा से भय, घर में कलह, स्त्री पुत्र और सम्बन्धियों से वैमनस्य तथा इन कारणों से दुष्टान्त भोजन का दुर्भाग्य हो सकता है।
- चोर, अग्नि, बन्धन तथा व्रण रोगादि से क्लेश हो सकता है।
- पित्त जनित रुधिर-प्रकोप तथा ज्वर से पीड़ा होगी तथा मूर्छा हो सकती है।

विशेष-फल



मंगल के उच्च, नीच आदि स्थान में स्थित होने के कारण, नवमांशादि के भेदाभेद के कारण एवं अन्यान्य ग्रहों से युत या वृष्ट रहने से अवस्थाओं के अनुसार फल में निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं -

- मंगल की महादशा में धन, भूमि, अधिकार, सुख, वाहन, भाइयों को सुख और नामवारी होती है।
- मंगल की महादशा में शुभ फल होगा।
- यज्ञ और विवाह आदि शुभ कार्य होंगे।
- परोपकार की वृत्ति रहेगी।
- मंगल की महादशा में भूमि और धन की चिन्ता हो सकती है।
- मंगल की महादशा में अत्यन्त दुःख और कष्ट हो सकता है।
- राजकीय कोप से जन्मभूमि से दूर जाकर स्वी एवं मित्र आदि के वियोग का दुःख हो सकता है।
- मंगल की महादशा में उच्च अधिकारियों की मैत्री तथा उच्च नौकरी एवं अधिकार की प्राप्ति होगी।
- अचल संपत्ति, सब प्रकार के सुख, मान-सम्मान तथा कीर्ति का लाभ होगा।
- व्यवसाय में लाभ तथा शत्रुओं से विवाद में विजय मिलेगी।
- मंगल की महादशा में अन्न-धन से पूर्णता तथा धन का संग्रह होगा।
- कृषि कर्म से लाभ होगा।
- अनेक लोग द्वेष तथा शत्रुता रखेंगे।

मंगल-मंगल : 19 अगस्त 2028 से 15 जनवरी 2029 तक

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा का फल

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा में -

- भाइयों से मतभेद, भाइयों को पीड़ा प्राप्त होगी।
- शत्रुओं से विवाद तथा शत्रु नाश, साहस एवं पराक्रम की वृद्धि होगी।
- राजा से भय, कार्यों में व्यवधान संभव है।
- शारीरिक उष्णता की वृद्धि, रक्त, पित्त, और उष्ण जनित रोग तथा ब्रणादि से पीड़ा हो सकती है।
- गृह, क्षेत्र, आदि की वृद्धि, गो, महिली आदि पशुओं का सुख, और महाराज की कृपा से अभीष्ट-सिद्धि होगी।

मंगल-मंगल-मंगल : 19 अगस्त 2028 से 27 अगस्त 2028 तक

मंगल की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- मंगल की अन्तर्दशा में मंगल का प्रत्यन्तर में शत्रुभय, भयंकर विरोध, रक्तस्राव तथा मृत्युभय संभव है।

मंगल-मंगल-राहु : 27 अगस्त 2028 से 19 सितम्बर 2028 तक

मंगल की अन्तर्दशा में राहु की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- मंगल की अन्तर्दशा में राहु-प्रत्यन्तर में बन्धन, राजा तथा धन का विनाश, कदम्बोजन, झगड़ा, शत्रुभय संभव है।



मंगल-मंगल-गुरु : 19 सितम्बर 2028 से 9 अक्टूबर 2028 तक

मंगल की अन्तर्दशा में बृहस्पति की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- यह फाइल में नहीं है।

मंगल-मंगल-शनि : 9 अक्टूबर 2028 से 1 नवम्बर 2028 तक

मंगल की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- मंगल की अन्तर्दशा में शनि-प्रत्यन्तर में मालिक का नाश, कष्ट, धनक्षय, महाभय, विकलता, झगड़ा तथा त्रास संभव है।

मंगल-मंगल-बुध : 1 नवम्बर 2028 से 22 नवम्बर 2028 तक

मंगल की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- मंगल की अन्तर्दशा में बुध-प्रत्यन्तर में सर्वथा बुद्धिनाश, धनहानि, शरीर में ज्वर, वस्त्र, अन्न, मित्र का विनाश, संभव है।

मंगल-मंगल-केतु : 22 नवम्बर 2028 से 1 दिसम्बर 2028 तक

मंगल की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- मंगल की अन्तर्दशा में केतु के प्रत्यन्तर होने पर आलस्य, शिरोवेदना, पापजन्य रोग, अपमृत्युभय, राजभय तथा शस्त्रघात संभव है।

मंगल-मंगल-शुक्र : 1 दिसम्बर 2028 से 26 दिसम्बर 2028 तक

मंगल की अन्तर्दशा में शुक्र की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- मंगल की अन्तर्दशा में शुक्र प्रत्यन्तर में चाण्डाल से संकट, त्रास, राजा तथा शस्त्र का भय, अतिसार रोग, तथा वमन संभव है।

मंगल-मंगल-सूर्य : 26 दिसम्बर 2028 से 2 जनवरी 2029 तक

मंगल की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- मंगल की अन्तर्दशा में सूर्य-प्रत्यन्तर में भूमिलाभ, धन, सम्पत्ति के आगमन, मनस्तोष, मित्रों का संग तथा सभी क्षेत्रों में सुख होगा।



मंगल-मंगल-चन्द्र : 2 जनवरी 2029 से 15 जनवरी 2029 तक

मंगल की अन्तर्दशा में चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- मंगल की अन्तर्दशा में चन्द्र प्रत्यन्तर में द्रष्टिक्षण दिशा में लाभ, सफेद वस्तु अलंकरण की प्राप्ति तथा सभी कार्यों में सिद्धि संभव है।

मंगल-राहु : 15 जनवरी 2029 से 2 फरवरी 2030 तक

मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा का फल

मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में -

- राजा, चोर, अग्नि, शस्त्र एवं शत्रु से भय संभव है।
- धन-धार्य का विनाश, गुरुजन एवं बन्धुओं की हानि, अनेक प्रकार की विपत्तियाँ आ सकती हैं।
- शारीरिक पीड़ा और दुष्ट-कर्म की सिद्धि हो सकती है।
- चौर, सर्प-व्रण का भय, पशुनाश, वात-पित्तरोग का भय, जेल, संभव है।
- धनस्थ होने से धननाश तथा महाभय संभव है।
- सप्तमस्थ होने पर अपमृत्युभय संभव है।
- आरोग्यलाभ के लिए नागार्चन, देवब्राह्मणपूजन तथा मृत्युजयजप कराना चाहिए।

मंगल-राहु-राहु : 15 जनवरी 2029 से 13 मार्च 2029 तक

राहु की अन्तर्दशा में राहु की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- राहु की अन्तर्दशा में राहु प्रत्यन्तर आने पर, बन्धन, रोगभय, बहुविध प्रहार तथा मित्रभय हो सकता है।

मंगल-राहु-गुरु : 13 मार्च 2029 से 3 मई 2029 तक

राहु की अन्तर्दशा में बृहस्पति की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- राहु की अन्तर्दशा में गुरु प्रत्यन्तर में सर्वत्र आदर, हाथी, घोड़ा (वाहन), तथा धन की प्राप्ति होगी।

मंगल-राहु-शनि : 3 मई 2029 से 3 जुलाई 2029 तक

राहु की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- राहु की अन्तर्दशा में शनि प्रत्यन्तर में भयंकर बन्धन, सुखक्षय, महाभय, तथा प्रत्यह वातपीड़ा हो सकती है।



मंगल-राहु-बुध : 3 जुलाई 2029 से 27 अगस्त 2029 तक

राहु की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- राहु की अन्तर्दशा में बुध प्रत्यन्तर में सब जगह अनेकविध लाभ, स्त्री के द्वारा विशेष रूप से लाभ, परदेश गमन से सिद्धि संभव है।

मंगल-राहु-केतु : 27 अगस्त 2029 से 18 सितम्बर 2029 तक

राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- राहु की अन्तर्दशा में केतु प्रत्यन्तर में बुद्धिनाश, भय, बाधायें, धनक्षय, सर्वत्र कलह तथा उद्वेग संभव है।

मंगल-राहु-शुक्र : 18 सितम्बर 2029 से 21 नवम्बर 2029 तक

राहु की अन्तर्दशा में शुक्र की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- राहु की अन्तर्दशा में शुक्र प्रत्यन्तर में योगिनियों से भय, अश्वक्षय, कदम्बोजन, स्त्रीविनाश, वंश में शोक संभव है।

मंगल-राहु-सूर्य : 21 नवम्बर 2029 से 10 दिसम्बर 2029 तक

राहु की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- राहु की अन्तर्दशा में सूर्य प्रत्यन्तर में ज्वररोग, महाभय, पुत्रपौत्र आदि को क्लेश, अपमृत्यु तथा असावधानता संभव है।

मंगल-राहु-चन्द्र : 10 दिसम्बर 2029 से 11 जनवरी 2030 तक

राहु की अन्तर्दशा में चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- राहु की अन्तर्दशा में चन्द्रप्रत्यन्तर में उद्वेग, कलह, चिन्ता, मानहानि, महाभय, पिता के शरीर में कष्ट संभव है।

मंगल-राहु-मंगल : 11 जनवरी 2030 से 2 फरवरी 2030 तक

राहु की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- राहु की अन्तर्दशा में मंगल का प्रत्यन्तर में भग्नदर रोग से कष्ट, रक्तपित्तज रोगों से कष्ट, धनक्षय, महान् मानसिक उद्वेग संभव है।



मंगल-गुरु : 2 फरवरी 2030 से 9 जनवरी 2031 तक

मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा का फल

मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा में -

- राजा एवं ब्राह्मणों से धन और भूमि की प्राप्ति होगी।
- आरोग्यता, तेज की वृद्धि, बल तथा पराक्रम की वृद्धि होगी।
- सत्कर्म करने में पूर्ण उत्साह, देवता के प्रति श्रद्धा भक्ति और तीर्थ में रुचि उत्पन्न होगी।
- पुत्र, मित्र तथा वाहनों का सुख, और विजय की प्राप्ति होगी। जनता से आदर सत्कार की प्राप्ति होगी।
- यकृत तथा श्लेष्मा जनित रोग का भय हो सकता है।

मंगल-गुरु-गुरु : 2 फरवरी 2030 से 20 मार्च 2030 तक

गुरु की अन्तर्दशा में बृहस्पति की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- गुरु की अन्तर्दशा में गुरु के प्रत्यन्तर में सुवर्ण लाभ, धान्यवृद्धि, कल्याण तथा शुभफल का उदय होगा।

मंगल-गुरु-शनि : 20 मार्च 2030 से 13 मई 2030 तक

गुरु की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- गुरु की अन्तर्दशा में शनि प्रत्यन्तर में गाय, भूमि, तथा सुवर्ण का लाभ, सर्वत्र सुखसाधन की सामग्री, अन्न, पान, आदि का भी संग्रह संभव है।

मंगल-गुरु-बुध : 13 मई 2030 से 30 जून 2030 तक

गुरु की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- गुरु की अन्तर्दशा में बुध प्रत्यन्तर में विद्या, वस्त्र, ज्ञान तथा मोती का लाभ, मित्रों के आगमन से स्नेह संभव है।

मंगल-गुरु-केतु : 30 जून 2030 से 20 जुलाई 2030 तक

गुरु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- गुरु की अन्तर्दशा में केतु प्रत्यन्तर में जलभय, चोरी, बन्धन, झगड़ा, अपमृत्युभय संभव है।

मंगल-गुरु-शुक्र : 20 जुलाई 2030 से 15 सितम्बर 2030 तक



गुरु की अन्तर्दशा में शुक्र की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- गुरु की अन्तर्दशा में शुक्र प्रत्यन्तर में अनेक विद्याओं, तथा कर्मों की प्राप्ति, सुवर्ण, वस्त्र, आभूषण का लाभ, कल्याणप्रयुक्त सन्तोष संभव है।

मंगल-गुरु-सूर्य : 15 सितम्बर 2030 से 2 अक्टूबर 2030 तक

गुरु की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- गुरु की अन्तर्दशा में सूर्य प्रत्यन्तर में राजा, मित्र, पिता, माता से लाभ तथा सर्वत्र आदर प्राप्त होगा।

मंगल-गुरु-चन्द्र : 2 अक्टूबर 2030 से 30 अक्टूबर 2030 तक

गुरु की अन्तर्दशा में चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- गुरु की अन्तर्दशा में चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में सभी क्लेशों का विनाश, मोती तथा घोड़े का लाभ, और सभी कार्यों की सिद्धि होगी।

मंगल-गुरु-मंगल : 30 अक्टूबर 2030 से 19 नवम्बर 2030 तक

गुरु की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- गुरु की अन्तर्दशा में मंगल प्रत्यन्तर में शास्त्रभय, गुदा में पीड़ा, अग्रिमान्य, अजीर्णरोग तथा शत्रुकृत पीड़ा हो सकती है।

मंगल-गुरु-राहु : 19 नवम्बर 2030 से 9 जनवरी 2031 तक

गुरु की अन्तर्दशा में राहु की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- गुरु की अन्तर्दशा में राहु प्रत्यन्तर में चाण्डाल से विरोध, उनके द्वारा धननाश, कष्ट, व्याधि, शत्रु, से भय संभव हैं।

मंगल-शनि : 9 जनवरी 2031 से 18 फरवरी 2032 तक

मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा का फल

मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा में -

- स्त्री, पुत्र और स्वजनों को पीड़ा तथा मरणान्तक शरीर-कष्ट हो सकता है।
- धन सम्बन्धी अड़चनें, व्यवसाय में हानि, नौकरी में निम्न स्थिति, स्थान परिवर्तन से कष्ट हो सकता है।
- शत्रु, चोर एवं राजा से भय, धन की हानि, गृहस्थी सम्बन्धी संकट आ सकता है।
- रोग से पीड़ा, चिन्ता एवं अपने स्थान पर लौट जाने को यात्रा संभव है।



- अन्तर्दशाकाल में मरण, राजा, चोर आदि से पीड़ा, वातव्याधि से कष्ट, शूलादि रोग, कुटुम्ब तथा शत्रु से भय संभव है।
- दोषपरिहार के लिए मृत्युन्जय-जप करना श्रेयस्कर होगा।

मंगल-शनि-शनि : 9 जनवरी 2031 से 14 मार्च 2031 तक

शनि की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यन्तर दशा का फल -

- शनि की अन्तर्दशा में शनि प्रत्यन्तर में शारीरिक वेदना झगड़े का भय, तथा अनेक विध दुःख, संभव है।



OUR ASTRO SERVICES

Signature Reading



Numerology



Daily Horoscope



Janm-Kundli



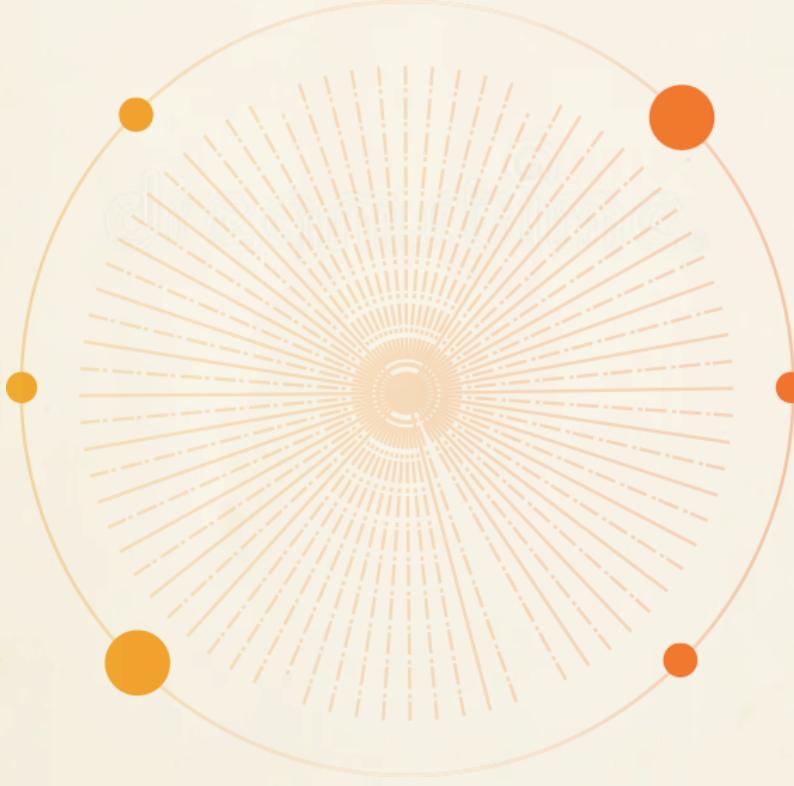
Kundli Matching



Chat With Astrologer



Call With Astrologer



Rajyoga's





93%

Accuracy Report

1000+

Top Astrologer of India

1 Lakhs+

Happy Customers

Thank you for trusting AstroBuddy.

This Kundali is designed to guide you with clarity on your strengths, opportunities, and the cosmic patterns shaping your journey

